मक़ालाते अह़मनी

अ़ल्लामा मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अलअज़हरी

अ़ल्लामा मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अलअज़हरी

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला।

और बेशुमार दुरूदो सलाम रसूलों के सरदार मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर।

फ़ेहरिस्त

अ़र्ज़े नाशिर

ये पेशकश बनाम 'मक़ालाते अह़सनी' ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद क़ासिमुल क़ादिरी अल अज़हरी हफ़िज़हुल्लाहू तआ़ला के मक़ालात का मजमूआ़ है। ये मक़ालात मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर मुश्तमिल हैं। इस में इ़ल्मी, तहक़ीक़ी, इस्लाही़ और अदबी वग़ैरा हर तरह के मक़ालात देखने को मिलते हैं। बेशतर मक़ालात हिन्दी ज़बान में हैं और कुछ उर्दू और अंग्रेज़ी ज़बान में हैं। अ़ल्लामा मुह़म्मद क़ासिमुल क़ादिरी अल अज़हरी साह़िब बयक वक़्त एक अच्छे ख़तीब, आ़लिम और लिखारी हैं। मौसूफ़ के लिखने का अंदाज़ सबसे जुदा है और एक ख़ास बात जिसका ज़िक्र करना यहां ज़रूरी मालूम होता है वो ये है कि लिखते वक़्त इमला, तलफ़्फ़ुज़ और रुमूज़ो अवक़ाफ़ का बहुत ज़्यादा ख़याल रखा गया है जो कि उमूमन हमारे मुल्क में कुतुब में देखने को नहीं मिलता और फिर जब हिन्दी ज़बान की किताबें हों तो बिल्कुल भी नहीं। मेरी इस बात से आप ज़रूर इत्तिफ़ाक़ करेंगे जब मक़ालात को मुलाहिज़ा फ़रमाएँगे।

इस में दिसंबर 2023 तक के अक्सर मक़ालात को शामिल कर लिया गया है, तमाम मक़ालात का इहा़ता न हो सका। उम्मीद है कि क़ारईन को ये पसंद आएगा। इस के मुताले के साथ अपनी दुआओं में अ़ल्लामा मौसूफ़ और शाया करने में जो भी मुआविन रहे उन्हें याद रखें।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा
मुह़म्मद साबिर क़ादिरी
अ़ब्दे मुस्तफ़ा पब्लीकेशन्ज़्
29 दिसंबर, 2023

ड्रूज़ कौन हैं?

इस गिरोह का तअ़ल्लुक़ 'इस्माई़ली शीआ़' से है. ये गिरोह 'ह़म्ज़ह इब्ने अ़ली इब्ने अह़मद (d. 1021 ई.)' के पैरोकार हैं, जो 11वीं स़दी का 'इस्माई़ली मिशनरी', और ड्रूज़ के बानियान (founders) में से था;
इस गिरोह के लोग, छठे फ़ात़िमी ख़लीफ़ा 'अबू अ़ली मंसूर [d. 1021 ई. (जिसे, इसके ऑफिशल नाम 'अल्-ह़ाकिम बि-अम्रिल्लाह' के नाम से जाना जाता है)]', के बारे में ये अ़क़ीदा रखते हैं कि इसे अल्लाह (ﷻ) ही की तरफ से ज़ाहिर किया गया है;
इस गिरोह की एक ख़ास़ किताब है, जिसका नाम 'रसाइलुल् ह़िक्मह [رَسَائِل الْحِكْمَة (Epistles of wisdom)]' है. इसमें कुल एक सौ ग्यारह रिसाले (epistles) हैं.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
17/08/22 ई.

अंधे को अंधेरे में बड़ी दूर की सूझी

कुतुबे तवारीख़ व सियर पर नज़र रखने वाला हर शख़्स ये बात जानता है कि ज़माना-ए-जाहिलिय्यत (Pre-islamic) के मुशरिकीन अपनी मादरी ज़ुबान 'अ़रबी' में इतने माहिर थे, कि तारीख़ में किसी भी मुल्क व सक़ाफ़त की, कोई भी क़ौम अपनी ख़ुद की ज़ुबान में इतनी क़ाबिल नहीं गुज़री. उनके बच्चों से लेकर बूढ़ों तक, सब को ऐसा मलका हासिल था कि खड़े-खड़े, किसी भी चीज़ की तअ़रीफ़ व मज़म्मत में, अ़रबी के सैंकड़ों शिअ़र

(poetry) फ़ौरन बना देते थे, जो आ़ला दर्जे की 'फ़स़ाह़त व बलाग़त (rhetoric & eloquence)' से पुर होते थे;

साथ में ये भी ज़ाहिर है, कि आज के दुश्मनाने इस्लाम की नफ़रत, मक्का के मुशरिकीन के मुक़ाबले में बहुत कम है. इसके बावजूद भी, ज़माना-ए-जाहिलिय्यत (Pre-islamic) से लेकर, गुज़रे कल तक की हिस्ट्री की तमाम किताबें खंगालने पर भी, आपको कोई एक वाक़िआ़ भी ऐसा नहीं मिलेगा कि अ़रबी ज़ुबान में चोटी के माहिर, अ़रब के बड़े से बड़े दुश्मने इस्लाम ने भी कभी क़ुरआन की 'ग्रामर [नह़्व व स़र्फ़ (Syntax & Morphology)]', या 'अदब (Literature)' पर कोई सवाल उठाया हो. जब भी किसी भी 'माहिरे लुग़त (lexicographer)' को क़ुरआन का कोई भी लफ़्ज़ 'नया या ग़रीब (new or stranger)' लगता, तो वो शख़्स, अब्लग़ुल् ख़ल्क़ आक़ा (ﷺ) के पास बहस के इरादे से आता, मगर उसी लफ़्ज़ के सबब क़ुरआन की बलाग़त के सामने घुटने टेक देता, और ईमान ले आता. ऐसे कई वाक़िआ़त किताबों में मौजूद हैं. जैसे कि क़ुरआन के कुछ अल्फ़ाज़: 'उ़जाब (बहुत अ़जीब)', 'क़स्वरह (शेर)', 'कुब्बारा (बहुत बड़ा)', 'हुज़ुवा (मज़ाक़)' वग़ैरह के मुतअ़ल्लिक़, मुशरिकीन के, आक़ा (ﷺ) की बारगाह में आकर सवाल करने के बारे में, वाक़िआ़त किताबों में मौजूद, और उ़लमा के दरमियान मशहूर हैं. हर सवाल उठाने वाला, या तो ईमान ले आया, या फिर अपनी हठधर्मी के सबब ईमान तो नहीं लाया मगर क़ुरआन की इअ़जाज़ी गुफ़्तगू (miraculous talk) सुनकर कांपने लगा, और मब्हूत होकर भाग गया;
अब सुनिए, और सर धुनिये:
आज के, अ़रबी ज़ुबान से जाहिल, 'मुस्तशरिक़ (Orientalists)', क़फ़रह की अ़क़्लों पर, जो आज क़ुरआन पर ग्रैमेटिकल एतराज़ करने की 'सअ़्ये ला-त़ाइल (futile quest)' कर रहे हैं;

इस जुनूने बेक़ाबू की शुरुआत ख़ास तौर पर दो ईसाई काफ़िरों ने की:

1. अ़ब्दुल्लाह अ़ब्दुल् फ़ादी:

एक अ़रब मुतनस़्सिर (Christian Arab), जो कि पहले वह्हाबी सऊ़दी था, बाद में ईसाई बनकर पूरे तौर पर मुर्तद्द हो गया. ये मक्का शरीफ़ के क़रीब पैदा हुआ. सऊदी में इंजीनियरिंग की पढ़ाई की, फिर इंग्लिश सीखने वेस्ट चला गया. वहाँ इस्लामी दुनिया से दूर, ईसाइयों के साथ रहने लगा. फिर ईसाइयों के जह़रीले माहौल ने इसे भी ईसाई बना दिया. इसने 'CIRA International' की बुनियाद रखी, और अब ईसाई मिशनरी की हैसियत से इस्लाम के ख़िलाफ़ बहुत बड़े लेवल पर काम कर रहा है. इसका यूट्यूब चैनल 120k सब्सक्राइबर्स और 700 से ज़्यादा वीडियोज़ पर मुश्तमिल, एक बहुत बड़ा ऐंटी इस्लामिक चैनल है. इस मुर्तद्द ने एक किताब लिखी: "Is the Quran infallible? (क्या क़ुरान मअ़्सूम है?)". इस किताब को इस वक़्त, कफ़रह का इस्लाम के ख़िलाफ़ बहुत बड़ा हथियार मानिये. कई ज़ुबानों ने इसका तरजमा हो चुका है, और अ़रबी में ये किताब: "हलिल् क़ुरआनु मअ़्सूम? (هل القرآن معصوم؟)", के नाम से मौजूद है. इस किताब को इसने 10 चैप्टर्स में लिखा है, और हर चैप्टर में अलग-अलग एंगल से क़ुरआन और आक़ा (ﷺ) पर एतराज़ किए. इसी किताब के 5वें चैप्टर में इसने क़ुरआन की 24 आयात पर 'ग्रैमेटिकल (Grammatical)' एतराज़ उठाए हैं, और 9वें चैप्टर में क़ुरआन के 'अदब (literature)' पर, जैसे कि कई अल्फ़ाज़ ग़ैरे अ़रबी हैं वग़ैरह;

2. फ़ादर ज़करिय्यह पितरस:

मिस्र में 1934 ई. में पैदा होने वाला नाइबे फ़िरऔ़न व मसीले हामान पादरी, जो साबिक़ 'Orthodox Coptic Priest' है, और 1992 ई. में ऑस्ट्रेलिया में पादरी के मंस़ब पर रह चुका है. CNN न्यूज़ ने इसे 2009 ई. में: 'the

most hated man in the middle east' करार दिया था. जब इस्लाम के ख़िलाफ़ इसने सैटेलाइट चैनल चलाया तो 60 मिलियन लोगों ने इसे देखा और वर्ल्ड रिकार्ड क़ायम किया. इसे बहुत से उ़लमा ने डिबेट के लिए बुलाया, मगर वही पुरानी आदत मैदान में न आने की. इस वक़्त 87-88 साल का ये बूढ़ा शैतान अपने इसी त़ाग़ूती मिशन में लगा हुआ है. अगरचे कई सारे सेक्स स्कैंडल्स में पकड़े जाने के सबब, इसके ख़िलाफ़ ख़ुद इसी के लोगों ने बग़ावत कर दी, जिससे इसकी शुहरत अब बिल्कुल ख़त्म सी हो गयी है;

अब जब दुश्मन को आपने जान लिया, तो अपने उ़लमा को भी पहचान लें कि जिन्होंने दुश्मन के हर हमले का बिना किसी देरी के मुँहतोड़ जवाब दिया:

इन बदमाशों की ये किताबें जैसे ही छपकर, मार्केट में आईं, तो उ़लमा-ए-इस्लाम ने फ़ौरन इनकी बेख़कनी के लिए क़लम उठाया, और कई किताबें इनके रद में आ गयीं. इस लिस्ट में, ख़ास तौर पर दो किताबें सबसे अ़ज़ीम हैं:

1. 'इ़स्मतुल् क़ुरआनिल् करीम व जहालातुल् मुबश्शिरीन',

जिसे मिस्र के बहुत ज़बर्दस्त अ़ालिम डा. इब्राहीम इ़वज़ ने लिखा, जो 1426 हि. / 2005 ई. में 'मक्-तबतु ज़हराइश् शर्क़ (क़ाहिरा)' से छपी. इस किताब में कुछ दूसरे इल्ज़ामात के साथ-साथ, सो कॉल्ड 'ग्रैमेटिकल ऐतराज़ात' की जो धुनाई की गयी है, वो देखकर कुछ अलग ही मज़ा आता है;

2. 'अल्-क़ुरआन व नक़्दु मत़ाइ़निर् रुह्बान',

जिसे जोर्डन के डा. स़लाह़ अ़ब्दुल् फ़त्ताह़ ख़ालिदी ने लिखा, जो 1428 हि. / 2007 ई. में 'दारुल् क़लम (दमिश्क)' से 700 से ज़्यादा पेज में छपी;

इन दोनों किताबों, और इनकी तरह दूसरी किताबों ने इन मुस्तशरिक़ीन की ऐसी बैंड बजाई है, कि आज तक ये ज़िंदा होने के बावजूद, इन किताबों का जवाबुल् जवाब देने के लिए मुर्दा की हैसियत रखते हैं;

जब क़ुरआन के चैलेंजिस का जवाब नहीं दे सके, तो अब उस पर त़अ़्न करना शुरू कर दिया, जो कि दुश्मन की पुरानी आदत है. इसीलिए 'इमाम सअ़्दुद्-दीन तफ़्ताज़ानी (d. 792 हि.)' ने 'शरह़ुल् मक़ासिद' में इनकी इस बेबसी को बहुत पहले ही बयान करते हुए लिख दिया था कि:

"فأشراف العرب مع كمال حذاقتهم فى أسرار الكلام، وفرط عداوتهم للإسلام، لم يجدوا فيه للطعن مجالاً، ولم يوردوا فى القدح مقالاً، ونسبوه إلى السحر على ما هو دأب المحجوج المبهوت تعجباً من فصاحته، وحسن نظمه، وبلاغته. واعترفوا بأنه ليس من جنس خطب الخطباء، أو شعر الشعراء، وأن له حلاوة، وعليه طلاوة، وأن أسفله مغدقة، وأعاليه مثمرة. فآثروا المقارعة على المعارضة، والمقاتلة على المقاولة. وأبي الله إلا أن يتمّ نوره على كره من مشركين، ورغم المعاندين؛

وحين انتهي الأمر إلى من بعدهم من أعداء الدين وفرق الملحدين، اخترعوا مطاعن ليست إلا هزءة للساخرين، وضحكة للناظرين؛

ومنها:

'أن فيه كلمات غير عربية، كالإستبرق والسجيل، والقسطاس، والمقاليد، فكيف يصحّ أنه عربي مبين'............،

ومنها:

'أن فيه خطأ من جهة الإعراب'"......."، (بتصرف)

"अ़रबी सरदारों ने, ज़ुबान के राज़ों को जानने में अपनी कमाले महारत और इस्लाम के ख़िलाफ़ अपनी सख़्त दुश्मनी के बावजूद भी, जब इस (क़ुरआन) पर त़अ़्न करने की कोई जगह, और बकवास करने को कोई बात न पाई — तो क़ुरआन की फ़स़ाह़त, अल्फ़ाज़ की ख़ूबसूरती, और बलाग़त पर तअ़ज्जुब करते हुए, इसे जादू की तरफ़ मंसूब कर डाला, जैसा कि ये हारने वाले, मग़्लूब शख़्स की पहचान होती है;

और उन (मुशरिकीन) को इस बात का भी इअ़्तिराफ़ था, कि ये (क़ुरआन), न तो ख़त़ीबों के ख़ुत़बों में से है, और न ही शाइ़रों की शाइ़री में से. बल्कि इसमें मिठास, और चमक है. इसका निचला हिस्सा ख़ूब तर, और ऊपरी हिस्सा फलदार है. तो फिर उन काफ़िरों ने (क़ुरआन का) मुक़ाबला, और गुफ़्तगू करने के बजाय लड़ाई-झगड़े को बेहतर समझा;

और अल्लाह, मुशरिकीन की नापसंदीदगी, और हठधर्मों के बावजूद भी, अपने नूर को पूरा किये बिना न मानेगा;

और जब मामला बाद में आने वाले दीन के दुश्मनों, और नास्तिकों के फ़िर्क़ों तक पहुंचा, तो इन्होंने ऐसे-ऐसे त़अ़्ने गढ़े, जो मस्ख़रेपन व हंसी के अलावा कुछ नहीं है;

और इन्हीं त़अ़्नों में से ये, कि:

'क़ुरआन में कई अल्फ़ाज़ ऐसे हैं जो अ़रबी के नहीं हैं, जैसे: 'इस्तबरक़', 'सिज्जील', 'क़िस्त़ास', 'मक़ालीद', फिर ये दावा कैसे सही हो सकता है कि क़ुरआन फ़स़ीह़ अ़रबी में है..............',

और इन्हीं त़अ़्नों में से एक ये भी, कि:

'इस क़ुरआन में इअ़्राब (ग्रामर) की ग़लतियाँ हैं..........!'"

शरह़ुल् मक़ासि़द, जिल्द नं. 5, मक़्सि़द नं. 6, पेज नं. 32, पब्लिकेशन: आ़लमुल् कुतुब (बेरूत), दूसरा एडीशन, 1419 हि. / 1998 ई.

इसीलिए मैं अक्सर कहता रहता हूं कि क़ुरआन पर जो सवालात आज उठाए जा रहे हैं, वो पैदा भी नहीं हुए थे कि इससे पहले ही हमारे बुज़ुर्गों ने इनके जवाबात लिख दिए. ज़रूरत बस, बुज़ुर्गों की किताबें पढ़ने, और उनमें जवाब तलाशने की है.

नोट: पादरियों के रद में लिखी गयी दोनों किताबों के ऑनलाइन, और पीडीएफ लिंक्स, कमेंट बॉक्स में मौजूद हैं.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
10/09/22 ई.

इन दुमुंही साँपों का ज़हर तो देखिये

देवबंदियों ने अ़रब ममालिक के सुन्नी उ़लमा के सामने अपने अकाबिर की सूफ़ियाना शक्ल बनाकर पेश की, और उनकी ऐसी ही किताबें यहां तक पहुंचाईं, जिससे उनका 'ह़नफ़ी/स़ूफ़ी' होना ही साबित हो, और उनका नापाक चेहरा — जिसे 'आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह)' ने दुनिया के सामने ज़ाहिर किया, जिसकी तस्दीक़ 30 से ज़्यादा उ़लमा-ए-ह़रमैन, और 250 से ज़्यादा बर्रे स़ग़ीर हिन्दुस्तान के उ़लमा ने की — छुपा दिया. ये बिल्कुल उसी तरह का दज्लो फ़रेब है, जो 'मौलवी ख़लील अम्बेठवी (d. 1927 ई.)' ने अपनी किताबुल् अकाज़ीब (books of lies): 'अल्-मुहन्-नद अ़लल् मुफ़न्-नद' में किया. अगरचे इसकी इस झूठ से भरी हुई किताब का पर्दा चाक, 'ह़ज़रत

शेरे बेशए अहले सुन्नत अ़ल्लामा ह़श्मत अ़ली ख़ान (d. 1961 ई.)' ने 'राद्-दुल् मुहन्-नद' लिखकर, और 'स़दरुल् अफ़ाज़िल सय्यिद नई़मुद्-दीन मुरादाबादी (d. 1948 ई.)' ने 'अत्-तह़क़ीक़ात लि-दफ़्इ़त् तल्बीसात' लिखकर ही कर दिया था. अब इसी मौरूसी धोखाधड़ी से, आज के देवबंदी भी काम चला रहे हैं;

देवबंदियों के इस मक्रो फ़रेब के सबब,
इनके बड़ों का अस्ल चेहरा अ़रब कंट्रीज़ के सुन्नी उ़लमा के सामने ज़ाहिर न हो सका;
जिसके नतीजे में अ़रब के सुन्नी उ़लमा ने, इन देवबंदियों के मौलवियों (थानवी, अंबेठवी वग़ैरह) को सुन्नी समझकर, इनकी तारीफ़ें लिखीं, जिसे आज ये हिन्दुस्तान वालों के सामने पेश करते हैं कि देखो तुम्हारे 'अ़ाला ह़ज़रत' ने हमारे फ़लां बुज़ुर्ग की तक्फ़ीर की है, जबकि मिस्र के बड़े बड़े सुन्नी अ़ालिम हमारे बुज़ुर्गों की तारीफ़ लिख रहे हैं;

जबकि इनका हाल ये है कि जब ये 'जामिअ़ा अज़्हर, काहिरा (मिस्र)' में, या किसी दूसरी सुन्नी यूनिवर्सिटी में पढ़ने आते हैं (अगरचे मुट्ठीभर तादाद में ही सही), तो सुन्नी बनकर रहते हैं, हर सुन्नी के साथ मेलजोल करने में लगे रहते हैं, मज़ारात पर जाते हैं, मीलाद में शामिल होते हैं, क़ब्र वाली मस्जिदों में नमाज़ पढ़ते हैं, ग़ैरुल्लाह से इस्तिग़ासह करने वाले इमामों व उ़लमा के पीछे नमाज़ें पढ़ते हैं, और ऐसे ही उस्ताज़ों से इ़ल्म भी हासिल करते हैं, खुलकर इस तरह शिर्क-बिद्अ़त की रट नहीं लगाते जैसे बर्रे स़ग़ीर हिंदुस्तान में करते हैं;
कई बार तो ऐसा हुआ है कि कुछ लड़के हमारे साथ रह रहे हैं, खा रहे हैं, पी रहे हैं, पढ़ रहे हैं, मगर बाद में पता चला कि ये देवबंदी हैं. ये ख़ुद दो बार मेरे साथ हुआ है;

जबकि हम सुन्नी — जिसे वह्हाबिय्यह ने 'बरेलवी' नाम दिया हुआ है — डंके की चोट पर, मिस्र में, अपने तमाम दीनी काम वैसे ही खुलकर करते हैं, जैसे हिन्दुस्तान में करते हैं. बल्कि इससे भी बढ़कर करते हैं;
इन मलाइ़ना ने, अपने बड़ों की कोई भी ऐसी किताब इधर नहीं पहुंचाई जिसपर इमामे अहले सुन्नत, और दूसरे उ़लमा ने सख़्त गिरिफ़्त की;

अगर ये देवबंदी, अपने बड़ों के बारे में, इन अ़रबी उ़लमा को:
1. ये बताते कि: "हमारे थानवी साहब (d. 1943 ई.) ने: 'ह़िफ़्ज़ुल् ईमान' में आक़ा (ﷺ) के बअ़्ज़े उ़लूमे ग़ैबिय्यह की तश्बीह या तसावी — हर अ़ाम शख़्स, बच्चों, जानवरों, पागलों से की है",
तो यहां के उ़लमा का क़लम, इनके बारे में कुछ और ही लिखता;

2. अगर बताते कि: "हमारे ख़लील अंबेठवी साहब (d. 1927 ई.) ने: 'बराहीने क़ाति़आ' में शैतान, व मलकुल् मौत के इ़ल्म की वुस्अ़त, आक़ा (ﷺ) के इ़ल्म की वुस्अ़त से ज़्यादा मानी. साथ ही कहा कि आक़ा (ﷺ) को दीवार के पीछे का भी इ़ल्म नहीं, और इस गंदी बात को शाह अ़ब्दुल् ह़क़्क़ मुह़द्-दिसे देहलवी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) की त़रफ़ मंसूब कराने की नापाक जसारत की. इस पर तु़र्रह ये कि ये किताब तस्दीक़-शुदह है 'मौलवी रशीद गंगोही (d. 1905 ई.)' के ज़रिए",
तो यहां के उ़लमा का क़लम, इनके बारे में कुछ और ही लिखता;

3. अगर बताते कि: "हमारे रशीद गंगोही साहब (d. 1905 ई.) ने अपने फ़तवा में ये लिखा है कि अल्लाह का झूठ बोलना मुम्किन है",
तो यहां के उ़लमा का क़लम, इनके बारे में कुछ और ही लिखता;
इसी तरह की सारी नजिस इबारतें दिखाते, तब हम देखते कि कितनी तारीफ़ें हो रही हैं तुम्हारे बड़ों की;

मगर घूंघट की आड़ में चेहरा छुपाकर,
अपने बदसूरत चेहरे को खूबसूरत मनवाना, मर्दों की अ़लामत नहीं होती.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
06/09/22 ई.

नज्दियों का क़ियास मअ़ल् फ़ारिक़

ई़दे मीलादुन्-नबी (ﷺ) आते ही कुछ 'अह़्दासुल् अस्नान', व 'सुफ़हाउल् अह़्लाम' क़िस्म के लोग, गली-गली, कूचे-कूचे, ये चिल्लाना शुरू कर देते हैं कि:

"इस्लाम में सिर्फ़ दो ही ई़दें हैं, जैसा कि 'अबू दाऊद, ह़दीस नं. 1134' में आक़ा (ﷺ) का फ़रमान मौजूद है कि: 'अल्लाह ने आपको 'ई़दुल् अज़्हा', व 'ई़दुल् फ़ित़्-र' की शक्ल में दो बेहतरीन दिन अ़ता फ़रमाए हैं.' आप सुन्नी लोगों ने ये 'ई़दे मीलादुन्-नबी' नाम की तीसरी नयी ई़द पैदा कर दी है, जो कि दीन में अपनी तरफ़ से इज़ाफ़ा है."

अब इस बात़िल दावे, और आ़त़िल इस्तिदलाल का जवाब सुनें:
पहली बात ये कि 'अबू दाऊद शरीफ़, ह़दीस नं. 1134' में आक़ा (ﷺ) ने ये कहीं भी नहीं फ़रमाया कि इस्लाम में सिर्फ़ दो ही ई़दें हैं, इसके अ़लावा कोई ई़द नहीं है. बल्कि ज़माना-ए-जाहिलिय्यत (Pre-Islamic Period) के वो दो दिन, जिनमें मुसलमान लोग कुफ़्फ़ार की तरह खेलकूद करते थे, वो काफ़िरों के त्यौहार: 'नौरोज़/नैरोज़', और 'महरजान/मिह्-रगान' के दिन थे — जैसा कि तमाम शारिह़ीन ने लिखा है, और देवबंदियों के मुअ़्तबर बुज़ुर्ग: 'मौलवी ख़लील अम्बेठवी (d. 1927 ई.)', ने 'बज़्लुल् मज्हूद फ़ी

ह़ल्लि सुनिन अबी दाऊद' में, और ग़ैर मुक़ल्लिदीन के मुअ़्तबर आ़लिम: 'मुह़म्मद शम्सुल् ह़क़ अ़ज़ीमाबादी (d. 1911 ई.)', ने 'औ़नुल् मअ़बूद अ़ला सुनिन अबी दाऊद' में भी लिखा है — जिनमें मुसलमान भी कुफ़्फ़ार की तरह जश्न मनाते थे. उससे मुसलमानों को रोकने के लिए आक़ा (ﷺ) ने उनसे फ़रमाया:

"إِنَّ اللَّهَ قَدْ أَبْدَلَكُمْ بِهِمَا خَيْرًا مِنْهُمَا يَوْمَ الأَضْحَى وَيَوْمَ الْفِطْرِ"،

"बेशक अल्लाह ने तुम्हें, इन दोनों दिनों के बदले में, 'ई़दुल् अज़्ह़ा' और 'ई़दुल् फ़ित़्-र' की शक्ल में बेहतरीन दिन अ़त़ा किए हैं."

अब ज़रा बताएं मुझे कि इस ह़दीस से ये कहाँ साबित हो रहा है कि इस्लाम में ई़द सिर्फ़ दो ही हैं, इससे ज़्यादा नहीं हो सकतीं?

दूसरी बात ये कि ख़ुद क़ुरआन ने, आक़ा (ﷺ) ने, और स़ह़ाबा (रद़ियल्लाहु अ़न्हुम्) ने, 'ई़दुल् अज़्ह़ा', और 'ई़दुल् फ़ित़्-र' के अ़लावा, दूसरे कई दिनों को भी 'ई़द' कहकर पुकारा है. दलाइल मुलाह़ज़ा फ़रमायें:

1. अल्लाह (ﷻ) ने क़ुरान 5:114 में, सय्यिदुना ई़सा (अ़लैहिस्सलाम) की दुआ़ को बिना किसी नकीर व नस्ख़ के बयान फ़रमाया:

"قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآىِٕدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَ اٰخِرِنَا وَ اٰيَةً مِّنْكَۚ وَ ارْزُقْنَا وَ اَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ"،

"ई़सा इब्ने मरयम ने अ़र्ज़ की: 'ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! हम पर आसमान से एक दस्तरख़ान उतार दे. जो हमारे लिए, और हमारे बाद में आने वालों के लिए ई़द, और तेरी त़रफ़ से निशानी हो जाए, और हमें रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा,

और तू सबसे बेहतर रिज़्क़ देने वाला है'." [कंज़ुल् इ़र्फ़ान]
अब नज्दियों के क़ाइ़दे के मुत़ाबिक़, ये तीसरी ई़द कहाँ से आ गयी?

2. आक़ा (ﷺ) ने जुमुअ़ा के दिन के बारे में इर्शाद फ़रमाया:

"إِنَّ هَذَا يَوْمُ عِيدٍ، جَعَلَهُ اللَّهُ لِلْمُسْلِمِينَ"،

"बेशक जुमुअ़ा, ईद का दिन है, जिसे अल्लाह ने मुसलमानों के लिए बनाया है."

इब्ने माजह, किताब: इक़ामतुस् स़लाह वस् सुन्नह फ़ीहा (किताब नं. 5), बाब: मा जाअ फ़िज़् ज़ीनति यौमल् जुमुअ़ह (बाब नं. 83), जिल्द नं. 1, पेज नं. 349, ह़दीस नं. 1098, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइल् कुतुबिल् अ़रबिय्यह (काहिरा)

अब नज्दियों के क़ाइ़दे के मुत़ाबिक़, ये चौथी ई़द कहाँ से आ गयी?

3. आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"يَوْمُ عَرَفَةَ، وَيَوْمُ النَّحْرِ، وَأَيَّامُ التَّشْرِيقِ عِيدُنَا أَهْلُ الْإِسْلَامِ"،

"अ़रफ़ह का दिन (9 ज़िलहि़ज्जह), क़ुर्बानी का दिन (10 ज़िलहि़ज्जह), तशरीक़ के (तीन) दिन (11,12,13 ज़िलहि़ज्जह), हम मुसलमानों के लिए ई़द हैं."

अल्-मुस्तदरक अ़लस् स़ह़ीह़ैन, किताबुस् स़ौम, जिल्द नं. 1, पेज नं. 600, ह़दीस नं. 1586, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), पहला एडीशन, 1411 हि./1990 ई.

अब नज्दियों के क़ाइ़दे के मुत़ाबिक़, ये पांचवी, छठी, सातवीं, आठवीं ई़द कहाँ से आ गयीं?

4. ह़ज़रत अ़म्मार इब्ने अबी अ़म्मार रिवायत करते हैं कि:

"قَرَأَ ابْنُ عَبَّاسٍ: 'الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الإِسْلاَمَ دِينًا'، وَعِنْدَهُ يَهُودِيٌّ، فَقَالَ: 'لَوْ أُنْزِلَتْ هَذِهِ عَلَيْنَا لاَتَّخَذْنَا يَوْمَهَا عِيدًا.' قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: 'فَإِنَّهَا نَزَلَتْ فِي يَوْمِ عِيدٍ فِي يَوْمِ جُمُعَةٍ وَيَوْمِ عَرَفَةَ'."

"ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रद़ियल्लाहु अ़न्हुमा) ने ये आयत पढ़ी: _'आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया, और तुम पर अपनी निअ़्मत पूरी कर दी, और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसंद किया',_
तो आपके पास एक यहूदी भी मौजूद था. तो (ये आयत सुनकर) बोला: 'अगर ये आयत हम पर उतरती, तो उस दिन को हम ई़द बना लेते.'
ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रद़ियल्लाहु अ़न्हुमा) ने जवाब दिया: 'ये आयत जब उतरी तब दो ई़दें थीं: एक जुमुअ़ह का दिन, और दूसरा अ़रफ़ह का दिन'."

तिर्मिज़ी, किताबुत् तफ़्सीर, जिल्द नं. 5, पेज नं. 250, ह़दीस नं. 3044, पब्लिकेशन: मुस़्तफ़ा बाबी ह़लबी (मिस्र), दूसरा एडीशन, 1395 हि. /1975 ई.

अब नज्दियों के क़ाइदे के मुत़ाबिक़, ये बाक़ी ई़दें कहाँ से आ गयीं?
अब थोड़ा-सा हिसाब लगाएं:
(1) क़ुरआन के मुत़ाबिक़, सय्यिदुना ई़सा (अ़लैहिस्सलाम) पर, जिस दिन दस्तरख़ान उतरा वो भी 'ई़द' का दिन है. मुफ़स्सिरीन के मुत़ाबिक़ इस दिन 'इतवार (Sunday)' था;
(2) ह़दीस के मुत़ाबिक़ जुमुअ़ह का दिन भी 'ई़द' है, जो साल में 52 बार आता है;
फिर अगर 365 दिन के आ़म सालों में, ये 'इतवार (Sunday)', या 'जुमुअ़ा (Friday)' में से कोई भी दिन, पहली जनवरी को ही पड़ गया, तो 53 बार आएगा;

फिर अगर फ़रवरी 29 दिन की हुई, और 366 दिन वाली 'लीप ईयर (अधिवर्ष)' हुई, तो 2 जनवरी को पड़ने वाला दिन भी, साल 53 बार आएगा. अब अगर 'इतवार' या 'जुमुआ' के साथ 'लीप ईयर (अधिवर्ष)' में ऐसा हुआ, तब भी ये दिन साल में 53 बार आयेंगे;

(3) अ़रफ़ह का दिन साल में = 1 बार;

(4) ई़दुल् फ़ित्-र साल में = 1 बार;

(5) ई़दुल् अज़्हा साल में = 1 बार;

(6) तशरीक़ के दिन साल में = 3 दिन;

और इन तमाम दिनों को क़ुरआन व ह़दीस में 'ई़द' कहा गया है. अब साल में टोटल कितनी ई़दें हुई:

52+52+1+1+1+3=110 दिन;

अब अगर 'इतवार' या 'जुमुआ' को आ़म सालों में एक जनवरी, और लीप ईयर में दो जनवरी का मान लो, तो फिर ये 53-53 बार आयेंगे, तो साल में 112 ई़दें होंगी;

अब नज्दियों के क़ाइदे के मुताबिक़, ये इतनी सारी ई़द कहाँ से आ गयीं? इन वह्हाबिय्यह की ह़िमाक़त देखिए, कि किस तरह से, ये लोगों को, टेढ़े-मेढ़े एतराज़ करके गुमराह करते हैं;

अल्लाह (ﷻ) इन शयातीनुल् इन्स से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए;

आमीन बिजाहि ह़बीबी (ﷺ)!

08/10/22 ई.

मुसलमान और क़लम

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन 96:4 में इरशाद फ़रमाया:

"जिस (अल्लाह) ने (इंसान को) क़लम से लिखना सिखाया."

क़ुरआने करीम ने जब 'क़लम (Pen)' का ज़िक्र कर दिया, तो ये भी बता दिया कि इसकी अहमियत कोई मामूली नहीं है, बल्कि ये एक अ़ज़ीम निअ़मत है, जो अल्लाह ने अपने बन्दों को ख़ासतौर पर अ़ता फ़रमाई है;

यहां तक कि मुसलमानों में पढ़ने-लिखने का ऐसा शौक़ पैदा हुआ कि क़ुरआन के इस इशारे को पाकर मुस्लिम अहले इ़ल्म ने 'क़लम (Pen)' की तारीख़ी तह़क़ीक़ात (historical researches) का भी ह़क़ अदा कर दिया;
जिस दौर में यूरोप के बड़े बड़े वैज्ञानिकों के बाप-दादा 'क़लम' को ग़ैर मामूली चीज़ समझते थे, उस दौर में मुसलमान इस 'क़लम' के बारे में किताबें लिख रहे थे;

इसकी कुछ मिसालें आपके सामने पेश करते हैं:
इमाम अ़ब्दुर् रह़मान अल्-बिस्त़ामी अल्-ह़नफ़ी (d. 858 हि. / 1454 ई.) ने 'मबाहिजुल् अअ़लाम फ़ी मनाहिजिल् अक़्लाम' नाम की किताब लिखी, और अपनी इस किताब में सय्यिदुना आदम (अ़लैहिस्सलाम) से लेकर अपने दौर तक पाए जाने वाले 'क़लम' के तमाम तरीक़े और उस्लूबों का ज़िक्र किया. इन्होंने अपनी इस किताब में तक़रीबन 150 तरह के 'क़लम' का ज़िक्र किया, साथ ही इनके ज़माने और हालात पर भी तफ़्सील से लिखा. इस किताब का एक मख़्तूता (manuscript) हॉलैंड की 'यूनिवर्सिटी ऑफ़ लीडन' में महफ़ूज़ है;

जाबिर इब्ने ह़य्यान अल्-कूफ़ी (d. 815 ई.), जिसे 'अबुल् कीमिया (father of chemistry)' के नाम से जाना जाता है, जो इमाम जअ़फ़रे

स़ादिक़ (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) के शागिर्द हैं. इन्होंने भी इसी फ़न में 'ह़ल्लुर् रुमूज़ व मफ़ातीह़ुल् कुनूज़' नाम की एक किताब लिखी;
फिर इनके शागिर्द इमाम सौबान इब्ने इब्राहीम, जो कि 'ज़ुन् नून मिस्री' के नाम से मशहूर हैं (d. 245 हि.), इन्होंने भी एक किताब 'ह़ल्लुर् रुमूज़ व बुरउल् अक़्साम फ़ी कश्फ़ि उस़ूलिल् लुग़ाति वल् अक़्लाम' नाम की लिखी;

इस मैदान में एक और अहम किताब है, कि जिसका ज़िक्र अगर न किया, तो नाइन्साफ़ी होगी. यानी मशहूर मुस्लिम कैमिस्ट 'इब्ने वह़्शिय्यह अन्-नबत़ी (d. 930 ई.)' ने एक तारीख़ी किताब लिखी, जिसका नाम है: 'शौक़ुल् मुस्तहाम फ़ी मअ़रिफ़ति रुमूज़िल् अक़्लाम',

यही वो किताब है कि जिसके ज़रिए सबसे पहले मिस्र के बहुत पुराने 'हाइरोग्लिफ़िक्स रस्मुल् ख़त़्त़ (Hieroglyphics Script)' को ह़ल किया गया. मगर वही पुरानी चाल, जिसके ज़रिए मुसलमानों का नाम और उनका काम तारीख़ से छुपाया गया, यहां भी चली गयी; और इस कारनामे को 'इब्ने वह़्शिय्यह' की तरफ़ मन्सूब न करके फ्रांसीसी लुग़वी 'चैम्पोलियन (d. 1832 ई.)' की तरफ़ मन्सूब किया गया;
इसके बर ख़िलाफ़ हक़ीक़त ये है कि 'चैम्पोलियन' ने 1822 ई. में इस काम में कामयाबी हासिल की, जबकि इससे तक़रीबन 800 साल पहले ही मुस्लिम कैमिस्ट 'इब्ने वह़्शिय्यह' ने इसे हल कर दिया था, और इनकी इस मज़्कूरा किताब 'शौक़ुल् मुस्तहाम' के मख़्तूते (manuscript) का अंग्रेज़ी तर्जमा, 'चैम्पोलियन' की कामयाबी वाली साल 1822 ई. से 16 साल पहले ही, 1806 ई. में लंदन से ऑस्ट्रिया के एक मुस्तशरिक़ 'जोसेफ हैमर (d. 1856 ई.)' की तह़क़ीक़ से 'Ancient Alphabets & Hieroglyphic Characters Explained' के नाम के साथ छप चुका था. इसकी पीडीएफ फाइल आर्काइव (archive) से डाउनलोड कर सकते हैं;

इसीलिए अ़ल्लामा पीर करम शाह अज़्हरी (d. 1998 ई.) लिखते हैं:
"ये जायज़ा, इस हक़ीक़त का मुँह बोलता सुबूत है कि जब मुसलमानों की यूनिवर्सिटियां इ़ल्मो फ़न के मोती लुटा रही थीं, उस वक़्त यूरोप पूरा सर से पांव तक जहालत में डूबा हुआ था. जब मुसलमान उ़लमा के क़लम से हज़ारों इ़ल्मी शाहपारे निकल रहे थे, उस वक़्त यूरोप की अक्सरियत किताब के नाम तक से ना-आशना थी."

ज़ियाउन् नबी, जिल्द न. 6, पेज न. 105, पब्लिकेशन: फ़ारूक़िया बुक डिपो, जामा मस्जिद (दिल्ली)

ये क़लम ही है जो लोगों के मरने के बाद भी उन्हें ज़िंदा रखता है, जो लोगों को अपनी बात कहने की खुली आज़ादी देता है, जिससे इंसान अपने दिल की बात अपने काग़ज़ के सीने में उतार सके;
इसीलिए अ़रबी में कहा जाता है:

"الْقَلَمُ أَحَدُ اللِّسَانَيْنِ"،

"क़लम, दो ज़ुबानों में से एक होता है."

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
08/06/21 ई.

और जिहाद को छोड़ दो!

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"إِذَا تَبَايَعْتُمْ بِالْعِينَةِ، وَأَخَذْتُمْ أَذْنَابَ الْبَقَرِ، وَرَضِيتُمْ بِالزَّرْعِ، وَتَرَكْتُمُ الْجِهَادَ، سَلَّطَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ ذُلًّا لَا يَنْزِعُهُ حَتَّى تَرْجِعُوا إِلَى دِينِكُمْ"،

"जब तुम सूदी तिजारत करने लग जाओ;

और बैलों की पूंछें पकड़े रहो;
और खेती से ही राज़ी रहने लगो;
और जिहाद को छोड़ दो;
तो अल्लाह तुम पर ऐसी ज़िल्लत डाल देगा,
कि उसे तब तक (तुम्हारे ऊपर से) न हटाएगा जब तक कि तुम अपने दीन (के अह़काम की मुकम्मल अदाएगी) की तरफ़ न पलट आओ."

अबू दाऊद, अब्वाबुल् इजारह, बाब: फ़िन् नह्यि अ़निल् ईनह, ह़दीस न. 3462, जिल्द न. 3, पेज न. 274, पब्लिकेशन: अल् मक्-तबतुल् अ़स्-रिय्यह (बेरूत)

एक आ़लिम का फ़र्ज़

जब राफ़िज़िय्यत का फ़ितना मुँह उठाने लगे, ख़ास तौर पर तब, अफ़ज़लुल् बशर बअ़दल् अम्बिया सय्यिदुना अबू बक्रे सिद्-दीक़ (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) की अफ़ज़लिय्यत का ज़िक्र डंके की चोट पर किया जाएगा,
इन्-शा अल्लाह;

ख़ुसूसन् शैख़ैन करीमैन व सय्यिदुना अमीरे मुआ़वियह (रद़ियल्लाहु अ़न्हुम्), और उ़मूमन् दूसरे स़ह़ाबा की शान में भौंकने वाले किलाबुर् रफ़ज़ह (राफ़िज़ी कुत्ते), और इनकी इस ख़बासत पर ख़ामोश बैठने वाले अपने लोग, ज़रा देखें तो, कि आक़ा (ﷺ) ने क्या इरशाद फ़रमाया:

"إِذَا ظَهَرَتِ الْفِتَنُ، أَوْ قَالَ: الْبِدَعُ، وَسُبَّ أَصْحَابِي، فَلْيُظْهِرِ الْعَالِمُ عِلْمَهُ، فَمَنْ لَمْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لَا يَقْبَلُ اللَّهُ لَهُ صَرْفًا وَلَا عَدْلًا"،

"जब फ़ितने (या बिद्अ़तें) सर उठा लें, और मेरे स़ह़ाबा को बुरा कहा जाने लगे, तो आ़लिम को चाहिए कि अपना इ़ल्म ज़ाहिर करे; और जिस (आ़लिम) ने ऐसा नहीं किया, तो उसपर अल्लाह, फरिश्तों, और तमाम लोगों की लअ़नत है. अल्लाह उसकी न कोई नेकी क़ुबूल करेगा, न कोई स़दक़ा."

अल् जामिअ़ लि अख़्लाक़िर् रावी व आदाबिस् सामिअ़ (लिल् इमाम ख़त़ीब अल् बग़दादी), ह़दीस नं. 1354, जिल्द नं. 2, पेज नं. 118, पब्लिकेशन: मक्-तबतुल् मआ़रिफ़ (रियाद़)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
01/02/21 ई.

पुरानी साज़िशें रंग लाती हुईं

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री 'विलियम एवर्ट ग्लैडस्टान (d. 1898 ई.)' ने ब्रिटिश पार्लियामेंट के 'दारुल् अ़वाम (House of commons)' में खड़े होकर, हाथ में क़ुरआन लेकर लोगों से मुख़ात़ब होकर कहा:
"इस्लामी मुल्कों में हमारी नयी आबादियों के लिए दो चीज़ें ख़तरा हैं, और हमारे लिए ज़रूरी है कि हम हर क़ीमत पर इन दोनों चीज़ों को स़फ़ह़ा-ए-हस्ती से मिटा दें: इनमें एक ये किताब (क़ुरआन) है",_
फिर वो थोड़ी देर ख़ामोश रहा, पूरब की तरफ़ मुँह किया और अपने बाएं हाथ से पूरब की तरफ़ इशारा करके बोला:
"और (दूसरी चीज़) ये कअ़बा है".

क़ुवश् शर्रिल् मुतह़ालिफ़ह: अल् इस्तिशराक़, अत् तब्शीर, अल् इस्तिअ़मार; अज़: शैख़ मुह़म्मद दह्हान (फ़ार्मर एडीटर अज़्हर यूनिवर्सिटी), पेज न. 27

वो हमारी ज़िंदगी से क़ुरआने करीम को दूर करने में काफ़ी ह़द तक कामयाब हो चुके हैं;
जिस में सबसे असरदार खेल ये है कि इसकी आयात पर तरह-तरह के बेजा एतराज़ात उठाकर कमज़ोर ईमान वालों को इसके आसमानी किताब होने के बारे में शक में डाल दिया जाए;
और नतीजा हमारे सामने है...!

बुज़ुर्गों की बातें

अक्सर लोग मज़्हबे शाफ़िई के एक जलीलुल् क़द्र इमामे मुत़्लक़ 'इल्किया हर्रासी (d. 504 हि.)' के नाम में ग़लती करते हैं. कोई 'अल्किया' पढ़ता है, तो कोई 'इल्कया' पढ़ता है, तो कोई 'अल्कया', जबकि सही तलफ़्फ़ुज़ यही है जो हमनें लिखा: 'इल्किया हर्रासी', अ़रबी के ए़तबार से 'इल्किया अल्-हर्रासी' पढ़ें.

इमाम इस्नवी शाफ़िई (d. 772 हि.) ने अपनी किताब 'अल् मुहिम्मात फ़ी शरह़िर् रौद़ति वर् राफ़िई' के मुक़द्दमा में लिखा:

"إلْكِيَا بهمزة مكسورة، ولام ساكنة، ثم كاف مكسورة أيضاً"،
"'इल्किया' हम्ज़ए मक्सूरह के साथ, और लाम साकिन, फिर काफ़ भी मक्सूर."

इसका मअ़ना अहले फ़ारस की ज़ुबान में 'बड़ी क़द्र वाला' होता है.
इमाम 'इल्किया हर्रासी' फ़िक़्हे शाफ़िई के बहुत बड़े इमाम हैं, जो इमामुल् ह़रमैन इमाम जुवैनी (d. 478 हि.) के शागिर्द हैं; फ़िक़्हे शाफ़िई में इन्हीं ने 'अह़कामुल् क़ुरआन' के नाम से तफ़्सीरे फ़िक़्ही लिखी, और फ़िक़्हे शाफ़िई को इस्तिदलाल के लिए क़ुरआन की ज़ुबान अ़त़ा की;

जलने वाले हर किसी के रहे और हर दौर में रहे,
इमाम इल्किया हर्रासी ने जब बग़दादे मुअ़ल्ला में 'मदरसा-ए-निज़ामिय्यह' जॉइन किया, और अपने इ़ल्मी व अ़मली जलवे बिखेरे तो इन पर ये इल्ज़ाम लगाया गया कि इल्किया, शीआ़ के इस्माई़ली फ़िर्क़े के बात़िनी गिरोह से तअ़ल्लुक़ रखते हैं. ये बात उड़ते ही वक़्त के सल्जूक़ी सुल्त़ान मुह़म्मद इब्ने मलिक शाह (सुल्त़ान तपार) ने आपको गिरिफ़्तार कर लिया और आप को पत्थरों से मारे जाने की सज़ा दी. क़रीब था कि सुल्त़ान के ज़रिए इमाम को शहीद कर दिया जाता, मगर वक़्त के 28वें अ़ब्बासी ख़लीफ़ा 'मुस्तज़्हिर बिल्लाह' ने सुल्त़ान को रोका और इमाम की तरफ़ से गवाही दी, कि वो इस इल्ज़ाम से बरी हैं.

इस जलीलुल् क़द्र इमामे मुत़्लक़ का ज़िक्र सबसे पहले मैंने अपने उस्ताद, आ़लिमे जलील, मुह़द्दिसे नबील, शैख़ अस्लम नबील अज़्हरी (नफ़अ़नल्लाहु बि-इ़ल्मिहिल् ग़ज़ीर) की ज़ुबान से सुना. फिर आ़ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) के फ़िक़्ही बह़रे ज़ख़्ख़ार 'फ़तावा रज़विय्यह' की 27वीं जिल्द में पढ़ा, जहां इमामे अहले सुन्नत ने ग़ैर मुक़ल्लिदीन के बड़े अब्बू 'मियां नज़ीर हु़सैन देहलवी' के एक फ़तवे से इल्ज़ामी जवाब देते हुए, इसकी इबारत को मुक़र्रर रखा;
अल्लाह तआ़ला हम पर इन अ़ज़ीम बुज़ुर्गों का ख़ूब-ख़ूब फ़ैज़ान जारी फ़रमाये;
आमीन बिजाहि ह़बीबी (ﷺ)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
02/06/21 ई.

लरज़ते क़दम

हु़ज़ूर ह़ाफ़िज़े बुख़ारी सय्यिद शाह अ़ब्दुस़् स़मद चिश्ती सहसवानी (d. 1905 ई.) ने बद्-मज़्हबों की कश्-मकश वाली ह़ालत के बारे में तह़रीर फ़रमाया:

"सबात[1] और क़ियाम,
एक ह़ाल और एक मक़ाल[2] पर,
इन्हें[3] नहीं होता...!"

तबुईदुश् शयात़ीन बि-इम्दादि जुनूदिल् ह़क़्क़िल् मुबीन,[4] पेज न. 37, पब्लिकेशन: ताजुल् फ़ुह़ूल् अकैडमी (बदायूं), नया एडीशन, 1433 हि. / 2012 ई.

---

[1] अड़े रहना/साबित-क़दम रहना

[2] बात

[3] बद्-मज़्हबों

[4] ये किताब: _"शैख़ इब्ने तैमिय्यह के अ़क़ाइदो अफ़्कार"_ के नाम से मशहूर है.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
13/06/21 ई.

इल्ज़ामे ख़स़्म

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन 3:93 में इरशाद फ़रमाया:

"كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ إِسْرَائِيلُ عَلَىٰ نَفْسِهِ مِن قَبْلِ أَن تُنَزَّلَ التَّوْرَاةُ قُلْ فَأْتُوا بِالتَّوْرَاةِ فَاتْلُوهَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ".

"सब खाने बनी इस्राईल को ह़लाल थे,

मगर वो जो यअ़क़ूब ने अपने ऊपर ह़राम कर लिया था,
तौरात उतरने से पहले;
तुम फ़रमाओ: _'तौरात लाकर पढ़ो, अगर सच्चे हो'_."
[कंज़ुल् ईमान]

इस आयत की तफ़्सीर में ह़ज़रत स़दरुल् अफ़ाज़िल सय्यिद नई़मुद्-दीन मुरादाबादी (अ़लैहिर्रह़मह) लिखते हैं:

"ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम (ﷺ) उम्मी (untutored) थे; बावजूद इसके, यहूद को तौरात से इल्ज़ाम (counter response) देना, और तौरात के मज़ामीन से इस्तिदलाल फ़रमाना, आपका मुअ़जिज़ह और नुबुव्वत की दलील है; और इससे आपके वह्बी और ग़ैबी उ़लूम का पता चलता है."

तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल् इ़र्फ़ान, पेज न. 99, ह़ाशिया न. 173, पब्लिकेशन: मज्लिसे बरकात, मुबारकपुर (आज़मगढ़)

इससे समझ में आता है कि कुफ़्फ़ार को उनकी ही किताबों से इल्ज़ामी जवाब (counter response) देना, मेरे आक़ा (ﷺ) की सुन्नते मुबारकह है.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
22/06/21 ई.

एक अहम मस्अला

नमाज़ में नमाज़ी का रुख़ जिधर होता है, उसमें दो चीज़ें हैं:

बिल्कुल कअ़बा शरीफ़ की सीध में हो;
या बिल्कुल कअ़बा शरीफ़ की सीध में न हो, बल्कि सिर्फ़ कअ़बा की दिशा (सम्त/direction) की तरफ़ हो;

पहली सूरत मुस्तह़ब्ब है, और दूसरी जायज़ है;
यानी:
अगर किसी ने धोखे से बिल्कुल कअ़बा शरीफ़ की सीध में मुँह न किया, बल्कि सिर्फ़ उसकी दिशा की तरफ़ किया, तब भी उसकी नमाज़ बिना किसी कराहत के हो जाएगी;

ऐसी हालत में नमाज़ तब तक नहीं टूटेगी, जब तक कि नमाज़ पढ़ने वाला कअ़बा शरीफ़ की दिशा में दाएं या बाएं साइड में घूमने पर 45° के अंदर ही रहे;
और अगर 45° से ज़्यादा घूम गया, तो नमाज़ टूट जाएगी;

इसकी मुख़्तसर तफ़्सील ये है:
एक दायरे में 360° होती हैं, और दिशाएं 4 होती हैं, तो चारों तरफ़ बांटने पर हर 90°-90° हुई;
यानी एक दिशा 90° पर मुश्तमिल होती है.
तो क़िब्ला जिस दिशा में होगा वो भी 90° पर मुश्तमिल होगी, तो बिल्कुल कअ़बा शरीफ़ के 45° दाएं और 45° बाएं तक जिहते क़िब्ला कहलाएगी;

इमामे अहले सुन्नत (अ़लैहिर्-रह़मह) लिखते हैं:
"हर जिहत का हुक्म, उसके दोनों पहलुओं में 45-45 दर्जे (डिग्री) तक रहता है, जिस तरह नमाज़ में इस्तिक़्बाले क़िब्ला."

फ़तावा रज़विय्यह, 4:608, पब्लिकेशन: रज़ा फाउंडेशन (लाहौर)

मलिकुल् उ़लमा इमाम कासानी ह़नफ़ी (d. 587 हि.) लिखते हैं:

"لِأَنَّ قِبْلَتَهُ حَالَةَ الْبُعْدِ جِهَةُ الْكَعْبَةِ وَهِيَ الْمَحَارِيبُ لَا عَيْنُ الْكَعْبَةِ"،

"क्यूंकि कअ़बा से दूरी की हालत में,
कअ़बा की दिशा ही क़िब्ला है;
और वो मस्जिद की मिह़राब है, न कि सीधा कअ़बा."

बदाइउ़स् स़नाइअ़, 1:129, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), दूसरा एडीशन, 1406 हि. /1986 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
08/07/21 ई.

इ़ल्मे कलाम में हुक्म

इ़ल्मे कलाम में हुक्म (judgment/legal value) की तीन क़िस्में होती हैं:
1. अ़क़्ली (Rational)
2. आ़दी (Habitual)
3. शरई़ (Legal)
इस सब्जेक्ट में सिर्फ़ पहले वाले हुक्म, यानी 'अ़क़्ली (Rational)' से बहस की जाती है;
फिर इसी 'हुक्मे अ़क़्ली (Rational judgment)' को तीन क़िस्मों में किया गया:
1. वाजिब (Necessary)
2. मुम्किन/जाइज़ (Possible/achievable)
3. मुहाल/मुस्तह़ील (impossible/unachievable)
जिसने इन्हें ध्यान में रखा वो आगे सारी बहसें समझने में आसानी महसूस करेगा;

और बुज़ुर्गों ने फ़रमाया:
"इस 'हुक्मे अ़क़्ली (Rational judgment)' की तीनों क़िस्मों 'वाजिब', 'मुम्किन' और 'मुह़ाल' का इ़ल्म हासिल करना हर बालिग़ समझदार पर 'फ़र्ज़े ऐ़न' है."

अल् मुअ़तक़दुल् मुन्तक़द, पेज न. 12-14, पब्लिकेशन: रज़ा अकैडमी (मुंबई), 1420 हि.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
10/09/21 ई.

हिदायह: फ़िक़्हे ह़नफ़ी की एक अ़ज़ीम किताब

"....दर्से निज़ामी में 'हिदायह (फ़ी शरहि़ बिदायतिल् मुब्तदी)' इ़ल्मे फ़िक़्ह की वो आ़ला तरीन किताब है, जिसकी हैबत से स्टूडेंट घबरा जाता है. मगर जब उसे किसी माहिर उस्ताद की निगरानी में पढ़ता है, तो उसे पढ़ने और समझने के बाद एक ख़ास क़िस्म का सुरूर व इत़्मिनान हासिल होता है. ये किताब फ़िक़्हे ह़नफ़ी की एक बहुत मशहूर व मुअ़तबर किताब है, जिसे 'इमाम बुरहानुद्-दीन फ़रग़ानी मरग़ीनानी ह़नफ़ी (d. 593 हि. / 1197 ई.)' ने लिखा. इ़ल्मे फ़िक़्ह के अक्सर टॉपिक पर, इस किताब में तफ़्सीली मसाइल क़ुरआन, ह़दीस, इज्माअ़ और क़ियासे शरई़ की रौशनी में देखे जा सकते हैं;

इस फ़िक़्ही इन्साइक्लोपीडिया में एक बुक है 'किताबुन् निकाह़ (كتاب النكاح/Book of Marriage)', इसके अन्दर एक 'बाब (chapter)' है जिसका टाइटल है: 'बाबुल् औलिया वल् अक्फ़ाअ (باب الأولياء

والأكفاء/Chapter of Guardians)', इस बाब के अंदर एक 'फ़स्ल (Section)' है जिसका नाम है: 'फ़स्ल फ़िल् कफ़ाअह (فصل فى الكفاءة/Section about Equivalence or Parity)', जिसे आ़म बोलचाल में 'कुफ़ू' भी कहते हैं, सही लफ्ज़ 'कुफ़्व (Parity)' है;

इसमें ये बताया गया है कि शादी जब की जाए, तो लड़का और लड़की नसब, दीन, माल और पेशा में, जहां तक हो सके, बराबर हों. ताकि एक दूसरे को समझ सकें, एक दूसरे की ज़रूरत पूरी कर सकें, एक दूसरे को ह़क़ीर (कमतर) न समझें. ये बात बिल्कुल ज़ाहिर है, और हर शख़्स जानता है कि अगर लड़की किसी ऐसे ख़ानदान की हुई जो मुआ़शरे में बड़ा ऊंचा ख़ानदान समझा जाता है, और लड़का किसी ऐसे ख़ानदान का हुआ जिसे लोग कमतर समझते हैं, तो दोनों के दरमियान सुलह रहना मुश्किल है; इसी तरह अगर लड़की बड़े घर की हुई, तो ग़रीब घर का लड़का उसकी हर ख़्वाहिश को पूरा नहीं कर सकता, तो ऐसे लड़के से अमीर लड़की की बनना मुश्किल है वग़ैरह वग़ैरह, और ऐसा अक्सर होता है...!

तो मुआ़शरे में फैले हुए इस ऊँच-नीच के निज़ाम की बुनियाद पर, शादी के बाद लड़का और लड़की में झगड़ा न हो, हमेशा प्यार-मुह़ब्बत रहे, दोनों एक दूसरे को अपने से अच्छा समझें, एक दूसरे को इ़ज़्ज़त दें, अपने से कमतर न समझें, इसीलिए इस 'कुफ़ू/कफ़ाअत' के मसअले को रखा गया है. जिसने भी 'हिदायह' पढ़ी होगी, तो वो जानता होगा कि इस फ़स्ल के शुरू में ही इस 'कफ़ाअत' के मसअले का मक़सद इस तरह लिखा है:

...."لأن انتظام المصالح بين المتكافئين عادة"!...

"....क्यूंकि सुलह का इंतिज़ाम, आमतौर पर बराबर वालों में ही हो पाता है...!"

हिदायह, किताबुन् निकाह़, बाबुल् औलिया वल् अक्फ़ाअ, फ़स्ल फ़िल् कफ़ाअह, जिल्द न. 1, सफ़ा न. 195, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरास़िल् अ़रबिय्यि (बेरूत)

इसी मसअला-ए-कफ़ाअत को लेकर कुछ जाहिल क़िस्म के लोग, जिन्हें अरबी की 'ऐ़न (ع)', उर्दू का 'अलिफ़ (ا)' और हिदायह का 'हा (ه)' नहीं आता, इस अ़ज़ीम किताब को 'मनु स्मृति' जैसी भेदभाव से भरी हुई किताब से तश्बीह दे रहे हैं. कुछ दिन पहले एक जाहिले मुत़्लक़, नाम निहाद मुसलमान की पोस्ट देखी जिसपर कुछ इस तरह से लिखा हुआ था: "हिदायह: मुसलमानों की मनु स्मृति" (अस्तग़्फ़िरुल्लाह)!

यानी मैंने: "कहाँ राजा भोज, और कहां गंगू तेली", की महसूस मिसाल अपनी आँखों से देख ली!
जब किसी के मुक़द्दर में हलाकत ही लिखी हो, तो कौन है जो उसे बचा सकता है? अपनी मौरूसी जहालत को इ़ल्म समझना, सबसे बड़ी जहालत है. जब जहालत विरासत में ही मिली है तो अब कौन है जो इ़ल्म की बात करे?
ऐसे लोगों को देखकर मुझे 'हज़रत शैख़ सअ़दी शीराज़ी (अ़लैहिर्रह़मह)' का एक शिअ़र याद आ जाता है, जो ऐसों पर बिल्कुल फिट बैठता है:

"خِشتِ اوّل چوں نہد معمار کج؛
تا ثریا مے رَوَد دیوار کج"،

"जब मिस्त्री पहली ईंट ही टेड़ी रख दे; तो सुरय्या (तारे) तक वो दीवार टेड़ी ही जाती है".....!"

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
20/08/20 ई.

वह्हाबिय्यह का जह्-ले मुरक्कब

हम हमेशा से कहते चले आए हैं कि मीलादुन्-नबी (ﷺ) मनाओ, चाहें किसी भी तारीख़ में हो.
रबीउ़न् नूर का महीना आते ही, कुछ 'वह्हाबी/देवबंदी' सोशल मीडिया पर एक पोस्ट बहुत शेयर करना शुरू कर देते हैं, जिस पर लिखा हुआ है कि:

"अ़ाला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह) की तहक़ीक़ के मुताबिक़, आक़ा (ﷺ) की तारीख़ विलादत (पैदाइश की तारीख़) '8 रबीउ़ल अव्वल' है, न कि '12 रबीउ़ल् अव्वल'. तो बरेलवियों को चाहिए कि मीलादुन्-नबी '12 रबीउ़ल् अव्वल' को न मनाकर, '8 रबीउ़ल् अव्वल' को मनाएं. चूंकि यही बरेलवियों के 'अ़ाला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह)' की तहक़ीक़ है."

अब आइए, 'वह्हाबियों/देवबंदियों' के इस बेजा एतराज़ का जायज़ा लेते हैं. सबसे पहले देखना ये है कि 'अ़ाला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह)' ने मीलादुन्नबी (ﷺ) की तारीख़ के बारे में क्या तहक़ीक़ पेश की है, और साथ में ये भी देखना है कि आपका फतवा किस क़ौल पर है?

'अ़ाला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह)' ने इस टॉपिक पर एक मुस्तक़िल् रिसाला (Booklet) लिखा, जिसका तारीख़ी नाम: 'नुत़्क़ुल् हिलाल बिअर्ख़ि विलादिल् हबीबि वल् विसाल (1317 हिजरी)' रखा, जो 'इमाम अह़मद रज़ा अकैडमी, बरेली शरीफ़' से छपने वाले 'फतावा रज़विय्यह' की जिल्द

न. 20, पेज न. 501-516 पर, और 'रसाइल-ए-रज़विय्यह' की जिल्द न. 37 में रिसाला न. 205 पर देखा जा सकता है;

इस में 'आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह)' ने आक़ा (ﷺ) की विलादत के मुतअ़ल्लिक़ चंद सवालों के जवाब तह़रीर किए. इस रिसाले (Booklet) में 'आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह)' ने साफ़-साफ़ लिखा है कि विलादत की तारीख़ के मुतअ़ल्लिक़ उ़लमा में इख़्तिलाफ़ है, मगर सबसे मशहूर और मुअ़तबर क़ौल '12 रबीउ़ल् अव्वल' ही है.

'आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह)', सात क़ौल नक़्ल फरमा कर , लिखते हैं:
"इसमें अक़्वाल बहुत मुख़्तलिफ़ हैं. दो, आठ, दस, बारह, सत्तरह, अठारह और बाइस [2, 8, 10, 12, 17, 18 & 22]; सात क़ौल हैं. मगर अश्हर, अक्सर, मअख़ूज़ व मुअ़तबर 12 (रबीउ़ल अव्वल) ही है."
फतावा रज़विय्यह, 20:507

देखें हज़रात!
कितनी साफ़ इ़बारत इन 'वह्हाबियों/देवबंदियों' को नज़र न आई, बल्कि सिर्फ़ अपने मतलब की बात ही दिखी;
'आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह)' आगे लिखते हैं:
"मक्का मुअ़ज़्ज़मह में हमेशा इसी तारीख़, मकाने मौलिदे अक़्दस की ज़ियारत करते हैं. जैसा कि 'मदारिजुन्-नुबुव्वह', और 'अल्-मवाहिबुल् लदुन्नियह', 1:142 में है, और ख़ास इस मकाने जन्नत निशान में इसी तारीख़, मज्लिसे मीलादे मुक़द्दस होती है."
फतावा रज़विय्यह, 20:507

इसके बाद 'आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह)' 12वीं तारीख़ की ताईद में दलीलें

ज़िक्र करके लिखते हैं:
"इमाम क़स्त़ल्लानी 'अल्-मवाहिबुल् लदुन्निय्यह' में, और इमाम ज़ुरक़ानी इसकी शरह में, 12 रबीउ़ल् अव्वल ही को मशहूर क़ौल लिखते हैं. यही क़ौल साहिबे मग़ाज़ी मुह़म्मद इब्ने इस्ह़ाक़ का है, और यही इब्ने कसीर ने भी कहा है. 'शरह हम्ज़िय्यह' में भी 12वीं रबीउ़ल् अव्वल को मशहूर क़ौल बताया, और लिखा, कि इसी पर उम्मत का अ़मल रहा है."
फतावा रज़विय्यह, 20:507

अब क़ारिईने किराम, ज़रा इंसाफ से बताएं कि:
1. आख़िर ये तमाम दलाइल नज़रअंदाज़ करके सिर्फ़ 8वीं रबीउ़ल अव्वल का क़ौल लेकर शोर मचाना, क्या लोगों को बहकाने का नया हथियार नहीं है?

2. अगर हक़ बोलने का दावा ज़्यादा ही है तो फिर 'आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह)' की पूरी तह़क़ीक़, और मुकम्मल फ़तवा लोगों तक क्यूँ न पहुंचाया गया?

3. क्या ये वही पुरानी मौरूसी शैतानी चाल नहीं, जो इन्हें इनके अकाबिर से विरासत में मिली है?
अब सवाल ये है कि 'आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह)' ने आक़ा (ﷺ) की तारीख़े विलादत 'आठ रबीउ़ल् अव्वल' क्यूँ बताई?

इसका जवाब ये है कि 'आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह)' ने आक़ा (ﷺ) की तारीख़े विलादत के मुतअ़ल्लिक़ जहां सात क़ौल ज़िक्र किए हैं, वहीं ये भी फ़रमाया है कि 'इ़ल्मे ज़ीज (Astronomical Almanac)' के उ़लमा के नज़दीक 8वीं रबीउ़ल अव्वल ही सही है, और इसी पर उनका इज्माअ़ है.

फिर आगे 'आला हज़रत (अलैहिर्रहमह)' फ़रमाते हैं, कि:
"हमने भी जब 'इल्मे ज़ीज (Astronomical Almanac)' की रौशनी में हिसाब लगाया, तो 8वीं रबीउल् अव्वल ही निकली."
फतावा रज़विय्यह, 20:507

इसी इबारत को देख कर 'वह्हाबियों/देवबंदियों' ने मेंढ़कों की तरह फुदकना शुरू कर दिया. मगर इन्हें क्या पता कि 'इल्मे ज़ीज (Astronomical Almanac)' होता क्या है, ये तो इसकी A, B, C, D से भी वाक़िफ़ नहीं;

अगर इसी इबारत से एक-दो लाइन और आगे बढ़ते तो इन्हें अपने इस बेजा एतराज़ की कलई खुलती हुई नज़र आ जाती, 'आला हज़रत (अलैहिर्रहमह)' आगे लिखते हैं:
"और शक नहीं कि 'तलक़्क़िल् उम्मति बिल् क़बूल' के लिए शान-ए-अज़ीम है."
फतावा रज़विय्यह, 20:507

कुछ लाइन बाद मज़ीद लिखते हैं:
"ईद-ए-मीलाद, जो कि सबसे बड़ी ईद है;
अक्सर मुसलमानों के क़ौल व अमल के मुताबिक़ होना ही बेहतर है."
फतावा रज़विय्यह, 20:508

सुब्हानल्लाह (ﷻ);

वह्हाबियो!
देखा;
कैसे तुम्हारी धज्जियां उड़ा दी 'आला हज़रत (अलैहिर्रहमह)' ने, और

फ़ैसला फ़रमा दिया कि उम्मत के अक्सर लोगों का अ़मल '12वीं रबीउ़ल् अव्वल' पर ही है. तो जिस चीज़ को उम्मते मुस्लिमह ख़ुशी व रज़ा से क़ुबूल कर ले, उसी को 'तलक़्क़िल् उम्मति बिल्-क़बूल' कहते हैं, जिसकी हुज्जत उसूल की किताबों से ज़ाहिर है;

4. तो 'आ़ला हज़रत (अ़लैहिर्रह़मह)' का 'इ़ल्मे ज़ीज (Astronomical Almanac)' के हिसाब से 8वीं रबीउ़ल् अव्वल को असह़्ह़ कहना, 12वीं रबीउ़ल अव्वल को मीलादुन्-नबी मनाने के मुनाफ़ी कैसे हो गया?

5. पूरी 'वह्हाबिय्यत' को 'चैलेंज' है वो (क़ियामत तक) ये दिखा दें कि 'आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह)' ने कहीं भी ये लिखा हो कि 8वीं रबीउ़ल अव्वल को ही मीलादुन्-नबी मनाना चाहिए, 12वीं को नहीं. चूंकि 12वीं को मनाना ग़लत है?

आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह), वह्हाबियों पर क़ियामते सुग़रा क़ायम करते हुए, आख़िर में फ़ैसला फ़रमाते हैं:
"ह़रमैन शरीफ़ैन, मिस्र, सीरिया, हिंदुस्तान, और दूसरे मुस्लिम मुल्कों में मुसलमानों का अ़मल 12वीं रबीउ़ल् अव्वल पर ही रहा है, लिहाज़ा इस पर ही अ़मल किया जाए. अगर तारीख़े विलादत 8, या बाफर्ज़े ग़लत 9, या कोई सी भी हो, तब भी 12 को ईद-ए-मीलाद करने से कौनसी मुमानअ़त है...?"
फतावा रज़विय्यह, 20:515-16

अल्लाहु अक्बर,
व लिल्लाहिल् ह़म्द;

6. वह्हाबियो...!
अब तो कुछ ज़रूर समझ आया होगा, या हठधर्मी अब भी औजे सुरय्या

पर है?

7. सुनो वह्हाबियो...!
अगर आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) की तह़क़ीक़ पर हमें ज़बर्दस्ती अ़मल कराने का तुम्हें इतना ही शौक़ है, तो 'हुसामुल् ह़रमैन (1324 AH)', 'अल्-मुस्तनदुल् मुअ़तमद (1320 AH)', 'तम्हीद-ए-ईमान (1326 AH)', 'अल्-कौकबतुश्शिहाबिय्यह (1312 AH)', 'अल्-फ़र्क़ुल् वजीज़ (1318 AH)', 'सल्लुस् सुयूफ़िल् हिन्दिय्यह (1312 AH)', 'अन्-नय्यिरुश् शिहाबी (1309 AH)', 'अस्सह्मुश् शिहाबी (1325 AH)', जैसी किताबों का भी प्रचार कर दो, आख़िर 'आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह)' की इन किताबों का नाम सुनते ही तुम्हारी साँस अटक क्यूँ जाती है?

8. चलो ये भी छोड़ो...!
ये बताओ कि तारीख़े विलादत के मुतअ़ल्लिक़ तो तुमने 'आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह)' का 'इ़ल्मे ज़ीज (Astronomical Almanac)' के हिसाब से तह़क़ीक़ शुदा (8वीं रबीउ़ल् अव्वल वाला) क़ौल ले लिया, मगर 'तारीख़े वफ़ात' भी तो 'आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह)' ने 'इ़ल्मे ज़ीज (Astronomical Almanac)' के हिसाब से '13 रबीउ़ल् अव्वल' बताई है [फतावा रज़विय्यह, 20:509-16]. तुमने 'आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह)' की इस तह़क़ीक़ से अपनी आँखें क्यूँ बंद कर लीं?

9. शायद इसलिए कि अगर तारीख़े वफ़ात 13 रबीउ़ल् अव्वल साबित हो गई, तो तुम्हारा वह बेजा एतराज़ कि:
"इसी दिन विलादत हुई, और इसी दिन वफ़ात हुई, तो वफ़ात पर जश्न क्यूँ मनाते हो," जड़ से उखड़ जाएगा;
है न, क्यूँ 'वह्हाबी जी' कैसी कही?

वह्हाबिय्यह पर हुज्जत तमाम हुई;

व लिल्लाहिल् ह़म्द अ़ला ज़ालिक!

मेरे आक़ा 'आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह)' ने जिस तरह विलादत के मुतअ़ल्लिक़ क़ौले मश्हूर (12 रबीउ़ल् अव्वल) पर, 'तलक़्क़िल् उम्मति बिल्-क़बूल' की बुनियाद पर, अ़मल करने का हुक्म दिया, और अपने 'इ़ल्मे ज़ीज (Astronomical Almanac)' वाले क़ौल (8 रबीउ़ल् अव्वल) को छोड़ दिया;
बिल्कुल इसी तरह 'आ़ला ह़ज़रत (अलैहिर्रह़मह)' ने वफ़ात की तारीख़ के बारे में भी क़ौले मश्हूर (12 रबीउ़ल् अव्वल) को इख़्तियार किया, और अपने 'इ़ल्मे ज़ीज (Astronomical Almanac)' वाले क़ौल (13 रबीउ़ल अव्वल) को छोड़ दिया;
अब वह्हाबिय्यह के लिए लम्हा-ए-फ़िक्रिया:

10. सुनो, अगर तुम तारीख़े विलादत के मुतअ़ल्लिक़ 'आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह)' के क़ौले मश्हूर (12 रबीउ़ल् अव्वल) पर अ़मल करने के हुक्म को छोड़कर, 'इ़ल्मे ज़ीज (Astronomical Almanac)' वाले क़ौल (8 रबीउ़ल् अव्वल) को तरजीह़ (Prefer) दोगे, तो तारीख़े वफात में क्यूँ नहीं?
11. अगर तुमने विलादत के बारे में क़ौले मश्हूर को छोड़ा, तो वफ़ात में क्यूँ नहीं?

12. अगर विलादत में 'इ़ल्मे ज़ीज (Astronomical Almanac)' वाले क़ौल को तरजीह़ दी, तो वफ़ात में क्यूँ नहीं?
अगर तुम्हें यही दोगुलापन पसंद है,
तो तुम्हारा दोगुलापन तुम्हीं को ज़ैब हो.

ह़ासिले कलाम:
यक़ीनन 'आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती

बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह)' ने 'ज़ीजात (Astronomical Almanac)' से 8 रबीउ़ल् अव्वल ही साबित की है, मगर अ़मल करने का हुक्म 12 रबीउ़ल् अव्वल पर ही दिया है;
अल्ह़म्दुलिल्लाहि ह़म्दन् कसीरन् कसीरा!

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
21/11/18 ई.

उनकी तो ये पुरानी अ़ादत है

उ़मूमन् आपकी तमाम मज़हबी चीज़ों में रुकावट पैदा करना, और ख़ुसूसन् आपकी नमाज़ों में ख़लल डालना, उनकी बहुत पुरानी अ़ादत है;
अल्लाह (ﷻ) ने क़ुरआन 8:35 में कुफ़्फ़ारे मक्कह के बारे में इर्शाद फ़रमाया:

"وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَّتَصْدِيَةً فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ"،

"और बैतुल्लाह के पास, उनकी नमाज़ सिर्फ़ सीटियाँ बजाना, और तालियां बजाना ही था. तो अपने कुफ़्र के बदले, अ़ज़ाब का मज़ा चखो."
[कंज़ुल् इ़र्फ़ान]
इस आयत की तफ़्सीर में, इमाम त़बरी, इमाम राज़ी, इमाम बग़वी, इमाम इब्ने कसीर, इमाम क़ुर्त़बी, इमाम इब्ने अ़ाशूर, और शैख़ त़न्त़ावी वग़ैरुहुम् ने ह़ज़रत मुजाहिद (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) का क़ौल ज़िक्र किया है कि:

"وإنما كانوا يصنعون ذلك ليخلطوا بذلك على النبي صلى الله عليه وسلم صلاته"،

"और वो ऐसा इसलिए करते थे, ताकि इसके ज़रिए, वो आक़ा (ﷺ) की नमाज़ में ख़लल डालें."

वो सीटियों, और तालियों से ख़लल डालते थे. मगर आज दूसरी चीज़ों के ज़रिए ख़लल डाला जा रहा है.

इसी तरह क़ुरआन 96:9 में अबू जहल की मक्कारी को बयान किया गया:

"اَرَءَیۡتَ الَّذِیۡ یَنۡہٰی عَبۡدًا اِذَا صَلّٰی"۔

"क्या तूने उस शख़्स को देखा, जो मना करता है बन्दे को, जब वो नमाज़ पढ़े."
[कंज़ुल् इ़र्फ़ान]

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
11/09/22 ई.

इन्हें हर बात ग़ुलू लगती है

क़सीद-ए-बुर्दह शरीफ़ के वो तीन शिअ़्र,
जो जाने वह्हाबिय्यह पर जलाले नुबुव्वत की बिजलियां बनकर गिरते हैं:

"دع ما ادعته النصارى في نبيهم؛
واحكم بما شئت مدحاً فيه واحتكم"،

"وانسب إلى ذاته ما شئت من شرف؛
وانسب إلى قدره ماشئت من عظم"،

"فإن فضل رسول الله ليس له؛
حدٌّ فيعرب عنه ناطقٌ بفم".

"ईसाईयों ने ह़ज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) के बारे में जो दावा किया था (कि वो ख़ुदा और उसके बेटे हैं), इसे छोड़ दो, और इसके अलावा आक़ा (ﷺ) की शान में जो चाहो कहो",

"आक़ा (ﷺ) की तरफ़ जो चाहो शरफ़ मन्सूब करो, और आपकी क़द्रो मन्ज़िलत को जितना चाहो उतना बुलंद कहो",

"क्यूंकि आपकी फ़ज़ीलत की ऐसी कोई ह़द नहीं, जिसे कोई बोलने वाला अपनी ज़ुबां से अदा कर सके."

इस क़सीदे के तमाम अश्आ़र, ऐसे प्यारे हैं, जो ख़ुद आक़ा (ﷺ) की बारगाह में मक़्बूल हुए हैं, जैसा कि तमाम कुतुब — जिनमें इमाम बूसीरी (d. 696 ई.), और इनके इस क़सीदे की तारीख़ का ज़िक्र है — में मौजूद है;

वह्हाबिय्यह के पापा-ए-आ़ज़म 'इब्ने अ़ब्दुल् वह्हाब नज्दी', और कई दूसरे गुरुघंटाल, जैसे: नास़िरुद्दीन अल्बानी, अ़ब्दुल् अ़ज़ीज़ इब्ने बाज़, इब्ने उ़सैमीन, इब्ने ह़सन आले शैख़, स़ालिह़ फ़ौज़ान, व स़ालिह़ मुनज्जिद (ख़ज़लहुमुल्लाहु) वग़ैरुहुम् ने इन अश्आ़र में भी ग़ुलू (excessiveness) बताकर, शिर्क साबित कर डाला.

शाने रसूले अकरम (ﷺ) को बयान करने के बारे में, क्या क़ाइदह होना चाहिए, आ़ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह) ने, एक लाइन में फ़ैसला कर दिया:

"बेशक, सिवा उलूहिय्यत[1], व मुस्तल्ज़माते उलूहिय्यत[2] के, सब फ़ज़ाइलो कमालात हु़ज़ूर (ﷺ) के लिए साबित हैं."
फतावा रज़विय्यह, 14:686

[1] Divinity (अल्लाह होना)
[2] Necessities of Divinity (अल्लाह के लिए जो चीज़ें ज़रूरी हैं.)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
16/04/21 ई.

लव जिहादः इस्लाम के ख़िलाफ एक घिनौनी साज़िश

'लव जिहाद' को इस्लाम का हिस्सा बताने वालों का हाल तो ये है कि वो ख़ुद के मज़हब से जाहिल व ग़ाफ़िल हैं, मगर इस्लाम के खिलाफ़ ऐसे चिल्लाते हैं जैसे कि इस्लाम के बारे में 'स्पेशलाइजेशन' किया हो;

आपसी 'लव अफेयर' को 'लव जिहाद' का नाम देकर इस्लाम से जोड़ने वाले और कीचड़ उछालने वाले शयात़ीन, इस्लाम की 'A', 'B', 'C', 'D' भी नहीं जानते. अगर जानते होते, तो क़ुरआन के इन पैग़ामात को ज़रूर देखते, जिनमें 'Interfaith Marriage' को ह़राम बताया गया है;

क़ुरआन 60:10 का एलान बहुत पहले हो चुका था —
मुस्लिम ख़वातीन, मुश्-रिकीन पर ह़राम हैं:

"لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ "!... ﴾

"न ये (मुस्लिम ख़वातीन) उन (मुश्-रिकीन मर्दों) के लिए ह़लाल हैं, और

न वो (मुश्-रिकीन मर्द) इन (मुस्लिम ख़वातीन) के लिए ह़लाल हैं...!"

इससे पहले क़ुरआन 2:221 में आ चुका:

"وَلَا تُنكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا"!... ۚ

"और मुश्-रिकों के निकाह में (अपनी लड़कियों) को मत दो, जब तक वो (मुश्-रिकीन) ईमान न लाएं...!"
बिल्कुल इसी तरह:
मुश्-रिकह औरतें, मुसलमान मर्दों पर ह़राम हैं.

..."وَلَا تُمْسِكُوا۟ بِعِصَمِ ٱلْكَوَافِرِ"!...

"...(इसी तरह) तुम भी काफ़िर औरतों को अपने निकाह़ में न रोके रखो...!"

ये भी इससे पहले क़ुरआन 2:221 में आ चुका:

"وَلَا تَنكِحُوا الْمُشْرِكَاتِ حَتَّىٰ يُؤْمِنَّ"!... ۚ
"और शिर्क वाली औरतों से निकाह न करो, जब तक मुसलमान न हो जाएं...!"

सिर्फ़ और सिर्फ़ ईमान वाला ही ईमान वाली के साथ होगा, और ईमान वाली ही ईमान वाले के साथ होगी;
इसी तरह ग़ैर मुस्लिम मर्द ग़ैर मुस्लिम लड़की के साथ होगा, और ग़ैर मुस्लिम लड़की ग़ैर मुस्लिम मर्द के साथ होगी;

क़ुरआन 24:26 ने पहले ही कहा था, कि:

"الْخَبِيثَاتُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَاتِ ۖ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ"!... ۚ

"गन्दियां, गंदों के लिए; और गन्दे, गन्दियों के लिए;
और सुथरियां, सुथरों के लिए; सुथरे, सुथरियों के लिए...!"
[कंज़ुल् ईमान]
तो पढ़ो,
इसे अच्छे से समझो,
और मक्कारी से बाज़ आओ!

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
09/12/20 ई.

वह्हाबिय्यह का मौरूसी इस्तिदलाले फ़ासिद

वह्हाबिय्यह की ये पुरानी आ़दत है कि 'कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन' और उनके 'बुतों' की मज़म्मत में नाज़िल होने वाली आयतों को, वो 'मुसलमानों' और अल्लाह के नेक बंदों, यानी 'नबियों और वलियों' पर चस्पा करते हैं, ये वही तरीक़ा-ए-ख़बीसा है जो उन्होंने अपने सरगनों, यानी 'मुह़म्मद इब्ने अ़ब्दुल् वह्हाब नज्दी तमीमी' और 'मौलवी इस्माईल देहलवी' से विरासत में पाया;

मिसाल के तौर पर, इस्माईल देहलवी के एक पैरोकार ने दावा किया कि:

"अल्लाह तआ़ला के अ़लावा किसी नबी, वली वग़ैरह को मदद के लिए पुकारना शिर्क है, क्योंकि ये सब अल्लाह के बेबस बंदे हैं, उन्हें किसी बात का कोई भी तसर्रुफ़ अल्लाह की जानिब से भी हासिल नहीं है।"

और दलील के तौर पर, क़ुरआने मजीद से सूरह ह़ज्ज की आयत नं. 73 पेश की, अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया:

"يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَن يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا لَهُ وَإِن يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنقِذُوهُ مِنْهُ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ".

और इस का तर्जमा ये किया, कि:
"लोगो! एक मिसाल बयान की जा रही है, ज़रा कान लगा कर सुन लो, अल्लाह के सिवा जिन जिनको तुम पुकारते रहे हो वो एक मक्खी भी तो पैदा नहीं कर सकते, गो सारे के सारे ही जमा हो जाएं बल्कि अगर मक्खी उनसे कोई चीज़ ले भागे तो ये तो उसे भी इस से छीन नहीं सकते, बड़ा बूदा है तलब करने वाला और बड़ा बूदा है वो जिससे तलब किया जा रहा है।"
क़ारिईने इ़ज़ाम..!
उ़लमा-ए-अहले सुन्नत व जमाअ़त ने, ऐसे एतराज़ात के, न जाने कितनी मर्तबा इन वह्हाबिय्यह को मुस्कित जवाबात दिए हैं मगर इन बेवक़ूफ़ों की मिसाल कुत्ते की पूँछ की तरह है कि कैसे भी सीधी नहीं होती. आईए अब देखते हैं कि:

1. इस आयत का सही मअ़ना व तर्जमा क्या है?
2. ये किस के हक़ में नाज़िल हुई?
3. इस आयत में 'अल्लज़ीन' व 'तद्ऊ़न' से कौन और क्या मुराद है?
4. कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन के हक़ में नाज़िल शुदा आयतों को मुसलमानों पर चस्पा करना कैसा है, और ऐसा करने वाले कौन हैं?

मुअ़ज़्ज़ज़ क़ारिईन...!
मुंदरिजह ज़ैल दलाइल को पढ़ने और समझने से, मज़कूरा बाला तमाम सवालात के जवाबात ख़ुद ही हासिल हो जाऐंगे, मुलाह़ज़ा फ़रमाएं:

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर में इसी आयत के तह़त फ़रमाया गया:

"يقول تعالى منبها على حقارة الأصنام وسخافة عقول عابديها "يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ"، أي لما يعبده الجاهلون بالله المشركون به، "فَاسْتَمِعُوا لَهُ"، أي أنصتوا وتفهموا، "إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَن يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا لَهُ"، أي لو اجتمع جميع ما تعبدون من الأصنام والأنداد على أن يقدروا على خلق ذباب واحد ما قدروا على ذلك".

तफ़्सीर इब्ने कसीर, सूरह ह़ज्ज, सूरत नं. 22 ،आयत नं. 73 ،जिल्द न. 5, सफ़ा नं. 397, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), 1419 हि.

2. तफ़्सीरे जलालैन में इसी आयत के तह़त फ़रमाया गया:

"إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ"، تعبدون؛ "مِن دُونِ اللَّهِ"، أَي غيره و هم الأصنام"!...

तफ़्सीरे जलालैन, सूरह ह़ज्ज, सूरत नं. 22, आयत नं. 73, सफ़ा नं. 286, पब्लिकेशन: मजलिसे बरकात, मुबारक पूर (आज़मगढ़)

3. तफ़्सीरे क़ुर्तबी में फ़रमाया गया:

"والمراد الأوثان الذين عبدوهم من دون الله".

तफ़्सीरे क़ुर्तबी, सूरह ह़ज्ज, सूरत नं. 22, आयत नं. 73, जिल्द नं. 14, सफ़ा नं. 447, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), 1427 हि. / 2006 ई.

4. तफ़्सीरे बग़वी में फ़रमाया गया:

"إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ"، يعني: الأصنام".

तफ़्सीरे बग़वी, सूरह ह़ज्ज, सूरत नं. 22, आयत नं. 73, जिल्द न. 5, सफ़ा नं. 400,

पब्लिकेशन: दारु त़ैबा (रियाद), 1411 हि.

5. तफ़्सीरे त़बरी में इसी आयत के तह़त फ़रमाया गया:

"إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا"، يقول: إن جميع ما تعبدون من دون الله من الآلهة والأصنام لو جمعت لم يخلقوا ذبابا في صغره وقلته، لأنها لا تقدر على ذلك ولا تطيقه، ولو اجتمع لخلقه جميعها"!....

तफ़्सीरे त़बरी, सूरह ह़ज्ज, सूरत नं. 22, आयत नं. 73, जिल्द नं. 16, सफ़ा नं. 635, पब्लिकेशन: दारु हिज्र (क़ाहिरा), 1422 हि. / 2001 ई.

मुह़तरम क़ारिईने किराम...!

इस बाब में दलाइल का अंबार लगाया जा सकता है, मगर तवालत से बचने के लिए, सिर्फ पाँच मुअ़तबर तफ़ासीर का हवाला दिया है. इन तमाम कुतुबे तफ़ासीर में इस आयत के मुतअ़ल्लिक़ यही कहा गया है कि ये आयत मुशरिकीन और उनके मअ़बूदाने बात़िलह के रद्द में नाज़िल हुई है, जिन्हें वो अल्लाह तआ़ला के अ़लावा पूजते थे.

अब एक-एक कर के मज़कूरा बाला सवालात के जवाबात समझे जा सकते हैं, ग़ौर फ़रमाएं:

1. इन तफ़ासीर की रोशनी में आयत का बिलकुल दुरुस्त तर्जमा वो है, जो आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्-रह़मह) ने किया है:

"ऐ लोगो! एक कहावत फ़रमाई जाती है, उसे कान लगा कर सुनो वो, जिन्हें अल्लाह के सिवा, तुम पूजते हो, एक मक्खी ना बना सकेंगे; अगरचे सब इस पर इकट्ठे हो जाएं; और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन कर ले जाये, तो इस से छुड़ा ना सकें. कितना कमज़ोर चाहने वाला, और वो जिसको चाहा." [कंज़ुल् ईमान]

2. ये आयत कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन के मअ़्बूदाने बात़िलह, यानी उनके बुतों की मज़म्मत में नाज़िल हुई है;

3. ये भी अज़्हर मिनश्-शम्स हो गया कि इस आयत में 'अल्लज़ीन' से मुराद बुत हैं, और 'तद्ऊन' से मुराद 'पूजना' है, न कि 'पुकारना', जैसा कि ऊपर बयान किया गया कि यहां 'तद्ऊन' जो है वो 'तअ़्बुदून' यानी इबादत व पूजने के मअ़्ना में है, न कि मह़ज़ पुकारने के मअ़्ना में; जैसा कि वह्हाबिय्यह का दावा है;

4. इमाम बुख़ारी (अ़लैहिर्-रह़मह) ने अपनी स़ह़ीह़ में ह़ज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उ़मर (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) का, ख़वारिज के बारे में, एक क़ौल तअ़्लीक़न् (बिला सनद) ज़िक्र फ़रमाया; आप फ़रमाते हैं:

"إِنَّهُمُ انْطَلَقُوا إِلَى آيَاتٍ نَزَلَتْ فِي الكُفَّارِ، فَجَعَلُوهَا عَلَى الْمُؤْمِنِينَ".

यानी: "ख़ारिजिय्यों ने कुफ़्फ़ार के ह़क़ में उतरी हुई आयतों को चुना, और उन्हें मुअमिनीन पर चस्पा किया."

इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी (अ़लैहिर्-रह़मह) ने इस क़ौल की सनद के मुतअ़ल्लिक़ 'फ़त्हुल् बारी' में लिखा, कि:

..."و سنده صحيح".

यानी: "इसकी सनद, स़ह़ीह़ है."

फ़त्हुल् बारी, 12:286

तो इस से मालूम हुआ कि कुफ़्फ़ार के हक़ में उतरने वाली आयात को, मुसलमानों पर चस्पा करना, ख़ारिजिय्यों का त़रीक़ा है, और ख़ारिजिय्यों

का अंजाम अहले इ़ल्म से छिपा नहीं; और इस वस्फ़ में वह्हाबिय्यह, ख़ारिजिय्यों का पूरा पूरा साथ देकर, भाईचारे का रिश्ता क़ायम करने में सरगर्म हैं।

"ولكن الوهابية قوم لا يعقلون".

(और लेकिन वह्हाबिय्यह ऐसी क़ौम हैं, जिन्हें अ़क़्ल नहीं.)
अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल हमें स़िरात़े मुस्तक़ीम पर हमेशा क़ायम रखे;
आमीन सुम्मा आमीन बिजाहि ह़बीबी (ﷺ)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
22/08/19 ई.

तीन अहम साज़िशों के बारे में

किसी क़ौम के आमतौर पर यही हिस्से होते हैं:
1. बच्चे;
2. लड़कियां/औरतें;
3. मर्द लोग,

अब मर्दों को दो हिस्सों में बांट सकते हैं:
(1) ख़ास़ मर्द,
जैसे: उ़लमा व दुनियावी पढ़े लिखे लोग;
(2) आ़म मर्द,
जैसे: किसान, दुकानदार वग़ैरह;

अब क़ुरआन 8:30 की सुनिए:

"وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ؕ وَيَمْكُرُوْنَ وَ يَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ"،

"और (ऐ मेरे नबी याद करो!), जब कुफ़्फ़ार तुम्हारे ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहे थे कि (या तो) तुम्हें क़ैद कर लें, या शहीद कर दें, या तुम्हें (तुम्हारे शहर से) निकाल दें; और वो अपनी साज़िशें कर रहे थे, और अल्लाह अपनी ख़ुफ़िया तदबीर (hidden planning) फ़रमा रहा था; और अल्लाह की ख़ुफ़िया तदबीर सबसे बेहतर है."

अब देखिए कि कुफ़्फ़ार कैसे हमारी क़ौम के हर हिस्से को दीमक की तरह खाकर खोखला कर रहे हैं:
1. बच्चे: कुफ़्फ़ार के स्कूल में एजुकेशन सिस्टम के ज़रिए, जहां उनकी मर्ज़ी का सिलेबस चल रहा है;

2. लड़कियां/औरतें: प्यार के जाल में फंसकर 'भगवा लव ट्रैप' के ज़रिए;

3.1 ख़ास़ मर्द: झूठे केस लगाकर, UAPA/NSA वग़ैरह के ज़रिए;
3.2 ७़ाम मर्द: मोब लिंचिंग के ज़रिए;

इस आयत में काफ़िरों की तीन अहम साज़िशों के बारे में बताया गया है:
[1]क़ैद,
[2]क़त्ल,
[3]जिलावतन (देशनिकाला);

आज भी दुश्मन यही चालें चल रहे हैं:
1. क़ैद: आज भी जेल हमारे लोगों से भरी जा रही है;
2. क़त्ल: मोब लिंचिंग आपके सामने है;
3. जिलावतन: CAA की तैयारी;

कुफ़्फ़ार जब ताक़त में आते हैं तो, देखो, ज़रा ग़ौर करो, कि क़ुरआन 60:2 ने जो कह दिया, वो तुम्हारी आँखों के सामने है:

"إِن يَثْقَفُوكُمْ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَلْسِنَتَهُم بِالسُّوءِ وَوَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ"،

"अगर वो (कुफ़्फ़ार) तुम पर क़ाबू पा लें, तो वो तुम्हारे खुले दुश्मन साबित होंगे; और तुम पर दस्त-दराज़ी व ज़ुबान-दराज़ी करेंगे. उनकी दिली ख़्वाहिश है कि तुम भी (इस्लाम को छोड़कर) काफ़िर हो जाओ."

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
04/02/22 ई.

हिन्दू धर्म संसद

क़ुरआन 60:2 ने जो बहुत पहले कह दिया था, वो आज हमारी आँखों के सामने है:

"إِن يَثْقَفُوكُمْ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَلْسِنَتَهُم بِالسُّوءِ وَوَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ"،

"अगर वो (कुफ़्फ़ार) तुम पर क़ाबू पा लें, तो वो तुम्हारे खुले दुश्मन साबित होंगे;
और तुम पर दस्त-दराज़ी व ज़ुबान-दराज़ी करेंगे;
उनकी दिली ख़्वाहिश है कि तुम भी (इस्लाम को छोड़कर, उनकी तरह) काफ़िर हो जाओ."
क़ुरआन 8:30

"وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ"ؕ

"और (ऐ मेरे नबी!), याद करो जब काफ़िरों ने तुम्हारे ख़िलाफ़ साज़िश की, कि:
तुम्हें क़ैद कर लें,
या शहीद कर दें,
या तुम्हें (तुम्हारे वत़न से) निकाल दें."

मुसलमानों के ख़िलाफ़ कुफ़्फ़ार की ये तीन साज़िशें हमेशा से चली आ रही हैं:

1. जेल में डालना
2. क़त्ल कर देना
3. देश से निकालना

ये है बीमारी, और अब देखिए इसका क़ुरआनी इलाज:
क़ुरआन 8:59-60 —

"وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا ۚ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ وَأَعِدُّوا لَهُم مَّا اسْتَطَعْتُم مِّن قُوَّةٍ وَمِن رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَآخَرِينَ مِن دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُوا مِن شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ"،

"और हरगिज़ काफिर इस घमंड में न रहें कि वो हाथ से निकल गए, बेशक वो आजिज़ नहीं कर सकते;
और (ऐ मुसलमानो!), उन (काफ़िरों) के लिए तैयार रखो जो क़ुव्वत तुम्हें बन पड़े,
और जितने घोड़े बांध सको, कि उनसे उनके दिलों में धाक बिठाओ, जो अल्लाह के दुश्मन है और तुम्हारे दुश्मन हैं, और उनके सिवा कुछ औरों के दिलों में, जिन्हें तुम नहीं जानते, अल्लाह उन्हें जनता है;

और अल्लाह की राह में जो कुछ खर्च करोगे तुम्हें पूरा दिया जाएगा, और किसी तरह घाटे में नहीं रहोगे."

क़ुरआन 4:71 —

"يَآَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا"،

"ऐ ईमान वालो!
होशियारी से काम लो;
फिर दुश्मन की तरफ़, थोड़े-थोड़े होकर निकलो, या इकट्ठे होकर."

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
24/12/21 ई.

ख़ादिमुल् ह़रमैन और गुस्ताख़ों की मदद?

अरे सुना आपने.....

जिसने सीरिया के मुसलमानों को आज तक एक गेहूं का दाना भी नहीं भेजा; फ़िलीस्तीन के मुसलमानों के लिए कभी एक पैसा भी नहीं भेजा; जिसने यमन के लाखों मुसलमानों को अपनी मिसाइलों के ज़रिए हलाक कर डाला; वही सऊ़दी, हिन्दुस्तान के काफ़िराने ह़र्बी को टनों आक्सीजन भेज रहा है;

ये अ़रबी हिजाज़ी नहीं, जिनसे वफ़ा की उम्मीद हो, बल्कि ये तो नज्दी हैं;

सऊ़दी की ये वही नज्दी हुकूमत है जो 1932 ई. में काफ़िरों ही के सपोर्ट से

काफ़िरों ही की ग़ुलामी के लिए तख़्ते इक़्तिदार पर आई;. और आजतक अपने काफ़िर आक़ाओं की नमक-ह़लाली का सुबूत देने में लगी हुई है. पहले इस्राइल व अमेरिका, और अब हिन्दुस्तान;

अरे कभी सोचा है आपने, कि:
हिन्दुस्तान की दोस्ती का दम भरने वाले इस्राइल और अमेरिका ने आक्सीजन क्यूँ नहीं भेजी? रूस या फ़्रांस ने क्यूँ नहीं भेजी? हाँ हाँ वही फ़्रांस, जिसके गुस्ताख़ाना ख़ाकों (Blasphemous Caricatures) ने पूरी दुनिया के मुसलमानों के सीने छलनी कर दिए, और आ़लमे इस्लाम उसकी मज़म्मत कर रहा था, तभी मोदी ने ट्वीट करके फ़्रांस को सपोर्ट किया. फिर यहां के काफ़िरों ने 'WeSupportFrance' का ट्रेंड भी चलाया;

यही तो समझना है अब मुसलमानों को, जो अब तक नहीं समझे;
क़ुदरते ख़ुदावंदी ने इनकी इसी काफ़िर-नवाज़ी और गद्दारी के सबब, इस्लाम की बागडोर सैंकड़ों सालों पहले ही इनसे छीन कर तुर्कों के हाथ में थमा दी;
नाम-निहाद इस्लामी मुल्कों में दुबई और सऊदी, ये दोनों ऐसे ग़द्दार मुल्क हैं, जिनसे किसी एक भी मज़्लूम मुसलमान के आंसू न पौंछे गए; इनकी आदत तो ये बन गयी है कि मुसलमानों के ज़ख्मों को कुरेदते हैं, और काफ़िरों को मरहम लगाने के लिए हर वक़्त तैयार रहते हैं;

अरे क्या नहीं सुना कि मेरे आक़ा (ﷺ) ने इनके बारे में बहुत पहले ही क्या इरशाद फ़रमाया था:

..."وَيْلٌ لِلْعَرَبِ مِنْ شَرٍّ قَدِ اقْتَرَبَ"،

"...हलाकत है अ़रबियों के लिए, उस बला के सबब,
जो क़रीब आ चुकी."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस न. 7059, जिल्द न. 9, पेज न. 48, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह़ (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1422 हि.

ये भी फ़रमाया मेरे आक़ा (ﷺ) ने:

"إِذَا ذَلَّتِ الْعَرَبُ ذَلَّ الْإِسْلَامُ"،

"जब अ़रब वाले ज़िल्लत के शिकार हो जाएंगे,
तो इस्लाम कमज़ोर हो जाएगा."

मुस्नदे अबी यअ़ला, ह़दीस न. 1881, जिल्द न. 3, पेज न. 402, पब्लिकेशन: दारुल् मअमून लित् तुरास (दमिश्क़), फ़र्स्ट एडीशन, 1404 हि. / 1984 ई.

मेरे आक़ा (ﷺ) ने एक जगह ये भी फ़रमाया:

"إِنَّ مِنَ اقْتِرَابِ السَّاعَةِ هَلَاكُ الْعَرَبِ"،

"अ़रब वालों की बरबादी,
क़ियामत की निशानियों में से है."

अल् मुअ़जमुल् औसत़, ह़दीस न. 2557, जिल्द न. 3, पेज न. 81, पब्लिकेशन: दारुल् ह़रमैन (क़ाहिरा)

इनकी बदबख़्ती ने इस्लाम और अहले इस्लाम को जो नुक़सानात पहुंचाये हैं, उनकी भरपाई मुश्किल है. ये ऐसी हक़ीक़त है कि जिसने भी इस्लामी तारीख़ सही से पढ़ी है वो इसे अच्छे से जानता है; मक्का शरीफ़ पर तसल्लुत़ जमाने वाले इस्माईली शीआ़ 'क़रामित़ह', जब 'ख़ादिमुल् ह़रमैन' नहीं हो सकते, तो आज के ये 'नज्दी' कैसे 'ख़ादिमुल् ह़रमैन' हो जाएंगे?

आह वह्हाबिय्यह!
तुम नामूसे रिसालत की ह़स्सासिय्यत को न समझ सके;

चाहिए तो ये था कि सऊदी यहां का 'इक़्तिसादी बायकाट (economical boycott)' करता, और एलान कर देता कि जब तक गुस्ताख़ को नहीं लटकाते हम तुम्हें कुछ भी नहीं भेजेंगे, जो पहले भेजते थे वो भी रोक लेंगे; मगर इसके बर ख़िलाफ़ टनों आक्सीजन....!

"और तुम पर मेरे आक़ा की इनायत न सही;
नज्दियो!
कलिमा पढ़ाने का भी इह़्सान गया."

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
27/04/21 ई.

मुसलमानों को इक़्तिसादी ख़त़रा

जो ह़ालात सौ साल पहले अ़ाला हज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह) के वक़्त में थे, वही हालात यकलख़्त पलट रहे हैं।

इस मुजद्दिदे क़ौमो मिल्लत ने, तक़रीबन सौ साल पहले ही, अपनी ख़ुदा-दाद सलाहियतों की बुनियाद पर इस क़ौमे मुस्लिम को, इन काफ़िरों की 'चालों' और उन के 'दज्ल' व 'फरेब' से आगाह किया था। मगर, आह स़द आह, हम ने इस अ़ज़ीम मुफ़क्किर को एक ही शुअ़बे तक मह़दूद कर दिया।

अ़ाला हज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी

(अ़लैहिर्रहमह) ने अपनी किताब "अल् महज्जतुल् मुअतमनह फ़ी आयतिल् मुम्तहनह" में इरशाद फ़रमाया:

"दुश्मन अपने फरीक़ के खिलाफ़ तीन चालें चलता है:

(1) क़त्ल; ताकि दुश्मन का बिल्कुल वुजूद ही ख़त्म हो जाये। अगर ये न हो सके तो...

(2) जलावतनी; ताकि दुश्मन अपने मुल्क व इलाक़े से निकल कर दूर चला जाये। अगर ये भी न हो पाये तो...

(3) इक़्तिसादी बॉयकॉट (Economic Boycott); ताकि ग़ुरबत व मुफ़्लिसी से दो चार हो कर, हमारा गुलाम बन जाये।"

आप देखें कि आ़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रहमह) की फ़रासत व फ़िक्र कैसे साबित हुई, और हो रही है। कुफ्फ़ार ने मुसलमानों के खिलाफ़ यही चालें माज़ी में चलीं और आज भी चल रहे हैं। ब-तरतीब देखें:

(1) क़त्ल: मुसलमानों के क़त्ल के लिये उस वक़्त, जिहाद का उमूमी फ़तवा दिया जा रहा था, ताकि बे इमाम व खलीफ़ा क़लील मुसलमानाने हिन्द, काफ़िरों की अक्सरियत के हाथों क़त्ल हो जायें, आ़ला हज़रत (अ़लैहिर्रहमह) ने इसी ह़िकमत के पेशे नज़र हिन्दुस्तान में जिहाद का फ़तवा न दिया।

और आज 'देशद्रोही', 'गौहत्या', 'कोरोना वायरस' वग़ैरह का इल्ज़ाम आ़इद कर के, मॉब लिन्चिंग के ज़रिये मुसलमानों का क़त्ल हो रहा है।

(2) जलावतनी: पहले 'तहरीके हिजरत (Hijrat Movement)' चलाई गई, जिस के बहाने मुसलमानाने हिन्द को हिन्दुस्तान से निकालने के लिये कोशिशें की गई।

तो आज CAA, NRC, NPR पेश किये जा रहे हैं, ताकि मुसलमानों की जलावतनी हो सके।

(3) इक़्तिसादी बॉयकॉट: उस वक़्त 'तहरीके खिलाफ़त (Khilafat Movement)' और 'तहरीके तर्के मुवालात [(Non Cooperation Movement)' (जिस का सही नाम तहरीके अ़दमे त'आवुन है)] चलाई गई, ताकि मुसलमान अपना सारा का सारा सरमाया, जोश में आकर तुर्की रवाना कर दें, और जितने मुसलमान अंग्रेजी कम्पनियों में सरकारी मुलाज़िम हैं, वो अपनी अपनी नौकरियाँ छोड़ दें और गरीब व लाचार होकर हिन्दुओं के ग़ुलाम बन जायें।
और आज भी मदरसा बोर्ड की मान्यता ख़त्म करने की पूरी पूरी कोशिश जारी है, ताकि मुसलमानों की सरकारी नौकरियाँ ख़त्म हो जायें। इन हिन्दुओं की तरफ़ से सिविल इम्तिहानात में भी उर्दू को ख़त्म करने की माँग की जा रही है, ताकि कोई भी मुसलमान ऑफिसर लाइन में ना जा पाये।

और अब कोरोना के नाम पर इनका 'इक़्तिसादी बॉयकॉट' उरूज पर होता जा रहा है, ताकि मुफ़्लिस मुसलमानों को इन मुशरिकीन का ग़ुलाम बना डालें।

मगर इन तीन मशहूर चालों के अलावा, एक चाल का ज़िक्र क़ुरआने करीम ने मज़ीद किया है, और वो है 'क़ैद',

यानी मुसलमानों को मौक़ा पाते ही किसी ना किसी तरह क़ैदी बना दिया जाये, ताकि इसकी तमाम हि़स व हरकत, उस तारीक कोठरी में अंधी होकर अपना दम तोड़ दे। आज भी सैकड़ों मुसलमान नौजवान जेल की सलाखों के पीछे अपना दम घोटने पर मजबूर हैं। चूँकि इन मुशरिकीन ने उन पर तरह तरह की तुहमतें व इल्ज़ामात लगाये और उन के खिलाफ़ मुक़द्दमात दर्ज किये।

खबरदार!
अब कोई ये बहाना नहीं बना सकता है, कि: "हमें तो कुफ्फ़ार की इन चालों के बारे में पता ही नहीं था",
ये बहाना इसलिये बाति़ल है, चूँकि कुफ्फ़ार की तमाम चालें क़ुरआन व हदीस में हज़ारों साल पहले ही मज़कूर हो चुकी थीं मगर हम ने उन्हें न जाना और न ही जानने की कोशिश की।

कुफ्फ़ारे मक्का ने आक़ा (ﷺ) के साथ जो बद सुलूकियाँ की थीं, वो भी इन्हीं चार चालों में से ही थीं, क़ुरआन मजीद उन के दज्ल व फरेब का ज़िक्र कुछ इस तरह से कर रहा है:

"وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ"!.....

"और ऐ महबूब! याद करो जब काफ़िर तुम्हारे साथ धोका करते थे, कि तुम्हें 'बन्द कर लें' या 'शहीद कर दें' या 'निकाल दें"...!
[तरजमा-ए-कंज़ुल ईमान, 8:30]

इस आयत में ग़ौर करें कि किस तरह अल्लाह तआला ने हमें इन कुफ्फार की चालों से आगाह किया, यहाँ तीन चालों का ज़िक्र है:

(1) क़ैद;

(2) क़त्ल;

(3) जलावतनी;

अब रह गया 'इस्तिसादी बॉयकॉट', तो इस की तअ़लीम हमें 'शिअ़बे अबी तालिब' से मिल रही है. इमाम बैहक़ी ने 'दलाइलुन् नुबुव्वह' में और इब्ने कसीर ने 'अल बिदाया वन् निहाया' में 'शिअ़बे अबी तालिब' के वाक़िये को तफ्सीलन ज़िक्र किया। कुफ्फ़ारे मक्का ने 'बनी हाशिम' और 'बनी मुत्तलिब' के खिलाफ़ जो मक्कारियाँ इख़्तियार की, उन का एक किताबचा तैयार किया, और उसे कअ़ब-ए-मुअ़ज़्ज़मा में लटका दिया। कुतुबे सियर व अह़ादीस के अल्फाज़ कुछ इस तरह हैं:

...."اجتمعوا علي أن يكتبوا فيما بينهم علي بني هاشم و بني المطلب أن لا يُنكِحوهم و لا يَنكَحوا إليهم، و لا يبايعوهم و لا يبتاعوا منهم؛ و كتبوا صحيفة في ذلك، و علقوها بالكعبة، ثم عدوا علي من أسلم، فأوثقوهم و آذوهم، واشتدّ البلاء عليهم، و عظمت الفتنة، و زلزلوا زلزالا شديدا"!....

"....कुफ्फ़ारे मक्का इकट्ठे हुये, ताकि बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब के खिलाफ़ जो उन्होंने आपस में फैसला किया था उसे लिखें, कि वो उन (के ख़ानदान) से (शादी के लिये) न उन की बेटी लेंगे और न ही अपनी बेटी उन्हें देंगे, और न ही उन से कुछ खरीदेंगे, और न ही उन्हें कुछ बेचेंगे, और इस मुआमले में उन्होंने एक किताबचा लिखा और उस किताबचे को कअ़बा में लटका दिया। फ़िर मुसलमानों पर ज़ुल्म व ज़्यादती शुरू कर दी, और उन्हें क़ैद किया और उन्हें अज़ियतें दी और मुसलमानों पर मुसीबत सख़्त हो गई और फितना बहुत बढ़ गया और उन (मुसलमानों) पर (ज़ुल्म

व सितम के) ज़लज़ले तोड़े गये...।"

[رواه البيهقي في الدلائل و ابن كثير في البداية]

इस इबारत में ग़ौर करने से ये बात आश्कार हो जाती है कि कुफ़्फ़ार की एक बड़ी चाल मुसलमानों का इक़्तिसाद बुहरान भी है, क़ाबिले ज़िक्र अल्फाज़ ये हैं:

(1) शादी के लिये उन की लड़की न लेना;
(2) शादी के लिये उन्हें अपनी लड़की न देना;
(3) न उन से कुछ खरीदना;
(4) न उन्हें कुछ बेचना;

नम्बर तीन और चार 'इक़्तिसादी बॉयकॉट' की खबर दे रहे हैं; जबकि साथ ही नम्बर एक और दो 'समाजी बॉयकॉट' की भी ग़म्माज़ी कर रहे हैं...!
अब रही बात ये कि मुसलमानों का, कुफ़्फ़ार की जानिब से होने वाले इस 'इक़्तिसादी बॉयकॉट' से कैसे बचा जाये, और मुसलमानों की मईशत को मज़बूत बनाने के लिये क्या किया जाये...?
तो इस का ह़ल भी अ़ाला हज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह) की जानिब से सुनें। आप ने अपने रिसाले 'तदबीरे फलाहो नजातो इस्लाह़' में, मुसलमानों की मईशत को मज़बूत बनाने पर अ़मल पैरा होने की हिदायत की, जिन का ख़ुलासा ये है:

(1) वो चंद मुआ़मलात, जिन में हुकूमत की मुदाख़लत लाज़िम होती हैं, उन के अलावा अपने तमाम मुआ़मलात को मुसलमान अपने हाथों में लें, अपने सब मुआ़मलात का फ़ैसला अपने आप ही करें, ताकि ये करोड़ों रूपये जो स्टाम्प व वकालत में खर्च हो जाते हैं, मुकद्दमा की वजह से घर के घर तबाह हो जाते हैं, वो इन बरबादियों से महफ़ूज़ रहें।

(2) मुसलमान अपनी क़ौम के सिवा किसी से कुछ न खरीदें, ताकि घर का नफ़ा घर ही में रहे। अपने खुद के कारोबार को तरक़्क़ी दें, ताकि किसी चीज़ में किसी दूसरी क़ौम के मुहताज ना रहें।

(3) बड़े शहरों के अमीर तबक़े के मुसलमान अपने ग़रीब मुसलमान भाइयों के लिये 'मुस्लिम बैंक' खोलें, ताकि हलाल तरीक़े से उन्हें क़र्ज़ फराहम हो और उन की ज़रूरतों की ठीक से अदायगी हो जाये, साथ ही नफ़ा के वो तरीक़े जो शरीअ़ते मुतह्हरा में बताये हैं उन्हें अपनाया जाये, ताकि सूद जैसी बला से अमीर व ग़रीब, सब मुसलमानों की जान छूटे। इस सूद की अदायगी की वजह से न जाने कितने ग़रीब मुसलमानों की ज़मीन जायदाद, अमीर कुफ्फ़ार की भेंट चढ़ गई।

(4) सब से अहम व अजल्ल व अशरफ व अफ्ज़ल जो है, वो है हमारा 'दीने इस्लाम', इस पर मज़बूती से क़ाइम रहना ही हमारे लिए कामयाबी व कामरानी का सबब है। इसी दीने मतीन पर साबित क़दम रहने के सबब, न जाने कितने ग़ुरबा व फुक़रा, तख़्ते शाही की रौनक बने, मगर याद रहे कि इस दीन का तअ़ल्लुक़ 'इल्मे दीन' सीखने - सिखाने से है, इ़ल्मे दीन सीखना और उस पर अमल करना ही, दोनों जहाँ में नजात का ज़रिया है।

मेरे प्यारों...!

ज़रा इन चार निकाती हिदायात पर गौर करें, और इन पर अ़मल करें, फिर देखें कि कैसे हमारे हालात में तब्दीलियाँ आनी शुरू होती हैं, इन् शा अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल!
मज़ीद ये कि हमें ये देखना होगा, कि तक़रीबन 1400 साल पहले, या 100 साल पहले, या जब भी मुसलमानों के साथ ये सब किया गया, तो उन्होंने

इस से किस तरह नजात पायी थी।

हमें अपने माज़ी को अपना उस्ताद बनाना होगा, ताकि हम अपने उरूज व ज़वाल, मिल्कियत व ग़ुलामी, फ़तह व मग़लूबियत के असबाब को अच्छी तरह जान लें और उन से खबरदार हो जायें।

अल्लाह तआ़ला हमारे हालात पर रह़म फरमाये,
आमीन सुम्मा आमीन बिजाहिन् नबिय्यि (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम),

मुह़म्मद क़ासिमुल क़ादिरी,
मुतअ़ल्लिम: जामिया अहसनुल बरकात,
मारहरा शरीफ़ (यू.पी.)

18 रमज़ानुल् मुबारक (21 हि. / 642 ई.)

इसी तारीख़ को अल्लाह की तलवार, सय्यिदुना ख़ालिद इब्ने वलीद (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) की वफ़ात हुई;

ह़ज़रत ख़ालिद इब्ने वलीद (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) का मुसलमानों से तआ़रुफ़ 'जंगे उहुद' में उस वक़्त हुआ था, जब आप ईमान नहीं लाए थे, और काफ़िरों की फ़ौज के 'इज़ाफ़ी घुड़सवार दस्ते (Reserve Cavalry Battalion)' के सरबराह थे;

सय्यिदुना अबू बक्रे सिद्-दीक़ (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने इरशाद फ़रमाया था:

"عجز النساء أن يَلِدْنَ مثل خالد"،

"औरतें आ़जिज़ हो चुकी हैं, कि (अब) ख़ालिद इब्ने वलीद जैसे किसी बच्चे को जन्म दें."

तारीख़ुत् त़बरी, 3:359
अल् कामिल्, 2:389

ह़ज़रत ख़ालिद इब्ने वलीद (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने वक़्ते इंतिक़ाल जो बात कही, वो सारे नाम निहाद मस़्लिह़त-पसंद बुज़दिलों के लिए एक अ़ज़ीम सबक़ है:

"لَقِيْتُ كَذَا وَكَذَا زَحْفاً، وَمَا فِي جَسَدِي شِبْرٌ إِلاَّ وَفِيْهِ ضَرْبَةٌ بِسَيْفٍ، أَوْ رَمْيَةٌ بِسَهْمٍ، وَهَا أَنَا أَمُوْتُ عَلَى فِرَاشِي حَتْفَ أَنْفِي كَمَا يَمُوْتُ العِيْرُ،

فَلاَ نَامَتْ أَعْيُنُ الجُبَنَاءِ"،

"मैंने फ़ुलां-फ़ुलां फ़ौज से टक्कर ली,
मेरे जिस्म पर एक बालिश्त बराबर भी जगह ऐसी नहीं है कि जिसपर तलवार या भाले के ज़ख्म का निशान न हो;
हाय अफ़सोस!
फिर भी मैं अपने बिस्तर पर मर रहा हूं,
जैसे (बुज़दिली से) गधा मरता है;
तो बुज़दिलों को नींद नहीं आनी चाहिए."

सियरु अअ़लामिन् नुबला (लिज़्-ज़हबी), जिल्द न. 1, पेज न. 382, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), तीसरा एडीशन, 1405 हि. / 1985 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
19/04/22 ई.

दिलेरी जिस पर नाज़ करे

अल्लाह की तलवार, सय्यिदुना ख़ालिद इब्ने वलीद (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने ईरान की तरफ़ फ़ौज भेजने से पहले, वहाँ के हुक्काम को ये ख़त़ भेजा:

"بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ،

مِنْ خَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ إِلَى مَرَازِبَةِ فَارِسَ، أَمَّا بَعْدُ:

فَأَسْلِمُوا تَسْلَمُوا،

وَإِلا فَاعْتَقِدُوا مِنِّي الذِّمَّةَ، وَأَدُّوا الْجِزْيَةَ،

وَإِلا فَقَدْ جِئْتُكُمْ بِقَوْمٍ يُحِبُّونَ الْمَوْتَ، كَمَا تُحِبُّونَ شُرْبَ الْخَمْرِ"،

"अल्लाह के नाम से शुरू, जो निहायत मेहरबान, रह़्म वाला;
ख़ालिद इब्ने वलीद की तरफ़ से ईरान के हुकमरानों के नाम:
इस्लाम ले आओ, सलामत रहोगे;
वर्ना मेरे साथ अ़ह्दे ज़िम्मह कर लो,
फिर जिज़्यह अदा करना शुरू करो;
वर्ना मैं तुम्हारी तरफ़ ऐसी (मुसलमान) क़ौम को लेकर आने वाला हूं, जो (मैदाने जिहाद में) मौत को ऐसे ही पसन्द करती है, जैसे तुम लोग शराब पीना पसंद करते हो."

तारीख़े त़बरी, जिल्द न. 3, पेज न. 370, पब्लिकेशन: दारुत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत), दूसरा एडीशन, 1387 हि.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
22/04/21 ई.

मुह़द्-दस

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"لَقَدْ كَانَ فِيمَا قَبْلَكُمْ مِنَ الأُمَمِ مُحَدَّثُونَ، فَإِنْ يَكُ فِي أُمَّتِي أَحَدٌ، فَإِنَّهُ عُمَرُ"،

"यक़ीनन तुमसे पहले की क़ौमों में मुह़द्-दस[1] होते थे;
तो अगर मेरी उम्मत में कोई मुह़द्-दस[1] है,
तो वो उ़मर हैं."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस न. 3689, जिल्द न. 5, पेज न. 12, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह़ (बेरूत), 1422 हि.

[1]फ़त्ह़ुल् बारी में 'मुह़द्-दस' का मतलब ये बयान किया गया है कि:

"هُوَ الرَّجُلُ الصَّادِقُ الظَّنِّ وَهُوَ مَنْ أُلْقِيَ فِي رُوعِهِ شَيْءٌ مِنْ قِبَلِ الْمَلَأِ الْأَعْلَى فَيَكُونُ كَالَّذِي حَدَّثَهُ غَيْرُهُ بِهِ"،

"वो शख़्स, जिसका गुमान सच्चा हो, यानी जिसके दिल में अल्लाह की तरफ़ से कुछ बात डाल दी जाए, तो जैसा वो कहे, वैसा ही (सच में) हो जाए."

फत्ह़ुल् बारी शरह़ु स़ह़ीह़िल् बुख़ारी (इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी), जिल्द न. 7, पेज न. 50, पब्लिकेशन: दारुल् मअ़रिफ़ह (बेरूत), 1379 हि.

ये बात अहले इ़ल्म पर ज़ाहिर है कि मौला फ़ारूक़े आ़ज़म (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) की राय के मुत़ाबिक़ क़ुरआन की कई आयात नाज़िल हुई हैं; और ख़ुद आक़ा (ﷺ) अपने फैसलों को मौला उ़मर के मशविरे पर तब्दील फ़रमा दिया करते थे.

01/01/43 हि. (10/08/21 ई.)

मक़ामे मह़मूद

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) रिवायत करते हैं:

"إِنَّ النَّاسَ يَصِيرُونَ يَوْمَ القِيَامَةِ جُثًا، كُلُّ أُمَّةٍ تَتْبَعُ نَبِيَّهَا يَقُولُونَ: 'يَا فُلَانُ اشْفَعْ، يَا فُلَانُ اشْفَعْ'،

حَتَّى تَنْتَهِيَ الشَّفَاعَةُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَذَلِكَ يَوْمَ يَبْعَثُهُ اللَّهُ المَقَامَ المَحْمُودَ"،

"क़ियामत के दिन लोग गिरोह दर गिरोह अपने अपने नबी के पीछे चलेंगे, और अ़र्ज़ करेंगे:
'ऐ फ़ुलां! हमारी शफ़ाअ़त फ़रमायें,
ऐ फ़ुलां! हमारी शफ़ाअ़त फ़रमायें',
यहां तक कि शफ़ाअ़त का सिलसिला आक़ा (ﷺ) पर आकर ख़त्म होगा;
यही वो दिन है जब अल्लाह तआ़ला आक़ा (ﷺ) को मक़ामे मह़मूद पर फ़ाइज़ फ़रमाएगा."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस न. 4718, जिल्द न. 6, पेज न. 86, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1422 हि.

"अब आई शफ़ाअ़त की साअ़त, अब आई;
ज़रा चैन ले, मेरे घबराने वाले!"

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
27/06/21 ई.

सबसे अफ़्ज़ल कौन है?

ह़ैदरे कर्रार मौला अ़ली (कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल् करीम) के बेटे हज़रत मुह़म्मद इब्ने ह़नफ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) रिवायत करते हैं:

"قُلْتُ لِأَبِي أَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ بَعْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟' قَالَ: «أَبُو بَكْرٍ»، قُلْتُ: 'ثُمَّ مَنْ؟' قَالَ: «ثُمَّ عُمَرُ»،

وَخَشِيتُ أَنْ يَقُولَ عُثْمَانُ، قُلْتُ: 'ثُمَّ أَنْتَ؟' قَالَ: «مَا أَنَا إِلَّا رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ»،

"मैंने अपने वालिद (ह़ज़रत अ़ली) से पूछा कि: 'आक़ा (ﷺ) के बाद लोगों में सबसे अफ़्ज़ल कौन है?'
तो ह़ज़रत अ़ली ने जवाब दिया: 'अबू बक्र',
मैंने पूछा: 'फिर कौन?'
तो ह़ज़रत अ़ली ने जवाब दिया: 'उ़मर',
फिर मुझे ख़ौफ़ हुआ कि (अगर मैं अब पूछूँगा कि: 'फिर कौन', तो आप कहीं) ह़ज़रत उ़स्मान का नाम न ले दें, (इसलिए) मैंने (डायरेक्ट) पूछा: 'फिर आप हैं न?'
तो ह़ज़रत अ़ली ने (तवाज़ुअ़न्) जवाब दिया: 'मैं तो सिर्फ़ मुसलमानों में से ही एक आदमी हूं'."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस न. 3671, जिल्द न. 5, पेज न. 7, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1422 हि.

05/02/21 ई.

शराब तमाम बुराईयों की जड़ है

अल्लाह तआ़ला क़ुरआन 5:90 में इरशाद फ़रमाता है:

"يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنصَابُ وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ"،

"ऐ ईमान वालो! शराब, और जुआ, और बुत, और पासे, नापाक ही हैं, शैतानी काम; तो उनसे बचते रहना, कि तुम फ़लाह़ पाओ." [कंज़ुल् ईमान]

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"إِنَّ مِنَ الْعِنَبِ خَمْرًا، وَإِنَّ مِنَ التَّمْرِ خَمْرًا، وَإِنَّ مِنَ الْعَسَلِ خَمْرًا، وَإِنَّ مِنَ الْبُرِّ خَمْرًا، وَإِنَّ مِنَ الشَّعِيرِ خَمْرًا"،

"यक़ीनन, अंगूर से शराब बनाई जाती है; खजूर से भी, शहद से भी, गेहूं से भी, और जौ से भी बनाई जाती है."

अबू दाऊद, किताबुल् अश्-रिबह, बाब: तह़रीमुल् ख़म्-र, ह़दीस न. 3676, जिल्द न. 3, पेज न. 326, पब्लिकेशन: अल् मक्-तबतुल् अ़स्-रिय्यह (बेरूत)

सय्यिदुना मौला उ़मरे फ़ारूक़े आ़ज़म (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने 'शराब' के बारे में इरशाद फ़रमाया:

"وَهِيَ مِنْ خَمْسَةِ أَشْيَاءَ: مِنَ الْعِنَبِ، وَالتَّمْرِ، وَالْعَسَلِ، وَالْحِنْطَةِ، وَالشَّعِيرِ"،

"और 'शराब' पांच चीज़ों से बनाई जाती है: अंगूर, खजूर, शहद, गेहूं और जौ."

अबू दाऊद, किताबुल् अश्-रिबह, बाब: तह़रीमुल् ख़म्-र, ह़दीस न. 3669, जिल्द न. 3, पेज न. 324, पब्लिकेशन: अल् मक्-तबतुल् अ़स्-रिय्यह (बेरूत)

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"إِنَّ الْخَمْرَ مِنَ الْعَصِيرِ، وَالزَّبِيبِ، وَالتَّمْرِ، وَالْحِنْطَةِ، وَالشَّعِيرِ، وَالذُّرَةِ، وَإِنِّي أَنْهَاكُمْ عَنْ كُلِّ مُسْكِرٍ"،

"बेशक, शराब फलों के रस से बनाई जाती है, और किशमिश से, और खजूर से, और गेहूं से, और जौ से, और मकई से; और मैं तुम्हें हर नशीली चीज़ से रोक रहा हूं."

अबू दाऊद, ह़दीस न. 3677 (3:326)

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"كُلُّ مُسْكِرٍ خَمْرٌ، وَكُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ، وَمَنْ مَاتَ وَهُوَ يَشْرَبُ الْخَمْرَ يُدْمِنُهَا لَمْ يَشْرَبْهَا فِي الْآخِرَةِ"،

"हर नशावर चीज़ शराब है, और हर नशावर चीज़ ह़राम है; और जो शख़्स शराब का आ़दी होकर मरा, तो वो आख़िरत में (जन्नत की पाक) शराब नहीं पी पाएगा."

अबू दाऊद, ह़दीस न. 3679 (3:327)

आज भी सारी शराबें ख़ास तौर पर इन्हीं 6-7 चीज़ों से बनाई जाती हैं, जैसे: Beer, Wine, Cider, Mead, Pulque, Rice Wine etc.

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"لَعَنَ اللَّهُ الْخَمْرَ، وَشَارِبَهَا، وَسَاقِيَهَا، وَبَائِعَهَا، وَمُبْتَاعَهَا، وَعَاصِرَهَا، وَمُعْتَصِرَهَا، وَحَامِلَهَا، وَالْمَحْمُولَةَ إِلَيْهِ"،

"अल्लाह ने शराब पर, उसे पीने व पिलाने वाले पर, उसे बेचने व ख़रीदने वाले पर, उसे (अंगूर से) निचोड़कर बनाने व बनवाने वाले पर, उसे लाने व मंगवाने वाले पर लअ़नत फ़रमाई."

अबू दाऊद, ह़दीस न. 3674 (3:326)

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"لَا تَشْرَبِ الْخَمْرَ، فَإِنَّهَا مِفْتَاحُ كُلِّ شَرٍّ"،

"शराब मत पिओ, क्यूंकि वो हर फ़ितने की कुंजी है."

इब्ने माजह, 30:1:3371 (2:1119), पब्लिकेशन: दारु इह़्याइल् कुतुबिल् अ़रबिय्यह (बेरूत)

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"الْخَمْرُ أُمُّ الْخَبَائِثِ"،

"शराब, तमाम बुराईयों की जड़ है."

सुनने दारक़ुत़्नी, ह़दीस न. 4613 (5:444), पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), पहला एडीशन, 1424 हि./2004 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
26/01/21 ई.

सबसे अफ़्ज़ल अबू बक्र हैं

कूफ़ा के मिम्बर पर खड़े होकर मौला ह़ैदरे कर्रार (कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल् करीम) ने तफ़्ज़ीलिय्यत की जड़ों को ही काट डाला और एलान कर दिया:

"ألا إن خير هذه الأمة بعد نبيها أبو بكر ثم عمر"،

"ख़बरदार!
नबी के बाद, इस उम्मत में सबसे अफ़्ज़ल अबू बक्र हैं, फिर उ़मर हैं."

मुस्नदे अह़मद, ह़दीस न. 833 से 837 तक, जिल्द न. 2, पेज न. 201, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), पहला एडीशन, 1421 हि./2001 ई.

तारीख़े दिमश्क़ (इब्ने अ़साकिर), ह़र्फ़ुल् ऐ़न, जिल्द न. 44, पेज न. 203, पब्लिकेशन: दारुल् फ़िक्र (बेरूत), 1415 हि./1995 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
04/02/21 ई.

जिसका इ़ल्म बढ़ेगा, उसकी तकलीफ़ें भी बढ़ेंगी

हज़रत अबू दर्-दाअ (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने इरशाद फ़रमाया:

"مَنْ يَزْدَدْ عِلْماً، يَزْدَدْ وَجَعاً"،

"जिसका इ़ल्म बढ़ेगा, उसकी तकलीफ़ें भी बढ़ेंगी."

जामिउ़ बयानिल् इ़ल्म व फ़द़्लिही (लिल् इमाम इब्नि अ़ब्दिल् बर्र), ह़दीस न. 674, पेज न. 182, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), पहला एडीशन, 1436

हि./2015 ई.

मगर इमाम ज़हबी (अ़लैहिर्-रह़मह) ने इसे हज़रत सुफ़्यान सौरी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) की तरफ़ मंसूब किया है.

सियरु अअ़लामिन् नुबला, 7:255, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), तीसरा एडीशन, 1405 हि./1985 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी 05/12/20 ई.

अखंड भारत

मुसलमान 'अखंड भारत' के बारे में अपनी ग़लत़फ़हमी दूर करें:
उनके मुत़ाबिक़ 'अखंड भारत' का तअ़ल्लुक़ ज़मीन से नहीं है, कि भारत से जुदा हुए मुल्कों को भी, भारत में जोड़ लिया जाए;
बल्कि 'अखंड भारत' से उनकी मुराद 'एक धर्म', 'एक ज़ुबान', और 'एक तहज़ीब' वाला भारत है;
यानी वो भारत में मुख़्तलिफ़ धर्मों, मुख़्तलिफ़ ज़ुबानों, और मुख़्तलिफ़ तहज़ीबों के लोगों को रखकर इसे 'खण्डित' नहीं करना चाहते. बल्कि 'एक धर्म', 'एक ज़ुबान', और 'एक तहज़ीब' के लोगों को ही यहां रखकर, इसे 'अखंड' बनाना चाहते है;
अब वो 'एक धर्म', 'एक ज़ुबान', और 'एक तहज़ीब' क्या है, ये बताने की ज़रूरत नहीं;
मगर आप ये समझ रहे हैं कि:
".....'अखंड भारत' का मतलब ये है कि भारत से जुदा होने वाले मुल्कों को भारत में मिला लिया जाए....",
जो बिल्कुल ग़लत समझे हैं आप. अगर आपको मज़ीद तफ़्सील से समझना है तो 'हिन्दुत्व' के अ़लमबरदारों, जैसे: गोलवालकर, श्यामा प्रसाद मुखर्जी

वग़ैरह की किताबों का मुत़ालअ़ा करें.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
17/04/22 ई.

मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादियानी

मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादियानी तीस दज्जालों में से एक दज्जाल
ह़ज़रत अबू हुरैरह (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) से रिवायत है कि आक़ा (ﷺ) ने फ़रमाया:

"لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَخْرُجَ ثَلاَثُونَ دَجَّالُونَ كُلُّهُمْ يَزْعُمُ أَنَّهُ رَسُولُ اللَّهِ".

"क़ियामत क़ायम नहीं होगी, यहां तक कि तीस दज्जाल निकलेंगे. हर एक दावा करेगा कि वो अल्लाह का रसूल है."

सुनने अबी दाऊद, किताब नं. 39, बाब नं. 16, हदीस नं. 4333

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
28/01/19 ई.

एक बहुत इ़ल्मी बात

इस्लामी दुनिया में 'इब्ने अ़रबी' के नाम से दो बुज़ुर्ग मशहूर हुए हैं, और दोनों ही 'अन्दलुस (Spain)' के हैं:

1. मशहूर सूफ़ी: 'मुह़िय्युद्-दीन इब्ने अ़रबी अन्दलुसी' (d. 638 हि./1240 ई.);

2. मशहूर मुह़द्-दिस: 'क़ाज़ी अबू बक्र इब्ने अ़रबी मालिकी अन्दलुसी' (d. 543 हि./ 1148 ई.);

पहले वाले वही हैं जिनका किरदार अर्तग़रल ग़ाज़ी सीरियल में दिखाया गया है, जिन्हें तस़व्वुफ़ की दुनिया में 'अल् इमामुल् अक्बर' और 'अश् शैख़ुल् अक्बर' के लक़ब से जाना जाता है;

दोनों के नाम में फर्क़ इस तरह किया जाता है कि जब पहले वाले का नाम लिखा जाएगा तो 'इब्ने अ़रबी' लिखा जाएगा, यानी बिना अलिफ़/लाम के:
(इब्ने अ़रबी / ابن‌عربی / Ibn ʿArabī)

और जब दूसरे वाले का नाम लिखा जाएगा तो 'इब्नुल् अ़रबी' लिखा जाएगा, यानी अलिफ़/लाम के साथ:
(इब्नुल् अ़रबी /ابن‌العربی / Ibn al-ʿArabī)

यही फर्क़ 'अ़ल्लामा अ़ब्दुल् ह़य्यि फ़रंगी मह़ल्ली (अ़लैहिर्-रह़मह)' ने 'अत् तअ़लीक़ुल् मुमज्जद' के मुक़द्दमे में बयान किया है, 'क़ाज़ी अबू बक्र इब्ने अ़रबी मालिकी अन्दलुसी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु)' का ज़िक्र करते हुए आपने लिखा है:

"فائدة: رأيت فی بعض شروح مناسك النووي، أن ابن عربي اشتهر به اثنان، أحدهما القاضي أبو بكر هذا، وثانيهما صاحب الولاية العظمى والراية الكبرى محي الدين بن عربي مؤلف 'الفتوحات المكية' و 'الفصوص الحِكَم' وغيرهما من التصانيف الجليلة. ويفرق بينهما بأنه يقال للقاضي 'ابن العربی' بالألف واللام،

وللشيخ الأكبر 'ابن عربي' بغيره".

"फ़ायदा: मैंने इमाम नववी की किताब 'ईज़ाहुल् मनासिक' की कुछ शरह़ों में देखा, कि 'इब्ने अ़रबी' के नाम से दो बुज़ुर्ग मशहूर हुए हैं; एक तो 'क़ाज़ी अबू बक्र', यही वाले (जिनका ज़िक्र किया गया), और दूसरे अ़ज़ीम विलायत वाले व नुमायां मक़ाम रखने वाले 'मुह़िय्युद्-दीन इब्ने अ़रबी', (जो) 'अल् फुतूह़ातुल् मक्किय्यह' व 'फ़ुस़ूस़ुल् ह़िकम' और इनके अ़लावा ज़बर्दस्त किताबों के मुस़न्निफ़ हैं; और इन दोनों के दरमियान फ़र्क़ इस तरह किया जाता है कि 'क़ाज़ी अबू बक्र' को 'इब्नुल् अ़रबी' कहा जाता है, अलिफ़/लाम के साथ; और 'शैख़े अक्बर' को 'इब्ने अ़रबी' कहा जाता है, बिना अलिफ़/लाम के."

अत् तअ़लीक़ुल् मुमज्जद अ़ला मुवत़्त़-इल् इमाम मुह़म्मद, मुक़द्-दमह, पेज न. 23, पब्लिकेशन: मज्लिसुल् बरकात, मुबारकपुर (आ़ज़मगढ़), 1427 हि./2006 ई.

एक बात ये भी याद रखें:
एक शख़्सियत और है, जिसे 'इब्नुल् अअ़राबी (Ibn al-Aʿrābī / ابن الأعرابی)' के नाम से जाना जाता है, आपका इंतिक़ाल 231 हि./845 ई. में हुआ, आप भी बहुत बड़े इमाम हैं....!

20/01/21 ई.

बहुत प्यारी बात

इमाम अबू बक्र बैहक़ी (d. 458 हि.) ने बहुत प्यारी बात रिवायत की:

"مَنْ نَمَّ إِلَيْكَ نَمَّ عَلَيْكَ، وَمَنْ أَخْبَرَكَ بِخَبَرِ غَيْرِكَ أَخْبَرَ غَيْرَكَ بِخَبَرِكَ"،

"जो (शख़्स) तुझसे,
किसी दूसरे की चुग़ली करेगा,
तो वो तेरी चुग़ली,
किसी दूसरे से भी करेगा;
और जो तुझे,
किसी दूसरे की ख़बर लाकर देगा,
तो वो तेरी ख़बर,
दूसरे को भी देगा."

शुअ़बुल् ईमान, ह़दीस नं. 10681, जिल्द नं. 13, पेज नं. 502, पब्लिकेशन: मक्-तबतुर् रुश्द (रियाद), पहला एडीशन, 1423 हि./2003 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
29/10/21 ई.

तू तो, दुनिया और आख़िरत में, मेरा भाई है

एक बार आक़ा (ﷺ) ने तमाम स़ह़ाबा को इकट्ठा किया, और सबको एक दूसरे का भाई बनाया, कि तुम इसके भाई हो और ये तुम्हारा भाई है. मगर सय्यिदुना ह़ैदरे कर्रार मौला अ़ली (कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल् करीम) को छोड़ दिया. तो इसपर मौला ह़ैदरे कर्रार रोने लगे, और आक़ा (ﷺ) से अ़र्ज़ की: 'मेरे आक़ा! मुझे किसी का भाई नहीं बनाया आपने?'

तो आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"أنت أخی فی الدنیا والآخرة"،

"(ऐ अ़ली!) तू तो, दुनिया और आख़िरत में, मेरा भाई है."

तारीख़े दिमश्क़ (दमिश्क़) [लिल् इमाम इब्नि अ़साकिर], ह़दीस न. 8383/8384/8385, जिल्द न. 42, पेज न. 51-52, पब्लिकेशन: दारुल् फ़िक्र (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1417 हि./1996 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
29/01/21 ई.

अ़ज़ीम मुअ़जिज़ह

इमाम त़बरी (d. 310 हि.) ने क़ुरआन 8:17 के तह़्त लिखा:

"قال رسول الله صلى الله عليه وسلم حين التقى الجمعان يوم بدر لعلي: 'أعطني حصًا من الأرض'، فناوله حصى عليه تراب، فرمى به وجوه القوم، فلم يبق مشرك إلا دخل في عينيه من ذلك التراب شيء، ثم رَدِفهم المؤمنون يقتلونهم ويأسرونهم"،

"जब दोनों लश्करों की (जंगे बद्र के दिन आपस में) मुठभेड़ हुई, तो आक़ा (ﷺ) ने ह़ज़रत अ़ली (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) से फ़रमाया: 'मुझे ज़मीन से कुछ कंकरियां उठा कर दो.'
तो ह़ज़रत अ़ली (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने आपको कंकरियां लाकर दीं, जिनपर मिट्टी लगी हुई थी. तो आक़ा (ﷺ) ने वो (मुट्ठीभर) कंकरियां (एक हज़ार) काफ़िरों की फ़ौज के चेहरों पर फैंकी;
तो कोई भी मुश्-रिक ऐसा न बचा जिसकी आँखों में उससे कोई धूल या मिट्टी न पहुंची हो.

फिर (काफ़िर भागे, तो) मुसलमानों ने उन्हें क़त्ल करके और क़ैद करके ही पीछा छोड़ा."

जामिउ़ल् बयान फ़ी तावीलि आयिल् क़ुरआन (तफ़्सीरे त़बरी), जिल्द न. 13, पेज न. 445, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1420 हि. / 2000 ई.

ये आक़ा (ﷺ) का अ़ज़ीम मुअ़जिज़ह (miracle) था, कि मुट्ठीभर कंकरियां एक हज़ार काफ़िरों की आँखों को रुला देती हैं;
इसी को आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने अपने इस शिअ़र में इस तरह बयान किया:

"मैं तेरे हाथों के स़दक़े, कैसी कंकरियां थीं वो;
जिनसे इतने काफ़िरों का दफ़्अ़तन् मुँह फिर गया."

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
30/04/21 ई.

बहुत अहम

"ह़ज़रत अबू बक्र 'स़िद्-दीक़े अक्बर' हैं, और ह़ज़रत अ़ली 'स़िद्-दीक़े अस़ग़र' हैं."

[फ़तावा रज़विय्यह, 15:681]

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
01/02/21 ई.

मौला अ़ली बालिग़ होने से पहले ईमान लाए

आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) से सवाल हुआ:

"ज़ैद कहता है कि मौला अ़ली बालिग़ होने से पहले ईमान लाए, और पहले कभी भी कुफ़्र में मुब्तला न हुए; और अ़म्र कहता है कि बच्चे वालिदैन के ताबिअ़ होते हैं, और मौला अ़ली के वालिदैन ईमान पर नहीं थे, इसलिए मौला अ़ली भी ईमान पर नहीं थे;
इसके बारे में आप क्या फ़रमाते हैं?"

इस पर आ़ला ह़ज़रत ने जवाब देते हुए, शुरुआ़त कुछ इस अंदाज़ में की:

"क़ौले ज़ैद, ह़क़ व स़ह़ीह़;
क़ौले अ़म्र, बात़िल व क़बीह़."

[फतावा रज़विय्यह, 28:441]
इसी एतराज़ के रद में, मौला ह़ैदरे कर्रार (कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल् करीम) की शान में पूरी किताब लिखी:

'तन्ज़ीहुल् मकानतिल् ह़ैदरिय्यह अ़न् वस़्मति अ़ह्दिल् जाहिलिय्यह',

इस किताब को आप गूगल से डाउनलोड कर सकते हैं.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
25/02/21 ई.

किताबें पढ़ने की आदत डालें

जब से वह्हाबिय्यत वुजूद में आई है, तब से लेकर अब तक इसके सरग़नों ने 'मीलादुन्नबी (ﷺ)' पर जितने भी एतराज़ात किए हैं, सब के रद के लिए बस यही तीन किताबें काफ़ी हैं, जिनसे वह्हाबिय्यह के एतराज़ात की हलाकत यक़ीनी है;

इनमें दो किताबें 'वालिदे आ़ला ह़ज़रत' की हैं, और एक ख़ुद 'आ़ला ह़ज़रत' की:

(1) "उस़ूलुर् रशाद लि क़म्-इ मबानिल् फ़साद",
(2) "इज़ाक़तुल् असाम लि मानिइ़ अ़मलिल् मौलिदि वल् क़ियाम्",
ये दोनों 'वालिदे आ़ला ह़ज़रत रईसुल् मुतकल्लिमीन अ़ल्लामा नक़ी अ़ली ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु)' ने लिखी हैं;
(3) "इक़ामतुल् क़ियामह अ़ला त़ाइ़निल् क़ियाम् लि नबिय्यि तिहामह",
ये ख़ुद 'आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु)' ने लिखी.

इन्हें गूगल से डाउनलोड किया जा सकता है.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
23/10/20 ई.

कअ़्बा और अ़र्श से भी अफ़्ज़ल

इमाम मुनावी शाफ़िई़ (d. 1031 हि.) लिखते हैं:

"البقعة التى ضمت أعضاء الرسول صلى الله عليه وسلم فهى أفضل حتى من الكعبة"،

"[आक़ा (ﷺ) की क़ब्र का] वो हिस्सा, जो आक़ा (ﷺ) के जिस्मे मुबारक से मिला हुआ है, वो (ज़मीन के तमाम हिस्सों से) अफ़्ज़ल है, यहां तक कि कअ़बा से भी."

फ़ैज़ुल् क़दीर शरह़ुल् जामिइ़स् स़ग़ीर, जिल्द न. 6, पेज न. 264, ह़दीस न. 9185, पब्लिकेशन: दारुल् मअ़रिफ़ह (बेरूत), दूसरा एडीशन, 1391 हि. / 1972 ई.

इमाम अ़ली इब्ने सुल्त़ान, उर्फ़ मुल्ला अ़ली क़ारी (d. 1014 हि.) लिखते हैं:

"البقعة التي ضمت أعضاءه عليه الصلاة والسلام فإنها أفضل من مكة، بل من العرش إجماعا"،

"(क़ब्र का) वो हिस्सा जो आक़ा (ﷺ) के जिस्म से मिला हुआ है, वो मक्कह से, बल्कि अ़र्श से भी अफ़्ज़ल है, इज्माई़ त़ौर पर."

मिरक़ातुल् मफ़ातीह़ शरह़ु मिश्कातिल् मस़ाबीह़, जिल्द न. 5, पेज न. 612, ह़दीस न. 2725, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), नया एडीशन

23/08/21 ई.

कंज़ुल् ईमान को आ़म करें

आ़ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्-रह़मह) एक जगह लिखते हैं:

"न हर तफ़्सीर, मुअ़तबर;
न हर मुफ़स्सिर, मुसीब."

फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द नं. 29, पेज नं. 398, पब्लिकेशन: रज़ा फाउंडेशन (लाहौर)

ये क़ीमती बात इमामे अहले सुन्नत (अ़लैहिर्रह़मह) ने उस वक़्त लिखी, जब एक आर्य समाजी, और एक ईसाई पादरी ने क़ुरआन की तीन आयात का सहारा लेकर, आक़ा (ﷺ) की तरफ गुनाह की निस्बत करने की कोशिश की, और अपनी ताईद में कुछ तफ़ासीर के हवाले भी दिए;

आ़ला ह़ज़रत ने दोनों के रद में दो अलग-अलग फ़तवों में इस क़ीमती जुमले को दुहराया. आर्य समाजी, उर्फ़ नियोगी पंडित के रद में ये जुमला लिखकर, फ़रमाया:
"मुशरिक का ज़ुल्म है",
और ईसाई के रद में यही जुमला दुहराकर फ़रमाया:
"नस़रानी का ज़ुल्म है."
जो तफ़्सीर इन जुहला ने दी थीं वो अहले सुन्नत के यहां मक़बूल नहीं, तो आपने इनकी दी हुई तफ़ासीर का रद करते हुए लिखा कि हर तफ़्सीर मुअ़तबर नहीं होती, और न हर वो शख़्स मुसीब (यानी सही) होता है जो किसी आयत की तफ़्सीर करे. क्यूंकि बिल्कुल मुमकिन है कि उसने तफ़्सीर करने में ग़लती की हो;

कुफ़्फ़ार अपने इस बात़िल दावे में इन्हीं तीन आयात:

(1) क़ुरआन, 47:19
(2) क़ुरआन, 48:2
(3) क़ुरआन, 40:55

......को आज भी पेश करने में लगे हुए हैं;

ग़ैरों ने, इन आयात के तरजमे में बड़ी गड़बड़ी की है, कि उन्होंने डायरेक्ट अरबी लफ़्ज़ 'ज़म्ब (गुनाह)' की निस्बत आक़ा (ﷺ) की तरफ समझ ली, और अपना दिमाग़ न दौड़ा सके कि यहां 'इ़ल्मे तफ़्सीर', 'इ़ल्मे बलाग़त' वग़ैरह का कौन-सा क़ाइ़दह जारी होगा, और इ़स्मते नबी (ﷺ) में शक पैदा कर दिया. इन्हीं के तरजमों को पढ़ पढ़कर कुफ़्फ़ार एतराज़ करते हैं;

जब कि आ़ला हज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्-रह़मह) ने अपने तरजमे: 'कंज़ुल् ईमान' में इन आयात का ऐसा तरजमा किया है कि आक़ा (ﷺ) की 'इ़स्मत' भी बाक़ी रही, और शरीअ़त के किसी भी उसूल की खिलाफ़वर्ज़ी भी नहीं हुई;

हिन्दी कफ़रह, और आ़लमी कुफ़्फ़ार 'कंज़ुल् ईमान' से बहुत ज़्यादा नावाक़िफ़ हैं, और इसका वाह़िद सबब हमारी कोताही और सुस्ती है कि हम इस अ़ज़ीम 'कंज़ुल् ईमान' को आ़म न कर सके!
क्यूंकि मुझे कई साल हो गये, कुफ़्फ़ार से मुबाहसा करते हुए, जिनमें ख़ास तौर पर 'आर्य समाजी' और 'ईसाई' हैं. इन्होंने हमेशा गैरों का ही तरजमा मेरे सामने पेश किया, जिनमें अक्सर 'मौदूदी' और 'यूसुफ़ अ़ली' का पेश किया जाता है;

और जब हम इनके तरजमों को ग़लत क़रार देकर, 'कंज़ुल् ईमान' पेश करते हैं, तो कुफ़्फ़ार का एतराज़ जड़ से उखड़ जाता है;

अल्ह़म्दुलिल्लाह,
ये मेरा ज़ाती तजरबा है...!

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
14/10/20 ई.

इन दुमुंही साँपों का ज़हर तो देखिये

देवबंदियों ने अ़रब ममालिक के सुन्नी उ़लमा के सामने अपने अकाबिर की सूफ़ियाना शक्ल बनाकर पेश की, और उनकी ऐसी ही किताबें यहां तक पहुंचाईं, जिससे उनका 'ह़नफ़ी/स़ूफ़ी' होना ही साबित हो, और उनका नापाक चेहरा — जिसे 'आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह)' ने दुनिया के सामने ज़ाहिर किया, जिसकी तस़्दीक़ 30 से ज़्यादा उ़लमा-ए-ह़रमैन, और 250 से ज़्यादा बर्रे स़ग़ीर हिन्दुस्तान के उ़लमा ने की — छुपा दिया. ये बिल्कुल उसी तरह का दज्लो फ़रेब है, जो 'मौलवी ख़लील अम्बेठवी (d. 1927 ई.)' ने अपनी किताबुल् अकाज़ीब (books of lies): 'अल्-मुहन्-नद अ़लल् मुफ़न्-नद' में किया. अगरचे इसकी इस झूठ से भरी हुई किताब का पर्दा चाक, 'ह़ज़रत शेरे बेशए अहले सुन्नत अ़ल्लामा ह़श्मत अ़ली ख़ान (d. 1961 ई.)' ने 'राद्-दुल् मुहन्-नद' लिखकर, और 'स़दरुल् अफ़ाज़िल सय्यिद नईमुद्-दीन मुरादाबादी (d. 1948 ई.)' ने 'अत्-तह़क़ीक़ात लि-दफ़्इत् तल्बीसात' लिखकर ही कर दिया था. अब इसी मौरूसी धोखाधड़ी से, आज के देवबंदी भी काम चला रहे हैं;

देवबंदियों के इस मक्रो फ़रेब के सबब,
इनके बड़ों का अस्ल चेहरा अ़रब कंट्रीज़ के सुन्नी उ़लमा के सामने ज़ाहिर न हो सका;
जिसके नतीजे में अ़रब के सुन्नी उ़लमा ने, इन देवबंदियों के मौलवियों (थानवी, अंबेठवी वग़ैरह) को सुन्नी समझकर, इनकी तारीफ़ें लिखीं, जिसे आज ये हिन्दुस्तान वालों के सामने पेश करते हैं कि देखो तुम्हारे 'आ़ला ह़ज़रत' ने हमारे फ़लां बुज़ुर्ग की तक्फ़ीर की है, जबकि मिस्र के बड़े बड़े सुन्नी आ़लिम हमारे बुज़ुर्गों की तारीफ़ लिख रहे हैं;

जबकि इनका हाल ये है कि जब ये 'जामिआ़ अज़्हर, काहिरा (मिस्र)' में, या किसी दूसरी सुन्नी यूनिवर्सिटी में पढ़ने आते हैं (अगरचे मुट्ठीभर तादाद में ही सही), तो सुन्नी बनकर रहते हैं, हर सुन्नी के साथ मेलजोल करने में लगे रहते हैं, मज़ारात पर जाते हैं, मीलाद में शामिल होते हैं, क़ब्र वाली मस्जिदों में नमाज़ पढ़ते हैं, ग़ैरुल्लाह से इस्तिग़ासह करने वाले इमामों व उ़लमा के पीछे नमाज़ें पढ़ते हैं, और ऐसे ही उस्ताज़ों से इ़ल्म भी हासिल करते हैं, खुलकर इस तरह शिर्क-बिद्अ़त की रट नहीं लगाते जैसे बर्रे स़ग़ीर हिंदुस्तान में करते हैं;

कई बार तो ऐसा हुआ है कि कुछ लड़के हमारे साथ रह रहे हैं, खा रहे हैं, पी रहे हैं, पढ़ रहे हैं, मगर बाद में पता चला कि ये देवबंदी हैं. ये ख़ुद दो बार मेरे साथ हुआ है;

जबकि हम सुन्नी — जिसे वह्हाबिय्यह ने 'बरेलवी' नाम दिया हुआ है — डंके की चोट पर, मिस्र में, अपने तमाम दीनी काम वैसे ही खुलकर करते हैं, जैसे हिन्दुस्तान में करते हैं. बल्कि इससे भी बढ़कर करते हैं;

इन मलाइ्ना ने, अपने बड़ों की कोई भी ऐसी किताब इधर नहीं पहुंचाई जिसपर इमामे अहले सुन्नत, और दूसरे उ़लमा ने सख़्त गिरिफ़्त की;

अगर ये देवबंदी, अपने बड़ों के बारे में, इन अ़रबी उ़लमा को:

1. ये बताते कि: "हमारे थानवी साहब (d. 1943 ई.) ने: 'ह़िफ़्ज़ुल् ईमान' में आक़ा (ﷺ) के बअ़्ज़े उ़लूमे ग़ैबिय्यह की तश्बीह या तसावी — हर अ़ाम शख़्स, बच्चों, जानवरों, पागलों से की है",

तो यहां के उ़लमा का क़लम, इनके बारे में कुछ और ही लिखता;

2. अगर बताते कि: "हमारे ख़लील अंबेठवी साहब (d. 1927 ई.) ने: 'बराहीने क़ात़िअ़ा' में शैत़ान, व मलकुल् मौत के इ़ल्म की वुस्अ़त, आक़ा (ﷺ) के इ़ल्म की वुस्अ़त से ज़्यादा मानी. साथ ही कहा कि आक़ा (ﷺ) को दीवार के पीछे का भी इ़ल्म नहीं, और इस गंदी बात को शाह अ़ब्दुल् ह़क़्क़ मुह़द्-दिसे देहलवी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) की त़रफ़ मंसूब कराने की नापाक जसारत की. इस पर तुर्रह ये कि ये किताब तस्दीक़-शुदह है 'मौलवी रशीद गंगोही (d. 1905 ई.)' के ज़रिए",

तो यहां के उ़लमा का क़लम, इनके बारे में कुछ और ही लिखता;

3. अगर बताते कि: "हमारे रशीद गंगोही साहब (d. 1905 ई.) ने अपने फ़तवा में ये लिखा है कि अल्लाह का झूठ बोलना मुम्किन है",
तो यहां के उ़लमा का क़लम, इनके बारे में कुछ और ही लिखता;
इसी तरह की सारी नजिस इबारतें दिखाते, तब हम देखते कि कितनी तारीफ़ें हो रही हैं तुम्हारे बड़ों की;

मगर घूंघट की आड़ में चेहरा छुपाकर,
अपने बदसूरत चेहरे को खूबसूरत मनवाना, मर्दों की अ़लामत नहीं होती.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
06/10/22 ई.

ई़दे ग़दीर सुन्नियों की नहीं

आज की मुरव्वजा 'ई़दे ग़दीर' जिसने सबसे पहले शुरू की, उसका नाम 'अह़मद इब्ने बुवैह' था, जो आमतौर पर हिस्ट्री में 'मुइ़ज़्ज़ुद् दौलह' के नाम से मशहूर है;

ये जब बग़दाद का हाकिम बना, तब इसने 352 हि. में ये सब शीओं वाली हरकतें एलानिया तौर पर शुरू कीं;

ये शख़्स शीआ़ हुकूमत 'दौलते बुवैहिय्यह (الدَّولَةُ البُوَيهِيَّةُ)' का बग़दाद में बनने वाला पहला हाकिम था;
इस सल्तनत की बुनियाद 932 ई. में 'रुक्नुद् दौलह बुवैही' ने रखी, और ईरान पर 932 ई. से लेकर 949 ई. तक हुकूमत की, और अपनी सल्तनत को फैलाया. फिर आख़िरकार ये सल्तनत 1062 ई. में ख़त्म हो गयी;
इमाम अन्दलुसी (d. 741 हि.) अपनी किताब: 'अत् तम्हीद वल् बयान फ़ी मक़्तलिश् शहीद उ़स्मान' में लिखते हैं:

"وقد اتخذت الرافضة اليوم الذي قتل فيه عثمان (رضي الله عنه) عيداً، وقالوا:

'هو يوم عيد الغدير'."

"और जिस दिन ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) को शहीद किया गया, उस दिन को राफ़िज़ियों ने 'ई़द' बना लिया, और कहा: 'ये ई़दे ग़दीर का दिन है'."

अत् तम्हीद वल् बयान फ़ी मक़्तलिश् शहीद उ़स्मान [इमाम अन्दलुसी (d. 741 हि.)], पेज न. 234, फ़स़्ल न. 8, पब्लिकेशन: दारुस् सक़ाफ़ह (क़त़र), फ़र्स्ट एडीशन, 1405 हि.

इमाम ज़हबी (d. 748 हि.) अपनी किताब: 'अल् इ़बर फ़ी ख़बरि मन ग़बर' में लिखते हैं:

"وفيها يوم ثامن عشر ذي الحجة، عملت الرافضة عيد الغدير، غدير خم، ودقت الكوسات، وصلوا بالصحراء صلاة العيد"،

"और 352 हि. में 18 ज़िल्-ह़िज्जह को राफ़िज़ियों ने ई़दे ग़दीर (ग़दीरे ख़ुम) मनाई, ढोल बजाये और रेगिस्तान में ई़द की नमाज़ पढ़ी."

अल् इ़बर फ़ी ख़बरि मन ग़बर [इमाम ज़हबी (748 हि.)], जिल्द न. 2, पेज न. 90, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1405 हि. / 1985 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
28/07/21 ई.

वो शख़्स बेहतर है

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"لَيْسَ خَيرَكُمْ من ترك دُنْيَاهُ لآخرته وَلَا آخرته لدنياه حَتَّى يُصِيب مِنْهُمَا جَمِيعًا

فَإِنَّ الدُّنيا بَلَاغ إلى الآخرة وَلَا تَكُونُوا كَلًّا عَلَى النَّاس"،

"तुम में से, न तो वो शख़्स बेहतर है, जो अपनी आख़िरत के लिए अपनी दुनिया को छोड़ दे, और न ही वो शख़्स जो अपनी दुनिया के लिए अपनी आख़िरत को छोड़ दे;
बल्कि वो, जो दोनों में से हासिल करे;
क्यूंकि दुनिया ही आख़िरत तक पहुंचने का ज़रिया है;
और लोगों पर बोझ न बनो."
तारीख़े दिमश्क़, जिल्द न. 73, पेज न. 337, पब्लिकेशन: दारुल् फ़िक्र (बेरूत), 1415 हि. / 1995 ई.

इस ह़दीस को अ़ाला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत (अ़लैहिर्-रह़मह) ने अपनी किताब: 'अत् तह़बीर बि बाबित् तदबीर' में भी ज़िक्र फ़रमाया है.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
30/06/21 ई.

क़ुरबानी करने का आदेश नहीं?

अब आपको ईदुल् अज़्हा के दिनों में मुशरिकीने हिन्द के विद्वानों में से ऐसे ऐसे जोकर स्पीच देते हुए दिखेंगे, कि जिनके चुटकुलों की कोई मिसाल नहीं है;
उन्हीं में से एक जोक ये है जो ख़ुद मेरे फेस टू फेस इनके एक विद्वान ने सुनाया:

"आप लोग क़ुरबानी करते हैं, जबकि क़ुरआन में कहीं भी क़ुरबानी करने

का आदेश नहीं दिया गया है."
अब क्या किया जाए, जब चमगादड़ को दिन का उजाला सूझता ही नहीं तो!?

1. क़ुरआन 108:2 —

"فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ"ؕ

"तो तुम अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ो, और क़ुरबानी करो."
[कंज़ुल् ईमान]
क़ुरबानी के बाब में, क़ुरआन ने स़राह़तन गुफ़्तगू फ़रमाई;
ये आयाते बय्यिनात जुस्स-ए-मुशरिकीन पर क़हरे इलाही की बिजलियाँ हैं:

2. क़ुरआन 6:142-144 —

"وَ مِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّ فَرْشًا ؕ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَ لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕاِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۚ مِّنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ آلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ ۖ نَبِّئُونِي بِعِلْمٍ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕقُلْ آلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ"،

"और मवेशियों में से कुछ बोझ उठाने वाले, और कुछ ज़मीन पर बिछे हुए जानवर (पैदा किए); अल्लाह ने तुम्हें जो रिज़्क़ अ़ता फ़रमाया है, उसमें से खाओ, और शैतान के रास्तों पर न चलो;
बेशक वो तुम्हारा खुला दुश्मन है;

आठ नर और मादा,
एक जोड़ा भेड़ का, और एक जोड़ा बकरी का,
तुम फ़रमाओ: 'क्या उसने दोनों नर ह़राम किए, या दोनों मादा, या वो जिसे दोनों मादा पेट में लिए हैं? किसी इ़ल्म से बताओ, अगर तुम सच्चे हो?'
और एक जोड़ा ऊंट का, और एक जोड़ा गाय का;
तुम फ़रमाओ: 'क्या उसने दोनों नर ह़राम किए, या दोनों मादा, या वो जिसे दोनों मादा पेट में लिए हुए हैं?'"[कंज़ुल् इ़र्फ़ान]
इस आयत को समझने में परेशानी होती है, इसलिए कुछ ग्रैमैटिकल वज़ाह़त कर देना बेहतर होगा:
'समानियत-अज़्वाज' बदल (Apposition) है, 'ह़मूलतन्' और 'फ़र्शन्' से; जो कि मफ़्ऊ़ल (object) हैं, इससे पहली आयात में मौजूद 'अन्शअ' के;

3. क़ुरआन 22:36 —

"وَ الْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَ اَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَ الْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ"،

"और क़ुरबानी के डीलदार जानवर, ऊंट और गाय, हमनें तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानियों से किए;
तुम्हारे लिए इनमें भलाई है;
तो इनपर अल्लाह का नाम लो, एक पांव बंधे, तीन पांवों खड़े; फिर जब इनकी करवटें गिर जाएं, तो इनमें से ख़ुद खाओ, और स़ब्र से बैठने वाले और भीख मांगने वाले को खिलाओ; हमनें यूँही इनको तुम्हारे बस में दे दिया, कि तुम एहसान मानो."
[कंज़ुल् ईमान]

इस आयत में 'बुद्न' लफ़्ज़ आया है, जो प्लूरल (बहुवचन) है 'बदनह' का; और फ़िक़्हे ह़नफ़ी में 'बदनह' में गाय और ऊंट दोनों शामिल हैं, मगर इमामे शाफ़िई के यहां सिर्फ़ ऊंट शामिल है; मगर अस़ह़्ह़ व अर्जह़ मौक़िफ़ हमारा ही है, जो कुतुबे लुग़ात व ह़दीस के सबसे क़रीब व मुवाफ़िक़ है;
अल्ह़म्दुलिल्लाह!

अ़न्क़रीब,
आपको लफ़्ज़े 'बदनह' की नफ़ीस तह़क़ीक़ इस फ़क़ीर की इस किताब में पढ़ने को मिलेगी:
"ह़वाफ़िरुल् ख़ैलिल् मूरी अ़ला जुस्सति अरुन शूरी",

जिसे भाजपा के सगे बेहुनर 'अरुण शौरी' के रद में लिखा गया है; इसके पहले बाब ही में अभी तक 55 कुतुबे तफ़ासीर, 25 कुतुबे लुग़ात और 21 कुतुबे फ़िक़्ह से ये साबित किया गया है कि 'बदनह' में ऊंट और गाय दोनों शामिल हैं; तह़क़ीक़ अभी भी जारी है;
इन्-शा अल्लाह!

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
12/07/21 ई.

اسلاف نے ہر مسئلے کا حل بتادیا

اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان حنفی قادری برکاتی بریلوی (علیہ الرحمہ) لکھتے ہیں:

"اے عزیز!...

اس زمانۂ فتن میں لوگوں کو احکامِ شرع پر سخت جرأت ہے، خصوصًا ان مسائل میں، جنہیں حوادثِ

جدیدہ سے تعلق و نسبت ہے، جیسے:

تار برقی (Telegram) وغیرہ؛

(لوگ) سمجھتے ہیں کہ کتبِ ائمۂ دین میں ان کا حکم نہ نکلے گا، جو مخالفتِ شرع کا ہم پر الزام چلے گا؛

مگر نہ جانا کہ،

علمائے دین

(شكر الله تعالى مساعيهم الجميلة)

نے کوئی حرف ان عزیزوں کے اجتہاد کو اٹھا نہیں رکھا ہے،

تصریحاً،

تلویحاً،

تفریعاً،

تاصیلاً،

سب کچھ فرما دیا ہے؛

زیادہ علم اسے ہے جسے زیادہ فہم ہے،

اور، اِن شاء اللہ العزیز، زمانہ (اُن) بندگانِ خدا سے خالی نہ ہو گا، جو:

مشکل کی تسہیل،

معضل کی تحصیل،

صعب کی تذلیل،

مجمل کی تفصیل،

کے ماہر ہوں؛

بحر سے صدف،

صدف سے گوہر،

بذر سے درخت،

درخت سے ثمر،

نکالنے پر، باذن اللہ تعالی، قادر ہوں؛

لا خلا الکون عن أفضالهم و کثّر لله في بلادنا من أمثالهم .

آمين آمين برحمتك يا أرحم الراحمين،

وصلي لله تعالي علي خاتم النبيين سيدنا محمد وآله وصحبه أجمعين...!"

(ملتقطاً)

(فتاویٰ رضویہ، جلد:10، صفحہ:366-367، مطبوعہ لاہور)

از: محمد قاسم القادری

اللہ کی قسم!

يقول الإمام الشمس الذهبي (م - 748ھ):

..."وَاللَّهِ!

عَمَّ الفَسَادُ، وَظَهَرَتِ البِدَعُ، وَخَفِيَتِ السُّنَنُ، وَقَلَّ القَوَّالُ بِالْحَقِّ، بَلْ لَوْ نَطَقَ العَالِمُ بَصِدْقٍ وَإِخْلاصٍ لَعَارَضَهُ عِدَّةٌ مِنْ عُلَمَاءِ الوَقْتِ، وَلَمَقَتُوهُ وَجَهَّلُوْهُ -فَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ".

..."اللہ کی قسم!

فسادعام ہوگیا، بدعات ظاہر ہوگئیں، اور سنتیں چھپ گئیں، حق بات کہنے والے بہت کم رہ گئے، بلکہ اگر کوئی عالم صدق واخلاص سے کوئی بات کہے تو کوئی علمائے وقت ہی اس کی مخالفت کرنے لگتے ہیں، اس سے بغض رکھنے لگتے ہیں اور اسے جاہل قرار دے دیا کرتے ہیں".

(سير أعلام النبلاء،شمس الدين أبو عبد الله محمد بن أحمد بن عثمان بن قَايْماز الذهبي (المتوفى: 748هـ)، دار الحديث - القاهرة،سنة النشر: 1427هـ - 2006م،الطبقة السابعة عشر - ابن رسته وابن فرح وابن ناجية،الجزء - 11،الصفحة – 102)

अहले इ़ल्म हज़रात ग़ौर दें

दौरे ह़ाज़िर के दुनियावी जुहला, यानी उ़लमा के गुस्ताख़ों में से, जो लोग हिन्दी या इंग्लिश या किसी भी ज़ुबान में क़ुरआन का तरजमा पढ़कर, क़ुरआन-दानी का दावा करने लगते हैं, और ओवर कॉन्फिडेंस इतना कि बड़े बड़े उ़लमा को भी अपने आगे कमतर समझते हैं, इनसे जब किसी आ़लिम की गुफ़्तगू हो, तो आ़लिम को चाहिए कि उनकी इस शर्त को मंज़ूर कर लें कि:
"बात सिर्फ़ क़ुरआन से होगी",

फिर गुफ़्तगू शुरू करने के बाद उन्हें क़ुरआन के उसूल व क़वाइ़द से घुमाने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि सबसे पहले लफ़्ज़े' क़ुरआन' पर गुफ़्तगू करें...!

ताकि उसे 14 त़बक़ रौशन दिखाई दें, और वो अपनी जहालत को भी पहचान ले, कि लफ़्ज़े क़ुरआन की गुत्थियों को सुलझाना इन जुहला के बस की बात नहीं,
तो फिर सिर्फ़ क़ुरआन का तरजमा पढ़ने से मसाइल का इस्तिख़्राज व

इस्तिम्बात़ कितना बड़ा काम होगा. ये तो ऐसे ही हुआ कि फ़र्स्ट क्लास का इंग्लिश का स्टूडेंट विलियम शेक्सपीयर के लिटरेचर को हल करने का दावा करे.

जो ये नहीं जानता कि लफ़्ज़े क़ुरआन 'जामिद' है, या 'मुश्तक़्क़'? 'मस़्दर' है, या 'फ़िअ़ल'? 'फ़िअ़ल' है तो कौनसा? 'मस़्दर' है तो अपने असली मअ़ना में है, या 'फ़ाइ़ल' के मअ़ना में है, या 'मफ़्ऊ़ल' के? अगर 'फ़ाइ़ल' है तो क्यूँ? अगर 'मफ़्ऊ़ल' है तो क्यूँ? फिर लफ़्ज़े क़ुरआन से 'कुल्ले क़ुरआन' मुराद है, या 'बअ़ज़े क़ुरआन'? अगर 'कुल' मुराद है तो कैसे? अगर 'बअ़ज़' मुराद है तो कौनसी कौनसी आयात? अगर 'कुल' मुराद नहीं, तो पूरे को 'क़ुरआन' क्यूँ कहा जाता है?

और अगर 'बअ़ज़े क़ुरआन' मुराद है तो उससे 'आयाते क़िसस' मुराद हैं, या 'आयाते अह़काम'? अगर 'आयाते क़िसस' मुराद हैं, तो इन्हें 'आयाते अह़काम' से अलग क्यूँ रखा गया, जबकि अलग रखने की ज़रूरत ही नहीं थी? और अगर सिर्फ़ 'आयाते अह़काम' मुराद हैं, तो फिर इनके अलावा 'आयाते क़िसस' को क़ुरआन क्यूँ कहा गया?

'अल्-क़ुरआन' में अलिफ़-लाम 'अ़हदी' है, या 'जिंसी'? अगर 'अ़हदी' है, तो फिर उसका 'मअ़हूद' क्या है? और अगर 'जिंसी' है तो क्यूँ?

फिर थोड़ी उसकी बेबसी को और बढ़ाएं:

क़ुरआन सिर्फ़ अल्फाज़ को कहते हैं, या सिर्फ़ मअ़ना को, या फिर दोनों के मज्मूअ़ा को? क़ुरान 'अ़लम' है या नहीं? अगर है तो 'ग़ैर मुन्स़रिफ़' है, या 'मुन्स़रिफ़'? अगर 'मुन्स़रिफ़' है तो फिर इसमें 'मनूए स़र्फ़' के दो सबब क्यूँ

हैं? और अगर 'ग़ैर मुन्स़रिफ़' है तो फिर क़ुरआन में इसे 'क़ुरआनन्' कहकर 'मुन्स़रिफ़' क्यूँ लाया गया?

क़सम से, आपका जानी दुश्मन बन जाएगा.

सुनें!
अपने असातिज़ह से जो पढ़ा है वो हमारे लिए हर मैदान में मिश्अ़ले राह है. उसे ख़ास मैदान में मह़दूद समझना बहुत बड़ी ग़लती है. आप दर्से निज़ामी की पढ़ी हुई चीज़ों को हर मैदान में हथियार बना सकते हैं, ये कहीं आपको बे-यारो मददगार नहीं छोड़ेगा; काफ़िरों के रद में, वह्हाबिय्यह के रद में, मुल्ह़िदीन के रद में, जिसे चाहेंगे ढेर कर देंगे, मगर ऐसा सिर्फ़ एक ही शर्त के साथ होगा:
कुतुब का इस्तिह्ज़ार हो, और ये मुसलसल तकरारे मुत़ालअ़ा से होता है...!

अगर इसकी मिसाल देखना हो,
तो कभी फ़तावा रज़विय्यह में ग़ौर कर लें;
कि जहां जहां अहले कुफ्र व बिद्अ़त का रद किया है, वहाँ वहाँ उसूल व क़वाइ़द की भरमार मिलेगी.
हिन्दुओं को भी इसी से उड़ा डालते हैं, ईसाइयों को भी, वह्हाबिय्यह को भी, मुल्ह़िदीन को भी, यूनानी मक्कारियों को भी. मगर हमनें क्या ज़हन बना लिया है आज, कि दर्से निज़ामी आपको मह़दूद कर देता है?
अफ़सोस है ऐसी ज़हनिय्यत पर!

अल्ह़म्दुलिल्लाह!
इस फ़क़ीर सरापा तक़्सीर ने इस सुन्नते रज़विय्यह और तअ़लीमे असातिज़ह पर हमेशा अ़मल किया है,

अल्लाह करीम जब भी मह़ज़ अपने फ़ज़्ल से कोई इ़ल्मी ख़िदमत लेता है, कि किसी भी काफ़िर की तरफ़ से क़ुरआन या ह़दीस या शरीअ़ते ग़र्राअ पर उठाए हुए एतराज़ का जवाब लिखना हो तो पहले उस़ूल व क़वाइ़द से उसका रद किया जाता है. उसका एतराज़ कुछ पादिर हवा बनकर रह जाता है. व लिल्लाहिल् ह़म्द अ़ला ज़ालिक

"इस दौर में जितने भी एतराज़ात इस्लाम पर किए जा रहे हैं, कुछ भी नए नहीं हैं, बल्कि इन एतराज़ के वुजूद में आने से पहले ही हमारे सलफ़ इनके जवाब लिख गए हैं.
क़ुरआन की आयात पर जो भी एतराज़ काफ़िर की तरफ़ से हो, तो जवाब में अपने इज्तिहाद को न लाकर, बड़ी बड़ी कुतुबे तफ़्सीर देखें, हर सवाल का जवाब पाएंगे.
आपका काम सिर्फ़ इतना है कि जिस तरह से आज के काफ़िर पुराने सवालों को नए नए अल्फाज़ का जामा पहनाकर आपके सामने पेश कर रहे हैं, उसी तरह आप भी उन पहले से लिखे हुए जवाब को नए अंदाज़ में लिखें, याद रहे कि काफ़िरों को चबाई हुई हड्डियां चबाने की मौरूसी आदत होती है...!"
ये आख़िरी पैराग्राफ वो नसीहत है जो उ़र्से क़ासिमी 2018 के मौके पर 'रईसुल् क़लम अ़ल्लामा यासीन अख़्तर मिस़्बाह़ी, चेयरमैन: दारुल् क़लम, ज़ाकिर नगर, दिल्ली (ह़फ़िज़हुल्लाहु व रआ़हु)' ने इस अह़क़र को की थी...!

हमारा निज़ामे शरीअ़ते ग़र्राअ

कुफ़्फ़ार की हुकूमत में रहने वाले 'मुसलमान शहरी' अपनी इबादतगाह 'मस्जिद' से महरूम कर दिए जाते हैं, जिनमें 'बाबरी मस्जिद' का मामला

बहुत मशहूर है. इसके अलावा 'फ़रवरी 2020 ई.' में होने वाले 'उत्तरी-पूर्व दिल्ली दंगों' में भी हिन्दू आतंकवादियों ने 14 मस्जिदों और एक दरगाह में आग लगाई:
सोर्स:
https://scroll.in/article/955713/in-photos-fifteen-muslim-shrines-in-delhi-that-were-burnt-by-hindutva-vigilantes-in-three-days
मगर 'इस्लामी हुकूमत' में रहने वाले 'काफ़िर शहरियों' की इबादतगाह को इस्लाम ने क्या हुक़ूक़ दिए हैं, देखिए एक नज़र:

अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने क़ुरआन 22:40 में इरशाद फ़रमाया:

"وَلَوۡلَا دَفۡعُ ٱللَّهِ ٱلنَّاسَ بَعۡضَهُم بِبَعۡضٍ لَّهُدِّمَتۡ صَوَٰمِعُ وَبِيَعٞ وَصَلَوَٰتٞ وَمَسَٰجِدُ يُذۡكَرُ فِيهَا ٱسۡمُ ٱللَّهِ كَثِيرٗا"،

"और अल्लाह अगर आदमियों में एक को दूसरे से दफ़ा न फ़रमाता, तो ज़रूर ढहा दी जातीं ख़ानक़ाहें (abbeys), और गिरजा (churches), और कलीसे (synagogues), और मस्जिदें (mosques);
जिनमें अल्लाह का ब-कसरत नाम लिया जाता है."
[कंज़ुल् ईमान]

इमाम अबू बक्-र जस़्स़ास़ ह़नफ़ी (d. 370 हि.), इस आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं:

"يُدْفَعُ عَنْ هَدْمِ مُصَلَّيَاتِ أَهْلِ الذِّمَّةِ بِالْمُؤْمِنِينَ"،

"अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल मुसलमानों के ज़रिए, ग़ैर मुस्लिम शहरियों की

इबादतगाहों को ढहने से रोकता है (यानी मुसलमानों के ज़रिए इनकी हिफ़ाज़त करता है)."

अह़कामुल् क़ुरआन, 3:320, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), पहला एडीशन, 1415 हि./1994 ई.

यही इमाम अबू बक्-र जस़्स़ास़ ह़नफ़ी (d. 370 हि.), आगे लिखते हैं:

"فِي الْآيَةِ دَلِيلٌ عَلَى أَنَّ هَذِهِ الْمَوَاضِعَ الْمَذْكُورَةَ لَا يَجُوزُ أَنْ تُهْدَمَ عَلَى مَنْ كَانَ لَهُ ذِمَّةٌ أَوْ عَهْدٌ مِنْ الْكُفَّارِ"،

"और इस आयत में इस बात की दलील है, कि ग़ैर मुस्लिम शहरियों या शांति-संधि किए हुए काफ़िरों की इबादतगाहों को गिराना जायज़ नहीं."

अह़कामुल् क़ुरआन, 3:320, दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), पहला एडीशन, 1415 हि./1994 ई.

मुस्लिम अक्सरियती इलाक़ों में भी ग़ैर मुस्लिम शहरियों की इबादतगाहों को गिराना जायज़ नहीं. यही इमाम अबू बक्-र जस़्स़ास़ ह़नफ़ी (d. 370 हि.), आगे लिखते हैं:

"فِي أَرْضِ الصُّلْحِ إذَا صَارَتْ مِصْرًا لِلْمُسْلِمِينَ لَمْ يُهْدَمْ مَا كَانَ فِيهَا مِنْ بِيعَةٍ أَوْ كَنِيسَةٍ أَوْ بَيْتِ نَارٍ"،

"सुलह की ज़मीन पर, जब मुसलमानों का कोई शहर आबाद हो जाए, तो वहाँ भी पाए जाने वाले गिरजे (churches), कलीसे (synagogues), और अग्नि मंदिर (fire temples) को नहीं गिराया जाएगा."

अह़कामुल् क़ुरआन, 3:320, दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), पहला एडीशन, 1415 हि./1994 ई.

वह्हाबिय्यह के मुअ़तमद बुज़ुर्ग इब्ने क़य्यिम जौज़िय्यह (d. 751 हि.) ने भी लिखा:

"يَدْفَعُ عَنْ مَوَاضِعِ مُتَعَبَّدَاتِهِمْ بِالْمُسْلِمِينَ"،

"अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल मुसलमानों के ज़रिए इनकी इबादतगाहों की हिफ़ाज़त करता है."

अह़कामु अह्-लिज़् ज़िम्मह, 3:1169, पब्लिकेशन: दारुज़् ज़मन (दम्माम), पहला एडीशन, 1418 हि./1997 ई.

इसके बावजूद भी मुसलमानों पर ये इल्ज़ाम बराबर लगाया जा रहा है कि: "ये मुसलमान अपनी सल्तनत में दूसरे मज़हब वालों की इबादतगाहों को ढहा देते हैं",
इस झूठे दावे को सिवा 'घिनौने इल्ज़ाम' के और क्या समझा जा सकता है?

औरत के फ़ितने से ज़्यादा नुक़सान

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"مَا تَرَكْتُ بَعْدِي فِي النَّاسِ فِتْنَةً أَضَرَّ عَلَى الرِّجَالِ مِنَ النِّسَاءِ"،

"मैंने अपने बाद, लोगों में, मर्दों पर कोई ऐसा फ़ितना नहीं छोड़ा, जो (उन मर्दों को) औरत के फ़ितने से ज़्यादा नुक़सान पहुंचाने वाला हो."

स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुर् रिक़ाक़, बाब न. 26, ह़दीस न. 2741, जिल्द न. 4, पेज न. 2098, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत)

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"النِّسَاءُ حَبَائِلُ الشَّيْطَانِ"،

"औरतें/लड़कियां शैतान के जाल हैं
(जिनसे वो मर्दों का शिकार करता है)."

अल्-मक़ासिदुल् ह़सनह (लिस् सख़ावी), ह़दीस न. 1247, जिल्द न. 1, पेज न. 695, पब्लिकेशन: दारुल् किताबिल् अ़रबिय्यि (बेरूत), पहला एडीशन, 1405 हि./1985 ई.

स़िद्-दीक़ का पहला नंबर

कूफ़ा के मिम्बर पर खड़े होकर मौला ह़ैदरे कर्रार (कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल् करीम) ने तफ़्ज़ीलिय्यत की जड़ों को ही काट डाला, और एलान कर दिया:

"ألا إن خير هذه الأمة بعد نبيها أبو بكر ثم عمر"،

"ख़बरदार!
नबी के बाद, इस उम्मत में सबसे अफ़्ज़ल अबू बक्र हैं, फिर उ़मर हैं."

मुस्नदे अह़मद, ह़दीस न. 833 से 837 तक, जिल्द न. 2, पेज न. 201, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), पहला एडीशन, 1421 हि./2001 ई.

तारीख़े दिमश्क़ (इब्ने अ़साकिर), ह़र्फ़ुल् ऐ़न, जिल्द न. 44, पेज न. 203, पब्लिकेशन: दारुल् फ़िक्र (बेरूत), 1415 हि./1995 ई.

ह़ैदरे कर्रार मौला अ़ली (कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल् करीम) के बेटे हज़रत मुह़म्मद इब्ने ह़नफ़िय्यह (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) रिवायत करते हैं:

"'قُلْتُ لِأَبِي أَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ بَعْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟' قَالَ: «أَبُو بَكْرٍ»، قُلْتُ: 'ثُمَّ مَنْ؟' قَالَ: «ثُمَّ عُمَرُ»،

وَخَشِيتُ أَنْ يَقُولَ عُثْمَانُ، قُلْتُ: 'ثُمَّ أَنْتَ؟' قَالَ: «مَا أَنَا إِلَّا رَجُلٌ مِنَ

الْمُسْلِمِينَ"»،

"मैंने अपने वालिद (ह़ज़रत अ़ली) से पूछा कि: 'आक़ा (ﷺ) के बाद लोगों में सबसे अफ़्ज़ल कौन है?'
तो ह़ज़रत अ़ली ने जवाब दिया: 'अबू बक्र',
मैंने पूछा: 'फिर कौन?'
तो ह़ज़रत अ़ली ने जवाब दिया: 'उ़मर',
फिर मुझे ख़ौफ़ हुआ कि (अगर मैं अब पूछूँगा कि: 'फिर कौन', तो आप कहीं) ह़ज़रत उ़स्मान का नाम न ले दें, (इसलिए) मैंने (डायरेक्ट) पूछा: 'फिर आप हैं न?'

तो ह़ज़रत अ़ली ने (तवाज़ुअ़न्) जवाब दिया: 'मैं तो सिर्फ़ मुसलमानों में से ही एक आदमी हूं'."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस न. 3671, जिल्द न. 5, पेज न. 7, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1422 हि.

क़ुरआन में केमिस्ट्री (रसायन विज्ञान/इ़ल्मे कीमिया) की एक अहम बात

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन 2:24 में इरशाद फ़रमाया गया:

"فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ"،

"तो डरो उस आग से, जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं."
[कंज़ुल् ईमान]
यहां 'ह़िजारह (पत्थर)' से कौन सा पत्थर मुराद है?

आमतौर पर इस आयत से यही समझा जाता है कि यहां 'ह़िजारह (पत्थर)' से मुराद पत्थर से बनी हुई वो मूर्तियां व बुत हैं जिनकी पूजा मुश्-रिकीन करते हैं. जब कि इसके अ़लावा एक ज़बरदस्त तफ़्सीर मज़ीद बयान की गयी है, उस पर ध्यान नहीं दिया जाता;
अक्सर और बड़े बड़े मुफ़स्सिरीन ने बयान किया है कि:
इस आयत में 'ह़िजारह (पत्थर)' से मुराद 'हिजारतुल् किबरीत' है, जिसे इंग्लिश में 'Sulphur (सल्फर)', और हिंदी में 'गंधक' कहते हैं. केमिस्ट्री के मुताबिक़ इसका सिम्बल 'S' है, और 'अणु संख्या (atomic number)' 16 है. ये बहुत विस्फोटक (explosive) होता है;

बिना इसके कोई भी विस्फोटक चीज़ नहीं बनाई जाती. इसका इस्तेमाल माचिस की तीली में भी होता है, और माचिस को अरबी में 'किबरीत' कहते हैं, इसलिए ये जिस विस्फोटक पदार्थ 'गंधक' से बनती है, उसे अ़रबी में 'हिजारतुल् किबरीत' कहते हैं.

सिर्फ़ एक हवाला देता हूं:

इमाम क़ुर्तबी (अ़लैहिर्रह़मह) क़ुरआन 2:24 के तह़्त लिखते हैं:

"'وَالْحِجارَةُ'،

هِيَ حِجارَةُ الْكِبْرِيتِ الْأَسْوَدِ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ وَالْفَرَّاءِ وَخُصَّتْ بِذَلِكَ لِأَنَّهَا تَزِيدُ عَلَى جَمِيعِ الْأَحْجارِ بِخَمْسَةِ أَنْوَاعٍ مِنَ الْعَذَابِ:

سُرْعَةِ الِاتِّقَادِ،

نَتْنِ الرَّائِحَةِ،

كَثْرَةِ الدُّخَانِ،

شِدَّةِ الاِلْتِصَاقِ بِالْأَبْدَانِ،

قُوَّةِ حَرِّهَا إِذَا حَمِيَتْ"،

"'और पत्थर',

तो इससे मुराद 'काला गंधक (Black Sulfur)' है, (जैसा कि) हज़रत इब्ने मस्ऊ़द और फ़र्रा से मरवी है; और इस (पत्थर को) गंधक (Sulphur) के साथ इसलिए ख़ास किया गया, चूंकि ये (गंधक का पत्थर) दूसरे तमाम पत्थरों से, तकलीफ़ (देने वाली) पांच चीज़ों में, ज़्यादा होता है:

1. तेज़ जलने में,
2. बदबू में,
3. धुआं के ज़्यादा होने में,
4. बदनों से चिपकने की सख़्ती में,
5. जब जलाया जाए, तो गर्मी की ताक़त में."

अल् जामिअ़ लि अह़्कामिल् क़ुरआन (तफ़्सीरे क़ुर्तबी), जिल्द न. 1, पेज न. 235, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् मिस्-रिय्यह (क़ाहिरा), दूसरा एडीशन, 1384 हि./1964 ई.

इसी को इमाम त़बरी, इब्ने अबी ह़ातिम, इब्ने कसीर, इमाम बग़वी वग़ैरुहुम् ने भी ज़िक्र किया;

इमाम हाकिम ने भी अपनी 'अल् मुस्तदरक अ़लस् स़ह़ीह़ैन' में इसे रिवायत किया है.

लुग़वी खेल

'ग़स्ल (غَسْل)' का मतलब है 'धोना',

'ग़ुस्ल (غُسْل)' का मतलब है 'नहाना' और 'वो पानी जिससे नहाया जाए', 'ग़िस्ल (غِسْل)' का मतलब है 'वो चीज़ जिससे सर धोया जाए, जैसे साबुन/शैम्पू वग़ैरह'.

अत् तअ़लीक़ुल् मुमज्जद अ़ला मुवत़्त़-इल् इमाम मुह़म्मद, बाब: ग़स्लुल् यदैन फ़िल् वुदूअ, पेज न. 48, हाशिया न. 13, पब्लिकेशन: मज्लिसुल् बरकात, मुबारकपुर (आ़ज़मगढ़), 1427 हि./2006 ई.

मुसलमान कन्वर्टिड

हम मुसलमान कन्वर्टिड (Converted) नहीं, बल्कि रिवर्टिड (Reverted) हैं. पूरी दुनिया इस हक़ीक़त को मानती है, कि दुनिया के सबसे पहले इंसान आदम थे; और वो 'तौह़ीद (एकेश्वरवाद/Monotheism)' के मानने वाले थे, और आज का मुसलमान भी 'मुवह़्ह़िद (एकेश्वरवादी/Monotheist)' है;

मगर कंवर्टिड तो ये कुफ़्फ़ार हैं जो 'तौह़ीद (एकेश्वरवाद/Monotheism)' को छोड़ कर, 'मुशरिक (बहुदेववादी/Polytheist)' बन गए. हम तो 'Monotheism' से 'Monotheism' की तरफ लौट गए, मगर ये कुफ़्फ़ार आज भी 'Monotheism' को छोड़कर 'Polytheism' के फ़ाॅलोवर्स हैं;

अब फ़ैसला करें कि ये कुफ़्फ़ार कन्वर्टिड हैं या हम मुसलमान?

'अ़म्र इब्ने लुह़य्य ख़ुज़ाई़ (عَمْرُو بْنُ لُحَيِّ الْخُزَاعِيُّ)' पहला शख़्स था, जिसने मक्का में, इस्लाम ज़ाहिर होने से सदियों पहले, बुत-परस्ती

(मूर्तिपूजा/Idolatry) का तआ़रुफ़ कराया, और इसकी तब्लीग़ की.

किताबुल् अस्नाम, हिशान इब्ने कल्बी (d. 819 ई. / 204 हि.)
आक़ा (ﷺ) ने इसके बारे में इरशाद फ़रमाया:

"رَأَيْتُ عَمْرَو بْنَ عَامِرِ بْنِ لُحَيٍّ الخُزَاعِيَّ يَجُرُّ قُصْبَهُ فِي النَّارِ وَكَانَ أَوَّلَ مَنْ سَيَّبَ السَّوَائِبَ"،

"मैंने अ़म्र इब्ने आ़मिर इब्ने लुह़य्य ख़ुज़ाई़ को जहन्नम में अपनी आंतें घसीटते हुए देखा; क्यूँकि यही पहला शख़्स है जिसने बुतों के नाम पर जानवर छोड़ने का रिवाज डाला था."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल् मनाक़िब, बाब: क़िस़्स़तु ख़ुज़ाअ़ह, ह़दीस न. 3521, जिल्द न. 4, पेज न. 184, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1422 हि.

क़ौम के राज़

क़ौम के उन ग़द्दार चुग़लख़ोरों के नाम जो दूसरों तक अपनी क़ौम के राज़ पहुंचाते हैं;

अल्लाह तआ़ला क़ुरआन 60:1-2 में इरशाद फ़रमाता है:

"يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِم بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُم مِّنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ ۙ أَن تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ إِن كُنتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي سَبِيلِي وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي ۚ تُسِرُّونَ إِلَيْهِم بِالْمَوَدَّةِ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنتُمْ ۚ وَمَن يَفْعَلْهُ

مِنكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ"،
"إِن يَثْقَفُوكُمْ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَلْسِنَتَهُم بِالسُّوءِ وَوَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ"،

"ऐ ईमान वालो!
मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ. तुम उन्हें ख़बरें पहुंचाते हो, दोस्ती से; हालांकि वो मुन्किर हैं, उस ह़क़ के, जो तुम्हारे पास आया; घर से जुदा करते हैं रसूल को, और तुम्हें, इस पर कि तुम अपने रब, अल्लाह पर ईमान लाए; अगर तुम निकले हो, मेरी राह में जिहाद करने, और मेरी रज़ा चाहने को, तो उनसे दोस्ती न करो; तुम उन्हें ख़ुफ़िया पयाम, मुह़ब्बत का भेजते हो, और मैं ख़ूब जानता हूं, जो तुम छुपाओ और जो ज़ाहिर करो; और तुम में जो ऐसा करे, वो बेशक सीधी राह से बहका",

"अगर तुम्हें पाएं, तो तुम्हारे दुश्मन होंगे, और तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ और अपनी ज़ुबानें बुराई के साथ दराज़ करेंगे, और उनकी तमन्ना है कि किसी तरह तुम काफ़िर हों जाओ."
[कंज़ुल् ईमान]

तमाम हिन्दी कुफ़्फ़ार

इमामे अहले सुन्नत ने नस़्स फ़रमाई:
"तमाम हिन्दी कुफ़्फ़ार 'मुह़ारिब् बिल् फ़िअ़ल (Active combatants)' हैं."

फतावा रज़विय्यह, 14:454

"ह़र्बी काफ़िर को हरगिज़ मस्जिद में घुसने की इजाज़त नहीं.
क्यूँकि इनका मस्जिद में जाना अशद्-द ह़राम है,
सिर्फ़ काफ़िरे ज़िम्मी ही जा सकता है,
और ज़िम्मी में से भी सिर्फ़ किताबी जा सकता है, बाक़ी नहीं."

फतावा रज़विय्यह,14:522-526

यही इमामे अहले सुन्नत इरशाद फ़रमाते हैं:

"अगर एक तरफ कुत्ता प्यासा हो,
और दूसरी तरफ़ ह़र्बी,
तो ह़र्बी को छोड़कर कुत्ते को पानी पिलाओ."
अल् मल्फ़ूज़

आसिफ़ के केस के बाद बहुत अच्छे से समझ में आया है कि ऐसा हुक्म क्यूँ दिया गया है.
इसलिए भूखे मरो,
या प्यासे,
हमारी मस्जिदों में किसी भी ह़र्बी को आने की ज़रूरत नहीं है.

इसीलिए किसी भी काफ़िर को मस्जिद में आने की दावत देकर,
अपनी गंगा जमुनी बीमारी का सुबूत न दें.
अब कब समझ आएगी?
अब कुछ लिबरल या सैक्यूलर लोग आपको कुछ ऐसी रिवायात दिखाएंगे जिनसे साबित होता है कि काफ़िर का मस्जिद में आना जायज़ है;
तो ऐसे जुह्हाल के लिए ये जवाब पेश करें:

जितनी भी रिवायात में ऐसा साबित होता है, वो सब इस्लाम के शुरूआती ज़माने की हैं. बाद में आक़ा (ﷺ) ने इन्हें मंसूख़ (repealed/abrogated) कर दिया,
और दलीले नस्ख़ ये है:
आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"لَا يَدْخُلُ مَسْجِدَنَا هَذَا، بَعْدَ عَامِنَا هَذَا، مُشْرِكٌ إِلَّا أَهْلُ الْعَهْدِ، وَخَدَمُكُمْ"،

"अब हमारी इस मस्जिद में, हमारी इस साल के बाद, कोई मुश्-रिक न घुसने पाए;
सिवा ज़िम्मियों और उनके ग़ुलामों के."

मुस्नदे अह़मद, ह़दीस न. 15221 (23:387), पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1421 हि./2001 ई.

फिर इसपर भी एतराज़ कर सकते हैं कि इसमें तो मुत़्लक़न् ज़िम्मियों का ज़िक्र है, तो आपने 'किताबी' की तख़्सीस़ क्यूँ की?

इसका जवाब ये है कि ये तख़्सीस़ ख़ुद एक दूसरी रिवायत में मौजूद है:
आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"لَا يَدْخُلُ مَسْجِدَنَا هَذَا مُشْرِكٌ بَعْدَ عَامِنَا هَذَا، غَيْرَ أَهْلِ الْكِتَابِ وَخَدَمِهِمْ"،

"हमारी इस मस्जिद में, हमारी इस साल के बाद, कोई मुश्-रिक न घुसने पाए, सिवा किताबियों के और उनके ग़ुलामों के."

मुस्नदे अह़मद, ह़दीस न. 14649 (23:18), पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1421 हि./2001 ई.

आख़िर में इमामे अहले सुन्नत ने मुहर फ़रमा दी:
"लिल्लाहिल् ह़म्द,
इस ह़दीसे ह़सन ने स़ाफ़ इरशाद फ़रमाया कि इससे पहले जो किसी मुश्-रिक या काफ़िरे ग़ैर ज़िम्मी के लिए (मस्जिद में आने की) इजाज़त थी, मंसूख़ (abrogated) हो गयी."

फतावा रज़विय्यह,14:522-526

ये है
'मज़्हबे ह़नफ़िय्यह'
और
'मस्लके आला ह़ज़रत'

आयाते जिहाद और उनका मुख़्तस़र हुक्म

पहले आयाते जिहाद व क़िताल की फ़ेहरिस्त देखें, उसके बाद इनका हुक्म पढ़ें और समझें:

(1) क़ुरआन 2:218 —
"إِنَّ الَّذِينَ آمَنُواْ وَالَّذِينَ هَاجَرُواْ وَجَاهَدُواْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُوْلَئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ"،

"वो जो ईमान लाए, और वो जिन्होंने अल्लाह के लिए अपने घर बार छोड़े, और अल्लाह की राह में लड़े, वो रह़मते इलाही के उम्मीदवार हैं, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है."[कंज़ुल् ईमान]

(2) क़ुरआन 3:142 —

"أَمۡ حَسِبۡتُمۡ أَن تَدۡخُلُواْ ٱلۡجَنَّةَ وَلَمَّا يَعۡلَمِ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ جَٰهَدُواْ مِنكُمۡ وَيَعۡلَمَ ٱلصَّٰبِرِينَ"۔

"क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे, और अभी अल्लाह ने तुम्हारे ग़ाज़ियों का इम्तिह़ान न लिया, और न स़ब्र वालों की आज़माइश की." [कंज़ुल् ईमान]

(3) क़ुरआन 4:95 —

"لَّا يَسۡتَوِي ٱلۡقَٰعِدُونَ مِنَ ٱلۡمُؤۡمِنِينَ غَيۡرُ أُوْلِي ٱلضَّرَرِ وَٱلۡمُجَٰهِدُونَ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ بِأَمۡوَٰلِهِمۡ وَأَنفُسِهِمۡ فَضَّلَ ٱللَّهُ ٱلۡمُجَٰهِدِينَ بِأَمۡوَٰلِهِمۡ وَأَنفُسِهِمۡ عَلَى ٱلۡقَٰعِدِينَ دَرَجَةً وَكُلًّا وَعَدَ ٱللَّهُ ٱلۡحُسۡنَىٰ وَفَضَّلَ ٱللَّهُ ٱلۡمُجَٰهِدِينَ عَلَى ٱلۡقَٰعِدِينَ أَجۡرًا عَظِيمًا"۔

"बराबर नहीं वो मुसलमान, कि बे-उ़ज़्र जिहाद से बैठ रहें, और वो कि राहे ख़ुदा में अपने मालों और जानों से जिहाद करते हैं. अल्लाह ने अपने मालों और जानों के साथ जिहाद वालों का दर्जा, बैठने वालों से बड़ा किया; और अल्लाह ने सब से भलाई का वादा फ़रमाया; और अल्लाह ने जिहाद वालों को, बैठने वालों पर बड़े सवाब से फ़ज़ीलत दी है."[कंज़ुल् ईमान]

(4) क़ुरआन 5:35 —

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱتَّقُواْ ٱللَّهَ وَٱبۡتَغُوٓاْ إِلَيۡهِ ٱلۡوَسِيلَةَ وَجَٰهِدُواْ فِي سَبِيلِهِۦ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُونَ"۔

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो, और उसकी तरफ़ वसीला ढूंढो, और

उसकी राह में जिहाद करो, इस उम्मीद पर कि फ़लाह़ पाओ."
[कंज़ुल् ईमान]

(5) क़ुरआन 8:72 —

"إِنَّ الَّذِينَ آمَنُواْ وَهَاجَرُواْ وَجَاهَدُواْ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللّهِ وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ"،

"बेशक, जो ईमान लाए, और अल्लाह के लिए घर बार छोड़े, और अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों से लड़े, और वो जिन्होंने जगह दी और मदद की, वो एक दूसरे के वारिस हैं."
[कंज़ुल् ईमान]

(6) क़ुरआन 8:74 —

"وَالَّذِينَ آمَنُواْ وَهَاجَرُواْ وَجَاهَدُواْ فِي سَبِيلِ اللّهِ وَالَّذِينَ آوَواْ وَّنَصَرُواْ أُوْلَئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَّهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ"،

"और वो जो ईमान लाए, और हिजरत की, और अल्लाह की राह में लड़े, और जिन्होंने जगह दी और मदद की, वही सच्चे ईमान वाले हैं, उनके लिए बख़्शिश है, और इ़ज़्ज़त को रोज़ी." [कंज़ुल् ईमान]

(7) क़ुरआन 8:75 —

"وَالَّذِينَ آمَنُواْ مِن بَعْدُ وَهَاجَرُواْ وَجَاهَدُواْ مَعَكُمْ فَأُوْلَئِكَ مِنكُمْ"،

"और जो बाद को ईमान लाए, और हिजरत, और तुम्हारे साथ जिहाद किया, वो भी तुम्हीं में से हैं." [कंज़ुल् ईमान]

(8) क़ुरआन 9:16 —

"أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تُتْرَكُواْ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّهُ الَّذِينَ جَاهَدُواْ مِنكُمْ"،
"क्या इस गुमान में हो, कि यूंही छोड़ दिए जाओगे, और अभी अल्लाह ने पहचान न कराई उनकी, जो तुम में से जिहाद करेंगे."
[कंज़ुल् ईमान]

(9) क़ुरआन 9:20 —
"الَّذِينَ آمَنُواْ وَهَاجَرُواْ وَجَاهَدُواْ فِي سَبِيلِ اللّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ أَعْظَمُ دَرَجَةً عِندَ اللّهِ وَأُوْلَئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ"،

"वो जो ईमान लाए, और हिजरत की, और अपने माल जान से, अल्लाह की राह में लड़े, अल्लाह के यहां उनका दर्जा बड़ा है, और वही मुराद को पहुंचे." [कंज़ुल् ईमान]

(10) क़ुरआन 9:24 —
"قُلْ إِن كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ اللّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُواْ حَتَّى يَأْتِيَ اللّهُ بِأَمْرِهِ وَاللّهُ لاَ يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ"،

"तुम फ़रमाओ: अगर तुम्हारे बाप, और तुम्हारे बेटे, और तुम्हारे भाई, और तुम्हारी औरतें, और तुम्हारा कुनबा, और तुम्हारी कमाई के माल, और वो सौदा जिसके नुक़सान का तुम्हें डर है, और तुम्हारे पसंद के मकान, ये चीज़ें अल्लाह और उसके रसूल, और उसकी राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हों, तो रास्ता देखो, यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए, और अल्लाह

फ़ासिक़ों को राह नहीं देता."
[कंज़ुल् ईमान]
(11) क़ुरआन 9:41 —

"انفِرُواْ خِفَافًا وَثِقَالاً وَجَاهِدُواْ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ"،

"कूच करो, हल्की जान से, चाहे भारी दिल से, और अल्लाह की राह में लड़ो अपने माल और जान से. ये तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर जानो!"
[कंज़ुल् ईमान]

(12) क़ुरआन 9:44 —
"لاَ يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ أَن يُجَاهِدُواْ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ"،

"और वो, जो अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखते हैं, तुम से छुट्टी न मांगेंगे इससे, कि अपने माल और जान से जिहाद करें; और अल्लाह ख़ूब जानता है परहेज़गारों को."
[कंज़ुल् ईमान]

(13) क़ुरआन 9:73 —
"يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ"،

"ऐ ग़ैब की ख़बरें देने वाले (नबी)! जिहाद फ़रमाओ काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों पर, और उनपर सख़्ती करो; और उनका ठिकाना दोज़ख़ है; और

क्या ही बुरी जगह पलटने की."
[कंज़ुल् ईमान]
(14) क़ुरआन 9:81 —

"فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلاَفَ رَسُولِ اللّهِ وَكَرِهُواْ أَن يُجَاهِدُواْ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللّهِ وَقَالُواْ لاَ تَنفِرُواْ فِي الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا لَّوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ"،

"पीछे रह जाने वाले इसपर ख़ुश हुए, कि वो रसूल के पीछे बैठ रहे, और उन्हें गवारा न हुआ कि अपने माल और जान से अल्लाह की राह में लड़ें, और बोले: 'इस गर्मी में न निकलो', तुम फ़रमाओ: 'जहन्नम की आग सबसे सख़्त गर्म है', किसी तरह इन्हें समझ होती." [कंज़ुल् ईमान]

(15) क़ुरआन 9:86 —

"وَإِذَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ أَنْ آمِنُواْ بِاللّهِ وَجَاهِدُواْ مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُوْلُواْ الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُواْ ذَرْنَا نَكُن مَّعَ الْقَاعِدِينَ"،

"और जब कोई सूरत उतरे कि अल्लाह पर ईमान लाओ, और उसके रसूल के हमराह जिहाद करो, तो उनके मक़्दूर वाले तुम से रुख़्सत मांगेंगे, और कहते हैं: 'हमें छोड़ दीजिए, कि बैठ रहने वालों के साथ हो लें'."
[कंज़ुल् ईमान]

(16) क़ुरआन 9:88 —

"لَكِنِ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُواْ مَعَهُ جَاهَدُواْ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ وَأُوْلَئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ"،

"लेकिन रसूल और जो इनके साथ ईमान लाए, उन्होंने अपने मालों, जानों से जिहाद किया, और इन्हीं के लिए भलाईयां हैं, और यही मुराद को पहुंचे."
(17) क़ुरआन 16:110 —

"ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُواْ مِن بَعْدِ مَا فُتِنُواْ ثُمَّ جَاهَدُواْ وَصَبَرُواْ إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ"،

"फिर बेशक तुम्हारा रब उनके लिए, जिन्होंने अपने घर छोड़े, बाद इसके कि सताये गए, फिर उन्होंने जिहाद किया, और स़ाबिर रहे; बेशक तुम्हारा रब इसके बाद बहुत बख़्शने वाला है, मेहरबान."
[कंज़ुल् ईमान]

(18) क़ुरआन 22:78 —

"وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ هُوَ اجْتَبَاكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ"،

"और अल्लाह की राह में जिहाद करो, जैसा ह़क़ है जिहाद करने का; उसने तुम्हें पसंद किया, और तुम पर दीन में कुछ तंगी न रखी."
[कंज़ुल् ईमान]

(19) क़ुरआन 25:52 —

"فَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَجَاهِدْهُم بِهِ جِهَادًا كَبِيرًا"،

"तो काफ़िरों का कहा न मान, और इस क़ुरआन से इन पर जिहाद कर, बड़ा जिहाद." [कंज़ुल् ईमान]

(20) क़ुरआन 29:6 —

"وَمَن جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ"،
"और जो अल्लाह की राह में कोशिश करे, तो अपने ही भले को कोशिश करता है; बेशक, अल्लाह बे-परवाह है, सारे जहां से." [कंज़ुल् ईमान]

(21) क़ुरआन 29:69 —

"وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ"،

"और जिन्होंने हमारी राह में कोशिश की, ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे; और बेशक, अल्लाह नेकों के साथ है."
[कंज़ुल् ईमान]

(22) क़ुरआन 47:31 —

"وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّى نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِينَ مِنكُمْ وَالصَّابِرِينَ وَنَبْلُوَ أَخْبَارَكُمْ"،

"और ज़रूर हम तुम्हें जांचेंगे, यहां तक कि देख लें, तुम्हारे जिहाद करने वालों और स़ाबिरों को, और तुम्हारी ख़बरें आज़मा लें." [कंज़ुल् ईमान]

(23) क़ुरआन 49:15 —

"إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ"،

"ईमान वाले तो वही हैं, जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए, फिर शक न किया, और अपनी जान और माल से अल्लाह की राह में जिहाद किया, वही सच्चे हैं." [कंज़ुल् ईमान]

(24) क़ुरआन 60:1 —

"يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاء تُلْقُونَ إِلَيْهِم بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُم مِّنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ أَن تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ إِن كُنتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي سَبِيلِي وَابْتِغَاء مَرْضَاتِي تُسِرُّونَ إِلَيْهِم بِالْمَوَدَّةِ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنتُمْ وَمَن يَفْعَلْهُ مِنكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاء السَّبِيلِ"۔

"ऐ ईमान वालो! मेरे और अपने दुश्मनों को, दोस्त न बनाओ; तुम उन्हें ख़बरें पहुंचाते हो दोस्ती से, हालांकि वो मुन्किर हैं उस ह़क़ के, जो तुम्हारे पास आया; घर से जुदा करते हैं रसूल को और तुम्हें, इस पर कि तुम अपने रब अल्लाह पर ईमान लाए; अगर तुम निकले हो मेरी राह में जिहाद करने, और मेरी रज़ा चाहने को, तो उनसे दोस्ती न करो; तुम उन्हें खुफ़िया पयाम, मुह़ब्बत का भेजते हो; और मैं ख़ूब जानता हूं, जो तुम छुपाओ और जो ज़ाहिर करो; और तुम में जो ऐसा करे, वो बेशक सीधी राह से बहका."
[कंज़ुल् ईमान]

(25) क़ुरआन 61:11 —

"تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ"۔

"ईमान रखो अल्लाह और उसके रसूल पर, और अल्लाह की राह में अपने माल व जान से जिहाद करो, ये तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानो."
[कंज़ुल् ईमान]

(26) क़ुरआन 66:9 —

"يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ"،

"ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी)! काफ़िरों पर और मुनाफ़िक़ों पर जिहाद करो, और उन पर सख़्ती फ़रमाओ; और उनका ठिकाना जहन्नम है, और क्या ही बुरा अंजाम." [कंज़ुल् ईमान]

ये 26 आयाते क़िताल वो हैं जिन पर आज कल ख़िन्ज़ीर मुर्-तद्-द वसीम राफ़िज़ी मुत्अ़वी भौंक रहा है;

इसके अ़लावा कुछ आयात वो हैं जिन में दौराने जंग के उसूल (War Tactics) का मुख़्तसर ज़िक्र आया है, जो जाने कुफ़्फ़ार पर क़हरे इलाही की बिजलियाँ बन कर गिरती हैं. इनके ख़िलाफ़ भी ईसाई और यहूदी एक लंबे वक़्त से रो-चिल्ला रहे हैं, और इन्हीं के फ़ुज़लाख़ोर 'हुनूदे बे-सूद, व बे-बहबूद, व ग़ुलामे नसारा-ओ यहूद' भी कहीं-कहीं इनका ज़िक्र करते हैं. तो इन आयात का भी ज़िक्र कर देता हूं:

(27) क़ुरआन 47:4 —

"فَإِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتَّىٰ إِذَا أَثْخَنتُمُوهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا فِدَاءً حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا"،

"तो जब काफ़िरों से तुम्हारा सामना हो, तो गर्दनें मारना है; यहां तक कि जब उन्हें ख़ूब क़त्ल कर लो, तो मज़बूत बांधो, फिर इसके बाद चाहे एहसान करके छोड़ दो, चाहे फ़िद्-या ले लो; यहां तक कि लड़ाई अपना बोझ रख दे." [कंज़ुल् ईमान]

(28) क़ुरआन 8:12 —

"فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ".

"तो काफ़िरों की गर्दनों से ऊपर मारो, और उनकी एक-एक पोर पर ज़र्ब लगाओ."
[कंज़ुल् ईमान]

(29) क़ुरआन 8:15-16 —

"يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوهُمُ الْأَدْبَارَ وَمَن يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ".

"ऐ ईमान वालो! जब काफ़िरों के लाम (लश्कर) से तुम्हारा मुक़ाबला हो, तो उन्हें पीठ न दो; और जो उन्हें उस दिन पीठ देगा – मगर लड़ाई का हुनर करने या अपनी जमाअ़त में जा मिलने को – तो वो अल्लाह के ग़ज़ब में पलटा; और उसका ठिकाना दोज़ख़ है, और क्या बुरी जगह है पलटने की."
[कंज़ुल् ईमान]
इसके अ़लावा कुछ आयात और हैं. इनके बारे में न कोई स़राह़त करनी है, और न ही किसी काफ़िर को ख़ुश करने के लिए इन आयात का असली मअ़ना पलटना है. बल्कि सिर्फ़ इतना कहना है कि ये आयात मुत़्लक़न् तमाम कुफ़्फ़ार के लिए नहीं हैं, बल्कि सिर्फ़ उन्हीं कुफ़्फ़ार के लिए हैं जो 'ह़र्बी ग़ैर मुआ़हद (combatants with no peace treaty)' हों; साथ ही उ़मूमी जिहाद का हुक्म तब तक हरगिज़ नहीं है, जब तक कि सारी शर्तें न पाई जाएं. क्या शर्तें हैं, कितनी हैं, ये सब फ़िक़्ह की बड़ी किताबों में मौजूद है;

इन मसाइल की ज़बरदस्त तह़क़ीक़ात व दलाइल देखने के लिए ख़ास तौर पर इन दो किताबों का मुत़ालअ़ा ज़रूर करें:

(1) अ़ाला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) की किताब:

"अल् मह़ज्जतुल् मुअतमनह फ़ी आयतिल् मुम्तह़नह (तर्के मुवालात)",

(2) और आपके बेटे ताजदारे अहले सुन्नत, हुज़ूर मुफ़्ती-ए-अ़ाज़म इमाम मुस़्तफ़ा रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह) की किताब:

"तुरुक़ुल् हुदा वल् इर्शाद इला अह़कामिल् इमारति वल् जिहाद (1341 हि.)".

होली, दीवाली वग़ैरह वग़ैरह

अ़ाला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने इरशाद फ़रमाया:
"होली, दीवाली वग़ैरह वग़ैरह स़दहा[1] बातें, कि हुनूद[2] ने अपनी मज़्हबी ठहरा रखी हैं, जिनका ज़िक्र इनके वेद में नहीं;
सब इनके ख़िलाफ़े मज़्हब हैं;
कि जिस किताब पर बुनियादे मज़्हबे हुनूद[3] है, उनका[4] पता नहीं देती. पिछले हुनूद ने मह़ज़ बराहे ह़ीला इन्हें मज़्हबी बना रखा है...!"

फतावा रज़विय्यह, 14:566

[1] सैकड़ों
[2] हिन्दू
[3] हिन्दुओं के मज़्हब की बुनियाद
[4] उन त्यौहारों का

नोट: इमामे अहले सुन्नत की बात बिल्कुल ह़क़ है. इस फ़क़ीर ने चारों वेदों को खंगाल कर रख दिया, मगर कहीं भी इनके इन त्यौहारों का नामो निशान तक नहीं पाया;
हाँ, पुराणों से साबित हैं.

एक फ़िक़्ही क़ाइ़दे की वज़ाह़त:

आ़मतौर पर हम लोगों ने 'उ़सूले फ़िक़्ह (law of jurisprudence)' में ये क़ानून पढ़ा होता है कि:

"تجوز الزيادة على كتاب الله بالخبر المشهور"،

"क़ुरआन पर ह़दीसे मशहूर के ज़रिए ज़्यादती (addition) करना जायज़ है."

लेकिन ये क़ाइ़दह मुत़्लक़न् हर 'ख़बरे मशहूर' के बारे में नहीं है, बल्कि उस 'ख़बरे मशहूर' के बारे में है जो 'मुह़्कम' हो, और अगर 'मुह़्तमिल' हो तो उसके ज़रिये ज़्यादती जायज़ नहीं. इमाम बदरुद्-दीन ऐ़नी ह़नफ़ी (d. 855 हि.) ने लिखा:

"فَالزِّيَادَة بالْخبر الْمَشْهُور إِنَّمَا تجوز إِذا كَانَ محكما، أما إِذا كَانَ مُحْتملا فَلَا"،

"तो ख़बरे मशहूर के ज़रिए ज़्यादती तब ही जायज़ है जबकि वो 'मुह़्कम' हो, लेकिन अगर 'मुह़्तमिल' हो तो जायज़ नहीं."

उ़म्दतुल् क़ारी शरहु स़ह़ीह़िल् बुख़ारी, किताबु मवाक़ीतिस़् स़लाह, बाब: वुजूबुल् क़िराअति लिल् इमामि वल् मअमून्, जिल्द न. 6, पेज न. 11, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि
(बेरूत)

ऐ मेरी क़ौम! ये तुमने क्या किया?

ऐ मेरी क़ौम! ये तुमने क्या किया?
उन्हें राज़ी करने में तुमनें ख़ुद को बर्बाद कर डाला, मगर वो अब भी राज़ी नहीं हुए हैं; और न ही होंगे, जब तक कि तुम उनकी तरह कुफ़्र न इख़्तियार कर लो;

क्या तुम्हारी नज़रों से क़ुरआन 2:120 का पैग़ाम नहीं गुज़रा:
"وَلَن تَرْضَىٰ عَنكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۗ قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُم بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ"،

"और हरगिज़ तुमसे, यहूद और नस़ारा[1] राज़ी न होंगे, जब तक तुम उनके दीन की पैरवी न करो;
तुम फ़रमा दो कि अल्लाह ही की हिदायत, हिदायत है;
और (ऐ सुनने वाले कसे बाशद![2]) अगर तू उनकी ख़्वाहिशों का पैरू हुआ, बाद इसके कि तुझे इ़ल्म आ चुका, तो अल्लाह से तेरा कोई बचाने वाला न होगा, और न मददगार." [कंज़ुल् ईमान]

इस आयत की तफ़्सीर में हुज़ूर स़दरुल् अफ़ाज़िल सय्यिद नईमुद्-दीन मुरादाबादी (अ़लैहिर्रह़मह) 'तफ़्सीरे ख़ाज़िन' के हवाले से लिखते हैं:

"ये ख़ित़ाब उम्मते मुह़म्मदिय्यह को है, कि जब तुम ने जान लिया कि सय्यिदे अम्बिया (ﷺ) तुम्हारे पास ह़क़ व हिदायत लाए, तो तुम हरगिज़ कुफ़्फ़ार की ख़्वाहिशों का इत्तिबाअ़ न करना. अगर ऐसा किया तो तुम्हें कोई अ़ज़ाबे इलाही से बचाने वाला नहीं."

तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल् इ़र्फ़ान, पेज न. 30, पब्लिकेशन: मज्लिसे बरकात, मुबारकपुर (आज़मगढ़)

[1] ईसाई
[2] कोई भी हो

सय्यिदुना अबू बक्रे सिद्-दीक़ की आक़ा इमामे ह़सन से मुहब्बत

ह़ज़रत उ़क़्बा इब्ने ह़ारिस से रिवायत है:

"صَلَّى أَبُو بَكْرٍ رضى الله عنه الْعَصْرَ، ثُمَّ خَرَجَ يَمْشِي فَرَأَى الْحَسَنَ يَلْعَبُ مَعَ الصِّبْيَانِ، فَحَمَلَهُ عَلَى عَاتِقِهِ وَقَالَ بِأَبِي شَبِيهٌ بِالنَّبِيِّ لاَ شَبِيهٌ بِعَلِيٍّ. وَعَلِيٌّ يَضْحَكُ"،

"सय्यिदुना अबू बक्रे सिद्-दीक़ (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) अ़स्र की नमाज़ पढ़कर (मौला अ़ली के साथ) टहलने के लिए निकले; तो देखा कि इमामे ह़सन बच्चों के साथ खेल रहे हैं; तो सय्यिदुना अबू बक्रे सिद्-दीक़ ने इमामे ह़सन

को अपने कंधे पर उठा लिया और कहा:
_'मेरे वालिद आप पर क़ुर्बान!_
आप आक़ा (ﷺ) से बहुत ज़्यादा मुशाबहत रखते हैं, न कि ह़ज़रत अ़ली से.'
ह़ज़रत अ़ली इस बात पर (ख़ुश होकर) हंस रहे थे."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस न. 3542, जिल्द न. 4, पेज न. 187, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1422 हि.

पेड़ लगायें, प्रदूषण मिटायें

सय्यिदुना अनस (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) से रिवायत है कि आक़ा (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने इरशाद फ़रमाया:

"سَبْعَةٌ يَجْرِي لِلْعَبْدِ أَجْرُهُنَّ وَهُوَ فِي قَبْرِهِ بَعْدَ مَوْتِهِ: مَنْ عَلَّمَ عِلْمًا، أَوْ كَرَى نَهَرًا، أَوْ حَفَرَ بِئْرًا، أَوْ غَرَسَ نَخْلًا، أَوْ بَنَى مَسْجِدًا، أَوْ وَرَّثَ مُصْحَفًا، أَوْ تَرَكَ وَلَدًا يَسْتَغْفِرُ لَهُ بَعْدَ مَوْتِهِ".

"सात चीज़ें ऐसी हैं जिनका अज्र, बंदे के लिए, उसकी मौत के बाद भी जारी रहता है जबकि वो अपनी क़ब्र में होता है:

1. किसी को कुछ इ़ल्म सिखाया,
2. नहर खुदवाई,
3. कुआं खुदवाया,
4. पौधा लगाया,
5. मस्जिद बनवाई,
6. विरासत में क़ुरआन छोड़ा,

7. ऐसी औलाद छोड़ी, जो मौत के बाद, उसके लिए इस्तिग़फ़ार करे."

शुअ़बुल् ईमान लिल् बैहक़ी (D. 458 AH), किताबुज़्-ज़कात, बाबुल् इख़्तियार फ़ी सदक़तित्-तत़व्वुअ़, ज़िल्द: 5, सफ़ा न. 122, हदीस न. 3175, पब्लिकेशन: मक्तबतुर्-रुश्द लिन्नश्-र वत् तौज़ीअ़ (रियाद़), फ़र्स्ट एडीशन (1423 हि. / 2003 ई.)

अज़: मुहम्मद क़ासिमुल क़ादिरी,
मुतअ़ल्लिम: जामिया अह़सनुल बरकात (मारहरा शरीफ़)

मरने वालों को बुरा मत कहो

एक तरफ़ तो मुसलमान कुफ़्फ़ार से परेशान हैं, और दूसरी तरफ़ लिबरल व सैक्यूलर जाहिलों से. जिन्हें आता तो इस्तिन्जा करने का शरई तमीज़ भी नहीं है, मगर बात करने चले हैं 'इस्तिदलाल बि ह़दीसिल् बुख़ारी' पर;

अगर थोड़ा भी ह़दीस का पासो लिहाज़ है, तो सुनें:

जिन अह़ादीस में 'मरने वालों को बुरा न कहने' का हुक्म आया है, इनसे मुसलमान मय्यितें मुराद हैं, काफ़िर या मुनाफ़िक़ नहीं;

मेरी तरफ़ से एक बेहतरीन मशविरा मान लें, और अगर ज़्यादा ही सत्यवादी बनते हैं, तो इसे कुबूल भी करें:

"ह़दीस समझने से पहले मुअ़तबर मुह़द्दिसीन की लिखी हुई शरह़ पढ़ लिया करें, ताकि हर ह़दीस का सही मह़ल्लो मह़मूल पता लग जाये",

अब इस ह़दीस का सही मतलब समझें:

1. इमाम बदरुद्-दीन ऐ़नी (d. 855 हि.) ने 'स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस न. 7631' के तह़त लिखा है:

"فَإِن قيل: كَيفَ يجوز ذكر شَرّ الْمَوْتَى، مَعَ وُرُود الحَدِيث الصَّحِيح عَن زيد بن أَرقم فِي النَّهْي عَن سبّ الْمَوْتَى وَذكرهمْ إلاَّ بِخَير. وَأجِيب: بِأَن النَّهْي عَن سبّ الْأَمْوَات غير الْمُنَافِق وَالْكَافِر والمجاهر بِالْفِسْقِ أَو بالبدعة، فَإِن هَؤُلَاءِ لَا يحرم، وَذكرهمْ بِالشَّرّ للحذر من طريقهم، وَمن الِاقْتِدَاء بهم"،

"अब अगर ये सवाल किया जाए कि: 'मरने वाले को बुराई से ज़िक्र करना कैसे जायज़ हो सकता है, जबकि ह़ज़रत ज़ैद इब्ने अरक़म से स़ह़ीह़ ह़दीस मरवी है कि जिसमें मरने वालों को बुरा कहने से मना किया गया है, और ख़ैर के साथ ही ज़िक्र करने को कहा गया है?'
तो इसका जवाब ये है कि ये जिन (ह़दीसों में मरने वाले को बुराई से ज़िक्र करने से) मना कर दिया गया है वो उनके बारे में हैं जो मुनाफ़िक़, काफ़िर, फ़ासिक़े मुअ़लिन या बिद्अ़ती न हो. क्यूंकि इनके (मरने के बाद) इन्हें बुराई से ज़िक्र करना नाजायज़ नहीं है. तो इनको बुराई से ज़िक्र करना इसलिए होता है ताकि इनके तरीक़ों से, और इनको फॉलो करने से लोगों को डराया जा सके."

उ़म्दतुल् क़ारी शरह़ु स़ह़ीह़िल् बुख़ारी, जिल्द न. 8, पेज न. 195, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत)

यही जवाब बड़े बड़े मुह़द्दिसीन ने दिया है, जैसे:

2. इमाम नववी (d. 676 हि.) ने 'शरह़े स़ह़ीह़ मुस्लिम' में:
अल् मिन्हाज शरह़ु स़ह़ीह़ि मुस्लिमिब्निल् ह़ज्जाज, जिल्द न. 7, पेज न. 20,

पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत), दूसरा एडीशन, 1392 हि.

3. इन्हीं इमाम नववी (d. 676 हि.) ने 'किताबुल् अज़्कार' में भी यही जवाब दिया:

किताबुल् अज़्कार, पेज न. 295, पब्लिकेशन: दारुब्नि इज़्म, फ़र्स्ट एडीशन, 1425 हि. / 2004 ई.

4. इमाम किरमानी (d. 786 हि.) ने 'शरह़े स़ह़ीह़ बुख़ारी' में:

अल् कवाकिबुद् दरारी फ़ी शरहि स़ह़ीह़िल् बुख़ारी, जिल्द न. 7, पेज न. 143, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1356 हि. / 1937 ई.

5. इमाम त़ीबी (d. 743 हि.) ने 'शरह़े मिश्कात' में:

अल् काशिफ़ अ़न् ह़क़ाइक़िस् सुनन, जिल्द न. 4, पेज न. 1396, पब्लिकेशन: मक्-तबह नज़ार मुस़्तफ़ा अल् बाज़ (रियाद), फ़र्स्ट एडीशन, 1417 हि. / 1997 ई.

6. इमाम सुयूत़ी (d. 911 हि.) ने 'सुनने नसाई' पर अपने हाशिए में:

ह़ाशियतुस् सुयूत़ी अ़ला सुननिन् नसाई, जिल्द न. 4, पेज न. 52, पब्लिकेशन: मक्-तबुल् मत़्बूआतिल् इस्लामिय्यह (ह़लब), दूसरा एडीशन, 1406 हि. / 1986 ई.

7. इन्हीं इमाम सुयूत़ी (d. 911 हि.) ने अपनी 'शरह़े मुस्लिम' में भी यही जवाब दिया:

अद् दीबाज अ़ला स़ह़ीह़ि मुस्लिमिब्निल् ह़ज्जाज, जिल्द न. 3, पेज न. 33, पब्लिकेशन: दारुब्नि अ़फ़्फ़ान (सऊदी अ़रब), फ़र्स्ट एडीशन, 1416 हि. / 1996 ई.

8. इमाम मुनावी (d. 1031 हि.) ने 'शरह़े जामिए़ स़ग़ीर' में:

फ़ैज़ुल् क़दीर शरहुल् जामिइ़स् स़ग़ीर, जिल्द न. 6, पेज न. 329, पब्लिकेशन: अल् मक्-तबतुत् तिजारिय्यह (मिस्र), फ़र्स्ट एडीशन, 1356 हि.

9. इमाम मुल्ला अ़ली क़ारी (d. 1014 हि.) ने 'शरह़े मिश्कात' में:

मिरक़ातुल् मफ़ातीह़ शरहु मिश्कातिल् मस़ाबीह़, जिल्द न. 3, पेज न. 1201, पब्लिकेशन: दारुल् फ़िक्र (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1422 हि. / 2002 ई.

10. वह्हाबिय्यह के मुअ़तबर क़ाज़ी शौकानी (d. 1250 हि.) ने भी यही जवाब दिया:

नैलुल् औत़ार, जिल्द न. 4, पेज न. 131, पब्लिकेशन: दारुल् ह़दीस (मिस्र), फ़र्स्ट एडीशन, 1413 हि. / 1993 ई.

अब मुझे बताऐं:
आपकी मानी जाए या इन बड़े बड़े मुअ़तबर मुह़द्दिसीन की मानी जाए?

आपकी मान भी कैसे ली जाए, जबकि आपको अभी इ़ल्मे ह़दीस की A, B, C, D भी नहीं आती;
इसलिए इन बड़े मसाइल में बोलना आपका काम नहीं है. जाऐं, जाकर पहले इस्तिन्जा, पाकी-नापाकी, ग़ुस्ल और वुज़ू वग़ैरह के मसाइल सीखें, तब आगे बोलने की जुरअत करना. सिर्फ़ TRP बढ़ाने के लिए आप लोग न जाने क्या क्या कर बैठते हैं. चलो अब अगर TRP बढ़ गयी हो, तो वो जहालत भरी पोस्ट डिलीट कर दें, और तौबानामा शेयर कर दें, क्यूंकि आपने मुअमिनीन के ह़क़ में आने वाली ह़दीस को काफ़िरों पर दे मारा....!

02/05/21 ई.

कुफ़्फ़ार के अक़्साम

ये जो कुफ़्फ़ार की तीन क़िस्में 'ज़िम्मी', 'मुस्तअमिन' और 'ह़र्बी' हैं, ये गवर्नेंस के हिसाब से है. इसलिए जब अह़कामो हुक़ूक़ की बात आती है तो इन्हीं तीन का आमतौर पर ज़िक्र किया जाता है हर जगह;

मगर 'इस़ालत (असली होने)' और 'अ़दमे इस़ालम (असली न होने)' के एतबार से इनकी दो क़िस्में हैं;

इसकी वज़ाह़त 'फ़तावा रज़विय्यह' के ह़वाले से देखें, मैं मुख़्तस़र करके बताता हूं;

इमामे अहले सुन्नत (अ़लैहिर्रह़मह) लिखते हैं:
काफ़िर की दो क़िस्में हैं:

1. असली: वो काफ़िर जो शुरू से ही इस्लाम का इंकार करने वाला हो;
2. मुर्तद्-द: वो जो मुसलमान होकर कुफ़्र करे;

फिर पहली क़िस्म 'असली' को दो सब-कैटेगरी में बांटा गया है:
(1) असली मुजाहिर: वो जो एलानिया त़ौर पर इस्लाम का इंकार करता है (ये आख़िरत के हिसाब से सबसे बदतर हैं);
(2) असली मुनाफ़िक़: वो जो ज़ाहिर में इस्लाम माने और दिल में कुफ़्र पाले;
फिर इस सब-कैटेगरी की पहली क़िस्म 'मुजाहिर' को भी चार कैटेगरी में बांटा गया है:

([1]) दहरिया/मुल्ह़िद (नास्तिक): जो ख़ुदा ही का इंकार करे;
([2]) मुशरिक: जो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को भी मअ़बूद मानें, या फिर वाजिबुल् वुजूद मानें. जैसे: हिन्दू, जो बुतों को वाजिबुल् वुजूद तो नहीं मानते मगर मअ़बूद मानते हैं; और जैसे आर्य समाजी, जो रूह़ व माद्दा को मअ़बूद तो नहीं मानते, मगर क़दीम व ग़ैरे मख़्लूक़ मानते हैं. ये (हिन्दू और आर्य) दोनों मुशरिक हैं, आर्यों को मुवह़्ह़िद जानना, सख़्त बात़िल है;
([3]) मजूसी (आतिश परस्त);
([4]) किताबी यहूद व नस़ारा (जबकि दहरिया न हों);

फिर मैन कैटेगरी की दूसरी क़िस्म 'मुर्तद्-द (वो जो मुसलमान होकर कुफ़्र करे)', इसकी भी दो क़िस्में हैं:

(1) मुर्तद्-दे मुजाहिर: जो पहले मुसलमान था, फिर एलानिया त़ौर पर इस्लाम का इन्कार किया;
(2) मुर्तद्-दे मुनाफ़िक़: जो अब भी इस्लाम मानने का दावा करता हो, मगर दिल में कुफ़्र को मानता हो; जैसे आजकल के वह्हाबिय्यह, नेचरी, क़ादियानी, चकड़ालवी (अहले क़ुरआन), झूठे स़ूफ़ी जो शरीअ़ते मुत़ह्हरह पर हंसते हैं. इनका दुनिया में सबसे बदतर हुक्म है...!

फ़तावा रज़विय्यह, 14:328-329

फिलिस्तीनियों का क्या जुर्म?

यहूदियों का वो 'फ़र्स्ट टैम्पल (Temple of Solomon)' जिसके लिये वो आज भी 'वेलिंग वाल (Wailing Wall/Western Wall)' के सामने विधवा-विलाप करते हैं, किसी मुसलमान ने नहीं गिराया, बल्कि 587 BC

में बेबीलोन के बादशाह 'Nebuchadnezzar II' ने बैतुल् मक़्दिस (Jerusalem) पर हमला किया, और यहूदियों को गाजर मूली की तरह काटा, और इनके इस 'फ़र्स्ट टैम्पल' को गिरा डाला, और हज़ारों यहूदियों को ग़ुलाम बना कर बेबीलोन हांक ले गया;

ये वही "Nebuchadnezzar II" है, जिसे उर्दू में 'बुख़्तनस़्स़र' के नाम से जाना जाता है, अ़रबी में भी आमतौर पर इसका यही नाम आता है. इसके अलावा 'नबूख़ज़् नस़्स़र' व 'बुख़्तर शाह' के नाम से भी इसे याद किया जाता है. मगर उर्दू की बाइबल में इसका नाम 'नबूकद रज़र (نبوکدرضر)' आया है, जैसा कि Book of Jeremiah 39:1&11 में आया है;

जब हालात सुधरे और इन यहूदियों को इस तारीख़ी ग़ुलामी (Babylonian captivity/exile) से नजात मिली, फिर दूसरे टैम्पल को बनाने के लिए 516 BC के क़रीब तैयारी शुरू हुई. 'Zerubbabel (ज़िरुब् बाबिल)' नाम के यहूदी शख़्स ने इसकी बुनियाद रखी, मगर इसकी तक्मील बादशाह 'Herod I (Herod the great)' ने करायी. कई सालों यानी 70 CE तक ये सैकंड टैम्पल सलामत रहा, मगर ईसाइयों की रोमन फ़ौज ने बादशाह 'Titus' की नुमाइंदगी में फिर इनपर हमला किया, और 70 CE में इनका 'सैकंड टैम्पल' भी ईसाई फ़ौज ने गिरा दिया;
दूसरी बार टैम्पल गिरने के बाद इनका 'तीसरा टैम्पल (third temple)' आज तक नहीं बन सका, जिसके सबब यहूदियों की तरफ़ से ये सारी दहशतगर्दियां हो रही हैं;
पहला गिराने वाला, वो भी मुसलमान नहीं था;
दूसरा गिराने वाला, वो भी मुसलमान नहीं था,
बल्कि इन यहूदियों का नसबी भाई ईसाई था;
फिर फिलिस्तीनी मुजरिम कैसे हुए?

क्या आप अब भी नहीं समझ सके?

आज कल 'मलाला यूसुफ़ज़ई' का मामला ज़ोरों पर है, जो इंसानियत के पर्दे में हैवानियत को फ़रोग़ देने के लिए, अपने मग़रिबी आक़ाओं की पुश्तपनाही में, आगे आ रही है. ये वही 'मलाला' है जिसे देख कर कुछ सालों पहले सबको मलाल आ रहा था, और इसे बहुत बड़ी नेक, पारसा व ऱ्औरतों के हुक़ूक़ के लिए बोलने वाली एक 'सोशल रिफार्मर' समझा जा रहा था. कुछ दिन पहले ही इसने 'शादी (निकाह़)' जैसी ऱ्अज़ीम निऱ्अमत को ग़ैर-ज़रूरी समझा, और इंसानियत के समाजी सुकून को ख़त्म कर डालने के लिए एक गंदा बयान दिया जिसमें इसनें बिना शादी के ही तऱ्अल्लुक़ात क़ायम करने को सही बताया;

इंसानों और जानवरों में कई सारे फ़र्क़ हैं, जिनमें एक अहम फ़र्क़ ये है कि इंसान 'शादी (निकाह़)' जैसे पाकीज़ा रिश्ते के ज़रिए तऱ्अल्लुक़ात बनाता है, जबकि जानवरों में ऐसा कोई शुऱ्उर नहीं; अब आज के दौर में 'इंसानियत' के दावेदार, जो आपको हर वक़्त 'इंसानियत' की दुहाई देकर आपके दीन से दूर कर रहे हैं, उनका ये 'बिना शादी के एक साथ रहने' को सही बोलना और 'शादी (निकाह़)' को बुरा व कमतर जानना, किस चीज़ की तरफ़ बुलाता है:
इंसानियत की, या हैवानियत की?

हाँ, यक़ीनन ये हैवानियत की तरफ़ बुलाता है,
अगर इंसानों वाले दिमाग़ का इस्तेमाल करके सोचा जाए तो;

ये है वो 'मग़रिबी तहज़ीब (Western Culture)', जो आपको पल पल

हैवानियत की दावत देती है, आपको अपना बनाकर हैवान बना देती है, मगर आप उसके एह़सानों तले ऐसे दब जाते हैं कि 'जिसका खाना, उसी का गाना' की ज़ंजीरों में रहना आपको अपना सबसे बड़ा फ़र्ज़ दिखाई देने लगता है;

काश ये क़ानून उस ख़ुदा के शुक्र के लिए भी हम अपनी ज़िंदगी में लाते जो हमें कभी भूखा-प्यासा नहीं सुलाता, जो उठने के बाद हमें भूखा नहीं रहने देता, जो हर वक़्त बिना किसी क़ीमत के ऑक्सीजन देता है;

हमारे लोगों की तरफ़ से यहूदियों व ईसाईयों की इसी अंधी इत्तिबाअ़ के बारे में ग़ैब-दां नबी (ﷺ) ने बहुत पहले ही इरशाद फ़रमाया था:

"'لَتَتْبَعُنَّ سُنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ، شِبْرًا شِبْرًا وَذِرَاعًا بِذِرَاعٍ، حَتَّى لَوْ دَخَلُوا جُحْرَ ضَبٍّ تَبِعْتُمُوهُمْ'، قُلْنَا: 'يَا رَسُولَ اللَّهِ! اليَهُودُ وَالنَّصَارَى؟' قَالَ: 'فَمَنْ!؟'"

"तुम यक़ीनन अपने से पहले वालों की क़दम-क़दम पर ताबेदारी करोगे, यहां तक कि अगर वो गोह (spiny-tailed lizard/Uromastyx) के बिल में भी घुस जाएं,
तो तुम उनके पीछे-पीछे जाओगे',

हम (स़ह़ाबा) ने अ़र्ज़ की: 'ऐ अल्लाह के रसूल! क्या वो लोग यहूदी व ईसाई हैं?'

तो आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया: 'और फिर कौन!?'"

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस न. 7320, जिल्द न. 9, पेज न. 103, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1422 हि.

इसी अंधी ताबेदारी के नतीजे में 'मलाला' जैसे लोग पैदा होते हैं, जिन्हें

'शादी (निकाह़)' जैसी शराफ़तें भी बुरी नज़र आती हैं, मगर बिना शादी के तअ़ल्लुक़ात (live in relationship) जैसी बदकारियां अच्छी नज़र आती हैं;
जब कि इसका नतीजा आप ख़ुद देखें कि एक मुद्दत पहले क्या था, इस दौर का तो कहना ही क्या:
"President Clinton, himself has recognized that welfare plays a strong role in promoting illegitimate births and single parent families. The President has warned the nation that family disintegration is a leading cause of crime in the U.S? And he has predicted that, unless dramatic changes occur half of all American children will soon be born out of wedlock."
Source:
https://www.heritage.org/welfare/report/addressing-illegitimacy-the-root-real-welfare-reform

मुझे लगता है कि क्लिंटन ने जो कहा था, आज वही हो रहा है;

निकाह़ जैसी अ़ज़ीम निअ़मत के बारे में मेरे आ़ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत (अ़लैहिर्रह़मह) लिखते हैं:

"फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने:

'وَاَنْکِحُوا الْاَیَامٰی مِنْکُمْ'۔

'और निकाह़ कर दो, अपनों में उन का, जो बे-निकाह़ हों.'
[कंज़ुल् ईमान]

.......और फ़रमाया ह़ज़रते रसूले ख़ुदा (ﷺ) ने:
'निकाह़ करना मेरी सुन्नत है, और जिसने मुँह फेरा मेरे तरीक़े से, यानी इंकार किया, सो वो मुझ से नहीं.'

पस, जो लोग इससे इंकार करें, या ऐ़ब और बुरा जानें, और करने वालों पर तअ़न करें, ह़क़ीर जानें, ज़ात से निकालें, या निकाह़ करने वालों को रोक दें, न करने दें, या ऐसी फ़साद की बात उठाएं जिससे हुक्मे ख़ुदा और सुन्नते रसूल जारी न हो, और काफ़िरों की रस्म क़ायम रहे, या जाहिलों के कहने-सुनने का ख़्याल करके ख़ुदा और रसूल का हुक्म कुबूल न करें;
सो ये सब क़िस्म के लोग काफ़िर हैं, औरतें इनकी निकाह़ से बाहर हो जाती हैं, नमाज़-रोज़ा कुछ कुबूल नहीं, खाना-पीना इन लोगों के साथ हरगिज़ दुरुस्त नहीं, जब तक तौबा न करें;
इस वासित़े कि इन सब सूरतों में इंकारे हुक्मे ख़ुदा और तह़क़ीरे सुन्नत लाज़िम आती है, और ये ज़ाहिर कुफ़्र है,
जैसा कि तमाम किताबों में लिखा है." (ends quote)

फ़तावा रज़विय्यह, 12:291 (दावते इस्लामी)

अब 'मलाला' की यही बातें मॉडर्न त़ब्क़े के लिए बदकारियों की राह की रौशनी बनेंगी, और लोग उसे समाजी हीरोइन बना देंगे. फिर ये तरक्की यहां तक जाएगी कि इसे किसी मुस्लिम मुल्क में हुकूमत की बागडोर सम्भालने को आगे बढ़ाया जाएगा, ताकि मुसलमानों को उनके दीन से दूर किया जा सके;
किसी शाइ़र ने क्या ही ख़ूबसूरत पैराये में बात कही थी:

"दर्स देता है हमें, हर शाम का सूरज;
मग़रिब की तरफ़ जाओगे, तो डूब जाओगे."

04/06/21 ई.

इमाम, यानी पेशवा, न कि ग़ुलाम

जिन ना-हन्जारों की ह़याते ला-यअ़नी
ख़बासत, बदबख़्ती, शैत़ानिय्यत, बद-दयानती, नफ़्स-परवर्दगी, हवस-पसंदी, ग़लाज़त-अन्दोज़ी और बद-मज़हबों के सामने बुज़दिली, चापलूसी व सीप-साप में गुज़र गयी,
वो मौरूसी ग़ुलामे शुरूरो सय्यिआत
आज इमामों की छोटी-छोटी बातों पर बड़े बड़े मामलात बनाने में देरी नहीं करते;
इन्तिज़ार करो, अल्लाह के यहां अ़दालत लगेगी, सब ह़म्ल से लेकर क़ब्र तक का बाहर आ जाएगा;

जिन्हें 'अल् ह़म्द' का 'ह़ा' अदा करना नहीं आता, वो आज इमाम का हिसाब लेने के लिए मुहल्ले के लोगों को इकट्ठा करके मुक़दमे चलवा रहे हैं;

वो भी उस इमाम का जो इनकी मस्जिदों को आबाद करके इन सुफ़हा को अ़ज़ाबे इलाही से दूर रखे हुए है;
यक़ीनन ये भी क़ियामत की निशानियों में से एक है कि जुहला मस्जिद के ज़िम्मेदार और इमामों के सरदार बन रहे हैं;
ख़ुद का दामन ख़ून से सुर्ख़ है, मगर इमाम की एक भूल भी बर्दाश्त नहीं;
इंतिज़ार करो, तुम्हारा मुक़दमा ऐसी बारगाह में होगा जहां सह्-वो निस्यान का इह़्तिमाल भी नहीं है;
आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"إِذَا وُسِّدَ الأَمْرُ إِلَى غَيْرِ أَهْلِهِ فَانْتَظِرِ السَّاعَةَ"،

"जब किसी ना-अहल को कोई मामला सौंपा जाने लगे,
तो क़ियामत का इंतिज़ार करो."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस न. 59, जिल्द न. 1, पेज न. 21, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह़ (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1422 हि.

देखें इस ह़दीस को, कि कैसे इनके कलेजे चीर रही है;
ये इंसानी शक्ल में वो ना-अहल ह़शरातुल् अर्द़ हैं जिन्हें अल्लाह ने अपने घर का ख़ादिम बनाया था, मगर ये मालिक बन बैठे;
इन्हें मुह़ाफ़िज़ बनाया था, मगर ये ख़ुद इसकी ह़ुरमतो अदब को तार-तार करने लगे;
इन्हें आबाद करने का हुक्म दिया गया, मगर ये तख़रीब का सबब बनने लगे;

मस्जिद के इमाम व मुअज़्ज़िन तो वो शख़्सियात हैं जिनके लिए ख़ुद आक़ा (ﷺ) ने दुआ फ़रमाई:

"الْإِمَامُ ضَامِنٌ، وَالْمُؤَذِّنُ مُؤْتَمَنٌ، اللَّهُمَّ أَرْشِدِ الْأَئِمَّةَ، وَاغْفِرْ لِلْمُؤَذِّنِينَ"،

"इमाम ज़िम्मेदार है, और मुअज़्ज़िन अमानतदार है, ऐ मेरे अल्लाह! इमामों को सीधी राह पर क़ायम रख, और अज़ान देने वालों को बख़्श दे."

मुस्नदे अह़मद, ह़दीस न. 10098, जिल्द न. 16, पेज न. 110, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1421 हि. / 2001 ई.

जिसके बारे में आक़ा (ﷺ) दुआ फ़रमायें,
उसे, ये अस्लन् व नस्लन् फ़ुस्साक़ो फ़ुज्जार, अपना ग़ुलाम बनाना चाह रहे हैं;
शक़ावतो शनाअ़त की सारी ह़दें उस वक़्त टूट जाती हैं जब इमाम को

दिहाड़ी या माहाना वाला मज़दूर समझ लिया जाए, और उस इमाम को ह़क़ीरो क़लील रक़म देकर सरकारी तनख्वाहों के बराबर समझा जाए;

अल्लाह तआला हमारी मस्जिदों के इमामों को जाहिल, अनपढ़, उजड्ड, गँवार, बद-तहज़ीब मुक़्तदियों की इफ़्तिराओं व तुहमतों से मह़फ़ूज़ रखे;

आमीन बिजाहि ह़बीबी (ﷺ)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
20/06/21 ई.

एक बहुत अहम मस्अला याद रखें

यहां के तमाम कुफ़्फ़ार 'ह़र्बी'[1] हैं, और इनके बारे में आला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत (अ़लैहिर्-रह़मह) ने 'दुर्रे मुख़्तार', 'अल्-बह़रुर् राइक़' वग़ैरह के हवाले से लिखा:

"काफ़िरे ह़र्बी[1], अगरचे 'मुस्तअमिन'[2] ही क्यूँ न हो, उसके साथ किसी भी तरह की नेकी या एह़सान करना या स़दक़ह देना, बिल् इत्तिफ़ाक़, नाजायज़ व ह़राम है."

फ़तावा रज़विय्यह, 20:581-584

नेकियों व स़दक़ात के मामले में 'ग़रीब' से मुराद सिर्फ़ 'ग़रीब मुसलमान' ही होता है. क्यूँकि आयते करीमह, क़ुरआन 9:60 —

"إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ"....،

में लफ़्ज़े 'अल् फ़ुक़राअ (फ़क़ीर लोग)' से 'ह़र्बी काफ़िरों' के 'फ़क़ीर' ख़ारिज हैं. उसूले फ़िक़्ह के मुताबिक़ ये आयत 'अ़ाम ख़ुस़ूस़ अ़न्हुल् बअ़्द़ (the general, specific in some terms)' में से है.

तफ़्सील के लिए 'फ़तावा रज़विय्यह' में रिसाला: "अल् मह़ज्जतुल् मुअतमनह फ़ी आयतिल् मुम्तह़नह", देखें, जो 'तर्के मुवालात' के नाम से मशहूर है.

[1]Combatants non-Muslim;
[2]a non-Muslim foreigner who only temporarily resides in Muslim lands (Dār al-Islām) via a short-term safe-conduct (aman muʾaqqat) without paying the Jizyah tax.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
28/01/21 ई.

आंख के अंधे, नाम 'नयनसुख'

आर्य समाज वाले ख़ुद को आर्य, ब-मअ़ना: 'विद्वान, पढ़ा-लिखा, बुद्धि वाला, श्रेष्ठ' भी कहते हैं, मगर इसी समाज के संस्थापक 'दयानंद सरस्वती' की बुद्धि देखिए, कि उन्होंने अपनी बदनामे ज़माना किताब: 'सत्यार्थ प्रकाश' में 'सूरह फ़ातिह़ा' पर जो जाहिलाना एतराज़ किए हैं, इनका जवाब 'इमामे बैज़ावी (d. 685 हि./1292 ई.)' ने, इसके पैदा होने से सैंकड़ों साल पहले ही, सिर्फ़ चंद अल्फाज़ में दे दिया था;
'इमामे बैज़ावी' ने अपनी तफ़्सीर के बिल्कुल शुरू ही में 'सूरह फ़ातिह़ा' के

कुछ नाम गिनाये हैं, जिनमें से एक नाम ये भी है:

"تعليم المسألة"،

"(बंदों को) मामलात सिखाने वाली (सूरत)."

फिर आगे लिखते हैं:

"وهذا وما بعده مقول على ألسنة العباد ليعلموا كيف يتبرّك باسمه ويحمد على نعمه ويسأل من فضله"،

"और ये (बिस्मिल्लाह) व इसके बाद (सूरह फ़ातिह़ा के) आख़िर तक, बंदों की ज़ुबानों पर कहलवाया गया है, ताकि वो जान लें कि उस (अल्लाह) के नाम से कैसे बरकत हासिल की जाती है, और कैसे उसकी निअ़मतों पर उसको तारीफ़ बयान की जाती है, और कैसे उसके फ़ज़्ल को माँगा जाता है."

अन्वारुत् तन्ज़ील व असरारुत् तावील (तफ़्सीरे बैज़ावी), जिल्द न. 1, पेज न. 25-26, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत), पहला एडीशन, 1418 हि.

जिसने भी 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ी होगी,
वो मेरी इस बात को बहुत अच्छे से समझ चुके होंगे...!

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़हरी
20/09/21 ई.

धनतेरस और मुसलमान

आज मुशरिकीने हिन्द का त्यौहार 'धनतेरस' है; जिसे उ़लमा की ज़ुबान में

'धनत्रयोदशी' भी कहा जाता है; जबकि जैन धर्म की किताबों में इसे 'ध्यान तेरस' और 'धन्य तेरस' नाम से भी याद किया गया है;

ये त्यौहार हिन्दू कैलेंडर 'विक्रम संवत्' के मुत़ाबिक़ 'कार्तिक' महीने की 'कृष्ण पक्ष (अय्यामे सूद)' की 'त्रयोदशी (तेरह तारीख़)' के दिन मनाया जाता है. इस दिन के बारे में कुफ़्फ़ार का कुफ़्रिया अ़क़ीदा ये है कि:

इस दिन कोई चीज़ ख़रीदने से उसमें 13 गुना बरकत होती है. इसीलिए आज के दिन कुफ़्फ़ार की भीड़ बाज़ार में कुछ न कुछ ख़रीदने के लिए जुटी रहती है, आप अपने अपने शहर में इसका तजरिबा कर सकते हैं;
कोई चांदी ख़रीदता है, तो कोई उसके बर्तन; कोई धनिया के बीज ख़रीदकर घर में रख लेता है, फिर दीपावली के बाद उसे खेत में बो देता है; कोई इसी दिन मअ़बूदाने बात़िलह 'लक्ष्मी' और 'गणेश' की मूर्तियां ख़रीदता है ताकि दीपावली की रात इनकी पूजा कर सके. जबकि कुछ लोग पीतल के बर्तन ख़रीदने को तरजीह़ देते हैं, और अगर कुछ न हो सके तो झाड़ू ही ख़रीद लाते हैं.अफ़सोस
कि बहुत से नादान मुसलमान,
ख़ुसूसन् देहाती मुसलमान,
भी कुफ़्फ़ार के कुफ़्रिया अ़क़ीदे की बिना पर होने वाली इस ग़लीज़ रस्म को बड़ी तादाद में फॉलो कर रहे हैं;

إنا لله وإنا إليه رجعون

ये त्यौहार 'क़ौमी' नहीं, बल्कि 'मज़हबी' है, इसलिए मैंने इसे कुफ़्र कहा. इसकी बुनियाद क्या है, इसपर मैं बहुत तफ़्सीली और मुदल्लल गुफ़्तगू करूंगा:

इस त्यौहार की निस्बत जिस से है, उसका नाम है: 'धन्वन्तरि', जिसे कुफ़्फ़ार के दरमियान विष्णु का अवतार माना जाता है. इसकी हैअते कज़ाइय्यह ये है कि इसकी चार भुजायें (arms) हैं, ऊपर की दोनों भुजाओं में 'शंख' और 'चक्र' हैं, जबकि नीचे वाली भुजाओं में से एक में 'जलूका' व 'औषध', तथा दूसरे में 'अमृत कलश' लिये हुये है. इसकी सबसे प्यारी धातु पीतल है, इसीलिये धनतेरस को पीतल के बर्तन ख़रीदने को तरजीह़ दी जाती है;

कहीं कहीं इससे मुख़्तलिफ़ शक्ल में भी इसके बुत पाए जाते हैं;
इसे 'आयुर्वेद का देवता' माना जाता है, इसी वजह से इसे 'सेहत का भगवान' भी कहा जाता है;
आज 'धनतेरस' के दिन कुफ़्फ़ार के ज़रिए इसी बुत की पूजा की जाती है, जिससे सेहत और रिज़्क़ वग़ैरह में बरकत की प्रार्थना की जाती है;
अस्तग़्फ़िरुल्लाह!

इसी दिन इसकी पैदाइश हुई, इसी देवता की पैदाइश के दिन को 'धनतेरस' के रूप में मनाया जाता है.इसकी पैदाइश कैसे हुई, इसका मज़ेदार किस्सा सुनिए:
पौराणिक तारीख़ में एक बहुत अहम स्टोरी है, जिसे 'समुद्र मन्थन' के नाम से याद किया जाता है. ये स्टोरी भागवत पुराण, महाभारत, और विष्णु पुराण में बहुत तफ़्सील से आई है;
मुख़्तसर ये कि:

जब राक्षसों की ताक़त व इक़्तिदार बढ़ने लगे, और देवताओं की तरक्की कम हो गयी, तो सारे देवता, ब्रह्मा को लेकर, विष्णु के पास अपनी परेशानी लेकर पहुंचे. तो विष्णु ने उन देवताओं को मशविरा दिया कि 'क्षीर सागर' (सात समुद्रों में से एक है, जो दूध से भरा है, जिसपर साँपों के तख़्त पर विष्णु

का दरबार लगता है) से अमृत निकालकर पियें.विष्णु ने आगे कहा कि इस अमृत को पीने से देवता अमर हो जाएंगे, तो राक्षस कभी भी उनका ख़ातिमा नहीं कर पाएंगे; मगर इस अमृत को अकेले निकाल पाना देवताओं के बस की बात नहीं है, इसलिए राक्षसों के साथ किसी भी शर्त पर सुलह करके अमृत निकालें; फिर सुलह हुई और 'समुद्र मंथन' शुरू हुआ;

आपको पहले ये समझा देता हूं कि 'समुद्र मंथन' है क्या, और उसके अहम किरदार कौन कौन थे!?
'समुद्र मंथन' का मतलब ये है कि समुद्र को इस तरह पेरना/फिराना, जैसे रई के ज़रिये मट्ठा पेरकर नैनी, फिर नैनी से घी बनाया जाता है; ऐसे ही समुद्र को पेरा गया था.

कुफ़्फ़ार के मुताबिक़ जिस जगह ये वाक़िया पेश आया था वो जगह 'मन्दराचल पहाड़ (मन्दार पर्वत)' था, जो आज के बिहार के बांका ज़िला में मौजूद है, जो भागलपुर शहर के दक्षिण में लगभग 45 किमी की दूरी पर है;
रई का काम इसी पहाड़ से लिया गया, और इसपर रस्सी की तरह 'वासुकी' साँप को लपेटा गया (जो ऋषि कश्यप का बेटा, और एक हज़ार मशहूर साँपों में से सबसे बड़े 'शेषनाग' के बाद दूसरे नंबर पर आता है), जिसे एक तरफ़ देवताओं ने पकड़ा और दूसरी तरफ़ राक्षसों ने;
इसकी कैफ़ियत वही होगी, जैसा कमेंट बॉक्स में एक इमेज में दिया गया है.

इस समुद्र मंथन से एक एक करके 14 रत्न निकले:
कालकूट (या हलाहल ज़हर), ऐरावत हाथी, कामधेनु गाय, उच्चैःश्रवा घोड़ा, कौस्तुभ मणि, कल्प वृक्ष, रम्भा नाम की अप्सरा, लक्ष्मी देवी, वारुणी शराब, चन्द्रमा, शारंग धनुष, शंख, गंधर्व, अमृत लेकर धन्वंतरी.

तो इस तरह समुद्र को पेरा गया, तो 14वें नंबर पर धन्वंतरी की पैदाइश हुई.

इसी मअ़बूदे बात़िल की निस्बत से आज का ये त्यौहार मनाया जाता है, जो कि ख़ालिस़ कुफ़्र है;

कोई घड़े से पैदा हो गया, कोई नाभि से, कोई जांघ से, कोई कमल से, कोई मछली से, कोई समंदर से,
वो सब कुछ तो ठीक है;
मगर सय्यिदुना ईसा (अ़लैहिस्सलाम) की बिना बाप के पैदाइश मानने में इन्हीं कुफ़्फ़ार को मौत आ रही है.

जिसे ये पूरी स्टोरी देखना हो वो
'विष्णु पुराण', अंश नं. 1, अध्याय नं. 9 को पढ़ सकता है;

धंवन्तरि की पैदाइश देखिए: विष्णु पुराण, अंश नं. 1, अध्याय नं. 9, श्लोक नं. 18

अब शरीअ़त का हुक्म सुन लो:
काफ़िरों के वो त्यौहार, जिनका तअ़ल्लुक़ डायरेक्ट इनके किसी देवता से हो, जैसे: धनतेरस, दीपावली, होली, जन्माष्टमी, राम नवमी, गणेश चतुर्थी, नवदुर्गा, शिवरात्रि वग़ैरह;
इनकी मुबारकबाद देना, कुफ़्र है;
यानी जिस मुसलमान ने भी मुबारकबाद दी, तो वो काफ़िर हो जाएगा. जब मुबारकबाद देने का इतना बड़ा गुनाह है, तो सोचिए इन्हें अच्छा समझना, और मनाना, इनकी रस्में करना, कितना बड़ा जुर्म होगा.

لا حول ولا قوة الا بالله العلي العظيم

मुसलमानों!
अल्लाह का ख़ौफ़ करो;
अगर कोई मुसलमान कुफ़्र का काम कर देता है, तो इसका मतलब होता है कि ये चार काम ख़त्म हो गए:

1. उसका ईमान ख़त्म हो गया;
2.उसका निकाह टूट गया (अगर वो शादीशुदा हो तो);
3. उसकी बैअ़त टूट गयी (अगर किसी से मुरीद है तो);
4. अगर उसने ह़ज्जे फ़र्ज़ कर लिया था, तो वो भी ख़त्म.

पत्थर के पुजारी

क़ुरआन 37:95 —

"اَتَعۡبُدُوۡنَ مَا تَنۡحِتُوۡنَ"ۙ

"(ऐ काफ़िरो!)
क्या तुम उन (पत्थर के बुतों) को पूजते हो, जिन्हें ख़ुद (अपने हाथों) से तराश (कर बना) ते हो."

क़ुरआन 39:67 —

"وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدۡرِهٖ وَالۡاَرۡضُ جَمِيۡعًا قَبۡضَتُهٗ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطۡوِيّٰتٌۢ بِيَمِيۡنِهٖ سُبۡحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ"۔

"और उन्होंने अल्लाह की क़द्र न की, जैसा कि उसका ह़क़ था; और वो क़ियामत के दिन सब ज़मीनों को समेट देगा, और उसकी क़ुदरत से सब आसमान लपेट दिए जाएंगे; और (अल्लाह) उनके शिर्क से पाक और बरतर है."[कंज़ुल् ईमान]

क़हरे इलाही की बिजलियाँ

इमाम बैहक़ी (d. 458 हि.) ने रिवायत की, कि सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़े आ़ज़म (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने इरशाद फ़रमाया:

"اجْتَنِبُوا أَعْدَاءَ اللّٰهِ فِي عِيدِهِمْ"،

"अल्लाह के दुश्मनों से, उनके त्यौहारों के दिन, दूर रहो."

अस् सुननुल् कुबरा, ह़दीस नं. 18862, जिल्द नं. 9, पेज नं. 392, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), तीसरा एडीशन, 1424 हि. / 2003 ई.

मौला उ़मरे फ़ारूक़े आ़ज़म (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने एक बार ये भी इरशाद फ़रमाया:

"وَلَا تَدْخُلُوا عَلَى الْمُشْرِكِينَ فِي كَنَائِسِهِمْ يَوْمَ عِيدِهِمْ، فَإِنَّ السَّخْطَةَ تَنْزِلُ عَلَيْهِمْ"،

"मुशरिकीन के पास, उनके त्यौहारों के दिन, उनकी इ़बादतगाहों में, मत जाओ;
यक़ीनन उनपर (अल्लाह का) क़हर उतरता है."

अस् सुननुल् कुबरा (लिल् बैहक़िय्यि), ह़दीस नं. 18861, जिल्द नं. 9, पेज नं. 392, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), तीसरा एडीशन, 1424 हि. / 2003 ई.

इन रिवायात से ये भी मालूम हुआ कि:
वो ख़ास जगहें, जहां मुशरिकीन अपने त्यौहारों पर जश्न मनाते हैं, वहाँ से भी मुसलमानों को दूर रहना चाहिए;
वर्ना, जब उन पर अल्लाह का क़हर नाज़िल होगा, तो ये मुसलमान भी नहीं

बच पाएंगे.

ज़ुबान एक दरिन्दा है

अपनी ज़ुबान का इस्तेमाल, सही से करना चाहिए. ये ऐसी चीज़ है, जो एक लम्हे में दोस्त को दुश्मन, और दुश्मन को दोस्त बना देती है;

इमाम अबुल् फ़त्ह़ अब्शीही शाफ़िई (d. 852 हि.) ने लिखा है कि:

"اللّسَانُ سَبُعٌ صَغِيْرُ الجِرْمِ، عَظِيْمُ الجُرْمِ"،

"ज़ुबान, एक दरिन्दा है, जिसका जिस्म छोटा, मगर जुर्म बड़ा होता है."

अल्-मुस्तत्-रफ़ फ़ी कुल्लि फ़न्-निन् मुस्तज़्-रफ़, बाब नं. 7, फ़स़्ल नं. 2, पेज नं. 52, पब्लिकेशन: ंआलमुल् कुतुब (बेरूत), पहला एडीशन, 1419 हि.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
21/10/22 ई.

ंइल्म से प्यार नहीं

इमाम इब्ने ंअसाकिर (d. 571 हि.) लिखते हैं,
कि इमाम शाफ़िई (रद़ियल्लाहु ंअन्हु) ने इरशाद फ़रमाया:

"مَنْ لَا يُحِبُّ الْعِلْمَ فَلَا خَيْرَ فِيْهِ"،

"जो कोई भी ंइल्म से प्यार नहीं करता,
तो उसके अंदर कोई भलाई नहीं."

तारीख़े दिमश्क़ (दमिश्क़), जिल्द न. 51, पेज न. 408, पब्लिकेशन: दारुल् फ़िक्र (बेरूत), 1415 हि./1995 ई.

जैसा करोगे, वैसा भरोगे

अल्लाह (ﷻ) ने क़ुरआन 17:07 में इरशाद फ़रमाया:

"إِنْ أَحْسَنتُمْ أَحْسَنتُمْ لِأَنفُسِكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا"،

"अगर तुम भलाई करोगे,
अपना भला करोगे;
और बुरा करोगे,
तो अपना...!"
[कंज़ुल् ईमान]

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
10/10/22 ई.

अबू हुरैरह पर आक़ा (ﷺ) का करम

ह़ज़रत अबू हुरैरह (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) पर आक़ा (ﷺ) का करम देखें, कि ख़ुद कहते हैं:

..."وَأَعْطَانِي نَعْلَيْهِ".....،

"....और आक़ा (ﷺ) ने मुझे अपनी नअ़लैन अ़ता फ़रमाई...."

स़ह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस नं. 52, जिल्द नं. 1, पेज नं. 59, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्य (बेरूत)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
12/10/21 ई.

क़ादियानिय्यत पर रज़वी बिजलियां

'आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (रद्दियल्लाहु अ़न्हु)' से पहले आपके बड़े स़ाह़िबज़ादे 'हुज़ूर हुज्जतुल् इस्लाम अ़ल्लामा ह़ामिद रज़ा ख़ान (अ़लैहिर्रह़मह)' ने क़ादियानिय्यत के ख़िलाफ़ 1315 हि. में पूरी किताब लिखी, जिसका नाम है:
"अस़्-स़ारिमुर् रब्बानी अ़ला इस्-राफ़िल् क़ादियानी",

फिर अ़ाला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (रद्दियल्लाहु अ़न्हु) ने इसके पांच साल बाद, यानी 1320 हि. में क़ादियानिय्यत के ख़िलाफ़ उ़मूमी फ़तवा दिया, जो सबसे पहले 'अल् मुस्तनदुल् मुअ़तमद बिनाउ नजातिल् अबद' में छपा, और ह़रमैन शरीफ़ैन के उ़लमा के पास तसदीक़ के लिए गया था;

साथ ही इसी सन् 1320 हि. में, आपने 'मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी' मरदूद के रद में ज़बरदस्त किताब लिखी:

1. "अस्-सूउ वल् इ़क़ाब अ़लल् मसीह़िल् कज़्ज़ाब (1320 हि.)",

इस बात का ज़िक्र ख़ुद अ़ाला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (रद्दियल्लाहु अ़न्हु) ने 'अल् मुस्तनदुल् मुअ़तमद बिनाउ नजातिल् अबद' में अरबी में किया है, देखें:
'अल् मुस्तनदुल् मुअ़तमद बिनाउ नजातिल् अबद',
पेज न. 188, पब्लिकेशन: अल् मज्मउ़ल् इस्लामी,

मुबारक पुर (आज़मगढ़);
इसके अलावा 'अ़ाला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु)' ने ये किताबें भी तह़रीर फ़रमाई:

(2) "अल् जुराज़ुद् दय्यानी अ़लल् मुर्तद्-दिल् क़ादियानी (1340 हि.)",

ये किताब 'सय्यिदुना ई़सा (अ़लैहिस्सलाम)' की ह़यात के सुबूत में लिखी, क़ादियानी जिसके मुन्किर हैं;

(3) "जज़ाउल्-लाहि अ़दुव्वह बि-इबा-इही ख़त्मन् नुबुव्वह (1316 हि.)",

इस किताब में 100 से ज़्यादा ह़दीसों से साबित किया है आक़ा (ﷺ) आख़िरी नबी हैं, साथ ही अइम्मा-ए-किराम की किताबों से तस़रीह़ात भी पेश कीं;
तो इसमें रवाफ़िज़, क़ादियानी, और क़ासिम नानौतवी, तीनों के फ़रेब का ज़बर्दस्त रद हो गया है;

(4) "क़हरुद् दय्यान अ़ला मुर्तद्-दिन् बि क़ादियान (1323 ई.)",

ये एक पम्फलेट था, जो आपने क़ादियानिय्यत के ख़िलाफ़ जारी किया था;

(5) "अल् मुबीन् ख़त्मन् नबिय्यीन (1326 ई.)",
क़ादियानियों ने 'ख़ातमुन् नबिय्यीन' वाली आयते करीमह —
"مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ"ۚ ،

यानी क़ुरआन 33:40 को लेकर ये मक्कारी फैलाना शुरू की, कि इस आयत में लफ्ज़े 'अन्-नबिय्यीन' पर 'अलिफ़ लाम' जो आया है वो 'अ़हदे ख़ारिजी' का है, न कि 'इस्तिग़राक़' का. यानी इसपर उन्होंने अरबी ग्रामर की बुनियाद पर शुबहा डालना चाहा, तो अ़ाला ह़ज़रत ने इस एतराज़ की धज्जियाँ अपनी इस किताब में उड़ा कर रख दीं;

ये पांच किताबें हैं, अ़ाला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) की, जिनमें आपने ख़ास तौर पर क़ादियानिय्यत का रद फ़रमाया है;

नोट: इन किताबों को गूगल से डाउनलोड कर सकते हैं.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
07/10/22 ई.

तुह़फ़ा ए इश्क़े नबी (ﷺ)

अपने आक़ा (ﷺ) की बारगाह में 'अ़ाला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह)' अर्ज़ करते हैं:

"इनके हाथ में हर कुंजी है;
मालिके कुल, कहलाते ये हैं."

"इन्ना अअ़्तैनाकल् कौसर,
सारी कस़रत पाते ये हैं."

"रब है मुअ़्ती, ये हैं क़ासिम;
रिज़्क़ उसका है, खिलाते ये हैं."

अब इन अश्आ़र की थोड़ी-सी तशरीह़ मुलाह़ज़ा करें:

1. पहले शिअ़र में इस हदीस की तल्मीह़ है, आक़ा (ﷺ) ने फ़रमाया:

...."بَيْنَمَا أَنَا نَائِمٌ البَارِحَةَ إِذْ أُتِيتُ بِمَفَاتِيحِ خَزَائِنِ الأَرْضِ حَتَّى وُضِعَتْ فِي يَدِي"!....

"....उसी दौरान मैं पिछली रात सो रहा था, कि जभी मेरे पास ज़मीन के 'ख़ज़ानों की कुंजियां' लाई गयीं, यहां तक कि मेरे हाथ में रख दी गयीं....!"

बुख़ारी शरीफ़, किताबुत्तअ़बीर, बाब: रूयल्लैल, ह़दीस नं. 6998, जिल्द नं. 9, पेज नं. 33, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, (1422 हि. / 2001 ई.).

नोट: इस मफ़्हूम की बहुत सी हदीसें मौजूद हैं, जिन्हें ह़दीस व सीरत की किताबों में देखा जा सकता है.

2. दूसरे शिअ़र में क़ुरआन की आयत की तल्मीह़ है, अल्लाह (ﷻ) अपने हबीब (ﷺ) से 'क़ुरआन 108:1' में इरशाद फ़रमाता है:

"إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ".

"ऐ मह़बूब! बेशक हमनें तुम्हें बेशुमार खूबियां अता फरमायीं."
[कंज़ुल् ईमान]

3. तीसरे शिअ़र में भी एक ह़दीस की तल्मीह़ है, आक़ा (ﷺ) ने फ़रमाया:

..."إِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ وَاللَّهُ يُعْطِي"!...

"बेशक मैं बांटने वाला हूँ, और अल्लाह अ़त़ा करता है."

बुख़ारी शरीफ़, किताबुल् इ़ल्म, बाब: मंय्युरिदिल्लाहु बिही ख़ैरन् युफ़क़्क़िह्हु फ़िद्दीन, ह़दीस नं. 71, जिल्द नं. 1, पेज नं. 25, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह (बेरूत), फ़र्स्ट एडिशन (1422 हि. / 2001 ई.).

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
06/03/19ई.

स़ह़ाबा के ज़रिए मीलाद की महफ़िल

ह़ज़रते मुआ़वियह (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) रिवायत करते हैं:

"إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ عَلَى حَلْقَةٍ يَعْنِي مِنْ أَصْحَابِهِ فَقَالَ: 'مَا أَجْلَسَكُمْ؟' قَالُوا: 'جَلَسْنَا نَدْعُو اللَّهَ وَنَحْمَدُهُ عَلَى مَا هَدَانَا لِدِينِهِ، وَمَنَّ عَلَيْنَا بِكَ.' قَالَ: 'آللَّهُ مَا أَجْلَسَكُمْ إِلَّا ذَلِكَ؟' قَالُوا: 'آللَّهُ مَا أَجْلَسَنَا إِلَّا ذَلِكَ.' قَالَ: 'أَمَا إِنِّي لَمْ أَسْتَحْلِفْكُمْ تُهَمَةً لَكُمْ، وَإِنَّمَا أَتَانِي جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَأَخْبَرَنِي أَنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ يُبَاهِي بِكُمُ الْمَلَائِكَةَ'".

"रसूलुल्लाह (ﷺ) एक ह़ल्क़े के पास आए, यानी अपने स़ह़ाबा के (ह़ल्क़े में). तो आपने फ़रमाया: 'किस वजह से बैठे हुए हो?' स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ की: 'हम अल्लाह से दुआ़ करने, और उसकी ह़म्द करने के लिए बैठे हैं, इस बात पर कि उसने हमें अपने दीन की राह अ़त़ा की, और आपको भेजकर हम पर इह़सान फ़रमाया.' आक़ा (ﷺ) ने पूछा: 'क्या, बाख़ुदा, तुम इसी वजह से बैठे हो?' स़ह़ाबा ने अर्ज़ की: 'बाख़ुदा, हम इसीलिए वजह से बैठे हुए हैं.' आक़ा (ﷺ) ने फ़रमाया: 'मैंने, तुमसे क़सम, किसी शको शुबहा

की वजह से नहीं ली; बल्कि मेरे पास जिब्रील (अ़लैहिस्सलाम) आए, तो उन्होंने मुझे बताया कि अल्लाह (ﷻ) तुम लोगों पर फरिश्तों के दरमियान फ़ख़्र करता है."

सुनने नसाई, किताब नं. 49, बाब नं. 37, जिल्द नं. 8, पेज नं. 249, ह़दीस नं. 5426, दर्जा: सह़ीह़, तह़क़ीक़: शैख़ अ़ब्दुल् फ़त्ताह़ अबू ग़ुद्-दह, पब्लिकेशन: मक्-तबुल् मत़्बूआ़तिल् इस्लामिय्यह (एलप्पो), दूसरा एडीशन (1406 हि./1986 ई.)

इस ह़दीस के जिस ह़िस्से पर आपको ग़ौर करना है वो ये है:

..."وَمَنَّ عَلَيْنَا بِكَ"!...

"....और आपको भेजकर हम पर इह़सान फ़रमाया....!"
यानी जब आक़ा (ﷺ) ने स़ह़ाबा से उनकी महफ़िल का सबब (reason) पूछा, तो स़ह़ाबा-ए-किराम ने दो सबब बताये:

(1) अल्लाह ने हमें दीन की राह दी;
(2) अल्लाह ने आपको हमारे दरमियान भेजा;

इन्हीं दोनों कामों के बदले में अल्लाह का शुक्रिया अदा करने के लिए स़ह़ाबा-ए-किराम ने महफ़िल मुन्अ़क़िद की;

तो इससे पता चलता है कि जिस तरह अल्लाह की दूसरी निअ़मतों पर शुक्र अदा करने के लिए स़ह़ाबा महफ़िल लगाते थे, इसी तरह आक़ा (ﷺ) की विलादत के शुक्र में भी सजाते थे.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
21/10/20 ई.

मेरे अ़लावा कोई भी

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"أَنَا أَوَّلُ مَنْ تَنْشَقُّ عَنْهُ الأَرْضُ، فَأُكْسَى الْحُلَّةَ مِنْ حُلَلِ الْجَنَّةِ، ثُمَّ أَقُومُ عَنْ يَمِينِ الْعَرْشِ، لَيْسَ أَحَدٌ مِنَ الْخَلاَئِقِ يَقُومُ ذَلِكَ الْمَقَامَ غَيْرِي"،

"मैं वो हूं कि (ह़श्-र के दिन), जिसकी (क़ब्र की) ज़मीन सबसे पहले खुलेगी, फिर मुझे जन्नत के लिबास में से एक जोड़ा पहनाया जाएगा. फिर मैं अ़र्श की दायीं जानिब खड़ा होऊँगा, कि मख़्लूक़ में, मेरे अ़लावा कोई भी उस जगह पर खड़ा नहीं होगा."

तिर्मिज़ी शरीफ़, किताबुल् मनाक़िब अ़न् रसूलिल्लाह ﷺ (किताब नं. 49), बाब फ़ी फ़द्लिन् नबिय्यि ﷺ (बाब नं. 01), ह़दीस नं. 3611

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
04/10/22 ई.

मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादियानी की मौत

मुर्तद्द जहन्नमी 'मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादियानी' की इ़बरतनाक मौत कुछ इस तरह हुई:

'मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादियानी' की इ़बरतनाक हलाकत के मुतअ़ल्लिक़, इन्हीं क़ादियानी काफ़िरों की मुअ़तबर वेबसाइट alislam.org का इअ़तिराफ़ ये है:

"He had for a long time been subject to attacks of dysentery. During his stay in Lahore he suffered a mild attack on the night of 16 May (1908). On the night of 25 May (1908) he had another attack of the same complaint which made him feel very weak....!"

"वो (मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी) लंबे वक़्त से 'पेचिश' के हमलों का शिकार था. लाहौर में ठहरने के दौरान, 16 मई (1908) की रात को उसपर 'पेचिश' का एक हल्का हमला हुआ. 25 मई (1908) की रात को, इसी बीमारी का इस (मिर्ज़ा) पर दूसरा हमला हुआ, जिसने उसे बहुत कमज़ोरी महसूस करा डाली...!"

कुछ लाइन बाद लिखा है:

"....After 9 a.m. his breathing became labored and about 10:30 a.m. he took one or two long breaths and his soul departed from his body....!"

"....सुबह 9:00 बजे के बाद, उसकी सांसें थमने लगीं, और तक़रीबन 10:00 बजे, उसने एक दो गहरी सांसें लीं, और (इसके बाद) उसकी रूह निकल (कर जहन्नम की तरफ रवाना हो) गयी...!"

Source: https://www.alislam.org/articles/re-institution-khilafat/

विकिपीडिया ने कुछ इस तरह से मुख़्तसर अन्दाज़ में बता दिया:

"....Ahmad was in Lahore at the home of Dr. Syed Muhammad Hussain (who was also his physician), when, on 26 May 1908, he died as a result of dysentery...!"

"...जब, 26 मई 1908 ई. को 'पेचिश' (की बीमारी होने के) नतीजे में, इस (मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादियानी) की मौत हुई, तो उस वक़्त 'मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादियानी' लाहौर में डॉ. सय्यिद मुह़म्मद हुसैन के घर पर था (जो उसका ख़ास डॉक्टर भी था)...!"

Source:
https://en.wikipedia.org/wiki/Mirza_Ghulam_Ahmad

[Note: Brackets are mine to clarify]

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
26/05/20 ई.

7 सितंबर (1974 ई.)

हमारे आक़ा मुह़म्मद (ﷺ) के बाद, न कोई रसूल होगा, न कोई नबी;

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"إِنَّ الرِّسَالَةَ وَالنُّبُوَّةَ قَدْ انْقَطَعَتْ فَلَا رَسُولَ بَعْدِي وَلَا نَبِيَّ"،

"बेशक रिसालत व नुबुव्वत ख़त्म हो गयी, तो मेरे बाद न कोई रसूल होगा, और न ही नबी."

तिर्मिज़ी शरीफ़, अब्वाबुर् रूया, बाब: ज़हबतिन् नुबुव्वह व बक़ियतिल् मुबश्शिरात, हदीस न. 2272, पब्लिकेशन: मुस्तफा अल्-बाबी अल्-ह़ल्बी (मिस्र), दूसरा एडीशन (1395 हि./1975 ई.), जिल्द नं. 4, पेज नं. 533

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
29/03/19 ई.

ख़त्मे नुबुव्वत दर रद्-दे क़ादियानिय्ये मुर्तद्द

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"إِنَّ لِي أَسْمَاءً، أَنَا مُحَمَّدٌ، وَأَنَا أَحْمَدُ، وَأَنَا الْمَاحِي الَّذِي يَمْحُو اللّٰهُ بِيَ الْكُفْرَ، وَأَنَا الْحَاشِرُ الَّذِي يُحْشَرُ النَّاسُ عَلَى قَدَمَيَّ، وَأَنَا الْعَاقِبُ الَّذِي لَيْسَ بَعْدَهُ أَحَدٌ، وَقَدْ سَمَّاهُ اللّٰهُ رَءُوفًا رَحِيمًا"،

"बेशक मेरे कुछ नाम हैं:
मैं मुह़म्मद हूं, मैं अह़मद हूं, और मैं ही 'माह़ी (मिटाने वाला)' हूं, मेरे ही ज़रिए अल्लाह कुफ़्र को मिटाता है;
और मैं ही 'ह़ाशिर (जमा करने वाला)' हूं,
कि जिसके क़दमों तले लोगों को जमा किया जाएगा;
और मैं ही 'ఆक़िब (पीछे आने वाला)' हूं,
कि जिसके बाद कोई (नबी) नहीं;
और अल्लाह ने जिसका नाम 'रऊफ़ (मेहरबान)' व 'रह़ीम (रह़म वाला)' भी रखा."

स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल् फ़ज़ाइल, बाबु अस्माइही (ﷺ), ह़दीस न. 2354, जिल्द नं. 4, पेज नं. 1828, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत)

ये वो ज़बरदस्त ह़दीस है जिसमें 'क़ादियानियों' और 'वह्हाबिय्यों' दोनों का जानलेवा रद है. थोड़ी गहराई में जाएं, तो इसमें 'अहले क़ुरआन' का भी रद मौजूद है.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
25/01/21 ई.

सबसे ज़्यादा फालोवर्स

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"أَنَا أَكْثَرُ الْأَنْبِيَاءِ تَبَعًا"،

"नबियों में,
सबसे ज़्यादा फालोवर्स मेरे होंगे."

स़ह़ीह़ मुस्लिम, 1:85:330 (1:188), पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
20/09/21 ई.

एक गहरी बात

मेरे मुर्शिदे करीम[1] ने एक बार मुझे नसीहत करते हुए कहा कि:
"मूज़ी[2] जानवर को मार देना चाहिए."
तो मैंने फौरन अ़र्ज़ की:
"हुज़ूर! अगर जानवर इंसान की शक्ल में हो, तब भी मार देना चाहिए?"

तो मुर्शिदे करीम ने जवाबन् इर्शाद फ़रमाया:
"अगर इंसान होगा, तो मूज़ी नहीं होगा."
[1]रफ़ीक़े मिल्लत सय्यिद नजीब ह़ैदर नूरी
[सज्जादा नशीन: ख़ानक़ाहे बरकातिय्यह (मारहरा शरीफ़)];
[2]ईज़ा/तकलीफ़ पहुंचाने वाला

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
10/09/21 ई.

समलैंगिकता/Homosexuality

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"إِنَّ أَخْوَفَ مَا أَخَافُ عَلَى أُمَّتِي عَمَلُ قَوْمِ لُوطٍ"،

"यक़ीनन, मुझे अपनी उम्मत पर जिस काम को करने का सबसे ज़्यादा डर है, वो क़ौमे लूत़ का अ़मल है."

तिर्मिज़ी, ह़दीस नं. 1457, अब्वाबुल् हुदूद, बाब: मा जाअ फ़ी ह़द्-दिल् लूती, जिल्द नं. 4, पेज नं. 58, पब्लिकेशन: मुस़्तफ़ा बाबी ह़लबी (मिस्र), दूसरा एडीशन, 1395 हि. / 1975 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
20/07/22 ई.

BEWARE OF FAKE NARRATIONS

About India, the only riwāyah I have found yet, is mawqūf. No marfūʿ riwāyah from Beloved Rasūlullāh (ﷺ) is there.

The mawqūf riwāyah is:
Imām Ḥākim Nayshapurī (d. 405 AH) narrated in his "Al-Mustadrak 'ala al-Ṣaḥīḥayn":

...."عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، قَالَ: قَالَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ:

"أَطْيَبُ رِيحٍ فِي الْأَرْضِ الْهِنْدُ، أُهْبِطَ بِهَا آدَمُ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ، فَعَلَقَ شَجَرُهَا مِنْ رِيحِ الْجَنَّةِ".

هَذَا حَدِيثٌ صَحِيحٌ عَلَى شَرْطِ مُسْلِمٍ وَلَمْ يُخَرِّجَاهُ".

Narrated by Ibne ʿAbbās (RaḍiyAllāhu ʿanhu), Mawla ʿAlī (RaḍiyAllāhu ʿanhu) said:

"The best wind on earth is (the wind of) India; Adam (Peace be upon him) was sent down on it; and its trees caught some of the wind of Jannah."

And then said:
"This ḥadīth is Ṣaḥīḥ on the conditions of (Imām) Muslim....!"

Al-Mustadrak ʿala al-Ṣaḥīḥayn, Book: History of Prophets & Messengers, Chapter: Adam (Alayhiṣ-Ṣalātu was-Salām) Volume: 2, Page no. 592, Ḥadīth no. 3995, Publication: Dār al-Kutub Al-'lmiyyah (Beirut), First edition, 1441 AH / 1990 Ad.

Great Muḥaddith, Ameer al-Mu'mineen in the field of Ḥadīth, Imām Ibne Ḥajar al-ʿAsqalānī (d. 852 Ah) says:

"حَدِيثٌ (كم): "أَطْيَبُ رِيحٍ فِي الأَرْضِ الْهِنْدُ، هَبَطَ بِهَا آدَمُ، فَعَلِقَ شَجَرُهَا مِنْ رِيحِ الْجَنَّةِ"، مَوْقُوفٌ".

"Narration of Al-Ḥākim in al-Mustadrak: "The best wind on earth is (the wind of) India. Adam (Peace be upon him) was sent down on it, and its trees caught some of the wind of Jannah", is Mawqūf (مَوْقُوف)."

Itḥāful Maharah, Volume: 11, Page no. 508, Ḥadīth no. 14526, Published from Madīnah Sharīf.

Muḥammad Qāsim al-Qādirī
2019 CE

सिलेबस

अल्-अज़्हर यूनिवर्सिटी, क़ाहिरा (मिस्र) के तअ़लीमी निज़ाम से तो, मैं उ़मूमी तौर पर बहुत मुतअस्सिर हूं ही. मगर ख़ास तौर पर जिस चीज़ ने मुझे सबसे ज़्यादा मुतअस्सिर किया, वो है यहां का सिलेबस;
ये अह़्क़र,
अपनी मुन्तख़बकर्दा 'कुल्लिय्यह (faculty)',
यानी 'कुल्लिय्यह उस़ुलुद्-दीन (Faculty of Uṣūl al-Dīn)' में अपने इख़्तियारकर्दा शुअ़्बा: 'अल्-अ़क़ीदह वल् फ़ल्सफ़ा (The doctrine and philosophy)' के सिलेबस में एक सब्जेक्ट से बहुत ज़्यादा मुतअस्सिर है, और वो है: "अत्-तय्यारातुल् फ़िक्रिय्यह अल्-मुआ़स़िरह (Contemporary Movements)", जिसमें 'रिनेसा (Renaissance)' से लेकर दौरे ह़ाज़िर तक के ख़ास-ख़ास फ़ितनों पर अच्छे से स्टडी कराकर,

फिर इस्लामी क़ानून की रौशनी में उनका रद भी पढ़ाया जाता है. कुछ ख़ास फ़ितनों का ज़िक्र कर देता हूं:

1. Secularism
2. Democracy
3. Marxism
4. Capitalism
5. Communism
6. Seminary/Clericalism
7. Orientalism
8. Christian theology
9. Globalization

अगरचे हर फैकल्टी की दूसरी साल के सिलेबस में ये सब्जेक्ट दाख़िल है, मगर 'उस़ुलुद्-दीन फैकल्टी' की तीसरी और चौथी साल में भी ये सब्जेक्ट पढ़ाया जाता है;

तीसरी साल में, इस सब्जेक्ट की जो किताब है, वो सिर्फ़ और सिर्फ़ 'अल्-अ़ल्मानिय्यह (Secularism)' ही के रद में है. उ़लमा-ए-अज़्हर ने इस 151 पेज की किताब में, चार सेक्शन में, बड़े धड़ल्ले से 'सेक्युलरिज्म' को आड़े हाथों लिया है;
फिर इस्लामी निज़ाम की फ़ौक़िय्यत को बहुत ज़बर्दस्त तरीक़े से साबित किया है, और इसपर उठने वाले सवालों का एक-एक करके जायज़ा लिया है;

इसके अलावा भी, अलग-अलग फैकल्टी में कई ऐसे सब्जेक्ट हैं, जो वक़्त की ज़रूरत हैं. जैसे: "अल्-क़द़ायल् फ़िक़्हिय्यह अल्-मुआ़स़िरह (Modern Juristic Issues)", जिसमें दौरे ह़ाज़िर में उठने वाले नित-नए

फ़िक़्ही मसाइल की ज़बर्दस्त स्टडी करायी जा रही है, चाहें इनका तअ़ल्लुक़ मेडिकल लाइन से हो, या बैंकिंग सिस्टम से;

ये सब पढ़कर लगता है कि आज भी हर मैदान के मौजूदा मसाइल को हल करने के लिए, हमें शरीअ़त के क़वानीन की इतनी ही ज़रूरत है, जितनी कि एक नाबीना को आँखों की ज़रूरत होती है;

ऐसे ही अगर: "अल्-इस्तिशराक़ वत् तब्शीर (The Orientalism and Evangelism)", के सब्जेक्ट को देखें, तो पूरी ईसाईय्यत को, इस सब्जेक्ट में चौतरफा घेर कर मारा जा रहा है. साथ ही:

1. Feminism
2. Misogyny
3. Infanticide
4. Captivity

जैसी इंसानियत की जानी दुश्मन बीमारियों का भी भरपूर कटाक्ष किया जा रहा है;

इसी तरह: "अल्-मुक़ारनह बैनल् अदयान (Comparative Religion)", के सब्जेक्ट को पढ़िए, तो.......

1. All Major Religions
2. Atheism
3. Agnosticism
4. Skepticism

5. Bahāʾism
6. Bābāʾism

........जैसे ज़हरीले फ़ितनों का ख़ूब तआक़ुब मिलेगा;

इसके अलावा: "अल्-फ़िरक़ुल् इस्लामिय्यह (Islamic Sects)", का सब्जेक्ट देखें तो इसमें ________

1. राफ़िज़िय्यत
2. ख़ारिजिय्यत
3. इअ़्तिज़ाल
4. इर्-जाअ
5. जह्-मिय्यत
6. जबरिय्यत
7. क़दरिय्यत
8. कर्रामिय्यत

________जैसे, इस्लाम के नाम पर चलने वाले फ़िरक़ों का, और आज तक इनकी बची हुई फ़िक्र को अपने कंधों पर उठाने वाले कुछ मौजूदा फ़िरक़ों का तआ़रुफ़, फिर उनका रद पढ़ाया जा रहा है.
अभी बहुत कुछ है,
जो मैं अपने 'अज़्हर शरीफ़' की शान में आगे कहता रहूँगा;
इन्-शा अल्लाह (ﷻ)!

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
16/08/22 ई.

टकराव नहीं, बल्कि जहालत है

मुस्तशरिक़ीन (Orientalists) जिस-जिस एंगल से क़ुरआन व ह़दीस पर एतराज़ात करते हैं, उनमें से एक एंगल है: 'टकराव (contradiction)', यानी वो क़ुरआन व ह़दीस में तीन तरह का 'टकराव (contradiction)' साबित करने की कोशिश करते हैं:

1. एक आयत का दूसरी आयत से,
2. एक ह़दीस का दूसरी ह़दीस से,
3. आयत का किसी ह़दीस से,

जबकि क़ुरआन व ह़दीस में किसी तरह का कोई भी आपसी 'टकराव (contradiction)' नहीं पाया जाता;
ये सिर्फ़ कुफ़्फ़ार की जहालत है, कि वो इस्लाम के 'उस़ूले तत़्बीक़ (law of compatibility)' की a, b, c, d भी नहीं जानते, इसलिए उन्हें हर जगह 'टकराव (contradiction)' ही दिखाई देता है;

कुफ़्फ़ार की इसी जहालत के बारे में इमाम अबू जअ़फ़र त़ह़ावी (d. 321 हि.) अपनी ज़बर्दस्त किताब 'शरह़ु मअ़ानिल् आसार' (जो 'त़ह़ावी शरीफ़' के नाम से मशहूर है) के बिल्कुल शुरू में लिखते हैं:

"سألني بعض أصحابنا من أهل العلم أن أضع له كتاباً، أذكر فيه الآثار المأثورة عن رسول الله صلى الله عليه وسلم فى الأحكام التي يتوهم أهل الإلحاد والضَعَفَة من أهل الإسلام، أن بعضها ينقض بعضاً، لقلة علمهم بناسخها من منسوخها

وما يجب به العمل منها لما يشهد له من الكتاب الناطق والسنة المجتمع عليها"،

""मेरे कुछ इ़ल्म वाले साथियों ने मुझसे कहा कि मैं उनके लिए एक ऐसी किताब लिखूं, जिसमें (फ़िक़्ही) अह़काम के बारे में, आक़ा (ﷺ) से मन्क़ूल, ऐसी रिवायात बयान करूं, जिनके बारे में मुल्ह़िदों और (कुछ) कमज़ोर ईमान वाले मुसलमानों का ये वहम है कि ये आपस में एक दूसरे के मुख़ालिफ़ हैं. (इस वहम का एक सबब ये है कि) इनको, इन रिवायात के बारे में ये कम ही पता होता है कि:

1. इनमें 'नासिख़ (Abrogater)' कौन सी है, और 'मन्सूख़ (abrogated)' कौन सी;
2. क़ुरआन व ह़दीस से दलीलों के सबब, किस पर अ़मल करना ज़रूरी है (और किस पर नहीं)!?"

शरह़ु मआ़निल् आसार (त़ह़ावी शरीफ़), जिल्द नं. 1, पेज नं. 10, पब्लिकेशन: अशरफ़ी बुक डिपो (देवबंद)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
09/11/21 ई.

ज़मीन मुतह़र्रिक या साकिन

आज से दो साल पहले, 05/06/20 ई. को, मैंने एक तह़रीर लिखी थी जिसका उन्वान था: 'ज़मीन मुतह़र्रिक या साकिन (तह़क़ीक़े आ़ला ह़ज़रत के तआ़रुफ़ में एक मुख़्तसर गुफ़्तगू)', जो काफ़ी मक़्बूल हुई;

इसे लिखने की वजह वही रही, जो उस वक़्त हर शख़्स अपने कानों से सुन रहा था, और आँखों से देख रहा था कि किस तरह मीडिया पर, कुफ़्फ़ार के ज़रिए, कुछ सुन्नी उ़लमा की वीडियो क्लिप्स दिखाकर, उनके ख़िलाफ़ कैसी-कैसी अ़य्याराना बातें की जा रही थीं;

जिसका पूरा फ़ायदा कुफ़्र-नवाज़ वह्हाबिय्यह, उर्दू नाम वाले लिबरलों और सैक्यूलरों ने जी भरकर उठाया, और आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) के ख़िलाफ़ बकवासों के बाज़ार गर्म किए, जिसका फ़क़ीर ने तह़रीरी जवाब लिखा, और उन 'सुफ़हा-उल्-अह़्लाम' तक पहुंचाया भी गया, मगर बि-ह़म्दिल्लाह (ﷻ) अब तक उधर से कोई जवाब नहीं आया, मह़ज़ मुर्दनी-सी छाई हुई है;

इसमें हल्का का इज़ाफ़ा करते हुए फ़क़ीर कहता है:

इस जहालत के बाज़ार में सबसे ज़्यादा बदगोई करने वाले 'ग़ैर मुक़ल्लिद/सलफ़ी/अह़ले ह़दीस' थे, जो भूल गए कि:

'शैख़ ह़मूद इब्ने अ़ब्दुल्लाह तुवैजिरी (d. 1413 हि.)', जो कि सऊ़दी के बहुत बड़े वह्हाबी आ़लिम गुज़रे हैं, जिनके इ़ल्म का डंका वह्हाबिय्यह के दरमियान बजता है, जिनकी शान में 'अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ इब्ने बाज़ (d. 1420 हि.)' ने भी क़लम चलाया, उन्होंने 'ज़मीन के साकिन (रुके हुए)' होने पर दो किताबें लिखीं:

1. 'अस़् स़वाइक़ुश् शदीदह अ़ला अत्बाइ़ल् हैअतिल् जदीदह',

ये किताब 190 पेज पर मुश्तमिल, पहली बार 1388 हि. में सऊ़दी से छपी;

मज़े की बात ये है कि इस किताब पर तस्दीक़ है: 'मुफ़्तिए आ़ज़म व क़ाज़िल् क़ुज़ात (सऊ़दी) मुह़म्मद इब्ने इब्राहीम आले शैख़ (d. 1389 हि.)' की;
2. 'ज़ैलुस् स़वाइक़ लि-मह़्विल् अबात़ीलि वल् मख़ारिक़',
ये किताब 359 पेज पर मुश्तमिल, 1390 हि. में सऊ़दी से छपी;

इस पर तस्दीक़ है: 'अ़ब्दुल्लाह इब्ने हु़मैद (d. 1402 हि.)' की, जिसे 'मलिक फ़ैस़ल इब्ने अ़ब्दुल् अ़ज़ीज़ (d. 1395 हि.)' ने मस्जिदे ह़राम का मुदर्रिस व मुफ़्ती, और 'इशराफ़े दीनी' का हैड बनाया. फिर 1395 हि. में 'मलिक ख़ालिद इब्ने अ़ब्दुल् अ़ज़ीज़ (d. 1402 हि.)' ने इसे 'मज्लिसे क़ज़ा' और 'मज्लिसे फ़िक़्ही' का हैड, और 'हैअते किबारे उ़लमा' का मेंबर बनाया;
ये दोनों किताबें अ़रबी में, नेट पर, ऑनलाइन और पीडीएफ फाइल की शक्ल में भी, मौजूद हैं;

क़ारिईन, ज़रा देखें!
ये वह्हाबिय्यह के वो सरग़ने हैं, जिनपर पूरी मौजूदा वह्हाबिय्यत टिकी हुई है. इन्होंने भी, ज़मीन के बारे में, बिल्कुल वही लिखा है, जो इमामे अहले सुन्नत आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) ने लिखा है. मगर इनके चमचे, जिस तरह से अपनी बदतमीज़ी वाली ज़ुबान, आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) के ख़िलाफ़ खोलते हैं, और अपना गुस्ताख़ क़लम इमाम के ख़िलाफ़ चलाते हैं, इसी तरह अपने इन गुरुघंटालों के ख़िलाफ़ कभी, न अपनी ज़ुबान खोल सकते हैं, और न ही अपना क़लम चला सकते हैं;
अल्ह़म्दुलिल्लाह (ﷻ);
इमामे अहले सुन्नत (अ़लैहिर्रह़मह) की तह़क़ीक़ की तस्दीक़, ख़ुद इनके ही बड़े-बड़े उ़लमा कर रहे हैं.

20/07/22 ई.

पांच कामों को

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"إِذَا اسْتَحَلَّتْ أُمَّتِي خَمْسًا، فَعَلَيْهِمُ الدَّمَارُ:

إِذَا ظَهَرَ التَّلَاعُنُ؛

وَشَرِبُوا الْخُمُورَ؛

وَلَبِسُوا الْحَرِيرَ؛

وَاتَّخَذُوا الْقِيَانَ؛

وَاكْتَفَى الرِّجَالُ بِالرِّجَالِ، وَالنِّسَاءُ بِالنِّسَاءِ"،

"जब मेरी उम्मत पांच कामों को (अपने लिए) ह़लाल कर लेगी, तब वो हलाक हो जाएगी:

1. जब एक दूसरे पर लअ़नत भेजना ज़ाहिर हो जाए;
2. और शराबें पीने लगें;
3. और रेशम (के लिबास) पहनने लगें;
4. नाच-गाना करने लगें;
5. मर्द, मर्द के लिए; और औरत, औरत के लिए (जिस्मानी ख़्वाहिश पूरी करने में) काफ़ी होने लगें.

[यानी: Homosexuality {समलैंगिकता (Tribadism & Sodomy)} आ़म हो जाएगी.]

शुअ़बुल् ईमान, ह़दीस नं. 5086, जिल्द नं. 7, पेज नं. 329, पब्लिकेशन: मक्-तबतुर् रुश्द (रियाद), पहला एडीशन, 1423 हि. / 2003 ई.

24/04/22 ई.

ई़दों पर ख़ुशी ज़ाहिर करना

इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी (d. 856 हि.) लिखते हैं:

"أَنَّ إِظْهَارَ السُّرُورِ فِي الْأَعْيَادِ مِنْ شِعَارِ الدِّينِ"،

"ई़दों पर ख़ुशी ज़ाहिर करना, दीन की निशानियों में से है."

फ़त्हुल् बारी शरह़ु स़ह़ीह़िल् बुख़ारी, जिल्द न. 2, पेज न. 443, पब्लिकेशन: दारुल् मअ़रिफ़ह (बेरूत), 1379 हि.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
14/05/21 ई.

तह़रीर चुराने वाले ग़ौर दें

दूसरों की बात या तह़रीर चुराने वाले ग़ौर दें:
इमाम इब्ने अ़ब्दुल् बर्र मालिकी (d. 463 हि.) लिखते हैं:

"إِنَّ مِنْ بَرَكَةِ الْعِلْمِ أَنْ تُضِيفَ الشَّيْءَ إِلَى قَائِلِهِ"،

"बेशक (ये) इ़ल्म में बरकत (लाने के अस्बाब) में से है कि (कही हुई) चीज़ को, उसे कहने वाले ही की तरफ़ मंसूब किया जाए."

जामिउ़ बयानिल् इ़ल्म व फ़द़्लिही, जिल्द नं. 2, पेज नं. 922, पब्लिकेशन: दार इब्ने जौज़ी (सऊ़दी अ़रब), पहला एडीशन, 1414 हि. / 1994 ई.

10/05/22 ई.

आ़ला ह़ज़रत की दूर-अन्देशी

आज से 108 साल पहले, 1335 हि. में, इमामे अहले सुन्नत (अ़लैहिर्रह़मह) ने, हिंदुस्तान के मुस्तक़्बिल के हालात के बारे में, ऐसी सटीक बातें इर्शाद फ़रमाई थीं, जो आज ह़र्फ़-ब-ह़र्फ़ पूरी हो रही हैं. एक सवाल का जवाब देते हुए लिखते हैं:

"....और अगर बिल् फ़र्ज़, हुकूमते ख़ुद-इख़्तियारी अपने ह़क़ीक़ी मअ़ना पर मिली, तो वक़्त सख़्त-तर है;
ग़ौर करो!
इस वक़्त, कि मुल्क इनके हाथ में नहीं, तुम्हारे मज़्हबी शआ़इर में कितनी रुकावटें डालते हैं; रात दिन कोशां रहते हैं; और अपनी कसरते तादाद और कसरते माल के सबब, कुछ न कुछ कामयाब होते रहते हैं. जब इख़्तियार इनके हाथ में हुए, उस वक़्त का क्या अंदाज़ा हो सकता है? मसलन्: इस वक़्त क़ुर्बानियां — इन क़ुयूद व हुदूद के साथ, कि इनका लगाया जाना भी शोरिशे हुनूद [n] के बाइ़स है — हो भी जाती हैं; उस वक़्त क़त्ले इंसान से बढ़कर जुर्म ठहरेंगी; और मुसलमानों को मजबूराना, अपना ये शिआ़रे दीनी, बंद करना पड़ेगा;
क्या गवर्नमेंट, तन्हा तुम्हें मुल्क दे देगी, कि इसमें ख़ालिस़ अह़कामे इस्लाम जारी करो? ये तो मुमकिन नहीं;
न तन्हा, इनको मिले;
फिर शिरकत रखोगे, या मुल्क बांट लोगे, कि एक हिस्सा में तुम इस्लामी अह़काम जारी करो, एक में वो अपने मज़्हबी अह़काम, जो तुम्हारी शरीअ़त की रू से, अह़कामे कुफ़्र हैं;

बर तक़्दीरे सानी:
ज़ाहिर है कि हिन्दुस्तान का कोई शहर, इस्लामी आबादी से ख़ाली नहीं. तो उन लाखों मुसलमानों पर अपनी शरीअ़ते मुत़ह्हरा के ख़िलाफ़ अह़काम, तुमने अपनी कोशिशे मुत्तफ़क़ा से जारी कराए, और इसके ज़िम्मेदार हुए, और:

"وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ"،[1]
"فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ"،[2]
"فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ"،[3]

[जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाया (बन्दों पर उतारा), जो लोग इसके मुत़ाबिक़ फ़ैसला न करें, वही काफ़िर,[1] ज़ालिम[2] और नाफ़रमान[3] हैं.]

.......के तमग़े पाए;

बर तक़्दीरे अव्वल:
क्या हुनूद राज़ी हो जाएंगे, कि मुल्क, मुशतरक हो, और अह़काम, तन्हा अह़कामे इस्लाम? हरगिज़ नहीं;
आख़िर तुम्हें, इनके साथ किसी न किसी क़ानूने ख़िलाफ़े इस्लाम पर राज़ी होना, और अपनी रज़ा व सई़ से, मुसलमानों को इसका पाबंद करना पड़ेगा; और क़ुरआने अ़ज़ीम से, वही तीन ख़ित़ाबों का तमग़ा मिलेगा. ये सब उस वक़्त है, जब झगड़ा न उठे;
और अगर फूट पड़ी — और तजर्बा कहता है कि ज़रूर पड़ेगी — उस वक़्त अगर हुनूद ह़स्बे आ़दत, आप बेकसूर बने, और सब ढली-बिगड़ी तुम्हारे सर डाली, तो ज़मीन में बैठे-बिठाए फ़साद उठाने, और हुक्मे इलाही:

"وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ"،[4]

[लोगों! अपने हाथों, हलाकत में न पड़ो.]
.....की मुख़ालफ़त करके, ख़ुद अपनी और लाखों ना-कर्दह मुसलमानों की जान व इ़ज़्ज़त, मअ़्रिज़े ख़त़रा में डालने का ज़िम्मेदार कौन होगा?
अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल सीधी समझ दे, आमीन;
वल्लाहु सुब्ह़ानहू व तआ़ला अअ़्लमु!"

फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द नं. 21, पेज नं. 180-181, मस्अला नं. 54, पब्लिकेशन: रज़ा फ़ाउंडेशन (लाहौर)

[1] क़ुरआन, 5:44

[2] क़ुरआन, 5:46

[3] क़ुरआन, 5:47

[4] क़ुरआन, 2:195

[n] हिन्दुओं

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
19/05/22 ई.

वालिदैन

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"بِرُّوْا آبَاءَكُمْ تَبَرَّكُمْ أَبْنَاؤُكُمْ"،

"अपने वालिदैन के साथ अच्छे से पेश आओ,
तो तुम्हारी औलाद तुम्हारे साथ अच्छे से पेश आएगी."

अल् मुअ़जमुल् औसत़, ह़दीस न. 1002, जिल्द न. 1, पेज न. 299, पब्लिकेशन: दारुल् ह़रमैन (क़ाहिरा)

20/06/21 ई.

THREE PRE-SOCRATIC ANCIENT GREEK PHILOSOPHERS

THREE PRE-SOCRATIC ANCIENT GREEK PHILOSOPHERS AND THEIR UNBELIEVABLE BELIEFS:

1. Father of Greek Philosophy 'Thales of Miletus', one of the Seven Sages of Greece (d. 548/545 BC), believed that the earth is flat like a disk.

Thales of Miletus, By: Allman George Johnston (1911), Encyclopædia Britannica, Vol. 26 (11th ed.), Cambridge University Press, Pg. 721.

Online Source:
https://en.wikisource.org/wiki/1911_Encyclop%C3%A6dia_Britannica/Thales_of_Miletus

2. Founder of astronomy & Father of Cosmology 'Anaximander, student of Thales of Miletus (d. 546 BC)' posited that the earth is static and cylindrical with a height one-third of its diameter.
"A column of stone", Aetius reports in De Fide (III:7:1), or "similar to a pillar-shaped stone", pseudo-Plutarch (III:10)

3. Student of Anaximander (who was student of Thales of Miletus), 'Anaximenes of Miletus (d. 526 BC)', as the last

of the three philosophers of the Milesian School, considered the first philosophers of the Western world, believed the Earth was flat like a disc and rode on air like a frisbee.

History of Greek Philosophy (Arabic), By: Yusuf Karam, Pg. 29, Published by Hindawi (Cairo)

Muḥammad Qāsim al-Qādirī
30/05/22 CE

औरतों के साथ अच्छा बरताव

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِلنِّسَاءِ"،

"तुम में सबसे बेहतर शख़्स वो है,
जो औरतों के साथ अच्छा बरताव करे."

अल्-मुस्तदरक अ़लस्-सह़ीह़ैन, ह़दीस नं. 7327, जिल्द नं. 4, पेज नं. 191, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), पहला एडीशन, 1411 हि. / 1990 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
21/06/22 ई.

क़ादियानी सरग़नों की मुख़्तसर दास्तां

'मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी', 1835 ई. में, 'क़ादियान' नाम के कस्बा में पैदा हुआ, जो पंजाब में उत्तरी पूर्व अमृतसर के जिला 'गुरदासपुर' में पड़ता है. इसने नुबुव्वत का दावा किया और तमाम नबियों को झुठलाया. ख़ास तौर से ह़ज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) की बहुत गुस्ताख़ियां कीं;

इसकी हालत भी बड़ी अजीब थी:

सबसे पहले इसने 1884 ई. में 'मुजद्-दिद' होने का दावा किया;

ह़दीस में आया है कि क़ियामत से पहले हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) दुनिया में तशरीफ लाएंगे. उन्हें 'मसीह़े मौऊ़द' कहा गया है ह़दीस में, तो इस ने 1891 ई. के क़रीब 'मसीह़े मौऊ़द' होने का दावा कर दिया;

फिर 1901 ई. में 'नुबुव्वत' का दावा किया, और कहने लगा कि मुझ पर अल्लाह की तरफ से 'वह़्य' आती है;

फिर इसे इस पर भी तसल्ली नहीं हुई, तो हिन्दुओं को ख़ुश करने के लिए 1904 ई. में दावा कर बैठा कि मैं कृष्ण का अवतार हूं, और इसपर एक ह़दीस भी गढ़ दी;

जब ये 'मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी' 1908 ई. में मरा, तो:

1. इसका पहला ख़लीफ़ा 'ह़कीम नूरुद्दीन (1841-1914 ई.) को चुना गया;

2. इसके बाद दूसरा ख़लीफ़ा 'मिर्ज़ा बशीरुद्दीन मह़मूद अह़मद (1889-1965 ई.)' हुआ;

3. इसके बाद तीसरा ख़लीफ़ा 'मिर्ज़ा नासिर अह़मद (1909-1982 ई.)' हुआ;

4. इसके बाद चौथा ख़लीफ़ा 'मिर्ज़ा ताहिर अह़मद (1928-2003 ई.)' हुआ;

5. इस वक़्त पांचवा ख़लीफ़ा 'मिर्ज़ा मसरूर अहमद (1950 - - - ई.)' है, जो इसकी गद्दी संभाले हुए है;

इन दज्जालों से ख़बरदार रहें. वर्ना ईमान के साथ-साथ जान व इज़्ज़त भी चली जाएगी.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
09/02/19 ई.

'फ़राग़'

क़ुरआन 55:31 —

"سَنَفۡرُغُ لَكُمۡ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ"،

"ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह!
अभी हम तुम्हारे हिसाब का क़स्द फ़रमाऐंगे."
[कंज़ुल् इ़र्फ़ान]

इस आयत में 'फ़राग़' लफ़्ज़ देखकर, अल्लाह (ﷻ) के लिए 'फ़ारिग़' लफ़्ज़ का इस्तेमाल करने की ग़लती न कर बैठें. क्यूंकि अल्लाह (ﷻ) के लिए 'फ़ारिग़' लफ़्ज़ का इस्तेमाल जायज़ नहीं है, चूंकि हमारा अल्लाह (ﷻ), 'फ़राग़त (free)' और 'मस़रूफ़िय्यत (busy)' की स़िफ़त से पाक है. बल्कि यहां 'फ़राग़त' का मजाज़ी मअ़ना 'क़स़्द/इरादा करना' मुराद है.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
13/07/22 ई.

'अप्रैल फ़ूल' एक धोखा है

'अप्रैल फ़ूल' एक धोखा है,
और धोखा देना मुनाफ़िक़ों की पहचान है;
अल्लाह (ﷻ) क़ुरआन 4:142 में इरशाद फ़रमाता है:

"اِنَّ الْمُنٰفِقِیْنَ یُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَ هُوَ خَادِعُهُمْ"ۚ

"यक़ीनन मुनाफ़िक़ लोग, (अपने ख़्याल में) अल्लाह को फ़रेब देना चाहते हैं;
और वही (अल्लाह) उन (मुनाफ़िक़ों) को ग़ाफ़िल करके मारेगा."
01/04/22 ई.

हमेशा ज़िन्दा रहने वाली औलाद

इमाम इब्ने अ़ब्दुल् बर्र मालिकी (d. 463 हि.) लिखते हैं:

"عِلْمُ الرَّجُلِ، وَلَدُهُ الْمُخَلَّد"،

"इंसान का इ़ल्म, उसकी हमेशा ज़िन्दा रहने वाली औलाद होता है."

जामिउ़ बयानिल् इ़ल्म व फ़ज़्लिही, बाब नं. 2, पेज नं. 26, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), पहला एडीशन, 1436 हि./2015 ई.

16/01/22 ई.

ह़ुरूबे रिद्-दह

इमाम ख़त़ीब तिबरीज़ी (d. 741 हि.) ने 'इमाम अबुल् ह़सन रज़ीन इब्ने मुआ़वियह अ़ब्दरी (d. 535 हि.)' के हवाले से लिखा, कि सय्यिदुना अबू बक्र स़िद्दीक़ (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने 'ह़ुरूबे रिद्-दह (apostasy wars)' के दिनों में इर्शाद फ़रमाया:

"وَتَمَّ الدِّينُ، أَيَنْقُصُ وَأَنا حَيٌّ"،

"और, दीन मुकम्मल हो चुका;
मेरे ज़िन्दा रहते हुए, दीन पर कोई आंच नहीं आएगी."

मिश्कातुल् मस़ाबीह, ह़दीस नं. 6034, जिल्द नं. 3, पेज नं. 1700, पब्लिकेशन: अल् मक्-तबुल् इस्लामिय्य (बेरूत), तीसरा एडीशन, 1985 ई.

पुलिस की सफ्फाकी व वह़शीपन

इमाम मुस्लिम (d. 261 हि.) ने अपनी 'स़ह़ीह़ मुस्लिम' में रिवायत की, कि:

1. आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"صِنْفَانِ مِنْ أَهْلِ النَّارِ لَمْ أَرَهُمَا، قَوْمٌ مَعَهُمْ سِيَاطٌ كَأَذْنَابِ الْبَقَرِ يَضْرِبُونَ بِهَا النَّاسَ، وَنِسَاءٌ كَاسِيَاتٌ عَارِيَاتٌ مُمِيلَاتٌ، مَائِلَاتٌ رُءُوسُهُنَّ كَأَسْنِمَةِ الْبُخْتِ الْمَائِلَةِ، لَا يَدْخُلْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يَجِدْنَ رِيحَهَا، وَإِنَّ رِيحَهَا لَيُوجَدُ مِنْ مَسِيرَةِ كَذَا وَكَذَا"،

"दो गिरोह, जहन्नमियों में से हैं, जिन्हें मैंने नहीं देखा: एक वो गिरोह, जिसके साथ गाय की पूँछों की तरह कोड़े होंगे, जिनसे वो लोगों को मारेंगे;
और दूसरा गिरोह उन औरतों का, जो कपड़े पहनने के बावजूद भी नंगी होंगी, ख़ुद भी बुराई करने वाली और दूसरों को बुराई की तरफ़ खींचने वाली होंगी. उनके सर, ऊंट के कोहान की तरह होंगे. वो जन्नत में नहीं जाएंगी, और न ही उसकी खुशबू सूँघेंगी, अगरचे जन्नत की खुशबू इतनी इतनी दूरी से सूँघ की जाएगी."

सह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस नं. 2128, ज़िल्द नं. 4, पेज नं. 2192, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत)

2. ऐसे ही 'स़ह़ीह़ मुस्लिम' की एक रिवायत में मज़ीद फ़रमाया गया:

"يُوشِكُ، إِنْ طَالَتْ بِكَ مُدَّةٌ، أَنْ تَرَى قَوْمًا فِي أَيْدِيهِمْ مِثْلُ أَذْنَابِ الْبَقَرِ، يَغْدُونَ فِي غَضَبِ اللهِ، وَيَرُوحُونَ فِي سَخَطِ اللهِ"،

"अगर तुमने लम्बा ज़माना पाया, तो क़रीब है कि तुम एक ऐसे गिरोह को देखोगे जिनके हाथों में गाय की पूँछों की तरह (कोड़े/डंडे) होंगे. वो गिरोह, सुबह अल्लाह के ग़ज़ब में, और शाम अल्लाह के क़हर में गुज़ारेगा."

सह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस नं. 2857, ज़िल्द नं. 4, पेज नं. 2193, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत)

3. इमाम त़बरानी (d. 360 हि.) ने 'अल्-मुअ़जमुल् कबीर' में रिवायत की, कि आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"سَيَكُونُ فِي آخِرِ الزَّمَانِ شَرَطَةٌ، يَغْدُونَ فِي غَضِبِ اللّٰهِ، وَيَرُوحُونَ فِي سَخَطِ اللّٰهِ، فَإِيَّاكَ أَنْ تَكُونَ مِنْ بِطَانَتِهِمْ"،

"आख़िरी ज़माने में सिपाही होंगे, जो, सुबह अल्लाह के ग़ज़ब में, और शाम अल्लाह के क़हर में गुज़ारेंगे. तो तुम उनके क़रीबी बनने से बचो."

अल्-मुअ़जमुल् कबीर, ह़दीस नं. 7616, ज़िल्द नं. 8, पेज नं. 136, पब्लिकेशन: मक्-तबतुब्नि तैमिय्यह (काहिरा), दूसरा एडीशन

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
19/02/22 ई.

ख़ामोश इ़बादतगुज़ार का अंजाम

लोगों को 'भलाई का हुक्म देने' और 'बुराई से रोकने' जैसी अ़ज़ीम ज़िम्मेदारी को नज़रअंदाज करके, सिर्फ़ अपनी पर्सनल इस्लाह़ में लगे रहना, यक़ीनन बहुत बड़े ख़सारे का सबब है. ऐसा करने वाले 'नेक' लोग भी अल्लाह (ﷻ) के अ़ज़ाब से हरगिज़ नहीं बच सकते;
ह़ज़रत जाबिर (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) से रिवायत है कि आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"أَوْحَى اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ إِلَى جِبْرَئِيلَ عَلَيْهِ السَّلَامُ أَنِ اقْلِبْ مَدِينَةَ كَذَا وَكَذَا بِأَهْلِهَا، قَالَ: 'يَا رَبِّ! إِنَّ فِيهِمْ عَبْدَكَ فُلَانٌ، لَمْ يَعْصِكَ طَرْفَةَ عَيْنٍ'، قَالَ: فَقَالَ:

'اقْلِبْهَا عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ، فَإِنَّ وَجْهَهُ لَمْ يَتَمَعَّرْ فِيَّ سَاعَةً قَطُّ'"،

"अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने हज़रत जिब्रील (अ़लैहिस्सलाम) को हुक्म दिया, कि: 'फुलां शहर को, उसके शहरियों के साथ पलट डालो.'
(तो) हज़रत जिब्रील (अ़लैहिस्सलाम) ने अ़र्ज़ की: 'ऐ अल्लाह! उन शहरियों के दरमियान तेरा एक ऐसा भी बंदा मौजूद है, जिसने पलक झपकने के बराबर (वक़्त में) भी गुनाह नहीं किया.'

तो अल्लाह ने फ़रमाया: 'उसी शख़्स पर (ज़मीन को) पहले उलट, फिर (उसके बाद) शहरियों पर उलटना. चूंकि (शहर में लोग गुनाह करते रहे, लेकिन ये अपनी ज़ाती इस्लाह़ व फलाह़ में लगा रहा, मगर) इसका चेहरा (उन शहरियों की बेह़याइयों को देखने के बाद भी) मेरी ग़ैरत के लिए भी (ग़ुस्से में आकर) कभी सुर्ख़ नहीं हुआ'."

शुअ़बुल् ईमान लिल् बैहक़ी, जिल्द: 10, सफ़ह़ा: 74, ह़दीस न. 7189, पब्लिकेशन: मक्तबतुर् रुश्द (रियाद़), फ़र्स्ट एडीशन, 1423 हि. / 2003 ई.

ये रिवायत अहले इ़ल्मो अ़मल हज़रात, बल्कि तमाम ख़वास़ के लिए लम्ह़-ए-फिक्रिया है...!

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
22/04/2020 ई.

AN INSTRUCTION FOR THE STUDENTS OF DĪN:

"When you study ʿilm-ur-rijāl (biographical evaluation/analysis), and ʿilm-ul-jarḥ wat-taʿdīl

(science of discrediting and accrediting), never loose the rope of respect for our elders. Bcuz you will find during study, what you never expected to be....!"

19/01/22 CE

एक्स्ट्रा सवारी

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"مَنْ كَانَ مَعَهُ فَضْلُ ظَهْرٍ، فَلْيَعُدْ بِهِ عَلَى مَنْ لَا ظَهْرَ لَهُ، وَمَنْ كَانَ لَهُ فَضْلٌ مِنْ زَادٍ، فَلْيَعُدْ بِهِ عَلَى مَنْ لَا زَادَ لَهُ"،

"जिसके पास, सवार होने के लिए एक्स्ट्रा सवारी हो, तो वो, उस शख़्स को, ये सवारी दे दे, जिस के पास सवारी के लिए कुछ न हो;
और जिसके पास सफ़र की ज़रूरत का एक्स्ट्रा सामान हो, तो वो, उस (एक्स्ट्रा सामान) को, उस शख़्स को दे दे, जिसके पास कोई सामान न हो."

स़ह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस नं. 1728, किताब नं. 31, बाब नं. 4, जिल्द नं. 3, पेज नं. 1354, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
24/12/21 ई.

नया साल मुबारक

नए साल की मुबारकबाद देना जायज़ है,
मगर इससे भी बचना बहुत बेहतर है;
और सिर्फ़ मुबारकबाद ही जायज़ है,

इसके अलावा नए साल के नाम पर पार्टी वग़ैरह करना जायज़ नहीं है, क्यूंकि इनमें गुनाह और फ़िज़ूलख़र्चियां होती हैं. कोशिश कीजिए कि नए साल की शुरुआत किसी नेक काम से हो;

जो पैसा आप न्यू ईयर पार्टी के नाम पर फालतू में उड़ा रहे हैं, बेहतर होगा कि साल के शुरू होते ही उसे किसी ज़रूरतमंद को दे दें, ताकि उसकी दुआओं से आपका नया साल ख़ैर व बरकत से गुज़रे;
सर्दी बहुत है,
हज़ारों मुसलमान अब भी ऐसे मिल जाएंगे, जिन्हें रज़ाई, कंबल, स्वेटर वग़ैरह की अब भी ज़रूरत होगी;

क़ुरआन 17:26-27 —

"وَ اٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْۤا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا"،

"और रिश्तेदारों, मिस्कीनों व मुसाफिरों को उनका ह़क़ दो; और फ़िज़ूलख़र्ची मत करो. यक़ीनन फ़िज़ूलख़र्ची करने वाले लोग, शैतानों के भाई हैं; और शैतान, अपने रब का बहुत नाशुक्रा है."
क़ुरआन 7:31 —

"وَلَا تُسْرِفُوْا اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ"،

"और फालतू ख़र्च मत करो;
यक़ीनन, फालतू ख़र्च करने वालों को, अल्लाह पसंद नहीं करता."

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
31/12/21 ई.

हाँ, ज़मीन गोल (spherical) ही है

अल्ह़म्दुलिल्लाह,
आज एक बड़ी परेशानी दूर हो गयी, जो एक लंबे वक़्त से ख़लजान बनी हुई थी;
व लिल्लाहिल् ह़म्द;

वो परेशानी ये थी कि पिछले लॉकडाउन में कई अइम्मा-ए-अहले सुन्नत की इबारतें गुज़रीं, जिनमें इस बात की स़राह़त मिली कि ज़मीन गोल (spherical) नहीं, बल्कि चपटी (flat) है, जैसे:

इमाम सअ़ालबी, इमाम अबू ह़य्यान, इमाम इब्ने अ़तिय्यह, इमाम ख़ाज़िन, इमाम क़ुर्तबी, इमाम मावर्दी (अ़लैहिमुर्रह़मह), और तफ़्सीरे जलालैन में, और क़ाज़ी शौकानी की 'फ़त्ह़ुल् क़दीर' में भी यही पाया;

इस टॉपिक पर ख़ूब तह़क़ीक़ की, तो यही पाया कि ज़मीन गोल (spherical) ही है, जैसा कि इमाम राज़ी ने 'मफ़ातीह़ुल् ग़ैब (तफ़्सीरे कबीर)' में साबित किया. मगर एक ख्वाहिश जो बाक़ी रह गयी थी, वो ये थी कि:

"काश! अ़ाला ह़ज़रत की भी किसी किताब में इसकी स़राह़त मिल जाती, फिर दिल पूरी तरह मुत़्मइन हो जाता."

मगर मैं कोई भी स़राह़त न पा सका, सिर्फ़ इशारे ही मिले, जैसे कि इमाम ने जगह-जगह: 'कुरए अर्ज़', 'कुरए ज़मीन', जैसे अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए हैं.

इससे समझ में आता है कि इमाम के नज़दीक भी ज़मीन 'कुरवी (spherical)' ही है, न कि 'सत़ह़ी (flat)'. अगर इमाम के नज़दीक ज़मीन 'सत़ह़ी (flat)' होती, तो 'कुरए ज़मीन (sphere of earth)' की बजाय 'सत़ह़े ज़मीन (surface of earth)' इस्तेमाल करते;

मगर आज मुकम्मल स़राह़त के साथ मेरे इमाम की इबारत मिल गयी, अपनी किताब 'क़वारिउ़ल् क़ह्हार अ़लल् मुजस्सिमतिल् फ़ुज्जार (1318 हि.)' की ज़र्ब नं. 94 में लिखते हैं:

"और, इर्-स़ादे स़ह़ीह़ा मुतवातिरह ने साबित किया है कि आसमान व ज़मीन, दोनों गोल, बशक्ले कुरह (spherical) हैं."

मश्मूलह फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द नं. 29, पेज नं. 162, पब्लिकेशन: रज़ा फाउंडेशन (लाहौर)

अल्ह़म्दुलिल्लाह, अल्ह़म्दुलिल्लाह, अल्ह़म्दुलिल्लाह!
फ़ैज़े रज़ा, जारी रहेगा,
इन्-शा अल्लाह;

एक बात याद रखें:
सही लफ़्ज़ 'कुरह (کُرَہ/sphere)' है, न कि कुर्रह;
अरबी में 'الكُرَةُ' है, बिना तश्दीद के, जिसका मतलब है:

'كلُّ جسم مستدير'،

यानी हर गोल पिंड (जिस्म) को 'कुरह' कहते हैं;

इसी तरह 'कुरवी (کُرَوی)' कहा जाए, न कि 'कुर्वी'.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
06/01/22 ई.

सबसे पहले ग़ज़्वात

आक़ा (ﷺ) सबसे पहले जिन ग़ज़्वात (जंगों) के लिए निकले, वो ये तीन थे:

1. ग़ज़्व-ए-अब्वाअ (Patrol of Abwāʾ/Waddan): ये स़फ़र के महीने में, 2 हि. में हुआ. जिसमें 'बनू द़म्-रह' के लोगों के साथ 'अ़मन मुआ़हदह (Peace treaty)' हुआ, और किसी तरह की कोई मारकाट नहीं हुई;

2. ग़ज़्व-ए-बुवात़ (Patrol of Buwāṭ): ये रबीउ़ल् अव्वल के महीने में, 2 हि. में हुआ. इसमें भी किसी तरह का कोई ख़ून नहीं बहा;

3. ग़ज़्व-ए-उ़शैरह/उ़सैरह (Patrol of ʿUshairah): ये जुमादल् ऊला के महीने में, 2 हि. में हुआ. जिसमें 'बनू मुद्लिज' के लोगों के साथ 'अ़मन मुआ़हदह (Peace treaty)' हुआ, और किसी तरह की ख़ूँरेज़ी नहीं हुई.

इन तीनों में किसी तरह की भी कोई मारकाट नहीं हुई, इसलिए इंग्लिश में इन्हें 'Battle' या 'War' न कहकर, 'Patrol' से तअ़बीर किया जाता है.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
09/01/22 ई.

हमारा सरमाया लुट गया

'बैतुल् ह़िक्मत (House of wisdom)', हमारी उस आ़लमी लाइब्रेरी का नाम है, जो ख़िलाफ़ते अ़ब्बासिय्यह के दौर में बग़दाद शरीफ़ में थी. जिसे 'Grand Library of Baghdad' के नाम से भी याद किया जाता है. जिसे मंगोल व तातार कुफ़्फ़ार ने अपने 1258 ई. के ह़मले में जला दिया था. जब भी इसके बारे में पढ़ता हूं, बहुत रोता हूं.

8वीं सदी ईस्वी में 'हारुन रशीद' ने, इस बड़ी हैअत पर, इसकी बुनियाद रखी, और 'मामून' के दौर में ये पूरी दुनिया के हर मज़हब और फ़िक्र के मुफ़क्किरीन, वैज्ञानिकों, मनाति़क़ह और फ़लासिफ़ह के लिए मरकज़ी लायब्रेरी बन गयी थी. हर माहिर, इसकी तरफ रुजूअ़ करता था;

इसमें लाखों किताबें थीं. इमामी शीआ़ का बहुत बड़ा आ़लिम, शैख़ुत् ता़इफ़ह, अबू जअ़फ़र, ख़्वाजा नस़ीरुद्-दीन तू़सी, जिसे (ग़ैरों के मुताबिक़) इस्लामी दुनिया का बहुत बड़ा वैज्ञानिक माना जाता है, इसे हमले की भनक लगते ही, इसने लायब्रेरी पर हमले से पहले ही, चार लाख मख़्तूतों (manuscripts) को बचा लिया था, और मराग़ह की आ ॅब्ज़रबेटरी (Maragheh observatory) में मुन्तक़िल कर दिया था;
मुअर्रिख़ीन ने अपने लरज़ते व कांपते कलमों से लिखा है कि:
"जब इस लायब्रेरी की किताबों को जलाकर, दजला नदी (Tigris River) में फैंक दिया गया, तो नदी का पानी किताबों की सियाही से काला पड़ गया था."

15/01/22 ई.

अपना जुर्म दूसरे के सर मत रखो

गुनहगार का गुनाह उसके अपने ही हिस्से में है, न कि किसी दूसरे के. गुनहगार अपने गुनाह से बचने के लिए किसी दूसरे पर तुहमत न लगाए, चूंकि ऐसा करने पर उसके हिस्से में दोगुना गुनाह आ जाएगा. अल्लाह तआ़ला क़ुरआन 4:111-112 में इरशाद फ़रमाता है:

"وَمَن يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا وَمَن يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا".

"और जो गुनाह कमाए, तो उसकी कमाई उसी की जान पर पड़े, और अल्लाह इ़ल्म व ह़िकमत वाला है; और जो कोई ख़त़ा या गुनाह कमाए, फिर उसे किसी बेगुनाह पर थोप दे, उसने ज़रूर बुहतान और खुला गुनाह उठाया." [कंज़ुल् ईमान]

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
11/11/21 ई.

'ऐ़ने जालूत'

दुनिया की बड़ी-बड़ी त़ाक़तों को,
जिस ज़ालिम 'मंगोल हुकूमत' ने मुँह की खिलाई,
उस काफ़िर 'मंगोल हुकूमत' को,
जंगे 'ऐ़ने जालूत (1260 ई.)' में धूल चटाने वाली 'मम्लूक सल्त़नत' के तीसरे सुल्त़ान,

मलिके मुज़फ़्फ़र 'सैफुद्दीन क़ुत़ुज़ (d. 1260 ई.)',
और इनके कमांडर (जो चौथे सुल्त़ान बने, यानी),
सुल्त़ान मलिके ज़ाहिर,
अबुल् फ़ुतूह़ 'रुक्नुद्दीन बैबर्स बुन्दुक़दारी (d. 1277 ई.)' की क़ब्रों पर,
अल्लाह की ह़ज़ारहा रह़मतें नाज़िल हों,
जिन्होंने 'बग़दादे मुअ़ल्ला' की तख़रीब (1258 ई.) का ज़बर्दस्त इन्तिक़ाम लिया;

आमीन
बिजाहि ह़बीबी (ﷺ)

जंगे 'ऐ़ने जालूत' ही को,
तारीख़ के औराक़ में,
'the turning point in the history'
लिखा जाता है...!

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
24/11/21 ई.

जितनी अक़्ल उतना इ़ल्म

इमामुल् हुदा फ़क़ीह अबुल् लैस समरक़न्दी ह़नफ़ी (d. 373/393 हि.) अपनी तफ़्सीर में क़ुरआन 2:1 के तह़्त लिखते हैं:

"كل إنسان يدرك العلم بمقدار عقله"،

"हर शख़्स की, जितनी अक़्ल होती है, वो उतना ही इ़ल्म हासिल कर पाता है."

बह़रुल् उ़लूम (तफ़्सीरे समरक़न्दी), जिल्द नं. 1, पेज नं.22, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1413 हि./1993 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
26/11/21 ई.

THE ONLY CREATOR: ALLĀH (ﷻ)

Every creation has a maker behind its existence. When you see anything good, you start to think of its maker or producer; i.e. tasty food leads us to the cook who cooked it; costly garment leads us to its maker who made it; skyscraper buildings and monumental castles lead us to the masons, architectures or kings who built them, or contributed to their constructions etc.

Similarly, whole universe is overflowing with beautiful and enchanting things, as: enormous mountains, splendid waterfalls, majestic oceans, marvellous gardens, attractive lakes & ponds, twinkling stars, heating sun, polite moon etc. This diversity of creation leads us to its creator, who created this giant world by His supreme power & divinity.

Let me ask now: "Who is that Creator?"
Or: "It's handiwork of lifeless statues and man-made idols?"
Or: "......done by any man or jinn?"
Or: ".....by any fictional deity, having no archaeological proof for his/her existence?"

The only answer is: He is Allāh (ﷻ) who created this universe. He created varieties of wonderfully grandeur things. He created firm mountain ranges, thundering waterfalls, giant forests, as also the nimble deer, colourful birds and exquisite flowers.

That's why Qur'ān 35:3 clearly says:

"هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ"۔

"Is there a creator other than Allāh?"
[Kanzul Īmān]

Muḥammad Qāsim ul Qādirī
23/11/21 CE

لفظِ 'ibid' کا مطلب

انگریزی کی کتابوں میں جب کسی بات کو بیان کیا جاتا ہے، تو حوالے کے طور پر اس طرح لکھ دیا جاتا ہے:

"ibid, Pg. 90", "ibid, Pg. 50", etc....

تو اس کا مطلب یہ ہوتا ہے کہ:

"یہ بات مذکورہ حوالہ ہی میں ذکر ہے"،

یہ لفظِ 'ibid' اردو میں 'حوالہ مندرجہ بالا'، اور عربی میں 'ایضًا' کے قائم مقام ہے؛

یہ لاطینی (Latin) زبان کے لفظِ 'ibīdem' کا مخفف ہے، جس کا مطلب ہے:

"in the same place",

اس کا تلفظ دونوں طرح ہوتا ہے:

اِبِڈَیم،

اِبایڈَیم،

از: محمد قاسم القادري،

11 نومبر، 2021ء

'सूद'

ह़ज़रत शारिह़ बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल् ह़क़ अम्जदी (अ़लैहिर्रह़मह) ने तह़रीर फ़रमाया:

"....दुनिया में सरमायादारों[1] ने, ग़रीबों का ख़ून चूसने के लिए, जो बहुत से त़रीक़े ईजाद[2] किए हैं, उन में सब से ख़त़रनाक त़रीक़ा 'सूद'[3] है. इसी वजह से इस्लाम ने, 'सूद' के इन्सिदाद[4] की भरपूर कोशिश फ़रमाई है....!"

मुक़द्-दमह (शेयर बाज़ार के मसाइल, अज़: मुफ़्ती निज़ामुद्-दीन मिस्बाह़ी), पेज नं. 26, पब्लिकेशन: मक्-तबह बुरहाने मिल्लत, मुबारकपुर [आज़मगढ़ (यूपी)]

[1] अमीरों

[2] पैदा

[3] ब्याज

[4] रुकावट

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
30/10/21 ई.

शिर्क से तौह़ीद की तरफ़

क़ुरआन 16:75 ने मअ़बूदे ह़क़, क़ादिरे मुत़्लक़ 'अल्लाह (ﷻ)', और बेजान, बेबस, झूठे ख़ुदाओं के दरमियान किस क़द्र ज़बर्दस्त व अ़क़्ली दलील (rational/logical proof) के ज़रिए फ़र्क़ बयान किया है;

आयत में दो शख़्सों की मिसाल बयान की गयी है:
1. वो शख़्स जो आज़ाद है, और अमीर भी है. बहुत सी चीज़ों का मालिक है, जहां चाहे अपनी मर्ज़ी से ख़र्च करता है;
2. वो शख़्स जो ख़ुद, किसी दूसरे का ग़ुलाम है, किसी चीज़ का मालिक नहीं;
अब आयत देखिए:

"ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبۡدًا مَّمۡلُوۡكًا لَّا يَقۡدِرُ عَلٰى شَىۡءٍ وَّمَنۡ رَّزَقۡنٰهُ مِنَّا رِزۡقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنۡفِقُ مِنۡهُ سِرًّا وَّجَهۡرًا ؕ هَلۡ يَسۡتَوٗنَ ؕ اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ"...،

"अल्लाह ने मिसाल बयान की:
एक ग़ुलाम बन्दे की, जो किसी चीज़ पर क़ादिर नहीं; और एक उस बन्दे

की, जिसे हमने अपनी तरफ़ से ख़ूब अच्छा रिज़्क़ दिया. तो वो उसमें से छुपकर और एलानिया तौर पर ख़र्च करता है;
क्या ये दोनों शख़्स, बराबर हो सकते है?
(बल्कि) तमाम ख़ूबी, अल्लाह ही के लिए हैं...!"

अब इसका मतलब आसानी से समझ सकते हैं:

एक सच्चा ख़ुदा 'अल्लाह (ﷻ)' है, तो दूसरे झूठे ख़ुदा हैं;
सच्चे ख़ुदा 'अल्लाह (ﷻ)' की ये शान व क़ुदरत है, कि पूरी कायनात को उसने पैदा किया, जो चाहता है करता है, मारता है, जिलाता है, खिलाता है, पिलाता है, सब कुछ अपनी शान के मुताबिक़ करता है;
तो दूसरी तरफ़ झूठे ख़ुदाओं का ये हाल है कि बेजान हैं, बेबस हैं, न बोल सकते, न सुन सकते, न ले सकते, न दे सकते, न मार सकते, न जिला सकते;

फिर ये बेजान झूठे ख़ुदा, उस सच्चे 'अल्लाह (ﷻ)' के बराबर कैसे हो सकते हैं?

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
03/11/21 ई.

ईसाईयत

यहूदियों, ईसाइयों और मुल्ह़िदों को अपने क़लम और ज़ुबां से धूल चटाने वाले आ़लिमे दीन 'डॉ. शैख़ यासीन (मिस्र)' ने अपनी किताब में लिखा है कि ईसाई हमेशा उन दुनियादार पढ़े लिखे मुसलमानों को अपना शिकार बनाते हैं, जो दीन से दूर होते हैं;

उसके बाद लिखते हैं:

"كأن التنصير كالبعوض لا يعيش إلا فوق البِرَك والمستنقعات الآسنة"،

"गोया कि ईसाईयत उन मच्छरों की तरह है, जो सिर्फ़ तालाबों के पानी के ऊपर, और बदबूदार (पानी से भरे हुए) गड्ढों के ऊपर ही रह(ना पसंद कर)ते हैं."

रुदूदु उ़लमाइल् मुस्लिमीन अ़ला शुबुहातिल् मुल्ह़िदीन वल् मुस्तशरिक़ीन, मुक़द्-दमतुल् मुअल्लिफ़, पेज नं. 10, पब्लिकेशन: मक्-तबतुल् ईमान (अ़जूज़ह), दूसरा एडीशन, 1430 हि. / 2009 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
08/11/21 ई.

इस्लाम में मुँह की सफ़ाई की अहमियत

इस्लाम में मुँह की सफ़ाई की अहमियत ये है,
कि इमामे अहले सुन्नत (अ़लैहिर्रह़मह) ने तह़रीर फ़रमाया:
"मिस्वाक, वुज़ू की सुन्नते क़ब्लिय्यह (Pre-wuzu Sunnah) है;
अल्बत्ता,
सुन्नते मुअक्कदह (emphasized sunnah) उस वक़्त है,
जबकि मुँह में बदबू हो."

फ़तावा रज़विय्यह, 1:623

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
25/10/21 ई.

ख़त़ा की दो क़िस्में हैं

ख़त़ा की दो क़िस्में हैं:

1. ख़त़ा ए इ़नादी
2. ख़त़ा ए इज्तिहादी

फिर ख़त़ा ए इज्तिहादी की भी दो क़िस्में हैं:

[1] मुक़र्रर

[2] मुन्कर

बहारे शरीअ़त, हिस्सा न. 1, जिल्द न. 1, पेज न. 256, इमामत का बयान, दावते इस्लामी एडीशन

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
5/09/21 ई.

बेशुमार गवाही देता हूं कि क़ादियानी झूठा है

आक़ा (ﷺ) के बाद अब कोई भी नया नबी पैदा नहीं हो सकता. हम ला-तादाद क़समें खाते हैं, करोड़ों बार गवाहियां देते हैं कि 'मिर्ज़ा ग़ुलाम अह़मद क़ादियानी' मुर्तद्-द, झूठा, मक्कार, कज़्ज़ाब व दज्जाल है...!

आक़ा (ﷺ) के ज़माने में जब 'मुसैलमा' ने नबी होने का दावा किया, तो आक़ा (ﷺ) ने ख़ुद उसके बारे में इरशाद फ़रमाया:

..."فَإِنِّي أَشْهَدُ عَدَدَ تُرَابِ الدُّنْيَا أَنَّ مُسَيْلِمَةَ كَذَّابٌ"!...

"...मैं (पूरी) दुनिया की मिट्टी (के ज़र्रों के बराबर) गवाही देता हूं कि 'मुसैलमा' बहुत बड़ा झूठा है...!"

अल्-मुअ़जमुल् कबीर (लित् त़बरानी), ह़दीस न. 412, जिल्द: 22, सफ़ा न. 153, पब्लिकेशन: मकतबा इब्ने तैमिय्यह (क़ाहिरा), दूसरा एडीशन, 1415 हि. / 1994 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
07/09/21 ई.

नेक बन्दों की बरकतें

इमाम इब्ने ह़ाज्ज फ़ासी मालिकी (d. 737 हि.) ने अपनी मशहूर किताब 'अल्-मद्ख़ल' में, इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह इब्ने नुअ़मान (अ़लैहिर्रह़मह) की किताब 'सफ़ीनतुन् नजाअ लि अह्-लिल् इल्तिजा' के हवाले से तह़रीर फ़रमाया:

"فَإِنَّ بَرَكَةَ الصَّالِحِينَ جَارِيَةٌ بَعْدَ مَمَاتِهِمْ كَمَا كَانَتْ فِي حَيَاتِهِمْ"،

"बेशक, नेक बन्दों की बरकतें उनके इंतिक़ाल के बाद भी जारी रहती हैं, जिस तरह उनकी ज़िंदगी में होती थी."

अल्-मद्ख़ल, जिल्द न. 1, पेज न. 255, पब्लिकेशन: दारुत् तुरास (क़ाहिरा)

वक़्त पर शादी कर लेना बहुत ज़रूरी है,

प्यारे आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"مِسْكِينٌ مِسْكِينٌ رَجُلٌ لَيْسَتْ لَهُ امْرَأَةٌ"، قِيلَ: "يَا رَسُولَ اللهِ! وَإِنْ كَانَ غَنِيًّا ذَا مَالٍ؟" قَالَ: "وَإِنْ كَانَ غَنِيًّا مِنَ الْمَالِ"، قَالَ: "وَمِسْكِينَةٌ مِسْكِينَةٌ امْرَأَةٌ

لَيْسَ لَهَا زَوْجٌ"، قِيلَ: "يَا رَسُولَ اللهِ! وَإِنْ كَانَتْ غَنِيَّةً أَوْ مُكْثِرَةً مِنَ الْمَالِ؟" قَالَ: "وَإِنْ كَانَتْ".

"'मिस्कीन है, मिस्कीन है वो मर्द, जिसकी बीवी न हो.'
अर्ज़ की गयी: 'ऐ अल्लाह के रसूल! अगरचे (वो मर्द) माल वाला अमीर (rich) हो?'
फ़रमाया: 'हाँ, अगरचे माल वाला अमीर (rich) हो.'

(फिर आक़ा ﷺ ने) फ़रमाया: 'मिस्कीना है, मिस्कीना है वो औरत, जिसका शौहर न हो.'
अर्ज़ की गयी: 'ऐ अल्लाह के रसूल! चाहें वो (औरत) अमीर (rich) हो, या ज़्यादा माल वाली हो?'
फ़रमाया: 'हाँ (चाहें माल वाली) हो'."

शुअ़बुल् ईमान (लिल् बैहक़िय्यि, d. 458 हि.), ह़दीस न. 5097, जिल्द न. 7, सफ़ा न. 338, पब्लिकेशन: मक्-तबतुर् रुश्द (रियाद), फ़र्स्ट एडीशन, 1423 हि. / 2003 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
21/09/21 ई.

लो जी कर लो बात

मौलवी क़ासिम नानौतवी (फाउंडर ऑफ़ दारुल् उ़लूम देवबंद) ने अपनी किताब: 'तह़ज़ीरुन् नास' में आक़ा (ﷺ) की नुबुव्वत को 'क़दीम (Pre-eternal)' और दूसरे नबियों की नुबुव्वत को 'ह़ादिस (accident)' लिखा;

असली इ़बारत देखें:
"....क्यूंकि फ़र्क़े क़िदमे नुबुव्वत,
और हुदूसे नुबुव्वत,
बावजूदे ईजादे नौई़,
ख़ूब, जब ही चस्पां हो सकता है.....!"

तह़ज़ीरुन् नास, पेज नं. 10, फ़ैसल पब्लिकेशन्ज़ (देवबंद)

इस इ़बारत पर गिरिफ़्त फ़रमाते हुए,
स़दरुश् शरीअ़ह क़ाज़ी अम्जद अ़ली आ़ज़मी (अ़लैहिर्रह़मह) लिखते हैं:
"क्या ज़ातो स़िफ़ात के सिवा मुसलमानों के नज़दीक कोई और चीज़ भी 'क़दीम' है?
'नुबुव्वत' स़िफ़त है,
और स़िफ़त का वुजूद, बे-मौस़ूफ़, मुह़ाल;
जब हुज़ूरे अक़्दस (ﷺ) की नुबुव्वत 'क़दीम', 'ग़ैरे ह़ादिस' हुई, तो ज़रूर नबी (ﷺ) भी 'ह़ादिस' न हुए, बल्कि 'अज़ली' ठहरे;
और जो, अल्लाह, व स़िफ़ाते इलाहिय्यह के सिवा किसी को 'क़दीम' माने, ब-इज्माए़ मुस्लिमीन काफ़िर है."

बहारे शरीअ़त, हिस्सा नं. 1, जिल्द नं. 1, पेज नं. 231, पब्लिकेशन: मक्-तबतुल् मदीना (दिल्ली), पहला एडीशन, 1436 हि. / 2015 ई.

इस्लामी अ़क़ीदा ये है कि अल्लाह की ज़ात, और उसकी स़िफ़ात के अलावा, कुछ भी 'क़दीम' नहीं, बल्कि सब 'ह़ादिस' है;
नबी (ﷺ) के नाम पर 'ग़ुलू (exaggeration)' ख़ुद कर डाला, और इल्ज़ाम हम सुन्नियों के सर!

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
1/09/21 ई.

इमाम फ़ख़रुद्-दीन राज़ी (d. 606 हि.) ने क़ुरआन 2:109 की तफ़्सीर में लिखा है कि:

"فَإِنَّهُ أَوَّلُ ذَنْبٍ عَصَى اللَّهَ بِهِ إِبْلِيسُ"،

"घमंड, सबसे पहला ऐसा गुनाह है जिसके ज़रिए शैत़ान इब्लीस ने अल्लाह की नाफ़रमानी की."

मफ़ातीहुल् ग़ैब, जिल्द न. 3, पेज न. 645, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत), तीसरा एडीशन, 1420 हि.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
03/09/21 ई.

बहुत अहम बात

"हर नबी की तकज़ीब[1], मुस्तक़िल्लन्[2] कुफ़्र है.......बल्कि किसी एक नबी की तकज़ीब[1], सब की तकज़ीब[1] है."

बहारे शरीअ़त, हिस्सा नं. 1, जिल्द नं. 1, पेज नं. 190, दावते इस्लामी एडीशन

[1] झुठलाना
[2] रेगुलरली

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
03/09/21 ई.

Sir Syed Ahmad Khan and invalidity of earth's motion

Sir Syed Ahmad Khan was on the view of Āla Hazrat Imām Aḥmad Riďa Khan al-Māturīdī al-Ḥanafī al-Qādirī al-Barkātī Barelvī (raḥimahullahu al-Qawiyyu, d. 1921 CE/1340 AH) regarding invalidity of earth's motion!

Sir Syed also wrote a book in refuting earth's motion, entitled: "Qaul e mateen dar ibtal e harkate zameen". Now, Ignorants alumni of AMU & blind followers of Sir Syed, who criticize Āla Hazrat Imām Aḥmad Riďa Khan, should call their Abba Sir Syed also ignorant??

Here, I m giving you his book's pdf link:

https://archive.org/details/SirSyedAhmadKhanQaulIMatinDarIbtalIHarkatIZamin1848Urdu00Complete

Qasim Saifi
17/10/20 CE

DOES ISLAM PERMIT YOU TO BEAT YOUR WIFE?

Widespread allegation by Anti Islamic sources

The verse which these islamophobes mention has been greatly misconceived by many people, who focus merely on its surface meaning, taking it to allow wife beating. When the setting is not taken into account, it isolates the words in a way that distorts or falsifies the original meaning. Before dealing with the issue of wife-battering in the perspective of Islam, we should keep in mind that the original Arabic wording of the Qur'ān is the only authentic source of meaning. If one relies on the translation alone, one is likely to misunderstand it.

According to the Qur'ān the relationship between the husband and wife should be based on mutual love and kindness. Allāh says in 30:21 —
"وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُم مِّنْ أَنفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُم مَّوَدَّةً وَرَحْمَةً إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ".

"And among His signs is that He created spouses for you from yourselves for you to gain rest from them, and kept love and mercy between yourselves; indeed in this are signs for the people who ponder."
[Tr. Kanz-ul-Īmān]
The Qur'ān urges husbands to treat their wives with kindness. In the event of a family dispute, the Qur'ān exhorts the husband to treat his wife kindly and not to overlook her positive aspects. Allāh says in Glorious Qur'ān 4:19 —

...."وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِن كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَىٰ أَن تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا".

"...and deal kindly with them; and if you do not like them, so it is possible that you dislike a thing in which Allah has placed abundant good."
[Tr. Kanz-ul-Īmān]

It is important that a wife recognizes the authority of her husband in the house. He is the head of the household, and she is supposed to listen to him. But the husband should also use his authority with respect and kindness towards his wife. If there arises any disagreement or dispute among them, then it should be resolved in a peaceful manner. Spouses should seek the counsel of their elders and other respectable family members and friends to batch up the rift and solve the differences.

However, in some cases a husband may use some light disciplinary action in order to correct the moral infraction of his wife, but this is only applicable in extreme cases and it should be resorted to if one is sure it would improve the situation. However, if there is a fear that it might worsen the relationship or may wreak havoc on him or the family, then he should avoid it completely. The Qur'ān is very clear on this issue. Allāh says in Qur'ān 4:34-35 —

"الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ وَبِمَا أَنفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ ۚ فَالصَّالِحَاتُ قَانِتَاتٌ حَافِظَاتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ ۚ وَاللَّاتِي تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوهُنَّ ۖ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيرًا وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا مِّنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا إِن يُرِيدَا إِصْلَاحًا يُوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا".

"Men are in charge of women, as Allāh has made one of them superior to the other, and because men spend their wealth for the women; so virtuous women are the reverent ones, guarding behind their husbands the way Allah has decreed guarding; and the women from whom you fear disobedience, (at first) advise them and (then) do not cohabit with them, and (lastly) beat them; then if they obey you, do not seek to do injustice to them; indeed Allāh is Supreme, Great. And if you fear a dispute between husband and wife, send an arbitrator from the man's family and an arbitrator from the woman's family; if these two wish conciliation, Allāh will unite them; indeed Allāh is All Knowing, Well Aware." *[Tr. Kanz-ul-Īmān]*

It is important to read the section fully. One should not take part of the verse and use it to justify one's own misconduct. This verse neither permits violence nor condones it. It guides us to ways to handle delicate family situation with care and wisdom. The

word 'beating' is used in the verse, but it does not mean 'physical abuse'. The Prophet Muhammad (ﷺ) explained it as per Şaḥīḥ Muslim, Ḥadīth no. 1218-

..."فَاضْرِبُوهُنَّ ضَرْبًا غير مُبَرِّحٍ"!...

“Beat them a light tap that leaves no mark.”

The Prophet (ﷺ) further said that face must be avoided as per Şaḥīḥ Muslim, Ḥadīth no. 2116 & Abū Dāwūd, Ḥadīth no. 2142.

Some other scholars are of the view that it is no more than a light touch by siwāk or toothbrush.
It is also important to note that even this 'light strike' mentioned in the verse is not to be used to correct some minor problem, but it is permissible to resort to only in a situation of some serious moral misconduct when admonishing the wife fails, and avoiding from sleeping with her would not help. If this disciplinary action can correct a situation and save the marriage, then one should use it.

The scholar further add:
If the problem relates to the wife’s behavior, the husband may exhort her and appeal for reason. In most cases, this measure is likely to be sufficient. In cases where the problem persists, the husband may express his displeasure in another peaceful manner, by sleeping in a separate bed from hers. There are

cases, however, in which a wife persists in bad habits and showing contempt of her husband and disregard for her marital obligations. Instead of divorce, the husband may resort to another measure that may save the marriage, at least in some cases. Such a measure is more accurately described as a gentle tap on the body, but never on the face, making it more of a symbolic measure than a punitive one.

Even here, that maximum measure is limited by the following:

[A] It must be seen as a rare exception to the repeated exhortation of mutual respect, kindness and good treatment. Based on the Qur'ān and Ḥadīth, this measure may be used in the cases of lewdness on the part of the wife or extreme refraction and rejection of the husband’s reasonable requests on a consistent basis 'Nushūz (نشوز). Even then, other measures, such as exhortation, should be tried first.

[B] As defined by Ḥadīth, it is not permissible to strike anyone’s face, cause any bodily harm or even be harsh. What the Ḥadīth qualifies as: "Ḍarban Ġayra Mubarriḥ", or light striking, was interpreted by early jurists as a (symbolic) use of siwāk/toothbrush. They further qualified permissible 'striking' as that which leaves no mark on the body. It is interesting that this latter fourteen-

centuries-old qualifier is the criterion used in contemporary American law to separate a light and harmless tap or strike from 'abuse' in the legal sense. This makes it clear that even this extreme, last resort, and “lesser of the two evils” measure that may save a marriage does not meet the definitions of 'physical abuse', 'family violence' or 'wife battering' in the 20th century law in liberal democracies, where such extremes are so commonplace that they are seen as national concerns.

[C] The permissibility of such symbolic expression of the seriousness of continued refraction does not imply its desirability. In several Ḥadīths, the Prophet (ﷺ) discouraged this measure. Here are some of his sayings in this regard:

...."لَا تَضْرِبُوا إِمَاءَ اللَّهِ"!....

"....Don't beat the female servants of Allāh....!"

...."لَقَدْ طَافَ بِآلِ مُحَمَّدٍ نِسَاءٌ كَثِيرٌ يَشْكُونَ أَزْوَاجَهُنَّ لَيْسَ أُولَئِكَ بِخِيَارِكُمْ".

"Some (women) visited my family complaining about their husbands (beating them). These (husbands) are not the best of you."
Abū Dāwūd, Ḥadīth no. 2146
In another Ḥadīth the Prophet (ﷺ) is reported to have said:

"اَ يَجْلِدُ أَحَدُكُمُ امْرَأَتَهُ جَلْدَ العَبْدِ، ثُمَّ يُجَامِعُهَا فِي آخِرِ اليَوْمِ".

"None of you should flog his wife as he flogs the slave and then have sexual intercourse with her in the last part of the day."

Şaḥīḥ Bukhārī, Ḥadīth no. 5204

[D] True following of the Sunnah is to follow the example of the Prophet (ﷺ) who never resorted to that measure, regardless of the circumstances.

[E] Islamic teachings are universal in nature. They respond to the needs and circumstances of diverse times, cultures and circumstances. Some measures may work in some cases and cultures or with certain persons but may not be effective in others. By definition, a 'permissible' act is neither required, encouraged or forbidden. In fact it may be to spell out the extent of permissibility, such as in the issue at hand, rather than leaving it unrestricted or unqualified, or ignoring it all together. In the absence of strict qualifiers, persons may interpret the matter in their own way, which can lead to excesses and real abuse.

[F] Any excess, cruelty, family violence, or abuse committed by any 'Muslim' can never be traced, honestly, to any revelatory text (Qur'ān or Ḥadīth). Such excesses and violations are to be blamed on the person(s) himself, as it shows that they are paying lip service to Islamic teachings and injunctions and

failing to follow the true Sunnah of the Prophet (ﷺ).

We must illuminate these four steps before going to talāq directly:

1. Advise them,
2. Don't cohabit with them,
3. Beat them which leaves no mark,
4. Peace meeting with guardians of both side,

And 5th step is Talāq e Raja'ī, after which (before passing the time of ʿiddah) they can be reunited.

Then comes the 6th step of Triple Talāq, one after another in three different upcoming months of purification.

After all, comes 7th step of instant Triple Talāq, which is condemned in our Shari'ah but capable.

Qasim Saifi
30/04/19 CE

बड़ी कठिन डगर है ये

'इह़्क़ाक़े हक़' व 'इब्त़ाले बात़िल' की राह से ज़्यादा कोई राह सख़्त नहीं होती. इसमें आपके बहुत से अपने भी, आपसे बदगुमान होकर, आपके दुश्मन बन जाते हैं. तो अगर दोनों में से किसी एक को ही चुनने की नौबत आ जाए, फिर अपनों को छोड़ दें, मगर इस राह को न छोड़ें. क्यूंकि ये राह अल्लाह (ﷻ) और उसके रसूल (ﷺ) की रज़ा के लिए चुनी जाती है, लोगों की ख़ुशामद के लिए नहीं;

अल्लाह (ﷻ) ने क़ुरआन 9:24 में इरशाद फ़रमाया:
"قُلْ إِن كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ"،

"तुम फ़रमाओ: 'अगर तुम्हारे बाप, और तुम्हारे बेटे, और तुम्हारे भाई, और तुम्हारी औरतें, और तुम्हारा कुनबा, और तुम्हारी कमाई के माल, और वो सौदा जिसके नुक़सान का तुम्हें डर है, और तुम्हारे पसंद का मकान; ये चीज़ें अल्लाह और उसके रसूल, और उसकी राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हों, तो रास्ता देखो, यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए', और अल्लाह फ़ासिक़ों को राह नहीं देता...!"[कंज़ुल् ईमान]

जो सच्चा मुअमिन होगा, वो अपने दीन के लिए, ज़रूरत पढ़ने पर, सबको छोड़ने पर बख़ुशी राज़ी होगा, और क़रीबी से क़रीबी शख़्स भी अगर दीन

का दुश्मन हो जाए तो उससे बिल्कुल उल्फ़त व मुह़ब्बत नहीं रखेगा;
फिर अल्लाह (ﷻ) ने क़ुरआन 58:22 में इरशाद फ़रमाया:

"لَّا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ ۚ أُولَٰئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِّنْهُ ۖ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ أُولَٰئِكَ حِزْبُ اللَّهِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ".

"तुम न पाओगे उन लोगों को, जो यक़ीन रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर, कि दोस्ती करें उनसे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से मुख़ालफ़त की, अगरचे वो उनके बाप या बेटे या भाई या कुनबे वाले हों;
ये हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान नक्श फ़रमा दिया, और अपनी तरफ की रूह से उनकी मदद की, और उन्हें बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें बहें, उनमें हमेशा रहें, अल्लाह उनसे राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी;
ये अल्लाह की जमाअ़त है;
सुनता है! अल्लाह ही की जमाअ़त कामयाब है." [कंज़ुल् ईमान]
क़ुरआन 9:23 में भी इरशाद हो चुका:

"يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَآءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ".

"ऐ ईमान वालो!
अपने बाप, और अपने भाइयों को दोस्त न समझो, अगर वो ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को पसंद करें; और तुम में जो कोई उनसे दोस्ती करेगा, तो वही ज़ालिम है." [कंज़ुल् इर्फ़ान]

स्टेटस/स्टोरी भी गुनाह का ज़रिया

जब आप ग़लत स्टेटस/स्टोरी लगाने वालों को समझाते हैं, तो अब वो आपको हाइड करके वैसे ही स्टेटस लगाएंगे. आपकी बात मानना, उनके लिए गोया कि एक तौहीन है;

वो समझ रहे हैं कि हम उन्हें अपने लिए समझा रहे हैं, जब कि हमें तो हर काम अपने अल्लाह (ﷻ) के लिए करना है, क्यूंकि हम सब को, उसी को हिसाब देना है;
मगर ऐसे लोगों की कोई भी ह़रकत अल्लाह (ﷻ) से हाइड नहीं हो सकती;

क़ुरआन 19:64 —

"وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا"،

"और तुम्हारा रब, भूलता नहीं."

क़ुरआन 60:1-2 —

"وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنتُمْ"،

"और मैं ख़ूब जानता हूं, जो तुम छुपाओ और जो ज़ाहिर करो."
[कंज़ुल् ईमान]
क़ुरआन 34:03 —

"لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَلَآ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرُ"،

"आसमानों में, और जमीन में, ज़र्रा बराबर भी कोई चीज़,
न उससे छोटी और न बड़ी, अल्लाह से छुपी नहीं."

क़ुरआन 40:19 —

"يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ"۔

"अल्लाह जानता है चोरी-छुपे की निगाह, और जो कुछ सीनों में छुपा है."
[कंज़ुल् ईमान]

क़ुरआन 35:38 —

"اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ"۔

"बेशक, अल्लाह जानने वाला है, आसमानों और ज़मीन की हर छुपी बात का. बेशक वो दिलों की बात जानता है."
[कंज़ुल् ईमान]

क़ुरआन 50:16 —

"وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۖۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ"۔

"और बेशक हमने आदमी को पैदा किया, और हम जानते हैं जो वसवसा उसका नफ़्स डालता है, और हम दिल की रग से भी ज़्यादा उसके क़रीब हैं."
अब अगर हम अल्लाह (ﷻ) से अपने आ़माल छुपा सकते हैं, तो छुपा लें!

आज कुछ मुसलमानों की हालत ऐसी हो चुकी है कि इन्हें कुछ समझाओ

तो नहीं मानते, बल्कि ज़िद करके, मज़ीद गुनाह करने लगते हैं;

अल्लाह (ﷻ) ने क़ुरआन 02:206 में ऐसे लोगों की हालत बयान की:

"وَ اِذَا قِیْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ"،

"और जब उससे कहा जाए कि: 'अल्लाह से डर', तो उसे, और ज़िद चढ़े गुनाह की. ऐसे को दोज़ख़ काफ़ी है."

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
25/10/22 ई.

हमेशा छोटे बनकर रहो

मख़्लूक़ में सबसे बड़े, मुख़्तारे कायनात, सुल्तानुल् अम्बिया आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"مَنْ تَوَاضَعَ لِلَّهِ رَفَعَهُ اللهُ، فَهُوَ فِي نَفْسِهِ صَغِيرٌ، وَفِي أَعْيُنِ النَّاسِ عَظِيمٌ؛ وَمَنْ تَكَبَّرَ وَضَعَهُ اللهُ، فَهُوَ فِي أَعْيُنِ النَّاسِ صَغِيرٌ، وَفِي نَفْسِهِ كَبِيرٌ، حَتَّى لَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِمْ مِنْ كَلْبٍ أَوْ خِنْزِيرٍ"،

"जिसने अल्लाह के लिए तवाज़ुअ़ (छोटा बनने की आदत) इख़्तियार की, अल्लाह ने उसे बुलंद कर दिया. तो वो ख़ुद में तो छोटा होता है, मगर लोगों की नज़र में अ़ज़्मत वाला होता है; और जिसने घमंड किया, तो अल्लाह ने उसे नीचा दिखा दिया. तो वो लोगों की नज़र में नीच होता है, और ख़ुद में अपने आप को बड़ा समझता है; यहां तक कि लोगों पर वो कुत्ते और सूअर से भी ज़्यादा गया-गुज़रा हुआ होता है."

शुअ़बुल् ईमान (लिल् बैहक़िय्यि), ह़दीस न. 7790, जिल्द न. 10, पेज न. 455, पब्लिकेशन: मक्-तबतुर् रुश्द (रियाद़), फ़र्स्ट एडीशन, 1423 हि./2003 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
27/01/21 ई.

इस मसअले पर पूरी उम्मत का इज्माअ़

"आक़ा (ﷺ) का गुस्ताख़, सुल्ताने इस्लाम या उसके नाइब के ज़रिए, वाजिबुल् क़त्ल है. इस मसअले पर पूरी उम्मत का इज्माअ़ है, जो इज्माअ़ का मुन्किर हो, वो गुमराह व बददीन है. यहां तक कि उ़लमा-ए-वह्हाबिय्यह भी इसके मुन्किर नहीं हैं;

अह़कामे फ़िक़्हिय्यह के लिए कुतुबे फ़िक़्ह पढ़ी जाती हैं, जिनमें क़ुरआन व ह़दीस से इस्तिम्बात़ करके, तमाम मसाइल को लिखा जाता है;

बात-बात पर क़ुरआन से 'सरीह़ दलील (Unambiguous Evidence)' मांगने वाले लिबरल जुह्हाल, आने वाले ज़माने में भी यही कहेंगे कि दज्जाल का ज़िक्र 'सराह़तन (unambiguously)' कहीं क़ुरआन में नहीं आया, इसलिए दज्जाल बुरा आदमी नहीं हो सकता, ये तो मुल्लाओं ने गढ़ लिया है;
अस्तग़्फ़िरुल्लाह."

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
09/10/20 ई.

अपनी उम्मत पर शफ़्क़त

आक़ा (ﷺ) ने अपने दीवानों से इरशाद फ़रमाया:

"مَثَلِي وَمَثَلُكُمْ كَمَثَلِ رَجُلٍ أَوْقَدَ نَارًا، فَجَعَلَ الْجَنَادِبُ وَالْفَرَاشُ يَقَعْنَ فِيهَا، وَهُوَ يَذُبُّهُنَّ عَنْهَا، وَأَنَا آخِذٌ بِحُجَزِكُمْ عَنِ النَّارِ، وَأَنْتُمْ تَفَلَّتُونَ مِنْ يَدِي"،

"मेरी और तुम्हारी कहावत ऐसी है, जैसे किसी शख़्स ने आग रौशन की, तो पंखिया और झींगुर उसमें गिरना शुरू हो गए, और वो शख़्स उन्हें आग से हटा रहा है;
और मैं तुम्हारी कमरें पकड़े हुए, तुम्हें आग से बचा रहा हूं, और तुम मेरे हाथ से निकलना चाहते हो."

स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताब: 43, बाब: 6, ह़दीस न. 2285, जिल्द: 4, पेज न. 1790, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् ‌अ़रबिय्यि (बेरूत)

इसी रिवायत को आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने अपनी किताब: "अल् अम्नु वल् उ़ला लि नाइ़तिल् मुस़्तफ़ा बि दाफ़िइ़ल् बला", में बाब: 1, फ़स़्ल: 2, ह़दीस न. 42-43 पर ज़िक्र किया है;
यही इमामे अहले सुन्नत (अ़लैहिर्रह़मह) एक शिअ़र में कहते हैं:

"आस्तीं रह़मते आ़लम उल्टे,
कमरे पाक पे दामन बांधे;
गिरने वालों को चहे दोज़ख़ से,
साफ़ अलग खींच लिया करते हैं."

29/02/21 ई.

रिसालत व नुबुव्वत ख़त्म हो गयी

आक़ा (ﷺ) के बाद न कोई रसूल होगा, न कोई नबी
हज़रत अनस इब्ने मालिक (रदियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि आक़ा (ﷺ) ने फ़रमाया:

"إِنَّ الرِّسَالَةَ وَالنُّبُوَّةَ قَدْ انْقَطَعَتْ فَلَا رَسُولَ بَعْدِي وَلَا نَبِيَّ"،

"बेशक रिसालत व नुबुव्वत ख़त्म हो गयी, तो मेरे बाद न कोई रसूल होगा, और न ही नबी."

तिर्मिज़ी शरीफ़, अब्वाबुर् रूया, बाब: ज़हबतिन् नुबुव्वह व बक़ियतिल् मुबश्शिरात, हदीस न. 2272, पब्लिकेशन: मुस्तफा अल्-बाबी अल्-ह़ल्बी (मिस्र), दूसरा एडीशन (1395 हि./1975 ई.), जिल्द: 4, सफ़ा: 533

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
19/03/19 ई.

चालबाज़ और घमंडी

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَهْلِ النَّارِ؟ كُلُّ عُتُلٍّ، جَوَّاظٍ مُسْتَكْبِرٍ"،

"क्या मैं तुम्हें जहन्नमी शख़्स के बारे में न बताऊँ?
हर वो शख़्स जो गंदी आ़दत वाला, चालबाज़ और घमंडी हो."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस न. 4918, जिल्द न. 6, पेज न. 159, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन्

नजाह (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1422 हि.

एक-दूसरे से मुहब्बत

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"لاَ تَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى تُؤْمِنُوا وَلاَ تُؤْمِنُوا حَتَّى تَحَابُّوا"....،

"तुम तब तक जन्नत में नहीं दाख़िल होगे, जब तक कि ईमान न ले आओ; और तुम तब तक ईमान वाले नहीं होगे, जब तक कि आपस में एक-दूसरे से मुहब्बत न करने लगो...."

स़ह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस नं. 93, जिल्द नं. 1, पेज नं. 74, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्य (बेरूत)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
12/10/21 ई.

मियां-बीवी ख़बरदार रहें

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) से रिवायत है कि आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"إِنَّ مِنْ أَشَرِّ النَّاسِ عِنْدَ اللهِ مَنْزِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ، الرَّجُلَ يُفْضِي إِلَى امْرَأَتِهِ، وَتُفْضِي إِلَيْهِ، ثُمَّ يَنْشُرُ سِرَّهَا"،

"बेशक, अल्लाह के नज़दीक, क़ियामत के दिन, लोगों में सबसे कमतर दर्जे वाला वो मर्द होगा, जो (जिमाअ़ के लिए) अपनी बीवी की ख़लवत

(तन्हाई) पाए, और उसकी बीवी उस (मर्द) की ख़लवत पाए, फिर (उनके दरमियान रात में मियां-बीवी वाले जो खुफ़िया काम हों), वो मर्द (दिन) में (उन खुफ़िया कामों को दूसरों से शेयर करके) उसके राज़ को फ़ाश कर दे."

सहीह मुस्लिम, किताबुन् निकाह, बाब: तहरीमु इफ़्शाइ सिर्रिल् मर्-अह, हदीस न. 1437, जिल्द न. 2, पेज न. 1060, पब्लिकेशन: दारु इह्याइत् तुरासिल् अरबिय्यि (बेरूत)

ये रिवायत उन मर्दों के बारे में है कि रात में बीवी के साथ जो होता है, उसे दिन में अपने दोस्तों के साथ शेयर करते हैं कि ये ये हुआ;
इसी तरह वो औरत भी इस वईद में शामिल है, जो अपनी सहेलियों से शेयर करे कि उसके शौहर के साथ रात में क्या क्या हुआ. ख़ास तौर पर शादी की पहली रात में;

अल्लाह हमें इस गुनाह से बचाए,
आमीन बिजाहि हबीबी (ﷺ)!

मुहम्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
11/12/20 ई.

औरतों की सरदार

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

إن ملكا استأذن الله في زيارتي، فبشرني أن فاطمة سيدة نساء أمتي"،

"यक़ीनन मेरी ज़ियारत के लिए, एक फ़रिश्ते ने अल्लाह से इजाज़त ली, तो उसने मुझे बशारत दी कि फ़ातिमह मेरी उम्मत की औरतों की सरदार हैं."
तारीख़े कबीर (इमाम बुख़ारी), हदीस न. 728 (1:232)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
03/02/21 ई.

अज़ान मुसीबत में भी रह़मत है

हज़रत अनस इब्ने मालिक (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) से रिवायत है कि आक़ा (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने इरशाद फ़रमाया:

"إِذَا أُذِّنَ فِي قَرْيَةٍ أَمَّنَهَا اللّٰهُ مِنْ عَذَابِهِ ذَلِكَ الْيَوْمَ".

"जब किसी बस्ती में अज़ान दी जाती है, तो अल्लाह तआ़ला उस दिन, उस बस्ती को, अपने अ़ज़ाब से बचा लेता है."

अल् मुअ़जमुल् कबीर (लित् तबरानी), जिल्द: 1, पेज न. 257, ह़दीस न. 746, पब्लिकेशन: मकतबा इब्ने तैमिया (क़ाहिरा), सेकंड एडीशन

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
25/03/20 ई.

इ़ल्म उठा लिया जाएगा

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"إِنَّ مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ يُرْفَعَ العِلْمُ، وَيَكْثُرَ الجَهْلُ"،

"यक़ीनन क़ियामत की निशानियों में से है,
कि इ़ल्म उठा लिया जाएगा, और जहालत बढ़ जाएगी."
स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस न. 5231, जिल्द न. 7, पेज न. 37, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह़ (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1422 हि.

जन्नत तलवारों के साये के नीचे

ह़दीसे मज़्कूर को कामिल तौर पर अ़मली जामा पहनाने वाले लोगों में, शुहदा-ए-कर्बला पेश पेश हैं;

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"وَاعْلَمُوا أَنَّ الجَنَّةَ تَحْتَ ظِلاَلِ السُّيُوفِ"،

"और जान लो!
जन्नत तलवारों के साये के नीचे है."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस नं. 2818, जिल्द नं. 4, पेज नं. 22, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह़ (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1422 हि.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
19/08/21 ई.

तुम से ज़्यादा जानने वाला

आक़ा (ﷺ) ने ख़ुद अपने अ़मली व इ़ल्मी कमाल के बारे में इरशाद फ़रमाया:

"إِنَّ أَتْقَاكُمْ وَأَعْلَمَكُمْ بِاللَّهِ أَنَا"،

"यक़ीनन तुम से ज़्यादा अ़मल का ह़क़दार,
और अल्लाह के बारे में तुम से ज़्यादा जानने वाला, मैं हूँ."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस न. 20, जिल्द न. 1, पेज न. 13, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह़ (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1422 हि.

फ़वाइदे ह़दीस: सिर्फ़ एक ही जुमल-ए-नुबुव्वत में, मुर्तद्-द 'मौलवी क़ासिम नानौतवी (बानी: दारुल् उ़लूम देवबंद)' की किताब 'तह़ज़ीरुन् नास', और दूसरे मुर्तद्-द 'मौलवी ख़लील अम्बेठवी' की किताब 'बराहीने क़ातिअ़ह (तस्दीक़शुदा: तीसरे मुर्तद्-द मौलवी रशीद गंगोही)' की ग़लीज़ व नजिस-तर-अज़-बौल इ़बारतों का रद हो गया,
अल्ह़म्दुलिल्लाह!

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
23/06/21 ई.

पांच हक़

करीम आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"حَقُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ خَمْسٌ: رَدُّ السَّلَامِ وَعِيَادَةُ الْمَرِيضِ وَاتِّبَاعُ الْجَنَائِزِ وَإِجَابَةُ الدعْوَة وتشميت الْعَاطِس"،

"एक मुसलमान के अपने मुसलमान भाई पर पांच हक़ हैं:
सलाम का जवाब देना, बीमार होने पर उसे देखने जाना, उसके जनाज़े में जाना, उसकी दावत को कुबूल करना, उसे छींक आने पर उसके लिए रह़म की दुआ़ करना."

बुख़ारी व मुस्लिम

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
26/09/20 ई.

नज्दियो! कुछ तो शर्म करो

हज़रत अबू हुरैरह (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) से रिवायत है, कि आक़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

"عَلَى أَنْقَابِ المَدِينَةِ مَلاَئِكَةٌ، لاَ يَدْخُلُهَا الطَّاعُونُ، وَلاَ الدَّجَّالُ".

"मदीना में दाख़िल होने के (तमाम) रास्तों पर, फ़रिश्ते हैं; न इसमें त़ाऊ़न (Plague) दाख़िल होगा, और न ही दज्जाल."

सहीह बुखारी, किताबुल् फ़ितन, बाब: ला यद्ख़ुलुद् दज्जालुल् मदीनह, जिल्द: 9, सफ़ा न. 61, ह़दीस न. 7133, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह (बेरुत), फ़र्स्ट एडीशन, 1422 हि.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
21/03/20 ई.

यक़ीनन ख़िलाफ़त ज़रूर क़ायम होगी

अ़ालिमे 'मा कान व मा यकून्' आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"تَكُونُ النُّبُوَّةُ فِيكُمْ مَا شَاءَ اللّٰهُ أَنْ تَكُونَ، ثُمَّ يَرْفَعُهَا إِذَا شَاءَ أَنْ يَرْفَعَهَا، ثُمَّ تَكُونُ خِلَافَةٌ عَلَى مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ، فَتَكُونُ مَا شَاءَ اللّٰهُ أَنْ تَكُونَ، ثُمَّ يَرْفَعُهَا إِذَا شَاءَ اللّٰهُ أَنْ يَرْفَعَهَا، ثُمَّ تَكُونُ مُلْكًا عَاضًّا، فَيَكُونُ مَا شَاءَ اللّٰهُ أَنْ يَكُونَ، ثُمَّ يَرْفَعُهَا إِذَا شَاءَ أَنْ يَرْفَعَهَا، ثُمَّ تَكُونُ مُلْكًا جَبْرِيَّةً، فَتَكُونُ مَا شَاءَ اللّٰهُ أَنْ تَكُونَ، ثُمَّ يَرْفَعُهَا

إِذَا شَاءَ أَنْ يَرْفَعَهَا، ثُمَّ تَكُونُ خِلَافَةً عَلَى مِنْهَاجِ نُبُوَّةٍ"، ثُمَّ سَكَتَ".

"तुम्हारे दरमियान नुबुव्वत बाक़ी रहेगी, जब तक अल्लाह चाहेगा, फिर उसे उठा लेगा, जब उठाना चाहेगा; फिर ख़िलाफ़ते राशिदह होगी, वो तब तक बाक़ी रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा, फिर उसे (भी) उठा लेगा, जब उठाना चाहेगा; फिर काट डालने वाली हुकूमत होगी, वो तब तक बाक़ी रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा, फिर उसे (भी) उठा लेगा, जब उठाना चाहेगा; फिर ज़ोर-ज़बरदस्ती वाली हुकूमत होगी, वो तब तक बाक़ी रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा, फिर उसे (भी) उठा लेगा, जब उसे उठाना चाहेगा; फिर (आख़िर में) नुबुव्वत के तरीक़े पर खिलाफ़त (दुबारा) क़ायम होगी", फिर रावी (या आक़ा ﷺ) ख़ामोश हो गए."

मुस्नद [लिल् इमाम अह़मद (d. 241 हि.)], ह़दीस न. 18406, जिल्द न. 30 सफ़ा न. 355, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1421 हि. / 2001 ई.

यानी दौरे नुबुव्वत से क़ियामत तक दुनिया में होने वाली हुकूमतें पांच तरह की होंगी:

1. निज़ामे नुबुव्वत,
2. निज़ामे ख़िलाफ़ते राशिदह (नुबुव्वत ही के तरीक़े पर),
3. निज़ामे काट-मार कि जो ज़िंदा बचा वही बादशाह रहा,

इन तीनों तरीक़ों का ज़माना गुज़र चुका है;
इस वक़्त जो दौर है वो है चौथे तरीक़े का:

4. 'मुल्कन् जब्-रिय्यन्' यानी जोर-ज़बरदस्ती की हुकूमत,
इस निज़ाम का इख़्तिताम भी क़रीब है, इन्-शा अल्लाह!

आख़िर में वही होगा जो शुरू में था:
5. 'ख़िलाफ़तन् अ़ला मिन्हाजिन् नुबुव्वह'
यानी: नुबुव्वत ही के तरीक़े पर फिर से खिलाफ़त क़ायम होगी. ये क़ियामत के क़रीब सबसे आख़िरी दौर होगा, जब ख़लीफ़तुल्लाह, इमाम महदी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) पूरे जाहो जलाल के साथ रूनुमा होंगे, इन्-शा अल्लाह!

फिर मुसलमानों की बेबसी दूर होगी, उनके दर्द का इलाज होगा. फ़िलिस्तीन, दारुल् ख़िलाफ़त होगा;
और कश्मीर, यमन, सीरिया, उईगुर वग़ैरह के बेबस मुसलमानों की आहें कुफ़्फ़ार पर अ़ज़ाब बनकर टूटेंगी.

'Israel' का 'Greater Israel' का सपना, 'Greater Graveyard' बनकर पूरा होगा, और 'Israel' अंजाम के तौर पर 'israHell' बन जाएगा.

इन्-शा अल्लाह!

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
27/09/20 ई.

क्या ई़द की मुबारकबाद देना नाजायज़, या बिद्अ़त है..?

आज कल कुछ लोगों ने अ़ाम मुसलमानों के दरमियान ये झूठ फैलाना शुरू कर दिया है कि ई़द की मुबारकबाद देना नाजायज़ है, चूंकि न तो ये आक़ा (ﷺ) से साबित है, और न ही आपके स़ह़ाबा (रद़ियल्लाहु अ़न्हुम्) से;

आइए इस बात का मुख़्तस़र जायज़ा लेते हैं:

ईद की मुबारकबाद देना ख़ुद आक़ा (ﷺ), और आपके स़ह़ाबा से साबित है, कि जिसके जायज़ होने पर बहुत से सुबूत हैं. जबकि नाजायज़ होने पर एक भी दलील नहीं है. अब दलाइल मुलाह़ज़ा हों:

[1] अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी (अ़लैहिर्रह़मह) अपनी मश्हूर किताब: 'फत्ह़ुल बारी' में, 'ह़ज़रत जुबैर इब्ने नुफ़ैल (ताबिई़)' से 'सनदे ह़सन' के साथ रिवायत करते हैं:

"كان أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا التقوا يوم العيد يقول بعضهم لبعض: تقبل الله منا ومنك".

"आक़ा (ﷺ) के स़ह़ाबा, जब ई़द के दिन एक दूसरे से मिलते, तो आपस में कहते: 'तक़ब्बलल्लाहु मिन्ना व मिन्क', यानी: 'अल्लाह हम से, और आपसे (नेक अ़ामाल) क़ुबूल फरमाए'."

फत्ह़ुल बारी, 2:517

[2] इमाम इब्ने तुर्कुमानी अपनी किताब: 'अल् जौहरुन्-नक़ी' में 'मुह़म्मद इब्ने ज़ियाद' से रिवायत करते हैं:

"كنت مع أبي أمامة الباهلي وغيره من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم ، فكانوا إذا رجعوا من العيد يقول بعضهم لبعض: تقبل الله منا ومنك ".

"मैं अबू उमामा बाहिली, और दूसरे स़ह़ाबा ए किराम के साथ था, जब वो ई़द (की नमाज़) से लौटते, तो आपस में कहते: 'तक़ब्बलल्लाहु मिन्ना व मिन्क', यानी: अल्लाह हम से, और आपसे (नेक काम) क़ुबूल फरमाए'."

अल्-जौहरुन्नक़ी, 3:320-321

इमाम इब्ने क़ुदामा (अ़लैहिर्रह़मह) ने 'अल्-मुग़्नी, 2:259' पर लिखा कि इमाम अह़मद (अ़लैहिर्रह़मह) ने इसकी सनद को 'जय्यिद (Good)' कहा;

[3] मुख़ालिफीन के पेशवा नास़िरुद्दीन अल्बानी अपनी किताब: 'तमामुल् मिन्नह' में, ह़ज़रत 'ज़ुबैर इब्ने नुफ़ैल (ताबिई़)' वाली रिवायत को स़ह़ीह़ सनद के साथ रिवायत करते हैं.

तमामुल् मिन्नह, 354

आपने देखा कि आक़ा (ﷺ) के स़ह़ाबा मज़कूरा अल्फ़ाज़ में, एक दूसरे को ई़द की मुबारकबाद देते थे;
यहाँ तक कि लोग आक़ा (ﷺ) की बारगाह में भी ह़ाज़िर होकर ई़द की मुबारकबाद देते थे, और आक़ा (ﷺ), उन्हें, उन्हीं के अल्फ़ाज़ में जवाब अ़त़ा फरमाते. इस के बारे में बहुत-सी ह़दीसें वारिद हैं जो ज़ई़फ़ हैं, मगर उन्हें तमाम त़ुरुक़ से जमा करने के बाद क़ाबिले ह़ुज्जत बनाया गया है. इन ज़ई़फ़ रिवायात, और इनकी सेहत की मुकम्मल बहस के लिए, देखें: 'हवाशिश्शरवानी वल् इ़बादी अ़ला तुह़्फतिल् मुह़्ताज, 3:56.'

यहाँ तक कि चारों मज़हब के अइम्मा ने इसे जायज़ लिखा है, दलील मुलाहज़ा हो:

[1] इमाम इब्ने अ़ाबिदीन शामी ह़नफ़ी ने: 'रद्दुल् मुह़्तार, 2:169' पर मुह़क़्क़िक़ 'इमाम इब्ने अमीर अल्-ह़ाज्ज' के हवाले से इसे मुस्तह़ब्ब लिखा;

[2] इमाम इब्ने रुश्द मालिकी ने अपनी: 'अल्-बयान वत्-तहस़ील, 18:452' पर इसे मुबाह़ लिखा;

[3] इमाम शरवानी शाफिई़ ने: 'हवाशिश्शरवानी वल् इ़बादी अ़ला तुह़्फतिल् मुह़्ताज, 3:56' पर मुख़्तस़र बहस के बाद इसे जायज़ लिखा;

[4] इमाम इब्ने क़ुदामा ह़म्बली ने: 'अल्-मुग़्नी, 2:250-251' पर इसे जायज़ लिखा;

इस से पता चला कि चारों मज़हब में से, किसी भी मज़हब के, किसी भी बुज़ुर्ग ने ईद की मुबारकबाद को नाजायज़, या बिद्अ़त नहीं कहा;

अब चलिए घर की ख़बर लेते हैं:
[1] इब्ने तैमिय्यह से सवाल किया गया कि लोग मुख़्तलिफ अल्फाज़ में ईद की मुबारकबाद देते हैं क्या ये सही है...? तो जवाब में इब्ने तैमिय्यह ने कहा कि ऐसा करना मुबाह (जायज़) है.
मज्मूउ़ल् फतावा, 24:253

[2] इब्ने बाज़ ने अपने: 'मज्मूउ़ल् फतावा वर् रसाइल' में इसे जायज़ लिखा. ये भी कहा कि ईद की मुबारकबाद के लिए कोई मुअ़य्यना अल्फ़ाज़ नहीं हैं, बल्कि जिस तरह लोगों की अ़ादत हो, वैसे ही मुबारकबाद दें;

[3] अल्बानी का ज़िक्र हम ऊपर कर चुके, 'तमामुल् मिन्नह' के हवाले से. उसने तो इस मुबारकबाद को मुस्तह़ब्ब लिखा है;

[4] सालेह फौज़ान ने भी अपने फतावा में इसे मुबाह़ लिखा;

[5] इब्ने उ़सैमीन ने भी इसे जायज़ लिखा;

[6] सालेह अल्-मुनज्जिद ने भी इसे मशरूअ़ कहा.

इस बाब में बेशुमार दलाइल लाए जा सकते हैं, मगर यहां सिर्फ़ मुख़्तसर ही लिखे गए हैं. अब इस जायज़ काम को नाजायज़ कहने वाले लोगों को अपनी हठधर्मी छोड़ कर हक़ अपनाने में देर नहीं करनी चाहिए, और दीन में ग़ुलू करने से तौबा कर लेनी चाहिए.

'बेहयाई' को 'आज़ादी' का नाम

'बेहयाई' को 'आज़ादी' का नाम देने वाले लोग देख लें, कि लोगों की इ़ज़्ज़त सिर्फ़ और सिर्फ़ 'ह़या' में है;

मुअ़ल्लिमे काइनात आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

..."وَالحَيَاءُ شُعْبَةٌ مِنَ الإِيمَانِ"،

"...और ह़या, ईमान का एक हिस्सा है."

सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल् ईमान, बाब: उमूरुल् ईमान, ह़दीस न. 9, जिल्द न. 1, स़फ़्ह़ा न. 11, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह़ (बेरूत), पहला एडीशन, 1422 हि.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
1/11/20 ई.

ख़्वाब में दीदार-ए-नबी (ﷺ)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) से रिवायत है कि उन्होंने आक़ा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ये इरशाद फ़रमाते हुए सुना:

"مَنْ رَآنِي فَقَدْ رَأَى الحَقَّ، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لاَ يَتَكَوَّنُنِي".

"जिसने मुझे (ख़्वाब में) देखा, तो यक़ीनन उसने हक़ ही देखा. क्यूंकि शैतान मेरी शक्ल में नहीं आ सकता."

सहीह बुख़ारी, किताब: अत्तअ़बीर, बाब: मन् रअन्नबिय्य (ﷺ) फ़िल् मनाम, जिल्द: 9, सफ़ा: 33, हदीस: 6997, पब्लिकेशन्: दारु त़ौक़िन् नजाह (बेरूत), फ़र्स्ट

एडीशन, 1422 हि.

हर दर्द की दवा है 'सल्लि अ़ला मुह़म्मद्'

अमीरुल् मुअमिनीन फ़िल् ह़दीस,
इमामुल् मुह़द्-दिसीन,
हाफ़िज़ इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी [d. 852 हि. (अ़लैहिर्रह़मह)] अपनी मशहूर किताब.....
"बज़्लुल् माऊ़न् फ़ी फ़द़्लित़् त़ाऊ़न"
....में इरशाद फ़रमाते हुए लिखते हैं:

..."أن من أعظم الأشياء الدافعة للطاعون و غيره من البلايا العظام، كثرة الصلاة علي النبي (ﷺ)"!...

"...त़ाऊ़न (Plague) और दूसरी बड़ी बलाओं को, ख़त्म करने वाली बड़ी चीज़ों में से एक चीज़, नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर ज़्यादा से ज़्यादा दुरुद भेजना भी है...!"

बज़्लुल् माऊ़न् फ़ी फ़द़्लित़् त़ाऊ़न, पब्लिकेशन: दारुल् आ़सिमह (रियाद), सफ़ा नं. 333

लिहाज़ा!
अपने आक़ा व मौला,
मुह़म्मदुर् रसूलुल्लाह (ﷺ) पर ख़ूब-ख़ूब दुरुदो सलाम भेजते रहिए:

"صلي الله علي النبي الأمي و آله صلي الله عليه وسلم صلاةً و سلاماً عليك يا رسول الله ﷺ".

छः ह़क़

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"'حَقُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ سِتٌّ'، قِيلَ: 'مَا هُنَّ يَا رَسُولَ اللّٰهِ؟' قَالَ: 'إِذَا لَقِيتَهُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، وَإِذَا دَعَاكَ فَأَجِبْهُ، وَإِذَا اسْتَنْصَحَكَ فَانْصَحْ لَهُ، وَإِذَا عَطَسَ فَحَمِدَ اللّٰهَ فَسَمِّتْهُ، وَإِذَا مَرِضَ فَعُدْهُ، وَإِذَا مَاتَ فَاتَّبِعْهُ'."

"'एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर छः ह़क़ हैं',
अर्ज़ किया गया: 'ऐ अल्लाह के रसूल! वो क्या हैं?'
तो आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:
'जब तुम उससे मिलो, तो सलाम करो;

और जब वो तुम्हें दावत दे, तो क़ुबूल करो;

और जब वो तुमसे नसीह़त (या मशविरा) मांगे, तो उसे (अच्छी) नसीह़त (या मशविरा) दो;

और जब उसे छींक आए, और वो 'अल्ह़म्दुलिल्लाह' कहे, तो तुम उसके लिए (यर्-ह़मुकल्लाह कहकर) रह़म की दुआ़ करो;

और जब वो बीमार पड़ जाए, तो उसकी इ़यादत करो;

और जब वो इंतिक़ाल कर जाए, तो उसके (जनाज़े में शामिल होकर) पीछे जाओ'."

स़ह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस न. 2162, जिल्द न. 4, पेज न. 1705, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी 26/03/21 ई.

तीन निशानियाँ

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"آيَةُ المُنَافِقِ ثَلاَثٌ: إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ، وَإِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ"،

"मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं:

1. जब बात करे, तो झूठ बोले;
2. जब वादा करे, तो बेवफ़ाई करे;
3. जब अमानत दी जाए, तो बेईमानी करे."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस न. 33, जिल्द न. 1, पेज न. 16, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1422 हि.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
25/03/21 ई.

'मेरा माल, मेरा माल'

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"يَقُولُ الْعَبْدُ: 'مَالِي، مَالِي'، إِنَّمَا لَهُ مِنْ مَالِهِ ثَلَاثٌ: مَا أَكَلَ فَأَفْنَى، أَوْ لَبِسَ فَأَبْلَى، أَوْ أَعْطَى فَاقْتَنَى، وَمَا سِوَى ذَلِكَ فَهُوَ ذَاهِبٌ، وَتَارِكُهُ لِلنَّاسِ".

"बंदा कहता रहता है: 'मेरा माल, मेरा माल', जबकि हक़ीक़त में उसके माल

में से, उसकी सिर्फ़ तीन ही चीज़ें हैं:

1. वो चीज़ कि जिसे उसने खा लिया, और ख़त्म कर दिया;
2. वो चीज़ जिसे उसने पहन लिया, और उतार कर फैंक दिया;
3. वो चीज़ जिसे उसने राहे ख़ुदा में ख़र्च किया, और आख़िरत के लिए इकट्ठा कर लिया;

और इनके अलावा जो कुछ है, सब चला जाएगा, और वो इसे लोगों के लिए छोड़ जाएगा."

स़ह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस न. 2959, जिल्द न. 4, पेज न. 2273, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
09/03/21 ई.

समझदार वो है

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"الكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهُ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ المَوْتِ، وَالعَاجِزُ مَنْ أَتْبَعَ نَفْسَهُ هَوَاهَا وَتَمَنَّى عَلَى اللَّهِ"،

"समझदार वो है जो ख़ुद का ह़िसाब ले, और मौत के बाद (की ज़िंदगी) के लिए अ़मल करे; और कमज़ोर वो है जिसने ख़ुद को अपनी ख़्वाहिश के पीछे लगा दिया, और (इसके बावजूद भी) अल्लाह से (रह़म) की उम्मीद लगाए रहे."

तिर्मिज़ी, ह़दीस न. 2459, जिल्द न. 4, पेज न. 638, पब्लिकेशन: मक्-तबतु मुस़्तफ़ा अल्-बाबी अल्-ह़ल्बी (मिस्र), दूसरा एडीशन, 1395 हि./1975 ई.

14/03/21 ई.

झगड़ो मत

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया

"إِذَا أَحْبَبْتَ أَخًا فَلَا تُمَارِهِ، وَلَا تُشَارِّهِ"،

"जब तुम किसी (मुसलमान) भाई से मुह़ब्बत करो,
तो उससे झगड़ो मत;
और न ही उससे बुरी तरह पेश आओ."

*अल्-अदबुल् मुफ़रद (इमाम बुख़ारी), ह़दीस न. 545,
पब्लिकेशन: दारुल् बशाइरिल् इस्लामिय्यह (बेरूत), तीसरा एडीशन, 1409 हि. / 1989 ई.*

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
19/06/21 ई.

एक दूसरे की मदद किया करें

अगर आप ज़रूरत में सबके काम आते हैं, मगर आपकी ज़रूरत में कोई काम न आए, तो समझ जाएं कि ये भी अल्लाह की तरफ़ से आपका इम्तिह़ान है कि कहीं मेरा बन्दा इस सबब से मेरी मख़्लूक़ की मदद करना तो नहीं छोड़ देगा, और ये कि मेरे बन्दे को मख़्लूक़ से बदला चाहिए या मुझ से बदला चाहिए;

इसलिए ऐसे मौकों पर बड़े सब्र और तवक्कुल के साथ रहें; अल्लाह की

रह़मत से कभी ना-उम्मीद मत होइए.
अल्लाह तआ़ला 'मुसब्बिबुल् अस्बाब' है, कोई न कोई सबब ज़रूर पैदा कर देता है;

हर मुसीबत पर ये आयत याद रखा कीजिए:

"لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا"،

"तुम नहीं जानते, शायद अल्लाह तआ़ला इसके बाद कोई नयी राह निकाल दे."

करीम आक़ा (ﷺ) का ये फ़रमान भी याद रखा कीजिए:

"وَاللهُ فِي عَوْنِ الْعَبْدِ مَا كَانَ الْعَبْدُ فِي عَوْنِ أَخِيهِ"،

"जब तक कोई बन्दा अपने भाई की मदद करता रहता है, तब तक अल्लाह उस (मदद करने वाले) की मदद फ़रमाता रहता है."

स़ह़ीह़ मुस्लिम, 48:11:2699 (4:2074), पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत)

ये एक लंबी ह़दीस का जुज़ है, आज दिल कर रहा है कि पूरी ह़दीस लिखूं.
इस रिवायत का एक एक लफ़्ज़ हमारे बुरे अख़्लाक़ को झिंझोड़ कर रख देता है;
पूरी रिवायत देखें:

"مَنْ نَفَّسَ عَنْ مُؤْمِنٍ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ الدُّنْيَا، نَفَّسَ اللهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ؛ وَمَنْ يَسَّرَ عَلَى مُعْسِرٍ، يَسَّرَ اللهُ عَلَيْهِ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ؛ وَمَنْ سَتَرَ

مُسْلِمًا، سَتَرَهُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ؛ وَاللّٰهُ فِي عَوْنِ الْعَبْدِ مَا كَانَ الْعَبْدُ فِي عَوْنِ أَخِيهِ؛ وَمَنْ سَلَكَ طَرِيقًا يَلْتَمِسُ فِيهِ عِلْمًا، سَهَّلَ اللّٰهُ لَهُ بِهِ طَرِيقًا إِلَى الْجَنَّةِ؛ وَمَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ اللّٰهِ، يَتْلُونَ كِتَابَ اللّٰهِ، وَيَتَدَارَسُونَهُ بَيْنَهُمْ، إِلَّا نَزَلَتْ عَلَيْهِمِ السَّكِينَةُ، وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَحَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ، وَذَكَرَهُمُ اللّٰهُ فِيمَنْ عِنْدَهُ؛ وَمَنْ بَطَّأَ بِهِ عَمَلُهُ، لَمْ يُسْرِعْ بِهِ نَسَبُهُ".

"जिस (मुसलमान) ने (अपने) किसी (दूसरे) मुसलमान (भाई) की दुनियावी तकलीफ़ों में से कोई तकलीफ़ दूर की, तो अल्लाह उस (तकलीफ़ दूर करने वाले) से क़ियामत की तकलीफ़ें दूर कर देगा; जिसने किसी तंगहाल (मुसलमान) के लिए आसानी पैदा की, अल्लाह उसके लिए दुनिया व आख़िरत में आसानी पैदा करेगा; और जिसने किसी मुसलमान (के ऐ़बों या राज़ों) की पर्दापोशी की, तो अल्लाह उसकी दुनिया व आख़िरत में पर्दापोशी फ़रमायेगा; और जब तक बंदा अपने भाई की मदद में रहता है, तब तक अल्लाह उसकी मदद फ़रमाता है; और जो इ़ल्म हासिल करने के लिए रास्ता तय करता है, तो अल्लाह उसके लिए उस (इ़ल्म हासिल करने के) वसीले से जन्नत की राह आसान कर देता है; जब अल्लाह के घरों में से किसी भी घर में लोग क़ुरआन की तिलावत करते हैं, और एक दूसरे को उसका दर्स देते हैं, तो अल्लाह उन पर यक़ीनन सकीना नाज़िल फ़रमाता है, और रह़मत उन्हें घेर लेती है, और फ़रिश्ते उन्हें (अपने परों से) ढंक लेते हैं, और अल्लाह फ़रिश्तों के दरमियान उनका ज़िक्र फ़रमाता है; और जिसका इ़ल्म अधूरा रहा, तो बड़े बाप की औलाद होना उसे कुछ फ़ायदेमंद नहीं."

स़ह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस न. 2699, जिल्द न. 4, पेज न. 2074, पब्लिकेशन: दारु इ़ह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत)

02/02/21 ई.

मरीज़ की इ़यादत करें

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"إِنَّ الْمُسْلِمَ إِذَا عَادَ أَخَاهُ الْمُسلم لَمْ يَزَلْ فِي خُرْفَةِ الْجَنَّةِ حَتَّى يَرْجِعَ"،

"बेशक, जब कोई मुसलमान, अपने किसी मुसलमान भाई के बीमार होने पर, उसे देखने जाता है, तो वो तब तक जन्नत के फल चुनता रहता है जब तक कि लौट न आए."

सह़ीह़ मुस्लिम

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
26/09/20 ई.

दो जहां की निअ़मतें हैं उनके ख़ाली हाथ में

बहुत मुअ़तमद व मशहूर किताबें, जैसेः
1. 'मुस्नदे इमाम अह़मद',
2. 'सह़ीह़ इब्ने ह़िब्बान',
3. 'मिश्कात',
4. 'ह़िल्यतुल् औलिया',
5. 'मुस्नदे अबी यअ़ला',
6. 'दलाइलुन् नुबुव्वह लिल् बैहक़ी'
वग़ैरह में इस ह़दीस को रिवायत किया गया है:

...."عَنْ عَائِشَةَ،قَالَتْ : "سُئِلْتُ مَا كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعْمَلُ فِي

بَيْتِهِ؟" قَالَتْ: "كَانَ بَشَرًا مِنَ الْبَشَرِ، يَفْلِي ثَوْبَهُ، وَيَحْلُبُ شَاتَهُ، وَيَخْدُمُ نَفْسَهُ".

"ह़ज़रत आ़इशह (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) से रिवायत है;
उन्होंने कहा, कि:
"मुझ से पूछा गया कि आक़ा (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) घर में क्या किया करते थे?"

(तो ह़ज़रत आ़इशह ने जवाब में) फ़रमाया:
"आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) इंसानों में से (ही) एक इंसान थे. अपना कपड़ा (ख़ुद) सिल लेते थे, और अपनी बकरी (का दूध) ख़ुद दूह लेते थे, और अपना काम ख़ुद कर लेते थे."

तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक रिवायत में ये भी है, कि:

..."يَخْصِفُ نَعْلَهُ"!...

"....अपनी नअ़ले पाक (Sandals/Shoes) भी ख़ुद जोड़ लेते थे...!"

ये है सारे आ़लम के मालिको मुख़्तार, मुह़म्मदुर् रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की आ़जिज़ी व इन्किसारी. अगर आज कोई शौहर अपनी बीवी का इस तरह हाथ बटाए, तो नादान लोग उसे 'ज़ोरू का ग़ुलाम' कहने लगते हैं.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
20/11/21 ई.

'नसाई शरीफ़'

"ह़दीस की मशहूर किताब जो कुतुबे सित्तह (स़िह़ाह़े सित्तह) में से एक है,
यानी:
'नसाई शरीफ़',
जिसे आ़मत़ौर पर 'सुनने नसाई' के नाम से याद किया जाता है;
इसका असली नाम 'अल् मुज्तबा मिनस् सुनन' है,
और इसी को 'अस् सुननुस् स़ुग़्-रा लिन् नसाई'
भी कहा जाता है...!"

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
25/05/21 ई.

जिहाद फ़र्ज़ है

स़दरुल् अफ़ाज़िल सय्यिद नई़मुद्-दीन मुरादाबादी (अ़लैहिर्रह़मह) क़ुरआन 2:216 के तह़्त लिखते हैं:

"जिहाद फ़र्ज़ है,
जब इसके शराइत़ पाए जाएं;
अगर काफ़िर,
मुसलमानों के मुल्क पर चढ़ाई करें, तो जिहाद फ़र्ज़े ऐ़न होता है; वर्ना फ़र्ज़े किफ़ायह...!"

तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल् इ़र्फ़ान, पेज न. 54, पब्लिकेशन: मज्लिसे बरकात, मुबारकपुर (आज़मगढ़)

सरायत व ह़ुलूल

मुफ़्ती-ए-आ़ज़म इमाम मुस़्तफ़ा रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह) इरशाद फ़रमाते हैं:

"मुश्-रिकीन का मज़्हबे ना-मुहज़्ज़ब है, कि ख़ुदा हर चीज़ में रमा हुआ, सरायत व ह़ुलूल किए हुए है;
और अल्लाह तआ़ला रमने और ह़ुलूल करने से पाक है;
मुश्-रिक, ख़ुदा को, अपने इसी अ़क़ीदा ए ख़बीसह की बिना पर 'राम' कहते हैं;
तो ख़ुदा को 'राम' कहना कुफ़्र हुआ...!"
सैफ़ुल् जब्बार अ़ला कुफ़्रि ज़मीनदार,
मश्मूलह: मज्मूअ़ा ए रसाइले मुफ़्ती-ए-आ़ज़म, हिस़्सा न. 3, जिल्द न. 5, पेज न. 180, पब्लिकेशन: रज़ा अकैडमी (बरेली), फ़र्स्ट एडीशन, 1436 हि./2015 ई.

अगर मैं चाहूँ

काफ़िर किसकी गुस्ताख़ी करने की जुरअत कर रहा है!?
उसकी, जिसकी त़ाक़त का ये हाल है:

..."لَوْ شِئْتُ لَسَارَتْ مَعِي جِبَالُ الذَّهَبِ"!...

"...अगर मैं चाहूँ, तो मेरे साथ, सोने के पहाड़ चलें...!"

मुस्नदे अबी यअ़ला, 4920 (8:318)
कंज़ुल् उ़म्माल, 32028 (11:431)

26/10/20 ई.

ये नूर मांद नहीं पड़ेगा

उनकी देरीना और आबाई ख़्वाहिश रही है कि तौह़ीदो रिसालत के इस मुबारक नूर को बुझा दें; मगर, अफ़सोस, कि वो हमेशा ज़लीलो ख़्वार हुए, और ऐसे ही होते रहेंगे;
इन्-शा अल्लाह.

क़ुरआन 9:32 ने उनकी ख़्वारी की, और इस नूर की कामयाबी की बहुत पहले ही सनद दे दी:
"يُرِيدُونَ أَن يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَن يُتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ".

"चाहते हैं कि अल्लाह का नूर अपने मुँह से बुझा दें; और अल्लाह न मानेगा, मगर अपने नूर का पूरा करना; पड़े बुरा मानें काफ़िर."
[कंज़ुल् ईमान]

इसे फिर क़ुरआन 61:8 में दुहराया:
"يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ".

"चाहते हैं कि अल्लाह का नूर अपने मुँहों से बुझा दें, और अल्लाह को अपना नूर पूरा करना (है); पड़े बुरा मानें काफ़िर."
[कंज़ुल् ईमान]
इसी को एक शाइ़र ने बहुत प्यारे अंदाज़ में कहा:

"नूरे ख़ुदा है कुफ़्र की ह़रकत पे ख़न्दाज़न;

फूंकों से ये चिराग़ बुझाया न जाएगा."

तो फ़ैसला कर लो कि किसे चमकते ही रहना है, और किसे बुझकर हलाक होकर ही रहना है?

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
26/10/20 ई.

दुश्मनी मत रखो

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"لاَ تَبَاغَضُوا، وَلاَ تَحَاسَدُوا، وَلاَ تَدَابَرُوا، وَكُونُوا عِبَادَ اللَّهِ إِخْوَانًا، وَلاَ يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلاَثَةِ أَيَّامٍ"،

"आपस में दुश्मनी मत रखो, और न ही एक-दूसरे से जलन रखो, और न ही आपस में रिश्ते तोड़ो, और भाईचारे के साथ अल्लाह के बन्दे बनकर रहो; एक मुसलमान को ये जायज़ नहीं है कि वो अपने भाई से तीन दिन से ज़्यादा जुदाई रखे."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस न. 6065, जिल्द न. 8, पेज न. 19, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1422 हि.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
13/03/21 ई.

धोखेबाज़ साल

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"إِنَّهَا سَتَأْتِي عَلَى النَّاسِ سِنُونَ خَدَّاعَةٌ، يُصَدَّقُ فِيهَا الْكَاذِبُ، وَيُكَذَّبُ فِيهَا الصَّادِقُ، وَيُؤْتَمَنُ فِيهَا الْخَائِنُ، وَيُخَوَّنُ فِيهَا الْأَمِينُ، وَيَنْطِقُ فِيهَا الرُّوَيْبِضَةُ. قِيلَ: وَمَا الرُّوَيْبِضَةُ؟ قَالَ: السَّفِيهُ يَتَكَلَّمُ فِي أَمْرِ الْعَامَّةِ".

"यक़ीनन लोगों पर ऐसे धोखेबाज़ साल आयेंगे, जिनमें झूठे को सच्चा बताया जाएगा, और सच्चे को झूठा कहा जाएगा; और बेईमान को अमानत-दार और अमानत-दार को बेईमान समझा जाएगा; और 'रुवैबिद़ह' बातचीत करेंगे. अर्ज़ की गयी: 'रुवैबिद़ह' क्या है? फ़रमाया: (यानी) बेवक़ूफ़ (लोग भी) लोगों के मामलात में बोलेंगे."

इब्ने माजह व मुस्नदे अह़मद

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
05/12/21 ई.

छः चीज़ों की ज़मानत

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"اضْمَنُوا لِي سِتًّا مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَضْمَنْ لَكُمُ الْجَنَّةَ: اصدُقُوا إِذَا حَدَّثْتُمْ، وَأَوْفُوا إِذَا وَعَدْتُمْ، وَأَدُّوا إِذَا ائْتُمِنْتُمْ، وَاحْفَظُوا فُرُوجَكُمْ، وَغُضُّوا أَبْصَارَكُمْ، وَكُفُّوا

أَيْدِيَكُمْ"،

"तुम मुझे अपनी तरफ़ से छः चीज़ों की ज़मानत (गारंटी) दो, मैं तुम्हें (उन छः चीज़ों के बदले में) जन्नत की ज़मानत देता हूं:

जब बात करो, तो सच बोलो;
और जब वादा करो, तो निभाओ;
और जब अमानत दी जाए, तो उसे अदा करो;
और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो;
और अपनी नज़रें नीची रखो;
और अपने हाथों को (किसी पर ज़ुल्म करने से) रोके रखो."

शुअ़बुल् ईमान, ह़दीस न. 4464, जिल्द न. 6, पेज न. 450, पब्लिकेशन: मक्-तबतुर् रुश्द (रियाद़), फ़र्स्ट एडीशन, 1423 हि. / 2003 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
25/03/21 ई.

जो तुझसे रिश्ता तोड़े

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"صِلْ مَنْ قَطَعَكَ، وَأَعْطِ مَنْ حَرَمَكَ، وَاعْفُ عَمَّنْ ظَلَمَكَ"،

"जो तुझसे रिश्ता तोड़े, तू उससे रिश्ता जोड़; जो तुझे मह़रूम रखे, तू उसे अ़ता कर; जो तुझ पर ज़ुल्म करे, तू उसे माफ़ कर."

शुअ़बुल् ईमान, ह़दीस न. 7725, जिल्द न. 10, पेज न. 418, पब्लिकेशन: मक्-

तबतुर् रुश्द (रियाद़), फ़र्स्ट एडीशन, 1423 हि.

12/03/21 ई.

जो मेरे स़ह़ाबा को बुरा कहते हैं

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"إِذَا رَأَيْتُمُ الَّذِينَ يَسُبُّونَ أَصْحَابِي، فَقُولُوا: لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى شَرِّكُمْ"،

"जब तुम उन्हें देखो जो मेरे स़ह़ाबा को बुरा कहते हैं, तो कहो: 'अल्लाह की लअ़नत हो, तुम्हारे फ़ितने पर'."

तिर्मिज़ी, ह़दीस न. 3866, जिल्द न. 5, पेज न. 697, पब्लिकेशन: मुस़्तफ़ा बाबी ह़लबी (मिस्र), दूसरा एडीशन, 1395 हि. / 1975 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
17/03/21 ई.

ज़मीन: मुतह़र्रिक या साकिन

तह़क़ीक़े आ़ला ह़ज़रत के तआ़रुफ में एक मुख़्तसर गुफ़्तगू

आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) की इस उ़न्वान पर तीन किताबें हैं:

1. "फ़ौज़े मुबीन दर रद्दे हरकते ज़मीन",
2. "नुज़ूले आयाते फुरक़ान बसुकूने ज़मीनो आसमान",
3. "मुईने मुबीन बहरे दौरे शम्स व सुकूने ज़मीन",

इसके अलावा कुछ बह़सें (ज़िमनी तौर पर), "अल् कलिमतुल् मुल्हमह" में भी हैं जो आपने 'Ancient Greek Philosophy' के रद में लिखी;
इन्हें समझने के लिए पहले 'जदीद साइंसी उसूलों (Principles of Modern Science)' और 'मन्तिक़ व फ़लसफ़ा (Logic & Philosophy)' की पूरी जानकारी होना ज़रूरी है;

आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) ने सिर्फ़ 'अक़्ली दलीलें (Rational Proofs)' ही नहीं, बल्कि (किताब न. 2 में) क़ुरआन से, और (किताब न. 1 व 3 में भी कहीं कहीं हाशिये में क़ुरआन और) ह़दीस से नक़्ली दलाइल (Narrative Proofs) भी दिए हैं, जबकि अस्ल में किताब नं. 1 व 3 ख़ालिस Physics, Astrology, Geography, Geometry वग़ैरह के उसूलों से भरी पड़ी हैं, जिनका आजतक कोई तोड़ नहीं पेश कर सका. साथ ही साथ बड़े बड़े वैज्ञानिक जैसे कि 'अल्बर्ट आइन्सटाइन (या आइन्सटीन)', 'आइज़क न्यूटन' वगैरह की थ्योरीज़ को भी उन्हीं के उसूलों (Principles) की बुनियाद पर जड़ से उखाड़ फेंका है. ख़ास तौर पर 'न्यूटन' की 'Gravity', और 'Repulsion' का ज़बरदस्त पीछा किया, और शदीद रद करके इन्हें बात़िल साबित किया;
क़ुरआन व ह़दीस को आगे रखना ही अस्ल बुनियाद हैं आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) की तहक़ीक़ात में, उन्हीं को साबित करने के लिए साइंसी उसूलों पर बहस करते हैं;

ज़रूरत पड़ने पर, यूनानी साइंस के ग़लत नज़रियों को तोड़ने के लिए, 'मन्तिक़ व फ़लसफ़ा (Logic & Philosophy)' का ज़बर्दस्त इस्तेमाल किया है.

आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) की पूरी तहक़ीक़ का मदार 'सूरह फ़ातिर' की

इस आयत पर है, अल्लाह (ﷻ) ने क़ुरआन 35:41 में इरशाद फ़रमाया:

"إِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ أَن تَزُولَا"،

"बेशक, अल्लाह रोके हुए है, आसमानों और ज़मीन को, कि जुम्बिश (हरकत) न करें."
[कंज़ुल् ईमान]

इस आयत की तफ़्सीर ख़ुद सह़ीह़ व ह़सन ह़दीसों से स़ह़ाबा-ए-किराम (रद़ियल्लाहु अ़न्हुम) से मनक़ूल है, जिसमें वाज़िह़ तौर पर ज़मीन की मुत़लक़ ह़रकत की नफ़ी की गयी है, चाहें 'Revolutional (सूरज के इर्दगिर्द)' हो, या 'Rotational (अपने अक्ष/धुरी पर)',

स़ह़ाबा-ए-किराम (रद़ियल्लाहु अ़न्हुम) ने इस आयत से मुत़लक़ ह़रकते ज़मीन की नफ़ी ही मुराद ली है, मुलाह़ज़ा फ़रमायें:

"عن قتادة، قال: بلغ حذيفة أن كعبا يقول: 'إن السماء تدور على قطب كالرّحى.' فقال: كذب كعب، إن اللّٰه يقول: 'إِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّماواتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا'"،

"ह़ज़रत क़तादा (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) से रिवायत है कि ह़ज़रत हुज़ैफा (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) के पास ये ख़बर पहुंची कि ह़ज़रत कअ़बे अहबार (जो नया नया ईमान लाए थे) कहते हैं कि, 'आसमान एक धुरी पर घूमता है जैसे कि चक्की (का पाट).'
तो ह़ज़रत हुज़ैफा (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने फ़रमाया: कअ़ब ने ग़लत कहा. बेशक, अल्लाह फ़रमाता है: 'यक़ीनन, अल्लाह रोके हुए है आसमानों और ज़मीन को, कि जुम्बिश (हरकत) न करें'."

देखें! ह़ज़रत हु़ज़ैफा (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने यही आयत तिलावत की, जो अ़ाला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) की तहक़ीक़ात का मदार है;
इस ह़दीस को बड़े बड़े मुफ़स्सिरीन ने इसी आयत की तफ़्सीर के तह़त रिवायत किया है. जैसे:
'इमाम जलालुद्-दीन सुयूती' ने 'अद् दुर्रुल् मन्सूर' में;
'इमाम शम्सुद्-दीन क़ुरत़बी' ने 'अल् जामिअ़ लि अह़कामिल् क़ुरआन (तफ़्सीरे क़ुरत़बी)' में;
'इमाम इब्ने जरीर त़बरी' ने 'जामिउ़ल् बयान (तफ़्सीरे त़बरी)' में;
'इमाम सय्यिद मह़मूद आलूसी' ने 'रूहु़ल् मअ़ानी' में;
इसके अलावा 'इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी' ने 'अल् इसाबह फ़ी तम्यीज़िस् सह़ाबा' में फ़रमाया:

"وأخرج ابن أبي خيثمة بسند حسن"،

"और (इस ह़दीस) को इब्ने अबी ख़ैसुमा ने, सनदे ह़सन के साथ रिवायत किया."

यहां तक कि 'इमाम अ़ब्दुल क़ाहिर इब्ने त़ाहिर बग़दादी तमीमी (d. 429 हि.)' ने अपनी किताब: 'अल् फ़र्क़ बैनल् फिरक़' में ज़मीन के सुकून (रुके हुए होने) पर अहले सुन्नत का इज्माअ़ नक़्ल किया है, वो लिखते हैं:

" وأجمعوا على وقوف الأرض وسكونها، وأن حركتها إنما تكون بعارض يعرض لها من زلزلة ونحوها"،

"ज़मीन के रुके व ठहरे हुए होने पर (अहले सुन्नत के) लोगों का इजमाअ़ है. ज़मीन की हरकत ज़लज़ले वग़ैरह जैसी अ़ारिज़ी चीज़ों की वजह से 'अ़ारिज़ी (Temporary)' होती है."

अल्-फ़र्क़ बैनल् फिरक़, तीसरी फ़स्ल, दूसरा रुक्न, पेज नं. 261, पब्लिकेशन: अल् मक्-तबतुल् अ़स्-रिय्यह (बेरूत), 1439 हि. / 2018 ई.
साइंस का हर दावा सही नहीं, बहुत सी चीज़ों में ये क़ुरआन व ह़दीस से सख्त इख़्तिलाफ़ रखती है;
कुछ जाहिल, जिन्हें इस्तिन्जा करने तक की शरई तमीज़ नहीं है, इस बात पर आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह) का मज़ाक उड़ाते हैं, उनसे मेरा सवाल है:

(1) क्या कोई शख़्स, अगर आक़ा (ﷺ) का क़ौले मुबारक न दे सके, तो अस्लाफ में से किसी सहाबी, या किसी इमाम, या किसी मुज्तहिद, या किसी मुफस्सिर, या किसी मुहद्दिस ही का कोई क़ौल दे सकता है, जिसमें क़ुरआन व हदीस से ज़मीन की हरकत का सुबूत दिया हो?

(2) हमारे बुज़ुर्गों ने हर एंगल से इस्लामी अक़ाइद का दिफ़ाअ़ किया, तो क्या वो इस बात को जानते नहीं थे या फिर हमें इस मैटर का हल ही दिए बिना ही चले गए, इस दारे फानी से?

(3) क़ुरआन या हदीस से कोई भी एक वाज़िह दलील नहीं दे सकता, जिसमें ज़मीन को मुतहर्रिक (घूमता हुआ) कहा गया हो?

(4) ख़ुद वह्हाबिय्यह के बड़े-बड़े मुअ़तबर उ़लमा भी 'ज़मीन के रुके' होने का नज़रिया रखते हैं. हम सुबूत के तौर पर उनकी तक़रीरों या फ़तावा के कुछ लिंक आपको देते हैं:
(a) इब्ने बाज़ (Former Vice chancellor of Madina University)
https://m.youtube.com/watch?feature=youtu.be&v=nbzh7p2ZlFQ

(b) सालिह़ फ़ौज़ान (Reliable of modern Wahhabiyyah)
https://m.youtube.com/watch?v=r7sO9vBecms&feature=youtu.be

(c) इब्ने उ़सैमिन (Reliable Muhaddith & Mufassir of Modern Wahhabiyyah)
https://m.youtube.com/watch?v=nlfWpFmqftQ&feature=youtu.be

(d) अब्दुल अ़ज़ीज़ बलात (Former Grand Mufti of Saudi)
https://m.youtube.com/watch?feature=youtu.be&v=-I2ZYodJT1s

(e) मुस्तफ़ा अ़दवी (Well known mufti of Wahhabiyyah)
https://m.youtube.com/watch?feature=youtu.be&v=mUk-MkX5nqw

(5) क्या वह्हाबिय्यह अपने इन मौलवियों को भी इसी तरह गालियां देंगे, जिस तरह अ़ाला हज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) को दे रहे हैं?

(6) क्या वह्हाबिय्यह अपने इन मौलवियों को भी 'जाहिल मुल्ला' कह कर पुकारेंगे, जिस तरह अ़ाला हज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) के बारे में भौंक रहे हैं?

(7) 'अ़लीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी' के बानी 'सर सय्यिद अह़मद ख़ान' का भी यही नज़रिया था कि ज़मीन नहीं घूमती, इसने भी इस टॉपिक पर एक किताब लिखी, जिसका नाम है: "क़ौले मतीन दर इब्त़ाले ह़रकते ज़मीन",

ये किताब AMU के लाइब्रेरी में भी मौजूद है, और इस किताब को pdf में डाउनलोड करना चाहें, तो ये लीजिए उसका लिंक:
https://archive.org/details/SirSyedAhmadKhanQaulIMatinDarIbtalIHarkatIZamin1848Urdu00Complete

एक बात हमेशा याद रखें:
"इस्लाम की बुनियाद पर साइंस को परखा जाएगा, न कि साइंस की बुनियाद पर इस्लाम को."
आज कल कुछ लोग, ज़बर्दस्ती क़ुरआन और हदीस के मअ़ना को अपनी अक़्ल के मुताबिक़ मोड़ने में लगे हुए हैं. अरबी का एक ह़र्फ़ भी नहीं आता, और क़ुरआन और हदीस समझने का दावा करने में लगे हैं.

अल्लाह तआ़ला समझ दे ऐसे लोगों को;
आमीन बिजाहि ह़बीबी (ﷺ)

नोट: मैंने अपनी इस तह़रीर में किसी तरह की कोई साइंटिफिक बहस नहीं की है, बल्कि सिर्फ़ बतौरे तआ़रुफ़ व तम्हीद ही ये बातें लिखी हैं.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
05/06/20 ई.

लो, बुख़ारी में वुस्अ़ते नज़रे नुबुव्वत देखो

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"مَا مِنْ شَيْءٍ لَمْ أَكُنْ أُرِيتُهُ إِلَّا قَدْ رَأَيْتُهُ فِي مَقَامِي هَذَا"،

"जो चीज़ मुझे नहीं दिखाई गयी थी, यक़ीनन मैंने उसे अपनी इस जगह से देख लिया."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस न. 922, जिल्द न. 2, पेज न. 10, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह़ (बेरूत), फ़र्स्ट एडीशन, 1422 हि.

22/06/21 ई.

झगड़ालू

प्यारे आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"إِنَّ أَبْغَضَ الرِّجَالِ إِلَى اللَّهِ، الأَلَدُّ الخَصِمُ"،

"यक़ीनन अल्लाह के नज़दीक सबसे बुरा शख़्स वो है, जो बहुत झगड़ालू हो."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस न. 2457, जिल्द: 3, पेज न. 131, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह (बेरूत), पहला एडीशन, 1422 हि.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
23/01/21 ई.

'इब्ने वह़्शिय्यह

मशहूर मुस्लिम कैमिस्ट 'इब्ने वह़्शिय्यह अन्-नबत़ी (d. 930 ई.)' ने एक तारीख़ी किताब लिखी, जिसका नाम है: 'शौक़ुल् मुस्तहाम फ़ी मअ़रिफ़ति रुमूज़िल् अक़्लाम',

यही वो किताब है कि जिसके ज़रिए सबसे पहले मिस्र के बहुत पुराने 'हाइरोग्लिफ़िक्स रस्मुल् ख़त़्त (Hieroglyphics Script)' को ह़ल किया गया. मगर वही पुरानी चाल, जिसके ज़रिए मुसलमानों का नाम और उनका काम तारीख़ से छुपाया गया, यहां भी चली गयी; और इस कारनामे को 'इब्ने वह़्शिय्यह' की तरफ़ मन्सूब न करके फ़्रांसीसी लुग़वी 'चैम्पोलियन (d. 1832 ई.)' की तरफ़ मन्सूब किया गया;

इसके बर ख़िलाफ़ हक़ीक़त ये है कि 'चैम्पोलियन' ने 1822 ई. में इस काम में कामयाबी हासिल की, जबकि इससे तक़रीबन 800 साल पहले ही मुस्लिम कैमिस्ट 'इब्ने वह़्शिय्यह' ने इसे हल कर दिया था, और इनकी इस मज़्कूरा किताब 'शौक़ुल् मुस्तहाम' के मख़्त़ूते (manuscript) का अंग्रेज़ी तर्जमा, 'चैम्पोलियन' की कामयाबी वाली साल 1822 ई. से 16 साल पहले ही, 1806 ई. में लंदन से ऑस्ट्रिया के एक मुस्तशरिक़ 'जोसेफ हैमर (d. 1856 ई.)' की तह़क़ीक़ से 'Ancient Alphabets & Hieroglyphic Characters Explained' के नाम के साथ छप चुका था. इसकी पीडीएफ फाइल आर्काइव (archive) से डाउनलोड कर सकते हैं.

'मुजाहिद' बनने वाले कुछ बच्चों के नाम

फ़ेसबुक पर मौजूद, यूट्यूब के सहारे से 'मुजाहिद' बनने वाले कुछ बच्चों के नाम:

हमारा यक़ीने कामिल है कि:
1. शरीअ़ते मुत़ह्हरा के हिसाब से गुस्ताख़े रसूल, वाजिबुल् क़त्ल है. ख़ुद इसपर मेरी इंग्लिश और हिंदी में मुदल्लल तह़रीरें, और 'ईसाईयों', 'हिन्दुओं', 'लिबरलों' व 'ग़ामिदिय्यों' के साथ मुबाह़से भी मौजूद हैं;

2. गुस्ताख़े रसूल 'मुबाहुद् दम' है, उसका ख़ून रायगां है. इसलिए उसे मारने वाले से, इसके क़त्ल के सबब, क़ियामत के दिन कोई हिसाब नहीं होगा;

3. गुस्ताख़े रसूल को बत़ौरे ह़द क़त्ल किया जाएगा, इसलिए तौबा करने पर भी उसकी सज़ा माफ़ नहीं होगी;

4. मगर ये ह़द क़ायम करना, सिर्फ़ हुक्काम (people of authority) का काम है, कोई आ़म शख़्स बिना इजाज़ते अमीर, क़ानून अपने हाथ में लेकर किसी पर ह़द क़ायम नहीं कर सकता, वर्ना 'Rule of law' की कोई अहमियत नहीं;

5. अगर कोई आ़म शख़्स, अपने हाथ में क़ानून लेता है तो हुक्काम को उसे 'तअ़ज़ीरन्' सज़ा देने का इख़्तियार है. जैसा कि तमाम कुतुबे फ़िक़्ह में मौजूद है;

6. ये हुक्म इस्लामी मुल्क का है, जहां सुल्त़ान या उसके नायबीन मौजूद हों. लेकिन अगर मुल्क इस्लामी नहीं, जहां ज़ालिम व जाबिर हुक्मरानों का क़ब्ज़ा हो, तब तो इससे भी सख़्त हुक्म है, जैसा कि 'हुसामुल् ह़रमैन अ़ला मन्ह़रिल् कुफ़्रि वल् मैन' में कहा गया कि:

"هذا فى الممالك الإسلامية، فكيف بغيرها؟"

"जब ये हुक्म (कि आम आदमी स्टेट की इजाज़त के बिना, गुस्ताख़ को क़त्ल नहीं कर सकता) इस्लामी मुल्कों में है, तो इसके अलावा (काफ़िर हुकूमत वाले मुल्कों) में कैसे जायज़ हो सकता है?"
ये इ़बारत बहुत ग़ौर से पढ़ें, समझें, और अपने जोश को पीठ पीछे फैंक कर शरीअ़ते मुत़ह्हरा को तरजीह़ दें. इमामे अहले सुन्नत (अ़लैह़िर्रह़मह) की

अ़ज़ीम किताब: 'हुसामुल् ह़रमैन अ़ला मन्ह़रिल् कुफ़्रि वल् मैन' में 10 से ज़्यादा मक़ामात पर ये बात कही गई है कि ह़द क़ायम करना, अ़वाम का काम नहीं, बल्कि हुक्काम (people of authority) का काम है;

पहली, दूसरी, और तीसरी चीज़ों का कोई इंकार नहीं है, बल्कि इनके ह़क़ होने में राई के दाने के बराबर भी कोई शक नहीं है;

मगर यूट्यूब पर जोशीले बयानात सुनकर 'मुजाहिद' बनने वाले नादान बच्चों से मेरे सीधे से सवालात:

1. शरीअ़त के चार उसूल: क़ुरआन, ह़दीस, इज्माअ़ और क़ियासे शरई़ से, कोई एक दलील लाकर दे दें, कि जिसमें लिखा हो कि बिना इजाज़ते हुक्काम, आ़म शख़्स भी ह़द क़ायम कर सकता है?

अगर ये न हो सके तो —

2. कुतुबे फ़िक़्ह में से किसी एक का भी हवाला पेश करें, कि जिसमें लिखा हो कि आ़म आदमी, बिना इजाज़ते हुक्काम, ख़ुद से ह़द क़ायम कर सकता है?
अगर ये भी न हो सके तो —

3. किसी भी मुअ़तबर मुफ़्ती का फ़तवा पेश करें, जिसने अपने फ़तवा में ये लिखा हो कि आ़म आदमी भी, बिना इजाज़ते हुक्काम, ख़ुद से ह़द क़ायम कर सकता है?

अगर ये भी न हो सके तो —

4. कोई दलील ऐसी लाएं, जिसमें लिखा हो कि ये हुक्म सिर्फ़ इस्लामी मुल्कों का है, मगर ग़ैर इस्लामी मुल्कों में कोई भी ह़द क़ायम कर सकता है?

अगर ये भी न हो सके तो —

5. ये दिखा दें कि मुर्तद्द पर आ़म आदमी ह़द क़ायम नहीं कर सकता, हां गुस्ताख़ पर आ़म आदमी ह़द क़ायम कर सकता है?

अगर ये भी नहीं हो सकता तो —

6. ये दिखाएं कि हिंद के जैसे हालात हैं, ऐसे हालात में ह़द क़ायम करने वाला शरई हुक्म बदल जाता है, और ह़द कोई भी क़ायम कर सकता है?

अगर ये भी नहीं बता सकते तो —

7. ये दिखाएं कि बिना हालते जुनून में पहुंचे, इ़श्क़ ख़ुदमुख़्तार हो जाता है, अब उसे शरीअ़त की ज़रूरत नहीं?

फ़ेसबुक के प्यारे और नादान 'मुजाहिद' बच्चो!

अगर इनमें से किसी भी सवाल का जवाब तुम नहीं दे सकते, तो पास के किसी बड़े मुफ़्ती से ये सारे सवालात पूछो, और इनके मुदल्लल जवाबात समझो, ताकि बच्चों वाली आदत समझदारी में बदल जाए;
अब आजकल के कमसिन बच्चे, जिन्हें सही से उर्दू लिखना/पढ़ना नहीं आती, पाकी/नापाकी के मसाइल नहीं आते, वो उ़लमा को शरीअ़त सिखाने

में लगे हैं?
हाँ सिखाएँगे वो, क्यूंकि ये भी क़ियामत की निशानी में से है.

'मुजाहिद' बच्चो!

बहादुरी और बेवक़ूफ़ी में फ़र्क़ समझने की कोशिश करो, वर्ना बहुत देर हो जाएगी!
मतलब अब इन जोशीले लड़कों ने, शायद अपना ये दिमाग़ बना लिया है कि इनके अलावा कोई आ़शिक़े रसूल नहीं बचा;
और न ही गुस्ताख़ी से कोई परेशान है?
नऊ़ज़ुबिल्लाहि मिन् ज़ालिक!

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
29/06/22 ई.

मल्ऊ़न 'वसीम रिज़वी'

मल्ऊ़न 'वसीम रिज़वी', एक राफ़िज़ी (शीआ़) है, और राफ़िज़ियों के अ़क़ीदे के मुताबिक़ मौजूदा क़ुरआन नाक़िस है;
तो उसका सहारा लेकर इसे तमाम मुसलमानों पर थोपना ऐसा ही है, जैसे कि आर्य समाजियों में से कोई कहे कि:

"हिंदुओं की मशहूर धार्मिक किताबें 18 पुराण असली नहीं, बल्कि मिलावट की हुई हैं",
फिर कोई शख़्स, इस बात को तमाम हिन्दुओं पर थोप डाले;

क्यूँकि आर्य समाज वालों के मुताबिक़ पुराण तह़रीफ़ शुदह हैं, सिर्फ़ वेद ही असली हालत में मौजूद हैं. अगरचे वो भी असली हालत में नहीं हैं;

लिहाज़ा,
जिस तरह पौराणिक हिन्दुओं के यहां आर्य समाजियों की ये बात कोई हैसियत नहीं रखती;

इसी तरह इस मरदूद वसीम राफ़िज़ी की ये बातें हम मुसलमानों के यहां कोई हैसियत नहीं रखतीं.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
12/03/21 ई.

शादी के वक़्त सीता की उ़म्र 6 साल थी

शादी के वक़्त सीता की उ़म्र 6 साल थी:
जो हिन्दू 'वाल्मीकि रामायण' को अपनी मुअ़तबर किताब मानते हैं, वो इस ह़क़ीक़त को झुठला नहीं सकते कि शादी के वक़्त सीता की उ़म्र छः साल थी;

अब ज़रा देखते हैं कि 'वाल्मीकि रामायण' में सीता की उम्र क्या बताई गयी है:

"दुहिता जनकस्याहं मैथिलस्य महात्मनः।
सीता नाम्नास्मि भद्रं ते रामस्य महिषी प्रिया।।"

"ब्रह्मन! आपका भला हो. मैं मिथिलानरेश जनक की पुत्री, और अवध नरेश श्रीरामचन्द्र जी की प्यारी रानी हूं. मेरा नाम सीता है."

"उषित्वा द्वादश समा इक्ष्वाकूणां निवेशने।
भुन्जाना मानुषान् भोगान् सर्वकामसमृद्धिनी॥"

"विवाह के बाद बारह वर्षों तक, इक्ष्वाकुवंशी महाराज दशरथ के महल में रहकर, मैंने अपने पति के साथ सभी मानवोचित भोग भोगे हैं. मैं वहां सदा मनोवांछित सुख-सुविधाओं से सम्पन्न रही हूं."

"तत्र त्रयोदशे वर्षे राजातन्त्रयत प्रभुः।
अभिषेचयितुं रामं समेतो राजमन्त्रिभिः॥"

"तेरहवें वर्ष के प्रारम्भ में, सामर्थ्यशाली महाराज दशरथ ने राजमन्त्रियों से मिलकर सलाह की, और श्रीरामचन्द्र जी का युवराज पद पर अभिषेक करने का निश्चय किया."

"मम भर्ता महातेजा वयसा पञ्चविंशकः।
अष्टादश हि वर्षाणि मम जन्मनि गण्यते॥"

"उस समय मेरे महातेजस्वी पति की अवस्था पच्चीस साल से ऊपर की थी, और मेरे जन्मकाल से लेकर वनगमनकाल तक मेरी अवस्था वर्ष गणना के अनुसार अठारह साल की हो गयी थी."

वाल्मीकि रामायण, अरण्यकाण्ड, सर्ग नं. 47, श्लोक नं. 3-5-10, प्रकाशक: गीता प्रेस (गोरखपुर)

अब थोड़ा-सा गणित लगाएं:

• वनवास के वक़्त सीता की कुल उम्र = 18 साल

• विवाह से लेकर वनवास तक दशरथ के महल में बीता समय = 12 साल
• अब 18 - 12 = 6 साल,

मात्र 6 साल की आयु में सीता का विवाह हुआ. इसपर मीडिया कब चर्चा करेगी?
अगर हमारा गणित ग़लत है, तो 'स्कन्ध पुराण' की स्पष्ट गवाही सुन लें:

"ईश्वरस्य धनुर्भग्नं जनकस्य गृहे स्थितम्।
रामः पंचदशे वर्षे षड्वर्षां चैव मैथिलीम्॥

उपयेमे तदा राजन्रम्यां सीतामयोनिजाम्।
कृतकृत्यस्तदा जातः सीतां संप्राप्य राघवः॥9॥"

"ईश्वर का वो धनुष, जो जनक के घर में था, टूट गया. राम ने पंद्रह वर्ष की आयु में, मिथिला के राजा की छः वर्ष की अयोनिजा 'सीता' से विवाह किया।"

स्कन्ध पुराण, खंड नं. 3 (ब्राह्म खण्ड), उपखण्ड नं. 2 (धर्मारण्य खण्ड), अध्याय नं. 30, श्लोक नं. 8-9

कृष्ण की हैसियत सनातन धर्म में

कृष्ण की हैसियत सनातन धर्म में भगवान की है. इसे विष्णु का 8वां अवतार माना जाता है. इसके बाप का नाम 'वासुदेव' और मां का नाम 'देवकी' था. कृष्ण के बाप 'वासुदेव' की 14 पत्नियों में से, एक पत्नी 'देवकी' थी. कृष्न इन्हीं की 8वीं औलाद था;
कृष्ण की पैदाइश तीसरे युग यानी 'द्वापर युग' में, भाद्रपद महीने में कृष्ण पक्ष

की आठ तारीख़ को हुई;
इसकी पैदाइश का किस्सा कुछ यूं है कि 'देवकी', 'कंस' की बहन थी. 'कंस' मथुरा का एक ज़ालिम राजा था. उसने हातिफ़े ग़ैबी से सुना था कि तेरी बहन 'देवकी' के आठवें बेटे के हाथों तू मारा जाएगा;
इससे बचने के लिए 'कंस' ने अपनी बहन 'देवकी' और बहनोई 'वसुदेव' को मथुरा के कारागार में डाल दिया. मथुरा के कारागार में ही मज़्कूरा तारीख़ में कृष्ण की पैदाइश हुई;
'कंस' के डर से इसके बहनोई 'वसुदेव' ने नौमौलूद कृष्ण को रात में ही यमुना पार गोकुल में 'यशोदा' के यहाँ पहुँचा दिया. फिर गोकुल में ही' यशोदा' और 'नन्दा बाबा' ने कृष्ण को पाला;

कृष्ण के मुआ़सिर 'महर्षि वेदव्यास' के ज़रिए लिखी गयी दो अहम किताबें: 'श्रीमदभागवत पुराण', और 'महाभारत' में 'कृष्ण' की सवानिह़ तफ़्सील से लिखी गयी है;

कृष्ण का सबसे बड़ा कारनामा जो माना जाता है, वो है 'भगवदगीता' में मौजूद उसके पैग़ामात;
'गीता' अस्ल में 'कृष्ण' और 'अर्जुन' की, महाभारत की जंग के दौरान होने वाली, गुफ़्तगू है. जो हिन्दुओं की दूसरी किताबों के मुक़ाबले में सबसे ज़्यादा पढ़ी जाती है. गीता में दिए गए उपदेश के लिए 'कृष्ण' को 'जगतगुरु' का सम्मान भी दिया जाता है;

कृष्ण ने 16108 कुंवारी लड़कियों से शादी की. जिनमें से 8 ख़ास पत्नियां थीं, और उनमें भी सबसे ख़ास 'रुक्मिणी' थी. 'कृष्ण' से शादी के वक़्त 'रुक्मिणी' की उम्र 8 साल थी, जिसका ज़िक्र 'स्कंध पुराण, खंड नं. 5, उपखंड नं. 3, अध्याय नं. 142, श्लोक नं. 8-79' में बहुत तफ़्सील से किया

गया है. यहां तक कि 'भागवतपुराण, स्कन्ध नं. 10, अध्याय नं. 53, श्लोक नं. 51' में भी लिखा है कि 'कृष्ण' से शादी के समय 'रुक्मिणी' नाबालिग थी; जबकि 'ब्रह्मवैवर्त पुराण, कृष्ण जन्म खंड, अध्याय नं. 105, श्लोक नं. 1-10' तक इस बात का भी ज़िक्र है कि 'रुक्मिणी' बच्चों वाले खेल खेलती थी उस समय;

और 16108 पत्नियों से शादी और रात बिताने का ज़िक्र 'ब्रह्म पुराण, अध्याय नं. 95, श्लोक नं. 11-18', और 'विष्णु पुराण, खंड नं. 5, अध्याय नं. 28, श्लोक नं. 1-5' में तफ़्सील से किया गया है;

कृष्ण की मौत इस तरह हुई कि एक 'जारा' नाम के शिकारी ने हिरन को तीर मारा, जो कृष्ण के पैर में आकर लगा, जिससे उसकी मौत हो गयी, जैसे कि 'विष्णु पुराण, खंड नं. 5, अध्याय नं. 37, श्लोक नं. 61-69' में लिखा है. मगर 'स्कंध पुराण, खंड नं. 2, उपखंड नं. 2, अध्याय नं. 12, श्लोक नं. 118' में लिखा है कि तीर कृष्ण के दिल में लगा जाकर; और ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि कृष्ण को पहले ही ब्राह्मणों ने श्राप दिया था, जैसा कि 'भागवतपुराण, स्कन्ध नं. 11, अध्याय नं. 1, श्लोक नं. 23-25' में ज़िक्र हुआ है;

फिर कृष्ण की मौत के बाद इसकी 8 ख़ास पत्नियों ने ख़ुद को कृष्ण की चिता में ही जला डाला, जैसा कि 'विष्णु पुराण, खंड नं. 5, अध्याय नं. 38, श्लोक नं. 1-8' में बताया गया; और बाक़ी पत्नियों को 'डाकुओं' ने इग़वा कर लिया, जैसा कि 'देवी भागवतम्, स्कन्ध नं. 2, अध्याय नं. 28, श्लोक नं. 1-23' में साफ़ साफ़ ज़िक्र किया गया है, कि कृष्ण की मौत के बाद उनके भाई 'बलराम' की भी मौत हो गयी, और 'द्वारिका' शहर को समुन्दर में डुबा दिया गया, और कृष्ण की सारी दौलत और पत्नियों को डाकुओं ने

किडनैप कर लिया. यही बात 'लिंग पुराण, खंड नं. 1, अध्याय नं. 69, श्लोक नं. 86-87', में है. और यही ज़िक्र 'देवी भागवतम्, स्कंध नं. 4, अध्याय नं. 25, श्लोक नं. 58-61' में भी है कि बची हुई सब पत्नियों को डाकू ले गए; और पत्नियों को डाकू इसलिए ले गए थे क्यूंकि ख़ुद कृष्ण ने ही इन्हें श्राप (बद्दुआ) दिया था कि तुम्हें डाकू ले जाएंगे. और बद्दुआ को वजह से थी कि कृष्ण की मौजूदगी में ही इसकी पत्नियों के दिल में, 'कृष्ण' के बेटे 'साम्ब' (जो कि कृष्ण की पत्नि 'जाम्बवती' से हुआ था) के लिए प्यार पैदा हो गया, जिससे 'कृष्ण' ने ग़ुस्से में अपनी सारी पत्नियों को बद्दुआ दे डाली, और 'साम्ब' को भी. जैसा कि 'पद्-म पुराण', में तीन जगह इसका तफ़्सीली ज़िक्र आया है:

पद्-म पुराण, 1.23.74b-87a;
पद्-म पुराण, 1.23.91-121;
पद्-म पुराण, 1.23.130b-142;

हिन्दुओं के मुताबिक़ चार युग (दौर) हैं:

1. सतयुग (1,728,000 साल);
2. त्रेतायुग (1,296,000 साल);
3. द्वापर (864,000 साल);
4. कलियुग (432,000);

इनमें पहले तीन युग गुज़र चुके हैं, और अब आख़िरी युग 'कलियुग' चल रहा है;

राम का तअ़ल्लुक़ दूसरे युग 'त्रेतायुग' से था, जबकि कृष्ण का तअ़ल्लुक़ तीसरे युग 'द्वापर' से था;

यानी राम पहले आया, और कृष्ण बाद में.

तअ़ज़ियह की तअ़ज़ीम

आ़ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत (रद़ियल्लाहु अ़न्हु)
अपने फ़तावा में तह़रीर फ़रमाते हैं:

"तअ़ज़ियह की तअ़ज़ीम,
बिद्‌अ़त (है)."

फ़तावा रज़विय्यह, 6:608

एक जगह मज़ीद तह़रीर फ़रमाते हैं:
"तअ़ज़िया-ए-राइजा बनाने को अच्छा जानना,
बिद्‌अ़ते शीआ़ की तह़सीन (है)."

फ़तावा रज़विय्यह, 6:442

मगर एक बात ज़रूर याद रखें, कि जो सुन्नी मौजूदा तरीक़े पर तअ़ज़िया-दारी कर रहा है, इसका मतलब ये नहीं है कि वो सुन्नी न रहा;
यक़ीनन वो सुन्नी ही रहा, क्यूँ कि तअ़ज़िया-ए-राइजा बिद्‌अ़त ज़रूर है, मगर बिद्‌अ़ते अ़मली है, न कि बिद्‌अ़ते इअ़तिक़ादी;
और बिद्‌अ़ते अ़मली से उसे सुन्नियत से ख़ारिज करके उसपर राफ़िज़ी होने का फ़तवा लगाना ज़ुल्म है;

इस मस्‌अले पर इमामे अहले सुन्नत ने नस़्स फ़रमाई, लिखते हैं:
"तअ़ज़िया-दारी एक बिद्‌अ़ते अ़मली है, वो इस ह़द तक नहीं कि इसके मुर्तकिब (मआ़ज़ल्लाह) राफ़िज़ी, वह्हाबी वग़ैरहुम् ख़ुबसा की मिस्ल

हों..........वो अ़क़ाइदे ज़रूरिय्या-ए-अहले सुन्नत के भी मुन्किर नहीं, न मह़बूबाने ख़ुदा की (मआ़ज़ल्लाह) तौहीन करते हैं, न किसी मह़बूबे बारगाह से (मआ़ज़ल्लाह) दुश्मनी रखते हैं, फिर इन (राफ़िज़ी, वह्हाबी) ख़बीसों से इनको क्या निस्बत!? ये अ़क़ीदतन् हम में से हैं, और जो कुछ करते हैं पेशे ख़ुद मुह़ब्बते मह़बूबाने ख़ुदा की निय्यत से करते हैं. बराहे जहालत व नादानी, इसमें लहवो लइब, व अफ़्आ़ले नाजायज़ शामिल करते हैं..!"

फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द न. 8, पेज न. 455, पब्लिकेशन: रज़ा फाउंडेशन (लाहौर)

इसीलिए तअ़ज़िया-दारी के मामले में बहुत ही नपी-तुली और इन्साफ़ वाली बात कही जाए;
न वह्हाबिय्यह की तरह उसे कुफ़्रो शिर्क कहा जाए,
और न ही राफ़िज़िय्यों की तरह ऐ़ने मुह़ब्बते अहले बैत;
बल्कि वो इंसाफ भरी बात, जो इमामे अहले सुन्नत ने अपने फ़तावा रज़विय्यह में लिखी है.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
11/08/21 ई.

मुसीबतें भी निअ़मत हैं

दीन के लिए मैदाने जंग में तलवार का ज़ख़्म भी इतनी तकलीफ़ नहीं देता है; जितनी तकलीफ़ मुआ़शरे की तरफ़ से लगाई जाने वाली तुहमतों और इल्ज़ामों से होती है.
मगर ऐसे शरीरों पर क़ुदरत की मार ज़रूर पड़ती है: क़ुरआन 30:47

"وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءُوهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَانتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرَمُوا وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ"،

"और बेशक हमनें तुम से पहले कितने रसूल उनकी क़ौम की तरफ़ भेजे, तो वो उनके पास खुली निशानियां लाए. फिर हमनें मुजरिमों से बदला लिया, और हमारे ज़िम्म-ए-करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना."
[कंज़ुल् ईमान]

साथ ही, इन शरीरों की मक्कारियों पर स़ब्र करने वालों को बड़ा इनाम मिलता है:

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"إِنَّ عِظَمَ الجَزَاءِ مَعَ عِظَمِ البَلاَءِ، وَإِنَّ اللَّهَ إِذَا أَحَبَّ قَوْمًا ابْتَلاَهُمْ، فَمَنْ رَضِيَ فَلَهُ الرِّضَا، وَمَنْ سَخِطَ فَلَهُ السَّخَطُ"،

"बेशक, बड़ा सवाब बड़ी मुसीबत (पर स़ब्र करने) से ही मिलता है; और जब अल्लाह तआला किसी क़ौम से मुह़ब्बत फ़रमाता है तो उसे मुसीबत में डाल देता है; तो जो (अल्लाह के इस इम्तिह़ान से) राज़ी हुआ, तो उसके लिए (भी अल्लाह की) रज़ा है; और जो नाराज़ हुआ, तो उसके लिए भी (अल्लाह की जानिब से) नाराज़गी है."

सुनने तिर्मिज़ी, ह़दीस न. 2396, जिल्द न. 4, पेज न. 601, पब्लिकेशन: मत़्बअ़ मुस़्तफ़ा बाबी ह़लबी (मिस्र), दूसरा एडीशन, 1395 हि. / 1975 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
30/07/21 ई.

अपना जुर्म दूसरे के सर मत रखो

गुनहगार का गुनाह उसके अपने ही हिस्से में है, न कि किसी दूसरे के. गुनहगार अपने गुनाह से बचने के लिए किसी दूसरे पर तुहमत न लगाए, चूंकि ऐसा करने पर उसके हिस्से में दोगुना गुनाह आ जाएगा. अल्लाह तआ़ला क़ुरआन 4:111-112 में इरशाद फ़रमाता है:

"وَمَن يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا وَمَن يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا".

"और जो गुनाह कमाए, तो उसकी कमाई उसी की जान पर पड़े, और अल्लाह इ़ल्म व ह़िकमत वाला है; और जो कोई ख़त़ा या गुनाह कमाए, फिर उसे किसी बेगुनाह पर थोप दे, उसने ज़रूर बुहतान और खुला गुनाह उठाया." [कंज़ुल् ईमान]

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
11/11/21 ई.

IMĀM AḤMAD RIḌĀ AND CHRISTIAN DOCTOR

ʿĀla Ḥaḍrat Imām Aḥmad Riḍā Khān (d. 1921 CE) never tolerated interference by the Christians in the tenets of Islam, and their objections to the Qur'ān and traditions, but always hotly pursued it. Once a Christian Priest DD (Doctor of Divinity) asserted

that the Qur'ān 31:34 says that no body knows whether embryo in the womb of a woman is a boy or girl, while they had invented a contrivance which could indicate the sex of the embryo.

One, Mr. Qāzī ʿAbdul Waḥeed of Patna sent this objection of the priest to Imām Aḥmad Riḍā in 1315 AH/1897 CE in the shape of a query. In reply to this query Imām Aḥmad Riḍā wrote a book in 1315 AH/1897 AD, entitled:

"الصمصام على مشكك فى آية علوم الأرحام"،

[as-ṣamṣām ʿalā Mushakkikin fī Āyati ʿulūmil arḥām]

{The sharp sword on (the neck of) the skeptic about the verses regarding embryology}

(अस़्-स़म्स़ाम् अ़ला मुशक्किकिन् फ़ी आयति उ़लूमिल् अर्-ह़ाम्)

This book is a Tafseer of Qur'ānic Āyāt about embryology, and refutation of Christian Doctor & clergyman.

In this book, Imām Aḥm Riḍā Khān has thrown full light on every aspect of the problem and has advanced irrefutable arguments. In the end criticizing the irrational beliefs of the Christians, the Imām writes:

"It is deplorable that a strayed nation had the audacity to raise objection on Almighty Allah, who is the Creator of the universe and is Omniscient, Omnipresent and Omnipotent;

Please do Justice!
The Christians who are irrational, irreligious and fuel of Hell, who cannot
distinguish between one and three, who believe in Trinity and then in unity. They attribute a wife and son to Allah, who is much above these satanic notions. They fabricated that Joseph, the carpenter, was the husband of Virgin Mary. When she gave birth to Jesus Christ in the lifetime of Joseph, they declared him to be the son of Allah. After declaring him to be Allah and son of Allah, they got him crucified at the hands of the infidels. They are athirst for his blood. They eat bread taking it to be the flesh of Jesus Christ. They gulp liquor as the blood of Jesus Christ. It is strange that their Allah was reunified and then consigned to Hell. The crucifixion in the presence of God Father is unthinkable. The Christians assailed the innocent prophets with ridiculous blames. They fabricated diabolic notions and said they are divine revelations...!"

As-ṣamṣām ʿalā Mushakkikin fī Āyati ʿulūmil arḥām, Page no. 16-17, Published by Dāwate Islāmī

Note: the translation of Urdu text is taken from 'Gunāh-e-Begunāhī' by Dr. Prof. Mas'ood Aḥmad (ʿalayhir raḥmah), translated in English by Prof. M. A. Qādir.

In this book, the Imām also wrote about 'Ultrasound Machine' far before.

Imām Aḥmad Riḍā debunked him and got bind on him by quoting several Biblical Verses...!

This is the hatred of Imām Aḥmad Riḍā against Christians. Then how some ignorant people slander that he was pro-British!?

Astaghfirullah!

Muḥammad Qāsim al-Qādirī
15/10/20 AD

دیانند سَرَسْوَتی کا احمقانہ اعتراض، اور اس پر حضور صدر الافاضل کا منطقانہ جواب

آریہ سماج کے بانی 'دیاَنَند سَرَسْوَتی' نے اپنی بدنامِ زمانہ کتاب 'سَتْیارْتھ پرکاش' میں قرآنِ مجید کی آیاتِ کریمہ پر جاہلانہ و بہیمانہ اعتراضات کئے، ان میں سے اعتراض نمبر 12 کا ایک جزاور اس کا جواب پیش کرتا ہوں:

قرآن 2 : 35–37 پر زبانِ اعتراض دراز کرتے ہوئے 'پنڈت دیاَنَند سَرَسْوَتی' جنت کی حیاتِ

جاودانی کوغلط ثابت کرتے ہوئے لکھتے ہیں (اصلی متن دیکھیں):

"....जब पार्थिव शरीर है, तो मृत्यु भी अवश्य होना चाहिए...!"

सत्यार्थ प्रकाश, चतुर्दश समुल्लास (यानी बाब न. 14), एतराज़ न. 12, पेज न. 391, डी. पी. बी. पब्लिकेशन, चावड़ी बाज़ार (दिल्ली), 2013 ई.

اب اعتراض کا اردو ترجمہ اور تشریح دیکھیں:

"جب جسمِ خاکی ہے، تو موت بھی ضرور آنی چاہیے".

پنڈت کا کہنا ہے کہ جب انسان جنت میں جائیں گے، تو ہمیشہ کیسے رہیں گے؟ کیونکہ انسان 'جسمِ خاکی' (पार्थिव शरीर) ہیں، اور 'جسمِ خاکی' کو موت آنا لازم ہے، تو جنت میں رہنے والے انسانوں کو بھی موت آنی ہی ہوگی.

اب حضور صدر الافاضل سید نعیم الدین مرادآبادی (علیہ الرحمہ) کے منطقی جواب کو پڑھیں، سمجھیں اور پنڈت کے جہل وحمق کو دیکھیں، آپ لکھتے ہیں:

..."اس سے اور بڑھ کر عجیب تربات آپ (پنڈت جی) نے یہ فرمائی کہ:

"_خاکی جسم ہونے کی وجہ سے، مرنا بھی ضرور لازم آئے گا"._

لکھے - پڑھے سمجھدار آریہ سوچیں تو، کہ اس لزوم کے لئے کیا علاقہ ہے، اور جسمِ خاکی ہونا مرنے کو کیوں مستلزم ہے؟ کیا موت، جسمِ خاکی کا 'ذاتی اقتضا' ہے؟ (اگر) ایسا ہو تو خاکی جسم والوں کا زندہ رہنا ناممکن؛ (کیوں) کہ مقتضائے ذات کا، شَے سے جدا ہونا غیر متصور و نامعقول؛

اور اگر مقتضائے ذات نہ ہو، تو اس کے لئے کوئی علت ہوگی، اور وہ علت، یا خاک ہوگی یا اس کا غیر؛

اگر خاک کہیے تو بھی یہی قباحت لازم، کیونکہ معلول کا علت سے تخلف ناممکن؛ اور (اگر) غیرِ خاک کہیے تو وہ قادرِ مطلق کا ارادہ ہے یا کچھ اور؛ اگر کچھ اور کہیے تب تو تصرفات بالذات غیر کے لئے ثابت ہوتے ہیں اور شرک لازم آتا ہے؛ اور اگر قادرِ مطلق کا ارادہ کہیے تو موت ضروری نہیں ہوتی، اور جسم کی خاکیت کو اس میں کوئی دخل نہیں؛ وہ جس جسم کو جب چاہے موت دے، اور جسے چاہے باقی رکھے؛ جسے وہ فنا نہ کرے، اسے کون فنا کرے گا؟"

(اِحقاقِ حق، صفحہ:128-129)

منطق کی معرفت رکھنے والوں کو، یہ جواب پڑھ کر، ایک سرورِ مُجرد حاصل ہو گا،

اِن شاءاللہ!

قاسم القادری

تاریخ:1/اکتوبر،2020ء

इमाम अबू ह़नीफ़ा के रद में

इमाम ज़ैलई (अ़लैहिर्रह़मह) ने 'नस़्बुर् रायह फ़ी तख़रीजि अह़ादीसिल् हिदायह' में साफ़ साफ़ लिखा:

"فَالْبُخَارِيُّ رحمه الله مَعَ شِدَّةِ تَعَصُّبِهِ و فرط تحمله عَلَى مَذْهَبِ أَبِي حَنِيفَةَ لَمْ يُودِعْ صَحِيحَهُ مِنْهَا حَدِيثًا وَاحِدًا، وَلَا كَذَلِكَ مُسْلِمٌ رحمه الله"،[1]

"इमाम बुख़ारी ने इमाम अबू ह़नीफ़ा के मज़्हब से शदीद तअ़स़्सुब रखने के बावजूद, अपनी 'स़ह़ीह़ (बुख़ारी)' में 'तस्मियह बिल् जहर (नमाज़ में तेज़ से बिस्मिल्लाह पढ़ना)' की कोई ह़दीस ज़िक्र नहीं की. जिस तरह इमाम

मुस्लिम ने नहीं की."

फिर कुछ लाइन बाद लिखते हैं:

"وَالْبُخَارِيُّ كَثِيرُ التَّتَبُّعِ لِمَا يَرُدُّ عَلَى أَبِي حَنِيفَةَ مِنْ السُّنَّةِ، فَيَذْكُرُ الْحَدِيثَ، ثُمَّ يُعَرِّضُ بِذِكْرِهِ، فَيَقُولُ: 'قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَذَا وَكَذَا، وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: كَذَا وَكَذَا'، يُشِيرُ بِبَعْضِ النَّاسِ إلَيْهِ، وَيُشَنِّعُ لِمُخَالَفَةِ الْحَدِيثِ عَلَيْهِ"،[2]

"इमाम बुख़ारी अक्सर ऐसी ह़दीसें तलाशते थे जो इमाम अबू ह़नीफ़ा के रद में हों. इमाम बुख़ारी पहले ह़दीस लाते हैं, फिर ये कहकर इमामे आ़ज़म का ज़िक्र करते हैं: 'अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने ये फ़रमाया, जब कि कुछ लोग ऐसा ऐसा कह रहे हैं', इमाम बुख़ारी 'कुछ लोग' से इमामे आ़ज़म अबू ह़नीफ़ा की तरफ़ इशारा करते हैं, और इस ह़दीस की मुख़ालफ़त करने की वजह से इमामे आ़ज़म पर शदीद तन्क़ीद करते हैं."

[1] नस़्बुर् रायह फ़ी तख़रीजि अह़ादीसिल् हिदायह, किताबुस़् स़लाह, बाब: स़िफ़तिस़् स़लाह, जिल्द न. 1, पेज न. 355, पब्लिकेशन: दारुल् क़िब्लह (जद्दह), फ़र्स्ट एडीशन, 1418 हि. / 1997 ई.

[2] नस़्बुर् रायह फ़ी तख़रीजि अह़ादीसिल् हिदायह, किताबुस़् स़लाह, बाब: स़िफ़तिस़् स़लाह, जिल्द न. 1, पेज न. 356, पब्लिकेशन: दारुल् क़िब्लह (जद्दह), फ़र्स्ट एडीशन, 1418 हि. / 1997 ई.

स़ह़ाबी-ए-रसूल और कंज़ुल् ईमान

अल्लाह (ﷻ) ने क़ुरआन 93:7 में इरशाद फ़रमाया:

"وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدَىٰ"،

"और तुम्हें अपनी मुहब्बत में ख़ुद-रफ़्ता पाया,
तो अपनी तरफ़ राह दी." [कंज़ुल् ईमान]

अ़ाला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने इस आयत में लफ्ज़े 'द़ाल्ल' का तरजमा: 'मुहब्बत में ख़ुद-रफ़्ता', यानी 'मुहब्बत में डूबा हुआ' या 'मुहब्बत में खोया हुआ' किया है. जबकि बहुत से लोग इसका ज़ाहिरी तरजमा 'गुमराह' करके बहुत बड़ी ग़लती कर गए;

ये वही इश्क़ भरा तरजमा है जो 637 ई. (16 हि.) में 'जंगे ह़लब (Battle of Aleppo)' में ईसाई क़िला फ़तह़ होने पर ह़ज़रत अबू उ़बैदह इब्ने जर्राह़ (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने रोमी फ़ौज के कमांडर और ह़लब के अ़ज़ीम क़िले के मालिक: 'यूक़न्ना' के सामने किया था. मुसलमानों की फ़तह़ होने पर 'यूक़न्ना' ने हथियार डाल दिए, और इस्लाम कुबूल कर लिया. इसके बाद ह़ज़रत अबू उ़बैदह (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने ह़ज़रत यूक़न्ना के सामने यही आयत तिलावत की, तो आप लफ्ज़े 'द़ाल्ल' के ज़ाहिरी मअ़ना 'गुमराह' को ध्यान में रखते हुए, सख़्त तअ़ज्जुब में पड़ गए. तो आपने ह़ज़रत अबू उ़बैदह से हैरानी की हालत में पूछा:

"अल्लाह ने आक़ा (ﷺ) की तरफ़ 'द़लालत (यानी गुमराह होने)' की निस्बत क्यूँ की, जबकि आक़ा (ﷺ) अल्लाह के यहां बहुत बुलंद मर्तबे वाले हैं?"

आपने ये सवाल इसलिए किया क्यूँकि आप अभी अभी नया ईमान लाए थे, और क़ुरआन के अल्फाज़ की गहराई में नहीं पहुंच पाये थे, आपके ख़्याल में लफ्ज़े 'द़ाल्ल' का ज़ाहिरी तरजमा, यानी 'गुमराह' मौजूद था, आप असली मअ़ना को नहीं समझ पाये थे. इसपर हज़रत अबू उ़बैदह (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने इरशाद फ़रमाया कि यहां 'द़ाल्ल' का मतलब 'गुमराह', या 'भटकने वाला' नहीं है, बल्कि इसका मतलब ये है:

"وجدناك ضالا في تيه محبتنا، فهديناك إلى مشاهدتنا"،

"और हमने आपको अपनी मुहब्बत के जंगल में ख़ुद-रफ़्ता पाया, तो अपने दीदार के लिए राह दिखाई."

फ़ुतूहुश् शाम (लिल् वाक़िदी), 1:265, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), पहला एडीशन, 1417 हि./1997 ई.

बिल्कुल इसी की तरह तरजमा, 'कंज़ुल् ईमान' में किया गया है;

ये वाक़िआ हमनें अ़ल्लामा अ़ब्दुस् सत्तार हम्दानी (ह़फ़िज़हुल्लाहु व रआ़हु) की मशहूर किताब: 'मर्दाने अ़रब' की दूसरी जिल्द से लिखा. ह़ज़रत हम्दानी साहब ने 'जंगे ह़लब' के बाब में 'फ़ुतूहुश् शाम (लिल् वाक़िदी)' के हवाले से यही लिखा है कि ये तफ़्सीर हज़रत अबू उ़बैदह इब्ने जर्राह़ (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने की थी. जबकि कल शाम को ही फ़कीर ने 'फ़ुतूहुश् शाम (लिल् वाक़िदी)' के दो नुस्खों की तरफ़ रुजूअ़ किया तो दोनों में हज़रत

अबू उ़बैदह (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) की जगह ह़ज़रत मुआ़ज़ इब्ने जबल (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) का नाम पाया;

ह़ज़रत यूक़न्ना की गुफ़्तगू हो तो ह़ज़रत अबू उ़बैदह ही से रही है, मगर इस लफ़्ज़े 'ज़ाल्ल' की तफ़्सीर, गुफ़्तगू ही के दरमियान ह़ज़रत मुआ़ज़ इब्ने जबल (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने की. मुमकिन है कि अ़ल्लामा साहब के पास जो नुस्खा हो, जिससे उन्होंने ये वाक़िआ़ नक़्ल किया हो, उसमें ह़ज़रत अबू उ़बैदह इब्ने जर्राह़ ही का नाम दिया गया हो;
मज़ीद ये कि इस में हमने 'मह़ब्बतिना' की जगह 'सुह़्बतिना (हमारी क़ुरबत)' लफ्ज़ पाया;

हासिले कलाम ये है कि एक नया नया ईमान लाने वाला शख़्स जो पूरी जिंदगी ईसाई फ़ौज का कमांडर रहा, और मुसलमानों का जानी दुश्मन रहा, ईमान लाने के बाद उसे भी ये गवारा नहीं हुआ कि इस आयत में आक़ा (ﷺ) के हक़ में 'ज़ाल्ल' का ज़ाहिरी मअ़ना लिया जाए. बल्कि फौरन उसके इज़ाले के लिए सह़ाबी की बारगाह में सवाल कर दिया. अब आज के दौर में 'भेड़ की शक्ल में भेड़िये' कुछ इ़बरत हासिल करें;

याद रखें!
ईसाई तारीख़ में ह़ज़रत यूक़न्ना (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) का नाम: 'Joachim (जौकिम)' है. 'जंगे ह़लब (Battle of Aleppo)' में हारने के बाद आपने इस्लाम कुबूल कर लिया और ख़ूब ख़िदमात अंजाम दीं. ईसाई आपके नाम से बहुत जलते हैं.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
03/12/20 ई.

आज के लोगों के लिए इ़बरत

इमाम यूनुस स़दफ़ी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) कहते हैं:

"مَا رَأَيْتُ أَعْقَلَ مِنَ الشَّافِعِيِّ، نَاظَرْتُهُ يَوْماً فِي مَسْأَلَةٍ، ثُمَّ افْتَرَقْنَا، وَلَقِيَنِي، فَأَخَذَ بِيَدِي، ثُمَّ قَالَ: يَا أَبَا مُوْسَى، أَلاَ يَسْتَقِيمُ أَنْ نَكُوْنَ إِخْوَاناً وَإِنْ لَمْ نَتَّفِقْ فِي مَسْأَلَةٍ"،

"मैंने (इमाम) शाफ़िई़ से बढ़कर अ़क़्लमंद नहीं देखा;
एक दिन मेरा उनसे एक मस्अले में मुनाज़रा हुआ, फिर हम में जुदाई हो गई. तो वो मुझे (एक दिन) मिले, और मेरा हाथ पकड़कर बोले:
'ऐ अबू मूसा! क्या ये ठीक नहीं है कि हम भाई बनकर रहें, अगरचे हम किसी मस्अले में इख़्तिलाफ़ रखते हों'."

तारीख़े दमिश्क़, ह़र्फ़ुल् मीम, नं. 6071, जिल्द नं. 51, पेज नं. 302, पब्लिकेशन: दारुल् फ़िक्र (बेरूत), 1415 हि./ 1995 ई.
सियरु अअ़्लामिन् नुबला, जिल्द नं. 10, पेज नं. 16, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), तीसरा एडीशन, 1405 हि./1985 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
05/12/22 ई.

सात लोग ऐसे हैं

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"سَبْعَةٌ لَا يَنْظُرُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَلَا يُزَكِّيهِمْ، وَلَا يَجْمَعُهُمْ مَعَ الْعَالَمِينَ، يُدْخِلُهُمُ النَّارَ أَوَّلَ الدَّاخِلِينَ، إِلَّا أَنْ يَتُوبُوا، إِلَّا أَنْ يَتُوبُوا، إِلَّا أَنْ يَتُوبُوا، فَمَنْ تَابَ، تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِ: النَّاكِحُ يَدَهُ، وَالْفَاعِلُ، وَالْمَفْعُولُ بِهِ، وَمُدْمِنُ الْخَمْرِ، وَالضَّارِبُ أَبَوَيْهِ حَتَّى يَسْتَغِيثَا، وَالْمُؤْذِي جِيرَانَهُ حَتَّى يَلْعَنُوهُ، وَالنَّاكِحُ حَلِيلَةَ جَارِهِ"،

"सात लोग ऐसे हैं, क़ियामत के दिन जिनकी तरफ, अल्लाह (ﷻ), (रह़मत की) नज़र नहीं फ़रमाएगा. न ही उन्हें पाक करेगा, और न ही उन्हें दुनिया वालों के साथ जमा करेगा, बल्कि उन्हें सबसे पहले (जहन्नमी) गिरोह के साथ ही, जहन्नम में दाख़िल कर देगा. मगर ये, कि वो तौबा कर लें. मगर ये, कि वो तौबा कर लें. मगर ये, कि वो तौबा कर लें. तो जो तौबा कर लेगा, अल्लाह (ﷻ) उसकी तौबा क़बूल कर लेगा:

1. मुश्तज़नी (masturbation) करने वाला;
2. बदकारी (adultery/homosexuality) करने वाला;
3. बदकारी (adultery/homosexuality) कराने वाला;
4. शराब पीने वाला;
5. अपने वालिदैन को मारने वाला, यहां तक कि वो (वालिदैन) मदद के लिए पुकारें;
6. अपने पड़ोसियों को तकलीफ़ देने वाला, यहां तक कि वो पड़ोसी उसपर

लअ़्नत भेजने लगें;
7. अपने पड़ोसी की बीवी से नाजायज़ तअ़ल्लुक़ात रखने वाला."

शुअ़बुल् ईमान (लिल्-बैहक़ी), ह़दीस नं. 5087, जिल्द नं. 7, पेज नं. 329-330, पब्लिकेशन: मकतबतुर् रुश्द (रियाद), पहला एडीशन, 1423 हि./2003 ई.

नोट: इस ह़दीस में मर्द और औरत दोनों शामिल हैं, जो भी ऐसे काम करते हों.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
19/12/22 ई.

लोग सिर्फ़ आपसे नहीं, आपके ख़्वाबों से भी जलते हैं

जब सय्यिदुना यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) ने ख़्वाब में देखा कि ग्यारह सितारे, और चांद व सूरज आपको सज्दह कर रहे हैं. फिर आपने ये ख़्वाब अपने वालिद, सय्यिदुना यअ़्क़ूब (अ़लैहिस्सलाम) को बताया तो वालिद ने मना किया कि ये ख़्वाब अपने भाइयों को मत बताना, वर्ना वो तुम्हारे ख़िलाफ़ चाल चलेंगे;
इसी क़िस्से का ज़िक्र क़ुरआन 12:05 में किया गया है:

"قَالَ يَا بُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُؤْيَاكَ عَلَىٰ إِخْوَتِكَ فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنسَانِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ"،

"कहा: 'ऐ मेरे बच्चे! अपना ख़्वाब अपने भाइयों से न कहना, कि वो तेरे साथ कोई चाल चलेंगे. बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन है'."
[कंज़ुल् ईमान]

इसकी तफ़्सीर में, इमाम शम्सुद्-दीन क़ुर्तुबी (d. 671 हि.) लिखते हैं:

"وفيها دَلِيلٌ وَاضِحٌ عَلَى مَعْرِفَةِ يَعْقُوبَ عَلَيْهِ السَّلَامُ بِتَأْوِيلِ الرُّؤْيَا، فَإِنَّهُ عَلِمَ مِنْ تَأْوِيلِهَا أَنَّهُ سَيَظْهَرُ عَلَيْهِمْ، وَلَمْ يُبَالِ بِذَلِكَ مِنْ نَفْسِهِ، فإن الرجل يود أن يكون ولده خيرا مِنْهُ، وَالْأَخُ لَا يَوَدُّ ذَلِكَ لِأَخِيهِ. وَيَدُلُّ أَيْضًا عَلَى أَنَّ يَعْقُوبَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ أَحَسَّ مِنْ بَنِيهِ حَسَدَ يُوسُفَ وَبُغْضَهُ، فَنَهَاهُ عن قصص الرؤيا عليهم خوفا أَنْ تَغِلَّ بِذَلِكَ صُدُورُهُمْ، فَيَعْمَلُوا الْحِيلَةَ فِي هَلَاكِهِ"،

"और इस आयत में इस बात की साफ़ दलील है कि सय्यिदुना यअ़क़ूब (अ़लैहिस्सलाम) ख़्वाबों की तअ़बीर का इ़ल्म रखते थे, तो आपने ख़्वाब की तअ़बीर से ये जान लिया कि सय्यिदुना यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) उन पर ग़ालिब होंगे; और आपको इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा, क्यूंकि आदमी ये दिल से चाहता है कि उसका बेटा उससे बेहतर बने. मगर एक भाई, अपने भाई के बारे में (आ़मतौर पर) ऐसी ख़्वाहिश नहीं रखता;

और इसमें इस बात की भी दलील है कि सय्यिदुना यअ़क़ूब (अ़लैहिस्सलाम) ने अपने बेटों में, सय्यिदुना यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) के लिए बुग़्ज़ो ह़सद को महसूस कर लिया था. इसलिए इस ख़ौफ़ से, उनसे मना कर दिया कि अपना ख़्वाब अपने भाइयों को मत बताना, कि कहीं इससे उनके सीने जलन से न भर जाएं, और उन्हें क़त्ल करने की साज़िश न करें."

अल्-जामिअ़ लि-अह़कामिल् क़ुरआन (तफ़्सीरे क़ुर्तुबी), जिल्द नं. 9, पेज नं. 127, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् मिस़रिय्यह (काहिरा), दूसरा एडीशन, 1384 हि./1964 ई.

इमाम इब्ने आ़शूर (d. 1393 हि.) इसकी तफ़्सीर में लिखते हैं:

"وَقَدْ عَلِمَ يَعْقُوبُ عَلَيْهِ السَّلَامُ أَنَّ إِخْوَةَ يُوسُفَ عَلَيْهِ السَّلَامُ الْعَشَرَةَ كَانُوا يَغَارُونَ مِنْهُ لِفَرْطِ فَضْلِهِ عَلَيْهِمْ خُلُقًا وَخَلْقًا، وَعَلِمَ أَنَّهُمْ يُعَبِّرُونَ الرُّؤْيَا إِجْمَالًا وَتَفْصِيلًا، وَعَلِمَ أَنَّ تِلْكَ الرُّؤْيَا تُؤْذِنُ بِرِفْعَةٍ يَنَالُهَا يُوسُفُ عَلَيْهِ السَّلَامُ عَلَى إِخْوَتِهِ الَّذِينَ هُمْ أَحَدَ عَشَرَ فَخَشِيَ إِنْ قَصَّهَا يُوسُفُ عَلَيْهِ السَّلَامُ عَلَيْهِمْ أَنْ تَشْتَدَّ بِهِمُ الْغَيْرَةُ إِلَى حَدِّ الْحَسَدِ، وَأَنْ يَعْبُرُوهَا عَلَى وَجْهِهَا فَيَنْشَأُ فِيهِمْ شَرُّ الْحَاسِدِ إِذَا حَسَدَ، فَيَكِيدُوا لَهُ كَيْدًا لِيَسْلَمُوا مِنْ تَفَوُّقِهِ عَلَيْهِمْ وَفَضْلِهِ فِيهِمْ"،

"और सय्यिदुना यअ़्क़ूब (अ़लैहिस्सलाम) ने ये जान लिया कि सय्यिदुना यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) के दस भाई उनसे रश्क़ करते थे. उनपर, सय्यिदुना यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) की, ख़िलक़त व अख़्लाक़ में बरतरी की वजह से; और (सय्यिदुना यअ़्क़ूब (अ़लैहिस्सलाम ने ये भी) जान लिया कि वो (भाई) ख़्वाब की इज्माली या तफ़्सीली तअ़्बीर भी कर लेंगे;

और [सय्यिदुना यअ़्क़ूब (अ़लैहिस्सलाम) ने ये भी] जान लिया कि ये ख़्वाब सय्यिदुना यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) की उस बुलंदी का एलान कर रहा है जो इन्हें, इनके ग्यारह भाइयों पर हासिल होगी. तो सय्यिदुना यअ़्क़ूब (अ़लैहिस्सलाम) को ख़ौफ़ हुआ कि अगर सय्यिदुना यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) ने अपना ख़्वाब उन भाइयों से बयान कर दिया, तो कहीं उनका रश्क़, ह़सद की ह़द तक न पहुंच जाये, और वो इसकी कहीं सही तअ़्बीर न कर लें. जिसके नतीजे में उनके अंदर ह़सद ज़ाहिर करने वाले ह़ासिद का शर्र न पैदा हो जाए. फिर वो (सब भाई) सय्यिदुना यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) की उनपर बुलंदी और फ़ज़ीलत से बचने के लिए, उनके

ख़िलाफ़ ख़ुफ़िया साज़िश न कर बैठें."

अत्-तह़रीर वत्-तन्वीर (तफ़्सीरे इब्ने आ़शूर), जिल्द नं. 12, पेज नं. 213, पब्लिकेशन: दारुत् तूनुसिय्यह लिन् नश्-र (ट्यूनीशिया), 1984 ई.

इसीलिए आक़ा (ﷺ) ने ख़्वाब बयान करने के बारे में हुक्म दिया है कि:

"لَا تُحَدِّثْ بِهَا إِلَّا حَبِيبًا أَوْ لَبِيبًا"،

"ख़्वाब सिर्फ़ उसी से बयान करो, जो तुम्हें चाहने वाला हो, और अ़क़्लमंद हो."

शुअ़बुल् ईमान (लिल्-बैहक़ी), ह़दीस नं. 4435, जिल्द नं. 6, पेज नं. 426, पब्लिकेशन: मकतबतुर् रुश्द (रियाद), पहला एडीशन, 1423 हि./2003 ई.

क्यूंकि जो चाहने वाला होगा, वो अच्छा ख़्वाब सुनकर ख़ुश होगा, और किसी तरह की कोई जलन न रखेगा;

साथ ही जो अ़क़्लमंद होगा, मुम्किन है कि वो ख़्वाब की सही और बेहतर तअ़्बीर करे, और ख़्वाब देखने वाले को ज़रूरी चीज़ों से आगाह कर दे;

इसीलिए अपने ख़्वाबों को कहानियों और चुटकुलों की तरह हरगिज़, हर किसी से बयान नहीं करना चाहिए.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
20/12/22 ई.

सनद दीन से है

इमामे आ़ज़म अबू ह़नीफ़ा (d. 150 हि.) के शागिर्द,
इमाम अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक (d. 181 हि.) कहते हैं:

"الإِسْنَادُ مِنَ الدِّينِ. وَلَوْلَا الإِسْنَادُ لَقَالَ مَنْ شَاءَ مَا شَاء".

"सनद दीन से है. अगर सनद न होती तो जिसके जो जी में आता कहता."

स़ह़ीह़ मुस्लिम, मुक़द्-दमह, जिल्द नं. 1, पेज नं. 15, पब्लिकेशन: मुस़्तफ़ा बाबी ह़लबी (काहिरा), 1374 हि./1955

इ़ल्म तब तक नहीं मरता

इमाम बुख़ारी[1] (d. 256 हि.) ने फ़रमाया:

"فَإِنَّ الْعِلْمَ لَا يَهْلِكُ حَتَّى يَكُونَ سِرًّا"،

"इ़ल्म तब तक नहीं मरता, जब तक कि उसे छुपाया न जाए."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब नं. 3, बाब नं. 34, जिल्द नं. 1, पेज नं. 49, पब्लिकेशन: दारुल् यमामह (दमिश्क), पांचवा एडीशन, 1414 हि./1993 ई.

[1] ये कलाम सय्यिदुना उ़मर इब्ने अ़ब्दुल् अ़ज़ीज़ (d. 101 हि.) का नहीं है, बल्कि इमाम बुख़ारी (d. 256 हि.) की तरफ से इदराज है. जैसा कि इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी (d. 852 हि.) ने: 'तग़्लीक़ुत् तअ़्लीक़, 2:88' पर, और दूसरे शारिह़ीन ने अपनी अपनी शुरूह़ में लिखा है; वल्लाहु अअ़्लम्!

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
24/12/22 ई.

क्रिसमस डे: शाने उलूहिय्यत में बदतरीन गुस्ताख़ी का दिन

ईसाइयों ने सय्यिदुना ईसा (अ़लैहिस्सलाम) को, और यहूदियों के एक ख़ास गिरोह ने सय्यिदुना उ़ज़ैर (अ़लैहिस्सलाम) को, अल्लाह (ﷻ) का बेटा बताया. ये इतना ग़लीज़ अ़क़ीदा है, कि इसकी हौलनाकी को क़ुरआन 19:88-91 में इस तरह बयान किया गया:

"وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا إِدًّا تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا"۔

"और काफ़िर बोले: 'रह़मान ने औलाद इख़्तियार की.'
बेशक तुम, ह़द की भारी बात लाए;
क़रीब है कि आसमान इससे फट पड़ें, और ज़मीन शक़्क़ हो जाए, और पहाड़ गिर जाएं ढह कर;
इसपर, कि उन्होंने रह़मान के लिए औलाद बताई."
[कंज़ुल् ईमान]

फिर इससे आगे, आयत नं. 92-95 तक, अपनी पाकी बयान फ़रमाकर ये बताया, कि क़ियामत के दिन हर कोई 'बंदे' की हैसियत से ह़ाज़िर होगा:

"وَمَا يَنْبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا اِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّاۤ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا"۔

"और रह़मान के लिए, लाइक़ नहीं कि औलाद इख़्तियार करे;

आसमानों और ज़मीन में जितने हैं सब, उसके हुज़ूर बन्दे होकर ह़ाज़िर होंगे;
बेशक, वो उनका शुमार जानता है, और उनको एक एक करके गिन रखा है;
और उनमें हर एक, रोज़े क़ियामत, उसके हुज़ूर अकेला ह़ाज़िर होगा."
[कंज़ुल् ईमान]

'क्रिसमस डे' पर आप क्यूँ, और क्या समझकर मुबारकबाद दे रहे हैं, ये अलग बहस है. मगर इसकी बुनियाद, ईसाइयों के इस नापाक अ़क़ीदे पर है कि: 'Jesus Christ is begotten son of God', यानी: 'सय्यिदुना ई़सा (अ़लैहिस्सलाम), अल्लाह के जने हुए बेटे हैं'. जैसा कि ख़ुद बाइबल में: 'John, 3:16 (KJV)' में इसकी स़राह़त है. अगरचे 'RSV (Revised Standard Version)' में से, इस आयत को तह़रीफ़ कहकर, ई़साई उ़लमा ने निकाल कर फैंक दिया है. मगर इनका अ़क़ीदा अब भी यही है;
नऊ़ज़ु बिल्लाहि मिन् ज़ालिक!

ये नापाक अ़क़ीदा, जनाबे बारी (जल्ल मज्दुहू) में, ऐसी गाली है कि जिससे ज़मीन और आसमान फट पड़ें;

आक़ा (ﷺ) ने ह़दीसे क़ुदसी में फ़रमाया:

"قَالَ اللّٰهُ: 'كَذَّبَنِي ابْنُ آدَمَ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذَلِكَ، وَشَتَمَنِي وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذَلِكَ، فَأَمَّا تَكْذِيبُهُ إِيَّايَ فَزَعَمَ أَنِّي لَا أَقْدِرُ أَنْ أُعِيدَهُ كَمَا كَانَ، وَأَمَّا شَتْمُهُ إِيَّايَ فَقَوْلُهُ لِي وَلَدٌ، فَسُبْحَانِي أَنْ أَتَّخِذَ صَاحِبَةً أَوْ وَلَدًا'"،

"अल्लाह (ﷻ) ने फ़रमाया: 'इंसान ने मुझे झुठलाया, जबकि ये मेरी शान के लाइक़ नहीं;

इंसान ने मुझे गाली दी, जबकि ये मेरी शान के लाइक़ नहीं;
तो रहा उसका, मुझे झुठलाना: वो ये है कि उसने दावा किया कि मैं उसे (हश्-र के दिन), उसकी पुरानी हालत पर नहीं पलटा सकता;
और रहा उसका, मुझे गाली देना: वो ये है कि उसने कहा कि मेरी औलाद है;
जबकि मैं इससे पाक हूं कि किसी को (अपनी) बीवी, या बच्चा बनाऊं.'"

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस नं. 4482, जिल्द नं. 6, पेज नं. 18, पब्लिकेशन: मत़्बअ़ अमीरीय्यह (बोलाक़), 1311 हि.

अब अगर आप इस गाली वाले दिन, नस़ारा के साथ शामिल होते हैं, या इसकी मुबारकबाद देते हैं, या इस दिन को अच्छा समझते हैं, तो फ़ैसला आपके हाथों में है;
क़ुरआन 72:3 ने स़ाफ़ कह दिया है:

"وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا"۔

"और ये, कि हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है;
न उसने कोई बीवी इख़्तियार की,
और न ही कोई बच्चा."

फिर क़ुरआन 112:3 में भी कहा गया:

"لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ"۔

"न अल्लाह की कोई औलाद है;
और न ही, वो किसी की औलाद है."

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
30/12/22 ई.

फ़ुक़हा की एक दूसरे के ख़िलाफ़ जो बातें हों

इमाम इब्ने अ़ब्दुल् बर्र मालिकी (d. 463 हि.) ने अपनी किताब: 'जामिउ़ बयानिल् इ़ल्म व फ़ज़्लिही' में, सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास (रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा) से रिवायत की:

"خُذُوا الْعِلْمَ حَيْثُ وَجَدْتُمْ وَلَا تَقْبَلُوا قَوْلَ الْفُقَهَاءِ بَعْضِهِمْ فِي بَعْضٍ؛ فَإِنَّهُمْ يَتَغَايَرُونَ تَغَايُرَ التُّيُوسِ فِي الزَّرِيبَةِ"،

"जहां भी तुम्हें इ़ल्म मिले, उसे ले लो;
मगर फ़ुक़हा की एक दूसरे के ख़िलाफ़ जो बातें हों, उन्हें क़ुबूल मत करो;
क्यूंकि वो आपस में ऐसे झगड़ते हैं, जैसे रेवड़ में मेंढे (एक दूसरे से लड़ते हैं)."

इससे अगली रिवायत, सय्यिदुना मालिक इब्ने दीनार (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) से की:

"يُؤْخَذُ بِقَوْلِ الْعُلَمَاءِ وَالْقُرَّاءِ فِي كُلِّ شَيْءٍ إِلَّا قَوْلَ بَعْضِهِمْ فِي بَعْضٍ؛ فَلَهُمْ أَشَدُّ تَحَاسُدًا مِنَ التُّيُوسِ"،

"उ़लमा और क़ुर्राअ की बात, हर चीज़ में क़ुबूल की जाएगी, सिवा उनकी आपसी मनमुटाव वाली बातों के;
क्यूंकि वो आपस में, मेंढों (ram) से ज़्यादा ह़सद रखते हैं."

जामिउ़ बयानिल् इ़ल्म व फ़ज़्लिही, ह़दीस नं. 2125-2126, जिल्द नं. 2, पेज नं. 191, पब्लिकेशन: दार इब्ने जौज़ी (सऊदी अ़रब), पहला एडीशन, 1414 हि./1994 ई.

ख़्वाजा का एक अनोखा आ़शिक़

राफ़िज़ी मुजाविरों, और नाम निहाद चिश्तियों के मुंह पर ज़ोरदार तमाचा:

मैं आपको एक ऐसे आ़शिक़े ग़रीब नवाज़ की बारगाह में ले चलता हूँ, जिसकी ज़िन्दगी का एक-एक लम्ह़ा ख़िदमते दीन, व इश्क़े रसूल (ﷺ) का आईना, आ़शिक़ाने रसूल (ﷺ) के लिए ख़ज़ीना, और दुश्मनों के लिए शम्शीरे बरहना है. जिसे दुनिया 'इमामे अहले सुन्नत', व 'मुजद्दिदे दीनो मिल्लत' के अल्क़ाब से याद करती है. यानी:
आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा खा़न ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अलैहिर्रह़मह) की बारगाह में;

जिनके सामने एक इस्तिफ़्ता पेश किया गया कि:
"क्या अजमेर के साथ 'शरीफ़' न लिखना, और असली नाम 'ग़ुलामे मुईनुद्दीन' पर 'ग़ुलाम' न लिखना, ख़िलाफ़े अ़क़ीद-ए-अहले सुन्नत है, या नहीं?"

आपने जवाब में इरशाद फ़रमाया:
"अजमेर शरीफ़ के नामे पाक के साथ लफ्ज़े 'शरीफ़' न लिखना, और इन तमाम मवाक़िअ़ में इसका इल्तिज़ाम करना, अगर इस बिना पर है कि हुज़ूर सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) की जलवा अफरोज़ी, ह़याते ज़ाहिरी, व मज़ारे पुर-अनवार को (जिस के सबब मुसलमान अजमेर शरीफ़ कहते हैं), वज्हे शराफ़त नहीं जानता, तो वो गुमराह, बल्कि अ़दुव्वुल्लाह (अल्लाह का दुश्मन) है. स़ह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) इरशाद फरमाते हैं कि:

"अल्लाह (ﷻ) इरशाद फ़रमाता है:

"مَنْ عَادٰى لِي وَلِيًّا فَقَدْ آذَنْتُهُ بِالحَرْبِ"....،

"जिसने मेरे वली से दुश्मनी मोल ली, मेरी जानिब से उसके लिए ऐलाने जंग है....",

और अगर ये नापाक इल्तिज़ाम, बर बिनाए कसल, व कोताहे क़लमी है, तो सख़्त बे-बरकता, और फ़ज़्ले अ़ज़ीम व ख़ैरे जसीम से मह़रूम है;
और अगर इसका मबना, वह्हाबिय्यत है, तो वह्हाबिय्यत कुफ़्र है, इसके बाद ऐसी बातों की क्या शिकायत?
अपने नाम से 'ग़ुलाम' का ह़ज़्फ़ अगर इस बिना पर है, कि ह़ुज़ूर ख़्वाजा-ए-ख़्वाजगां (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) का ग़ुलाम बनने से इंकार व इस्तिक्बार रखता है, तो बदस्तूर गुमराह, और बहुक्मे ह़दीसे मज़्कूर, अ़दुव्वुल्लाह (अल्लाह का दुश्मन) है, और इसका ठिकाना जहन्नम है. अल्लाह (ﷻ) ने फ़रमाया:

"أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْمُتَكَبِّرِينَ"،

"क्या मग़रूर का ठिकाना जहन्नम नहीं ?"
[क़ुरआन, 39:60]

और अगर बर बिनाए वह्हाबियत है, कि ग़ुलामे औलिया-ए-किराम बनने वालों को मुशरिक, और 'ग़ुलामे मुह़िय्युद्दीन', व 'ग़ुलामे मुईनुद्दीन' को शिर्क जानता है, तो वह्हाबिय्यह ख़ुद ज़िन्दीक़, बेदीन, कुफ़्फ़ार, व मुर्तद्दीन हैं;

"وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ"،

"और काफिरों के लिए ख़्वारी का अज़ाब है."
[क़ुरआन, 2:90]

फ़तावा रज़विय्यह, 6:187-188, रज़ा अकैडमी (मुम्बई)

दूसरी जगह अपने ग़ौस व ख़्वाजा की ग़ुलामी का सुबूत देते हुए लिखते हैं:

"हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे अ़ाज़म (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ज़रूर दस्तगीर हैं, और ह़ज़रत सुल्त़ानुल् हिन्द मुईनुल्-हक़्क़ि वद्-दीन, ज़रूर ग़रीब नवाज़."

फ़तावा रज़विय्यह, 11:43, रज़ा अकैडमी (मुंबई)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
14/03/19 ई.

उस शहर के लोगों से क़िताल

ह़नफ़ी फ़ुक़हा में से एक अ़ज़ीम फ़क़ीह: 'इमाम इब्ने मौदूद मौस़िली (d. 683 हि.) लिखते हैं:

"فَلَوِ اجْتَمَعَ أَهْلُ مِصْرٍ عَلَى تَرْكِ الْخِتَانِ قَاتَلَهُمُ الْإِمَامُ لِأَنَّهُ مِنْ شَعَائِرِ الْإِسْلَامِ وَخَصَائِصِهِ"،

"अगर किसी शहर के लोग, ख़तना न किए जाने पर एका कर लें, तो इमाम (यानी: सुल्त़ाने इस्लाम, या उसकी इजाज़त से उसका नाइब), उस शहर के लोगों से क़िताल करेगा. क्यूंकि ख़तना, इस्लाम की निशानियों, और ख़ुस़ूस़िय्यात में से है."

अल्-इख़्तियार लि-तअ़्लीलिल् मुख़्तार, किताबुल् कराहिय्यह, फ़स़्ल फ़ी आदाबिन् लिल्-मुअ़्मिनीन, जिल्द नं. 4, पेज नं. 167, पब्लिकेशन: मत़बअ़ा ह़लबी (काहिरा), 1356 हि./1937 ई.

17/01/23 ई.

मिस्र की एक अ़जीब बिल्ली

ये बिल्ली, मिस्र के एक इलाक़े: 'कफ़्रे हिजाज़ी' में मौजूद है. इसका रोज़ का ये मामूल है, कि सुबह फ़ज्र की नमाज़ से पहले मस्जिद के दरवाज़े पर, मस्जिद खोलने वाले का इंतिज़ार करती है. जब मस्जिद खुल जाती है, तो ये अंदर जाकर नमाज़ियों के बीच बैठ जाती है;
जब तक ये बिल्ली मस्जिद में बैठेगी, तब तक दीवार पर टंगी हुई क़ुरआनी आयात को देखती रहती है. फिर नमाज़ होने के बाद चली जाती है, और पूरे दिन नज़र नहीं आती. फिर अगले दिन की फ़ज्र नमाज़ में ही दिखाई देती है;

लोगों ने इसे बहुत बार मस्जिद से भगाने की कोशिश की, मगर नाकाम रहे. यहां तक कि उन्होंने इसे इसके हाल पर छोड़ दिया है, और इसका वही मामूल जारी है;

ह़क़, यक़ीनन ह़क़ फ़रमाया, मेरे अल्लाह(ﷻ) ने:

क़ुरआन 3:83 में इरशाद हुआ:

..."وَلَهُ أَسْلَمَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ"!...

"...और उसी के हुज़ूर गर्दन रखे हैं, जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं...!" [कंज़ुल् ईमान]

फिर क़ुरआन 17:44 में इरशाद फ़रमाया:

"تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَاوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَن فِيهِنَّ وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَٰكِن لَّا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ"!...

"उसकी पाकी बोलते हैं, सातों आसमान और ज़मीन; और जो कोई उनमें हैं; और कोई चीज़ नहीं जो उसे सराहती हुई उसकी पाकी न बोले; हाँ, तुम उनकी तस्बीह़ नहीं समझते...!"
[कंज़ुल् ईमान]

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
24/01/23 ई.

मैं मुह़म्मद हूं, मैं अह़मद हूं...

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"إِنَّ لِي أَسْمَاءً، أَنَا مُحَمَّدٌ، وَأَنَا أَحْمَدُ، وَأَنَا الْمَاحِي الَّذِي يَمْحُو اللّٰهُ بِيَ الْكُفْرَ، وَأَنَا الْحَاشِرُ الَّذِي يُحْشَرُ النَّاسُ عَلَى قَدَمَيَّ، وَأَنَا الْعَاقِبُ الَّذِي لَيْسَ بَعْدَهُ أَحَدٌ، وَقَدْ سَمَّاهُ اللّٰهُ رَءُوفًا رَحِيمًا"،

"बेशक मेरे कुछ नाम हैं:
मैं मुह़म्मद हूं, मैं अह़मद हूं;
और मैं ही 'माह़ी (मिटाने वाला)' हूं,
मेरे ही ज़रिए अल्लाह कुफ़्र को मिटाता है;
और मैं ही 'ह़ाशिर (जमा करने वाला)' हूं,
कि जिसके क़दमों तले लोगों को जमा किया जाएगा;
और मैं ही 'आ़क़िब (पीछे आने वाला)' हूं,
कि जिसके बाद कोई (नबी) नहीं;
और अल्लाह ने जिसका नाम 'रऊफ़ (मेहरबान)' व 'रह़ीम (रह़म वाला)' भी

रखा."

स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल् फ़ज़ाइल, बाबु अस्माइही (ﷺ), ह़दीस न. 2354, जिल्द न. 4, पेज न. 1828, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत)

ये वो ज़बरदस्त ह़दीस है जिसमें 'क़ादियानियों', और 'वह्हाबिय्यों' दोनों का जानलेवा रद है. थोड़ी गहराई में जाएं तो इसमें 'अहले क़ुरआन' का भी रद मौजूद है.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
25/01/21

आग लगी बस्ती में, हम दुनिया की मस्ती में

अगर आप मौजूदा हालात से वाक़िफ़ हैं तो प्लीज़ बिना किसी देरी के अपने-अपने इलाक़ों में दीन का काम शुरू कर दें, और विदेश वग़ैरह में तब्लीग़ करने का सपना दफ़्न कर दें. क्यूंकि आप पहले अपने क़रीबी लोगों और क़रीबी इलाक़ों के ज़िम्मेदार हैं;

क़ुरआन 26:214 —

"وَاَنۡذِرۡ عَشِيۡرَتَكَ الۡاَقۡرَبِيۡنَ"،

"और (ऐ मेरे नबी!) आप (पहले) अपने क़रीबी रिश्ते वालों को (अल्लाह से) डरायें."

क़ुरआन 42:7 —

"وَكَذٰلِكَ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡكَ قُرۡاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنۡذِرَ اُمَّ الۡقُرٰى وَمَنۡ حَوۡلَهَا"،

"और (ऐ नबी!) यूंही हम ने आपकी तरफ़ अ़रबी क़ुरआन उतारा, ताकि

आप तमाम शहरों की अस़्ल, 'मक्का' वालों को, और जितने (लोग) इसके इर्दगिर्द हैं, उन्हें (अल्लाह से) डरायें."

क़ुरआन की इन दोनों आयात ने हमें ये सबक़ दिया है कि:
हमारी तब्लीग़ के सबसे पहले ह़क़दार, हमारे क़रीबी रिश्तेदार, और क़रीबी इलाक़े के लोग हैं.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
02/02/22 ई.

ज़लज़ला: एक अ़ज़ाब

अल्लाह (ﷻ) ने क़ुरआन 6:65 में इर्शाद फ़रमाया:

"قُلۡ هُوَ الۡقَادِرُ عَلٰۤی اَنۡ یَّبۡعَثَ عَلَیۡکُمۡ عَذَابًا مِّنۡ فَوۡقِکُمۡ اَوۡ مِنۡ تَحۡتِ اَرۡجُلِکُمۡ اَوۡ یَلۡبِسَکُمۡ شِیَعًا وَّ یُذِیۡقَ بَعۡضَکُمۡ بَاۡسَ بَعۡضٍ اُنۡظُرۡ کَیۡفَ نُصَرِّفُ الۡاٰیٰتِ لَعَلَّهُمۡ یَفۡقَهُوۡنَ".

"तुम फ़रमाओ: 'वो क़ादिर है, कि तुम पर अ़ज़ाब भेजे, तुम्हारे ऊपर से, या तुम्हारे पांव के तले से;
या तुम्हें भिड़ा दे, मुख़्तलिफ़ गिरोह करके;
और एक को, दूसरे की सख़्ती चखाये',
देखो, हम क्यूंकर तरह-तरह से आयतें बयान करते हैं, कि कहीं इनको समझ सको." [कंज़ुल् ईमान]
आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يُقْبَضَ الْعِلْمُ، وَتَكْثُرَ الزَّلَازِلُ، وَيَتَقَارَبَ الزَّمَانُ، وَتَظْهَرَ

الْفِتَنُ، وَيَكْثُرَ الْهَرْجُ، وَهُوَ الْقَتْلُ الْقَتْلُ، حَتَّى يَكْثُرَ فِيكُمُ الْمَالُ فَيَفِيضَ"،

"क़ियामत नहीं आएगी, यहां तक कि:
इ़ल्म उठा लिया जाएगा;
और बहुत ज़लज़ले आयेंगे;
और वक़्त सिमट जाएगा;
और फ़ितने ज़ाहिर होंगे;
और 'हर्ज' ज़्यादा होगा, और वो क़त्ल है क़त्ल;
यहां तक कि तुम्हारे दरमियान, दौलत बहुत ज़्यादा बढ़ जाएगी."
स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस नं. 1036, जिल्द नं. 2, पेज नं. 33, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह़ (बेरूत), पहला एडीशन, 1422 ई.

सय्यिदुना अनस (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) से रिवायत है कि सय्यिदा आ़इशा (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) ने फ़रमाया:

"'إِنَّ الْمَرْأَةَ إِذَا خَلَعَتْ ثِيَابَهَا فِي غَيْرِ بَيْتِ زَوْجِهَا هَتَكَتْ مَا بَيْنَهَا وَبَيْنَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ مِنْ حِجَابٍ، وَإِنْ تَطَيَّبَتْ لِغَيْرِ زَوْجِهَا كَانَ عَلَيْهَا نَارًا وَشَنَارًا، فَإِذَا اسْتَحَلُّوا الزِّنَا وَشَرِبُوا الْخُمُورَ بَعْدَ هَذَا وَضَرَبُوا الْمَعَازِفَ، غَارَ اللَّهُ فِي سَمَائِهِ، فَقَالَ لِلْأَرْضِ: 'تَزَلْزَلِي بِهِمْ'، فَإِنْ تَابُوا وَنَزَعُوا وَإِلَّا هَدَمَهَا عَلَيْهِمْ'"،

"'अगर एक (शादीशुदा) औरत, अपने शौहर के घर के अलावा किसी दूसरी जगह (बदकारी के लिए) अपने कपड़े उतारे, तो उसने अपने और अल्लाह के दरमियान रहने वाले पर्दे को चाक कर दिया;
और अगर कोई औरत, अपने शौहर के अलावा किसी दूसरे के लिए खुशबू लगाए, तो उसपर आग और शर्मिंदगी है;
और जब लोग ज़िना को ह़लाल कर लें, और इसके बाद शराबें पीने लगें,

और ढोल-बाजे बजाने लगें, तो अल्लाह अपने आसमान में क़हर फ़रमाता है, और ज़मीन को हुक्म देता है: 'उनपर ज़लज़ला लेकर आ.'
अगर वो लोग तौबा कर लें, तो ठीक है. वर्ना अल्लाह, ज़मीन को उन पर ढहा देगा."

अल्-मुस्तदरक (लिल् ह़ाकिम), ह़दीस नं. 8575, जिल्द नं. 4, पेज नं. 561, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), पहला एडीशन, 1411 हि./1990 ई.

ज़लज़ला, क़ियामत की एक बड़ी निशानी है. हमारे बुज़ुर्गों ने इस टॉपिक पर भी कई किताबें लिखी हैं कि दुनिया में कब-कब, और कहाँ-कहाँ ज़लज़ले आए. इन किताबों में से कुछ अहम किताबें ये हैं:

1. इमाम अबुल् फ़रज इब्ने जौज़ी (d. 597 हि.) की किताब: 'अल्-मुद्हिश' के बाब नं. 4 की, फ़स़्ल नं. 9 में, सन् 20 हि. से लेकर 552 हि. तक के ज़लज़लों का बयान है. इस किताब का दूसरा एडीशन: 'दारुल् क़लम (दमिश्क)' से दो जिल्दों में, 1435 हि./2014 ई. में पब्लिश हुआ;

2. इमाम जलालुद्-दीन सुयूत़ी (d. 911 हि.) ने अपनी किताब: 'कश्फ़ुस़् स़ल्स़लह अ़न् वस़्फ़िज़् ज़लज़लह' भी, ज़लज़लों के बयान में लिखी. इस किताब में 20 हि. से लेकर 910 हि. तक के ज़लज़लों का ज़िक्र है. ये 'आ़लमुल् कुतुब (बेरूत)' से 1987 ई. में पब्लिश हुई. फिर इनके शागिर्द, शम्सुद्-दीन दाऊदी (d. 945 हि.) ने इसपर इज़ाफ़ा करके, 940 हि. तक के ज़लज़लों को शुमार कराया.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
07/02/23 ई.

एक बीमारी जो ऱाम हो चुकी है

आजकल एक ऐसा माहौल क्रिएट हो गया है कि मुसलमान अपने ऊपर आने वाली 'समावी परेशानियों (Natural Disasters)' को भी, ग़ैरों की साज़िश बताने में देर नहीं लगाता. इसे हर जगह फ्रीमेसन, इल्यूमिनाती, हार्प वग़ैरह ही दिखाई देता है;
ये बात ठीक है कि दुश्मनों की साज़िशों का इंकार नहीं किया जा सकता, मगर अपनी बद-ऱामालियों के सबब आने वाले ऱज़ाब का भी इंकार नहीं किया जा सकता;

अल्लाह (ﷻ) ने क़ुरआन 29:2-4 में इर्शाद फ़रमाया:
"اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ یُّتْرَكُوْۤا اَنْ یَّقُوْلُوْۤا اٰمَنَّا وَ هُمْ لَا یُفْتَنُوْنَ وَ لَقَدْ فَتَنَّا الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَیَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِیْنَ صَدَقُوْا وَ لَیَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِیْنَ اَمْ حَسِبَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ السَّیِّاٰتِ اَنْ یَّسْبِقُوْنَا سَآءَ مَا یَحْكُمُوْنَ"،

"क्या लोग इस घमंड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिए जाएंगे, कि कहें: 'हम ईमान लाए', और उनकी आज़माइश न होगी!?
और बेशक हमने इनसे अगलों को जांचा, तो ज़रूर अल्लाह सच्चों को देखेगा, और ज़रूर झूठों को देखेगा;
या ये समझे हुए हैं वो, जो बुरे काम करते हैं कि हम से कहीं निकल जाएंगे!? क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं!"
[कंज़ुल् ईमान]
मुसीबत आए, तो दुश्मनों की चाल नज़र आती है, और अपनी बद-ऱमली का कोई हाथ उसमें दिखाई नहीं देता;

मगर निअ़्मतों के आने पर, हर दिमाग़ यही सोचता है कि मेरी फ़ुलां प्लानिंग से, मेरा फ़ुलां काम बन गया. तब, ऐसे लोगों के मुत़ाबिक़, न दुश्मनों का हाथ होता है, और न ही अल्लाह (ﷻ) का करमे ख़ास़;

अल्लाह (ﷻ) ने क़ुरआन 100:6 में इर्शाद फ़रमाया:

"إِنَّ الْإِنسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ"،

"बेशक!
आदमी अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है." [कंज़ुल् ईमान]
इमाम त़बरी व इब्ने कसीर ने इस आयत में मज़्कूर लफ़्ज़े 'कनूद' का मतलब ये बयान किया है कि:

"هو الكفور الذي يعد المصائب، وينسى نعم ربه"،

"('कनूद' उस) नाशुक्रे शख़्स को कहते हैं जो मुसीबतों को तो गिन-गिनकर रखता है, मगर अपने रब की निअ़्मतों को भुला देता है."

ह़क़ तो ये था कि मुसीबतों में अपने आ़माल का जायज़ा लिया जाता, और इ़बरत हासिल की जाती. इंसान जो मेहनत, एक समावी मुसीबत को, दुश्मनों की साज़िश साबित करने में कर रहा है; काश! इतनी तह़क़ीक़, अपने आ़माल का जायज़ा लेने में करता.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
08/02/21 ई.

दर्से निज़ामी में जो चीज़ें हमें पढ़ाई जाती हैं

मेरी मादरे इ़ल्मी: 'जामिआ अह़्सनुल् बरकात (मारहरा शरीफ़)' में, हमारे जूनियर साथियों की तरफ से 31/01/23 ई. को, फ़ातिह़ा की मह़्फ़िल मुन्अ़क़िद की गयी. जिसमें मुर्शिदे करीम हु़ज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत सय्यिद नजीब ह़ैदर नूरी (दामत् बरकातुहू) के हुक्म से, असातिज़ा के सामने कुछ लबकुशाई की, एक लम्बे वक़्त के बाद, हिम्मत जुटाई;

अपनी इस मुख़्तसर सी गुफ़्तगू में, मैंने अपने जूनियर साथियों को ये समझाने की कोशिश की है कि दर्से निज़ामी में जो चीज़ें हमें पढ़ाई जाती हैं, वो इस्लाम का दिफ़ाअ़ करने के लिए सबसे ज़बर्दस्त हथियार हैं. दर्से निज़ामी की पढ़ाई के बिना, कमा ह़क़्क़ुहू दअ़्वतो तब्लीग़ नहीं हो सकती. इसे पढ़े बिना कहीं न कहीं इंसान डगमगा ही जाता है, जिसकी कई मिसालें दी जा सकती हैं;

फिर मैंने, ग़ैरों की तरफ़ से क़ुरआन व ह़दीस पर उठने वाले कुछ मशहूर एतराज़ात को, बतौरे मिसाल पेश करके, उनका रद दर्से निज़ामी की रौशनी में किया है.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
11/02/23 ई.

शिर्क से तौह़ीद की तरफ़

क़ुरआन 16:75 ने मअ़बूदे ह़क़, क़ादिरे मुत़लक़ 'अल्लाह (ﷻ)', और

बेजान, बेबस, झूठे ख़ुदाओं के दरमियान किस क़द्र ज़बर्दस्त व अ़क़्ली दलील (rational/logical proof) के ज़रिए फ़र्क़ बयान किया है;

आयत में दो शख़्सों की मिसाल बयान की गयी है:

1. वो शख़्स जो आज़ाद है, और अमीर भी है. बहुत सी चीज़ों का मालिक है, जहां चाहे अपनी मर्ज़ी से ख़र्च करता है;
2. वो शख़्स जो ख़ुद, किसी दूसरे का ग़ुलाम है, किसी चीज़ का मालिक नहीं;

अब आयत देखिए:

"ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبۡدًا مَّمۡلُوۡكًا لَّا يَقۡدِرُ عَلٰى شَىۡءٍ وَّمَنۡ رَّزَقۡنٰهُ مِنَّا رِزۡقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنۡفِقُ مِنۡهُ سِرًّا وَّجَهۡرًا هَلۡ يَسۡتَوٗنَ اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ"...،

"अल्लाह ने मिसाल बयान की:
एक ग़ुलाम बन्दे की, जो किसी चीज़ पर क़ादिर नहीं; और एक उस बन्दे की, जिसे हमने अपनी तरफ़ से ख़ूब अच्छा रिज़्क़ दिया. तो वो उसमें से छुपकर और एलानिया तौर पर ख़र्च करता है;
क्या ये दोनों शख़्स, बराबर हो सकते है?
(बल्कि) तमाम ख़ूबी, अल्लाह ही के लिए हैं...!"
अब इसका मतलब आसानी से समझ सकते हैं:
एक सच्चा ख़ुदा 'अल्लाह (ﷻ)' है, तो दूसरे झूठे ख़ुदा हैं;
सच्चे ख़ुदा 'अल्लाह (ﷻ)' की ये शान व क़ुदरत है, कि पूरी कायनात को उसने पैदा किया, जो चाहता है करता है, मारता है, जिलाता है, खिलाता है, पिलाता है, सब कुछ अपनी शान के मुत़ाबिक़ करता है;

तो दूसरी तरफ़ झूठे ख़ुदाओं का ये हाल है कि बेजान हैं, बेबस हैं, न बोल सकते, न सुन सकते, न ले सकते, न दे सकते, न मार सकते, न जिला सकते; फिर ये बेजान झूठे ख़ुदा, उस सच्चे 'अल्लाह (ﷻ)' के बराबर कैसे हो सकते हैं?

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
03/11/21 ई.

इस्लाम वाह़िद ऐसा दीन है

इस्लाम वाह़िद ऐसा दीन है, जिसने अपने ख़ालिक़ो मालिक का 'ज़ाती नाम (Personal Name/निज नाम)' दुनिया के सामने पेश किया: 'अल्लाह', साथ ही 'स़िफ़ाती नाम (Attributive Names/गौणिक नाम)' भी पेश किए, जैसे: 'ख़ालिक़', 'मालिक', 'राज़िक़', 'क़ादिर' वग़ैरह;

ऐसा कोई दूसरा दीन दुनिया में मौजूद नहीं, जिसने अपने ख़ालिक़ो मालिक को 'ज़ाती नाम (Personal Name/निज नाम)' दिया हो, सिवा इस्लाम के;

आज तक, गोबर को घेबर समझने वाले ख़ुद ये फ़ैसला नहीं कर पाए, कि ओम, उनके ईश्वर का 'ज़ाती नाम (Personal Name/निज नाम)' है, या 'स़िफ़ाती नाम (Attributive name/गौणिक नाम)' है;

यहां तक कि नियोग समाज के गुरुघंटाल: 'दयानंद सरस्वती (वास़िले जहन्नम: 1883 ई.)' का भी कंफ्यूज़न बाक़ी रहा कि ओम, ईश्वर का 'ज़ाती नाम (Personal Name/निज नाम)' है, या 'स़िफ़ाती नाम (Attributive name/गौणिक नाम)', क्यूंकि अपनी बदनामे ज़माना किताब: 'सत्यार्थ प्रकाश' में, इसने एक जगह इसे निज बताया, तो दूसरी जगह गौणिक;

इसके इस कंफ्यूज़न पर सबसे पहली पकड़: 'स़दरुल् अफ़ाज़िल सय्यिद नई़मुद्दीन मुरादाबादी (d. 1948 ई.)' ने, अपनी किताब: 'इह़्क़ाक़े ह़क़' में की. जिसे इन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' के रद में लिखा;

मगर इस्लाम के पर्दे में छुपे हुए कुफ़्र-नवाज़ बंदरों को, ख़ल्लाक़े काइनात 'अल्लाह (ﷻ)', और 'ओम' में मुमासलत दिखाई दे रही है. ऐसी बकवास करने की वजह सिर्फ़, कुफ़्फ़ार को ख़ुश व राज़ी करना है, जो कि मुम्किन नहीं.

अल्-अज़्हरी
11/02/23 ई.

मिअ़्राजुन्-नबी

आज चांद की 26 तारीख़ है, और मग़रिब बाद 27 लग जाएगी. 27 रजब (ब-इख़्तिलाफ़े रिवायात) वो मुबारक रात है जिसमें अल्लाह (ﷻ) ने अपने प्यारे नबी (ﷺ) को रात के एक बहुत ही छोटे हिस्से में, आसमानों, अ़र्श और फिर ला-मकां (no place) की सैर कराई. जिसका ज़िक्र क़ुरआन में कुछ इस तरह हुआ:

क़ुरआन 17:1 —

"سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَىٰ بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى الَّذِي بَارَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ"،

"पाकी है उसे, जो अपने बंदे को रातों रात ले गया, मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक, जिसके गिर्दागिर्द हमनें बरकत रखी, कि हम उसे अपनी अ़ज़ीम

निशानियाँ दिखाएं; बेशक, वो सुनता देखता है." [कंज़ुल् ईमान]

क़ुरआन 53:1 —

"وَالنَّجْمِ إِذَا هَوٰى"،

"उस प्यारे, चमकते तारे, मुह़म्मद की क़सम!
जब ये मिअ़राज से उतरे."
[कंज़ुल् ईमान]

इस सफ़र के तीन दर्जे हैं, और तीनों का हुक्म अलग अलग है:
1. इस्-रा: मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक, इसका इंकार करने वाला 'काफ़िर' है;
2. मिअ़राज: मस्जिदे अक़्सा से अ़र्श तक, इसका इंकार करने वाला 'गुमराह' है;

3. इअ़राज/उ़रूज: अ़र्श से ला-मकां तक, इसका इंकार करने वाला 'ख़ात़ी (ग़लत़ी पर)' है.

वक़्त की छोटी मिक़्दार जो अब तक साइंस ने दर्याफ़्त की है, उसकी कुछ झलक देखें:

(1) पिको सैकंड
= एक सैकंड का दस खरबवां हिस्सा
= 10^{-12}
= 1/1000 000 000 000
= 0.000 000 000 001 सैकंड

एक सैकंड के सामने पिको सैकंड की वही हैसियत है जो तक़रीबन 31,689 सालों के सामने एक सैकंड की होती है;

(2) नैनो सैकंड

= एक सैकंड का एक अरबवां हिस्सा

= 10^{-9}

= 1⁄1 000 000 000

= 1000 पिको सैकंड

= 1⁄1000 माइक्रो सैकंड

जाहिल मुल्ह़िदीन (Atheists) और कुफ़्फ़ार को, वक़्त की ये छोटी छोटी इकाइयों पर तो अंधा यक़ीन है, कि इन छोटे-छोटे लम्हों में भी कायनात में बहुत सारी तब्दीलियां हो जाती हैं;
मगर अल्लाह (ﷻ) की क़ुदरत से कोई जिस्म पूरी कायनात में चंद लम्हों में सैर कर ले, तो ये इन्हें क़ुबूल नहीं.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
11/03/21 ई.

दो कुफ़्रिय्यह अ़क़ीदे

1. ह़ुलूल: इसका मत़लब है कि एक चीज़ का दूसरी चीज़ के अंदर समा जाना. फिर ये दो तरह से होता है, जैसा कि इमाम जुर्जानी (d. 816 हि.) ने: 'अत्-तअ़्रीफ़ात' में लिखा है:

[1]हुलूले सरयानी: एक चीज़ का दूसरी चीज़ में ऐसे समा जाना, कि अगर एक की तरफ़ इशारा किया जाए, तो दूसरी की तरफ़ भी हो. जैसा कि गुलाबजल का, गुलाब के अंदर समा जाना;

[2]हुलूले जवारी: एक चीज़ का, दूसरी चीज़ के लिए ज़र्फ़ (जगह) होना. जैसा कि पानी का, प्याले के अंदर समा जाना;

2. इत्तिह़ाद: दो चीज़ों का आपस में ऐसे मिल जाना, कि दोनों एक हो जाएं. जैसा कि पानी के अंदर घुली हुई चीनी.

दोनों में फ़र्क़ ये है कि:
(1) हुलूल में दोनों चीज़ों के वुजूद अलग-थलग ही रहते हैं, एक नहीं होते; मगर इत्तिह़ाद में दोनों चीज़ों का एक ही वुजूद हो जाता है.

(2) हुलूल में दोनों चीज़ों के दरमियान इन्फ़िस़ाल (separation) हो सकता है;
मगर इत्तिह़ाद में दोनों चीज़ों के दरमियान इन्फ़िस़ाल (separation) नहीं हो सकता.

इस फ़र्क़ को एक मिसाल से समझिए:
अगर आप पानी में चीनी डाल दें, और उसे हिलाएं नहीं. तो ऐसी शक्ल में, घुलने से पहले, चीनी का वुजूद अलग रहेगा, और पानी का वुजूद अलग रहेगा, मगर दोनों मिले हुए होंगे. यही हुलूल है;
लेकिन अगर आप चीनी को हिलाकर, पानी में घोल देते हैं, तो वो दोनों अलग नहीं रहेंगे, बल्कि एक हो जाएंगे. इसी को इत्तिह़ाद कहते हैं;
अल्लाह (ﷻ) के बारे में ये दोनों अ़क़ीदे, कुफ़्र हैं;

इमाम फ़ज़्ले रसूल बदायूंनी (d. 1289 हि.) की किताब: 'अल् मुअ़्तक़दुल् मुन्तक़द' के हाशिये: 'अल् मुस्तनदुल् मुअ़्तमद बिनाउ नजातिल् अबद' में, इमामे अहले सुन्नत आ़ला ह़ज़रत (d. 1340 हि.) ने जिन 7 गिरोहों की तक्फ़ीर की है, उनमें से एक गिरोह इन ढौंगी (नाम निहाद) स़ूफ़ियों का भी है, जो ह़ुलूल व इत्तिह़ाद के क़ाइल हैं;
ईसाई, सय्यिदुना ईसा (अ़लैहिस्सलाम) के बारे में, और ग़ाली शीओं का एक फ़िर्क़ा 'नस़ीरिय्यह', मौला अ़ली (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) के बारे में यही बात़िल फ़िक्र रखते हैं.

18/02/23 ई.

एक ज़िंदा करामत

इसी हफ़्ते, अपने मुर्शिदे करीम सय्यिदी नजीब ह़ैदर नूरी (ह़फ़िज़हुल्लाहु व रअ़ाहु) के साथ, गुजरात के कई शहरों के सफ़र में, 16 मार्च 2023 ई. को, एक पुराने गांव: 'कुतियाना' जाना हुआ. जहां हम सबसे अपने माथे की आँखों से, अल्लाह के एक वली की ऐसी जीती-जागती करामत देखी, कि मैं उस मंज़र को अपने दिमाग़ से निकाल नहीं पा रहा हूं;

गुजरात के: 'कुतियाना' गांव में, 'ह़ज़रत मिस्कीन शाह चिश्ती (रह़मतुल्लाहि अ़लैहि)' नाम के एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग की मज़ार है. मुर्शिद करीम के साथ वहाँ ह़ाज़िरी हुई. तो वहाँ जाकर पता चला कि ह़ज़रत की एक करामत है कि एक पत्थर पानी में तैर रहा है. पूछने पर बताया कि वो पत्थर यहीं मौजूद है. फिर देखा कि क़ब्र के पास ही, ड्रम टाइप एक बड़ा-सा पानी का बर्तन है, जिसमें ऊपर तक पानी भरा हुआ है. उसी पानी में वो पत्थर तैर रहा है; आखें फटी की फटी रह गयीं, और दिल ख़ौफ़े इलाही से भर गया, कि ये कैसा मामला है!

जिसकी वहाँ ड्यूटी थी उसने बताया कि यहां बहुत बार, इंक्वायरी आ चुकी है. कई लोग इनवेस्टिगेशन के लिए आ चुके हैं, और उनमें से कुछ लोगों ने इसमें हथोड़ा मारकर भी देखा कि ये असली पत्थर है, या कुछ और!? हथोड़ा मारने पर भी पता चला कि वो असली पत्थर ही है. हथोड़ा मारने पर उसका एक टुकड़ा निकलकर गिरा, और इंवेस्टिगेशन वाले उस टुकड़े को अपने साथ ले गए;

फिर हमने उससे कहा कि ये पत्थर जिस पानी में तैर रहा है, उसे थोड़ा-सा हमें पिलाए. तो उसने एक छोटे से बर्तन में पानी दिया, फिर हमने पी लिया; वहाँ के हमारे दोस्त, और दूसरे मुक़ामी लोगों ने बताया कि ये पत्थर काफ़ी बड़ा था, और बराबर ही के कुंए में था. बाद में ये छोटा होता रहा, और फिर इसे निकाल कर इस बड़े बर्तन में रख लिया गया है;

वहाँ के लोगों का कहना है कि, इन्हीं बुज़ुर्ग ने कहा था कि ये पत्थर जितना छोटा होता जाएगा, क़ियामत उतनी ही क़रीब होती जाएगी. मेरे अंदाज़े के मुत़ाबिक़, वो पत्थर अभी 9-10 किलो से कम नहीं होगा;

अल्लाह (ﷻ) ने अपने ख़ास़ बंदों को, कैसी-कैसी ख़ास़ त़ाक़तें अ़त़ा की!

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
16/03/23 ई.

अपनों से एक गुज़ारिश

हर इमाम, और हर ऐसा शख़्स जो क़ौम की क़ियादत कर रहा है, चाहे उसके मातह़्त 10-20 आदमी ही क्यूँ न हों, वो अपनी उसी क़ौम को बताए कि:

'बैतुल् मुक़द्दस (Jerusalem)' हम मुसलमानों का पहला क़िब्ला है, और हमारे दिल की धड़कन है;
दुनिया के हर मुसलमान का दिल, जिस तरह मक्का मुअ़ज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा के लिए धड़कता है, उसके बाद बैतुल् मुक़द्दस के लिए भी उसी तरह धड़कता है;
हमारे फिलिस्तीनी भाइयों की जागीर है वो जगह, जहां यहूदी, आतंक फैलाकर कब्ज़ा करने की कोशिश कर रहे हैं;
क़ौम के सामने तब्लीग़ करने के लिए ये ज़रूरी तो नहीं कि:
आप क़ीमती जुब्बा व पगड़ी में हों;
ख़ूबसूरत स्टेज लगाई गयी हो;
ज़बर्दस्त साउंड सिस्टम हो;
हज़ारों की भीड़ हो;
ख़ूब नारेबाज़ी हो;
फिर लास्ट में मोटे लिफ़ाफ़े में आपको नज़राना मिले;
और फिर सीना फुलाकर ख़ुद को 'मुफ़क्किरे क़ौमो मिल्लत' कहलवाया जाए; इस अह़्क़र की नज़र में ख़ुलूस़ के साथ तब्लीग़ करने के लिए सिर्फ़ चार चीज़ों का होना काफ़ी है:

1. इ़ल्म,
2. ज़ुबान,
3. बहादुरी,
4. सामने मौजूद कुछ सुनने वाले लोग,

बाक़ी इनके अलावा जितनी भी चीज़ें हैं, वो इज़ाफ़ी (additional) हैं. अगर हों, तो अच्छी बात है. अगर न हों, तो उसके सबब अपने तब्लीग़ी फ़रीज़े पर कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ना चाहिए.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
07/04/23 ई.

17 रमज़ान (02 हि.) को बद्रे कुब्-रा में कुफ़्फ़ार का ड़बरतनाक अंजाम

क़ुरआन 22:39 —

"اُذِنَ لِلَّذِیۡنَ یُقٰتَلُوۡنَ بِاَنَّهُمۡ ظُلِمُوۡا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰی نَصۡرِهِمۡ لَقَدِیۡرُ"۔
"परवानगी (इजाज़त) अ़त़ा हुई उन्हें,
जिनसे काफ़िर लड़ते हैं,
इस बिना पर कि उन पर ज़ुल्म हुआ;
और बेशक अल्लाह उनकी मदद करने पर ज़रूर क़ादिर है."
[कंज़ुल् ईमान]

सबसे पहली आयत जिसमें काफ़िरों के ख़िलाफ़ जिहाद करने की इजाज़त दी गयी. बराबर 13 साल तक काफ़िरों ने मुसलमानों को परेशान किया, उनका ख़ून बहाया, उनके माल लूटे, उनका धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक बहिष्कार किया. मुसलमान बार-बार आक़ा (ﷺ) की बारगाह में आकर जंग की इजाज़त मांगते, मगर रह़ीमो करीम आक़ा (ﷺ) उनसे कह देते:

"सब्र करो, अभी अल्लाह की तरफ़ से हमें जंग की इजाज़त नहीं मिली है." ये सुनकर मुसलमान रंजीदगी में लौट जाते. मगर जब 2 हि. में ये आयत नाज़िल फ़रमाई गयी, तो दुनिया ने देखा के 313 निहत्थे मुजाहिदीन ने 1000 मुसल्लह़ कुफ़्फ़ार को कैसी मुँह की खिलाई;

मैदाने बद्र में आने के बाद काफ़िर फ़ौज के सरदार अबू जहल ने हाथ उठाकर दुआ़ की, कि:

"ऐ मेरे रब! आज तू फ़ैसला फ़रमा दे, और जिसे तू ज़्यादा महबूब रखता है उसकी मदद कर."

तो अल्लाह क़ह्हारो जब्बार ने क़ुरआन 8:19 को नाज़िल फ़रमाया:
"اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ"،

"ऐ काफ़िरो!
अगर तुम फ़ैसला मांगते हो, तो यह फ़ैसला तुम पर आ चुका; और अगर बाज़ आओ, तो तुम्हारा भला है;
और अगर तुम फिर शरारत करो, तो हम फिर सज़ा देंगे;
और तुम्हारा जत्था तुम्हें कुछ काम न देगा, चाहें कितना ही बहुत हो; और उसके साथ ये है कि अल्लाह मुसलमानों के साथ है."
[कंज़ुल् ईमान]

फिर फ़त्ह़ को क़ुरआन 3:123 में कुछ इस तरह याद दिलाया गया:
"وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ"،

"और बेशक अल्लाह ने बद्र में तुम्हारी मदद की, जब तुम बिल्कुल बे-सरो सामान थे;
तो अल्लाह से डरो, कि कहीं तुम शुक्र गुज़ार होओ." [कंज़ुल् ईमान]

30/04/21 ई.

एक गुज़ारिश: जिसे कुबूल किया जाए

इस्लामी सियासत से ख़ाली, और गंदी सियासत से भरे हुए इस दौर में, तमाम लोगों से मैं गुज़ारिश करता हूं कि अ़ाला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) की इन सात किताबों का, किसी भी क़ीमत पर, मुत़ालअ़ा ज़रूर करें:

1. 'अल् मह़ज्जतुल् मुअतमनह फ़ी आयतिल् मुम्तह़नह (जो कि 'तर्के मुवालात' के नाम से मशहूर है)',
2. 'इअ़्लामुल् अअ़्लाम बि-अन्-न हिन्दुस्तान दारुल् इस्लाम',
3. 'दवामुल् ऐ़श फ़िल् अइम्मति मिन् क़ुरैश',
4. 'नाबिग़ुन् नूर अ़ला सुवालाति जबलफ़ूर',
5. 'अर्-रम्ज़ुल् मुरस़्स़फ़ अ़ला सुवालाति मौलानस् सय्यिद आस़फ़',
6. 'अन्फ़सुल् फ़िकर फ़ी क़ुर्बानिल् बक़र',
7. 'तदबीरे फ़लाह़ो नजातो इस़्लाह़',

इन किताबों को पढ़ने के बाद, आप समझ जाएंगे कि इस दौर में, इस्लाम के ख़िलाफ़ होने वाली साज़िशों का क्या मक़्स़द है, और इनके इलाज क्या-क्या हैं;

और दुश्मन किस तरह से, आपकी तरफ़ भलाई का हाथ बढ़ाने का बहाना लेकर, आपकी पीठ पर ख़ंजर भौकता है;

साथ ही, अगर कोशिश करें तो, 'फ़तावा रज़विय्यह' की पूरी 'किताबुस् सियर' को ही पढ़ डालें, और इमाम की सियासी बस़ीरत को देखकर अंदाज़ लगाएं कि उन्होंने आगे आने वाले सियासी फ़ितनों को पहले से ही परख लिया था.

20/04/23 ई.

Materialism to enter Islam

Now a days, many muslim students of science — doing some daʿwah — attempt to interpret several qurʾānic verses as scientific, and they deviate from principles of tafsīr, and lughah (language).

Somehow they, unintentionally, are permitting materialism to enter Islam. Also, they are trying their best to add every Islamic thing to materialism, and aren't thinking beyond science. As a result, the distortion of verses became wide-spread.
Although, Qurʾān doesn't go against empirical facts, but also never testifies every hypothesis.
Under this topic, I like what Shaykh Asrar Rashid writes, and he is true in his claim:

"This is partly to do with the Arabic language where a single word can have various nuances. For this reason, it is erroneous for Muslims to claim that every scientific theory can be found in the Qurʾān — this is simply not true."

Further, writes on next page:
"Both Muslims and Non-muslims are today

responsible for distorting the meanings of Qurʾān, both ignoring the linguistic import to the meanings."

And suggests these people:
"Rather than crossing swords in their attempts to co-opt the meanings of Qurʾān, whether to prove it miraculous by grafting every scientific theory onto its meaning, or simply distorting its meaning to make it sound anti-scientific, opposing groups should engage with the Qurʾān from within its pure Arabic lexicography which reveals its precise descriptions."

Islam answers atheism, Chapter no. 5, Pg. 245/246/248, Published by Rigel Publishing (London), 1442 AD/2021 CE

Muḥammad Qāsim al-Qādirī al-Azʾharī
22/12/18 CE

मुम्किना फ़ितना, और उसका इस्लामी हल

मुम्किन है कुछ दिन बाद ये फ़ितना भी उठे, कि:

वो मुसलमान लड़कियां, जो ग़ैर-मुस्लिम लड़कों के साथ भागकर, अपने घर और दीन से ग़द्दारी कर चुकी हैं, और कोर्ट मैरिज की शक्ल में, दाइमी ज़िना का सर्टिफिकेट लेकर, इस्लाम छोड़कर मुर्तद्द हो गयी हैं:

उनके ज़रिए, इनके मुसलमान बाप/भाई की प्रॉपर्टी में क्लेम कराया जाए, और मना करने पर ये कहा जाए कि:

"इस्लाम तो लड़कियों को विरासत में ह़क़ देता है, मगर तुम मुसलमान होकर भी इस्लाम की बात नहीं मान रहे हो. फिर तुम किस ह़क़ से इस लड़की को ताना दे रहे हो कि: 'तूने एक ग़ैर-मुस्लिम से शादी करके इस्लाम की बात नहीं मानी.' जब तुम ख़ुद इस्लाम की बात नहीं मान रहे, तो वो क्यूँ माने!?"

अगर ऐसा हो, तो अब मुसलमान बाप/भाई के पास दो ही रास्ते बचते हैं:

1. तमाम तरह के झूठे केस, और पुलिस के ज़ुल्म से बचने के लिए उस मुर्तद्दा को ज़मीन में हिस्सा दे दे;
या फिर —
2. ज़मीन में हिस्सा न देकर, जेल की काल कोठरी में ज़िन्दगी गुज़ारे, और उसकी सारी प्रॉपर्टी हुकूमत ज़ब्त कर ले;

इन दोनों हालतों में, इनका मक़्सद आपको जायदाद से बेदख़ल करना, या कम से कम आपकी पूरी नहीं तो थोड़ी प्रॉपर्टी को बर्बाद करके आपको माली नुक़सान पहुंचाना ही है, ताकि आप आर्थिक परेशानियों से जूझें;

मगर आपको ये जानने की ज़रूरत है कि जब ये सारे खेल इस्लाम का नाम लेकर होंगे, तो आप इस्लाम में मौजूद विरासत के क़ानून का सहारा लेकर, सबको ये बताएं कि इस्लाम में चार चीज़ों की वजह से विरासत में हिस्सा हासिल करने की अहलिय्यत ख़त्म हो जाती है, जिसे विरासत के क़ानून में, 'मवानिउ़ल् इर्स (Impediments to succession)' कहते हैं:

1. रिक़्क़ (servitude/ग़ुलामी): चाहें कामिल हो जैसे कि क़िन्न में होती है; या नाक़िस़ हो जैसे कि मुकातब, मुदब्बर, या उम्मे वलद में होती है;
तो 'रिक़्क़ (servitude)' की ऐसी तमाम शक्लों में, रक़ीक़ (ग़ुलाम) को विरासत का कोई ह़क़ हासिल नहीं;
2. क़त्ल (homicide): जिसमें क़िस़ास़, या कफ़्फ़ारह लाज़िम हो, जैसे: क़त्ले अ़मद में क़िस़ास़, या फिर शिब्हे अ़मद, या क़त्ले ख़त़ा, या शिब्हे ख़त़ा में कफ़्फ़ारह;
तो 'क़त्ल (homicide)' की इन तमाम क़िस्मों में, क़ातिल को विरासत में हिस्सा लेने की अहलिय्यत ही नहीं;

3. इख़्तिलाफ़े दीन (difference of religion): एक का मुस्लिम, और दूसरे का ग़ैर-मुस्लिम होना;
तो धर्म के बदलने पर, विरासत में कोई हिस्सा बाक़ी नहीं;
4. इख़्तिलाफ़े दार (difference of country): चाहें ये इख़्तिलाफ़ हक़ीक़ी व हुक्मी दोनों हो, जैसे कि एक ह़र्बी हो, और दूसरा ज़िम्मी हो. क्यूंकि ह़र्बी दारुल् ह़र्ब से है, और ज़िम्मी दारुल् इस्लाम से;
या फिर सिर्फ़ हुक्मी हो, जैसे कि एक मुस्तअ्मिन, दूसरा ज़िम्मी. दोनों हैं तो दारुल् इस्लाम ही से, मगर मुस्तअ्मिन आ़रिज़ी तौर पर, दारुल् इस्लाम में अमान लेकर, दारुल् ह़र्ब से आने वाला है. जबकि ज़िम्मी है मुस्तक़िल जिज़्या देकर, दारुल् इस्लाम ही का शहरी है;
या सिर्फ़ ह़क़ीक़ी हो, जैसे एक मुस्तअ्मिन हो, तो दूसरा ह़र्बी;
तो 'दार (country)' अलग होने पर, विरासत में कोई हिस्सा नहीं;
ये वो चार 'मवानिउ़ल् इर्स (impediments to succession)' हैं, कि अगर किसी के अंदर इनमें से कोई एक भी पाया गया, तो उसकी बुनियाद पर विरासत में हिस्सा लेना तो दूर की बात, बल्कि हिस्सा लेने की अहलिय्यत ही ख़त्म हो जाती है;

अब इन चारों में से, आपको जो सहारा लेना है वो है तीसरा पाइंट, कि जब मुसलमान बाप/भाई की, मुसलमान लड़की/बेटी ने, किसी ग़ैर-मुस्लिम के साथ शादी करके, दूसरा धर्म अपना लिया, तो अब दोनों का दीन (religion) अलग-अलग हो गया, लिहाज़ा विरासत के इस्लामी क़ानून के मुताबिक़ ऐसी मुर्तद्द होने वाली लड़की, मुसलमान बाप/भाई की प्रॉपर्टी में एक इंच हिस्से की भी हक़दार नहीं रही;
मीरास/विरासत की तमाम किताबों में, शुरू में ही, ये सारे रूल्स लिखे हुए मिल जाएंगे;

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"لَا يَرِثُ الْمُسْلِمُ الْكَافِرَ وَلَا الْكَافِرُ الْمُسْلِمَ"،

"मुसलमान, ग़ैर-मुस्लिम का;
और ग़ैर-मुस्लिम, मुसलमान का वारिस नहीं हो सकता."

बुख़ारी शरीफ़, ह़दीस नं. 6764, जिल्द नं. 8, पेज नं. 156, पब्लिकेशन: मत़्बअ़ अमीरिय्यह, बूलाक़ (काहिरा), 1311 हि.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
04/05/23 ई.

इ़ल्मे मन्तिक़

इ़ल्मे मन्तिक़ (Logic) में 'इ़ल्म' की जो मशहूर तअ़रीफ़ (Definition) है, वो ये है:

"حُصُوْلُ صُوْرَةِ الشَّيْءِ فِي الْعَقْلِ"،

"किसी चीज़ की सूरत का, अक़्ल में आ जाना",
इसके अलावा भी कई तअ़रीफ़ें (Definitions) की गई हैं, मगर ये सबसे मशहूर है;

आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने इ़ल्म की ये तअ़रीफ़ (Definition) बयान की:

"इ़ल्म वो नूर है, कि जो शै (यानी चीज़) इसके दायरे में आ गयी, मुन्कशिफ़ (यानी ज़ाहिर) हो गई;
और (ये इ़ल्म जिस चीज़) से (भी) मुतअ़ल्लिक़ हो गया, (तो) उस (चीज़) की सूरत हमारे ज़हन (mind) में मुरतसिम (यानी नक्श) हो गयी."

अल्-मल्फ़ूज़, सफ़ा न. 163, पब्लिकेशन: नूरी कुतुबख़ाना (लाहौर)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
03/09/20 ई.

कौआ चला हंस की चाल

जब मौलवी अशरफ़ थानवी (d. 1362 हि.) की: 'ह़िफ़्ज़ुल् ईमान', वाली कुफ़्रिय्यह इ़बारत पर 33 उ़लमा-ए-ह़रमैन, व 268 बर्रे स़ग़ीर हिन्दुस्तान के उ़लमा ने कुफ़्र के फ़तवे दिए, तो थानवी ने अपनी: 'ह़िफ़्ज़ुल् ईमान' के डिफेंस में एक 4-5 पेज की किताबिया लिखी, जिसका नाम: 'बस्तुल् बनान' रखा; और उसमें अपनी कुफ़्रिय्यह इ़बारत की ताईद में, 'क़ाज़ियुल् क़ुज़ात इमाम बैज़ावी (d. 685 हि.)' की, इ़ल्मे कलाम में मशहूर किताब: 'त़वालिउ़ल्

अन्वार' की शरह़: 'मत़ालिउ़ल् अन्ज़ार' का हवाला दिया, जो 'इमाम अबुस् सना अल्-अस्फ़हानी (d. 749 हि.)' ने लिखी, और साथ ही 'इमाम जुरजानी (d. 816 हि.)' की: 'शरह़ुल् मवाक़िफ़' का भी हवाला दिया, और बुज़ुर्गों पर इफ़्तिरा करके अ़य्यारी व मक्कारी की सारी हदें पार कर डालीं;

अब चूँकि इमामे अहले सुन्नत (अ़लैहिर्रह़मह) पहले ही अपनी इन दोनों किताबों: 'अब्ह़ासे अख़ीरह', और 'अल् जबलुस् सानवी अ़ला किल्यतित् थानवी' में इत्मामे ह़ुज्जत कर चुके थे, और अब इसकी इस 4-5 पेज की कितबिया का जवाब देना ग़ैर ज़रूरी समझा, तो मैदान शहज़ादे ने सम्भाला, और सरकार मुफ़्तिए आ़ज़म (अ़लैहिर्रह़मह) ने इस 4-5 पेज की कितबिया के रद में दो धांसू किताबें लिखीं:

1. "वक़अ़ातुस् सिनान इला ह़ल्क़िल् मुसम्माति बस्तिल् बनान (1330 हि.)",
2. "इद्ख़ालुस् सिनान इला ह़नकिल् ह़ल्क़ा बस्तिल् बनान (1331 हि.)",

इसके अ़लावा, ह़ुज़ूर शेरे बेशए अहले सुन्नत 'अ़ल्लामा ह़श्मत अ़ली लखनवी (d. 1380 हि.)' ने भी दो ज़बर्दस्त किताबें लिखीं:
1. "क़हरे वाजिदे दय्यान बर हम्शीरे बस्तुल् बनान (1346 हि.)",
2. "अल्-क़िलादतुत् तय्यिबतुल् मुरस्सअ़ह अ़ला नुहूरिल् अस्इलतिस् सब्अ़ह (1343 हि.)",

ये सारी किताबें छप चुकी हैं, हर किसी को पढ़नी चाहिए.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
19/08/21 ई.

मुसीबतें भी निअ़मत हैं

दीन के लिए मैदाने जंग में तलवार का ज़ख़्म भी इतनी तकलीफ़ नहीं देता है; जितनी तकलीफ़ मुआ़शरे की तरफ़ से लगाई जाने वाली तुहमतों और इल्ज़ामों से होती है.

मगर ऐसे शरीरों पर क़ुदरत की मार ज़रूर पड़ती है:

क़ुरआन 30:47 —

"وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءُوهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَانتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرَمُوا ۖ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ"۔

"और बेशक हमनें तुम से पहले कितने रसूल उनकी क़ौम की तरफ़ भेजे, तो वो उनके पास खुली निशानियां लाए. फिर हमनें मुजरिमों से बदला लिया, और हमारे ज़िम्म-ए-करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना."
[कंज़ुल् ईमान]
साथ ही, इन शरीरों की मक्कारियों पर स़ब्र करने वालों को बड़ा इनाम मिलता है:
आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"إِنَّ عِظَمَ الجَزَاءِ مَعَ عِظَمِ البَلاَءِ، وَإِنَّ اللَّهَ إِذَا أَحَبَّ قَوْمًا ابْتَلاَهُمْ، فَمَنْ رَضِيَ فَلَهُ الرِّضَا، وَمَنْ سَخِطَ فَلَهُ السَّخَطُ"۔

"बेशक, बड़ा सवाब बड़ी मुसीबत (पर स़ब्र करने) से ही मिलता है; और जब अल्लाह तआ़ला किसी क़ौम से मुह़ब्बत फ़रमाता है तो उसे मुसीबत

में डाल देता है; तो जो (अल्लाह के इस इम्तिह़ान से) राज़ी हुआ, तो उसके लिए (भी अल्लाह की) रज़ा है; और जो नाराज़ हुआ, तो उसके लिए भी (अल्लाह की जानिब से) नाराज़गी है."

सुनने तिर्मिज़ी, ह़दीस न. 2396, जिल्द न. 4, पेज न. 601, पब्लिकेशन: मत़्बअ़ मुस़्तफ़ा बाबी ह़लबी (मिस्र), दूसरा एडीशन, 1395 हि. / 1975 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
30/07/21 ई.

क़दामत का धोखा

जो फ़लासिफ़ा (Philosophers) और आर्य समाजी, परवरदिगारे ‌आलम (ﷻ) के साथ, 'रूह़ (आत्मा/Soul)' व 'माद्दा (प्रकृति/Primordial Matter)' को भी 'क़दीम (अनादि/Pre-eternal)' मानते हैं, वो अपने रब में दो तरह के ऐ़ब साबित कर रहे हैं:

1. ‌आजिज़ होना (‌अ़ज्ज़/Disability);
2. मुह़्ताज होना (इह़्तियाज/Neediness);

'अ़ज्ज़ (disability)' इसलिए, क्यूंकि इनके अ़क़ीदे के मुत़ाबिक़, बिना 'रूह़' और 'माद्दा' के, इनका रब, कायनात बनाने पर क़ादिर नहीं, बल्कि इससे '‌आजिज़ (disable)' है;

'इह़्तियाज (neediness)' इस तरह, कि इनके अ़क़ीदे के हिसाब से, कायनात को बनाने में, इनका रब, 'रूह़' और 'माद्दा' का मुह़्ताज है. बिना इनकी मदद के, वो कायनात नहीं बना सकता;

और जो '‌आजिज़ (disable)' या 'मुह़्ताज (needy)' हो, वो हरगिज़ ख़ुदा नहीं हो सकता.

06/11/23 ई.

फ़त्ह़े मक्का का सबब

कई लोगों ने मुझ से ये सवाल किया कि:

"जब 6 हिजरी में 'स़ुल्ह़े ह़ुदैबिय्यह' हुई, तो मुसलमानों और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के दरमियान 10 साल का अमन मुआ़हदा (Peace Treaty) हुआ था. फिर भी दो साल बाद ही 8 हिजरी में 'फ़त्ह़े मक्का' का मामला सामने क्यूँ आया? इसका साफ़ मतलब है कि 'स़ुल्ह़े ह़ुदैबिय्यह' में होने वाला मुआ़हदा टूट गया था. मगर किसकी तरफ़ से?"
इसका जवाब सुन लें:
'बनू ख़ुज़ाआ़', मुसलमानों के ह़लीफ़ थे. जबकि 'बनू दुइल', कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के ह़लीफ़ थे;
कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के ह़लीफ़ 'बनू दुइल' ने, जब मुसलमानों के ह़लीफ़ 'बनू ख़ुज़ाआ़' पर हमला किया, तो कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने अपने ह़लीफ़ 'बनू दुइल' को इस जुर्म से रोकने की जगह, उसकी इस मामले में मदद की;

जिसके सबब, कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की तरफ़ से 'सुल्ह़े ह़ुदैबिय्यह' टूट गयी, और फिर फ़त्ह़े मक्का का वाक़िआ़ पेश आया.

इसी नक़्ज़े अ़ह्द (Breach of treaty) की सज़ा देने के लिए, आक़ा (ﷺ) अपने दस हज़ार मुसल्लह़ स़ह़ाबा के साथ मक्का में दाख़िल हुए. जो कि बिना किसी ख़ून-ख़राबे के फ़त्ह़ हुआ. सिवा उस मुट्ठीभर बाग़ी गिरोह के, जो (सय्यिदुना) इ़करिमा इब्ने अबी जहल (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) की क़ियादत में मुसलमानों के मुक़ाबले की सोच रहा था. जिसमें से सय्यिदुना ख़ालिद इब्ने वलीद (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने आक़ा (ﷺ) के हुक्म से 12 या 13

लोगों को क़त्ल किया, कई भाग गए और कई ईमान ले आए. जिसमें दो मुसलमान भी शहीद हुए.

सीरत व तारीख़ की तमाम मुअ़्तबर किताबों, जैसे: 'सीरते इब्ने हिशाम', व 'अल्-बिदायह वन् निहायह' वग़ैरह में इसकी पूरी तफ़्सील मौजूद है.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
13/09/23 ई.

बेबस मुशरिक

अल्लाह (ﷻ) ने क़ुरआन 26:91-102 में, मुशरिकीन की बेबसी बयान करते हुए फ़रमाया:

"وَ بُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ وَ قِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَ الْغَاوٗنَ وَ جُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ قَالُوْا وَ هُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ مَاۤ اَضَلَّنَاۤ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ وَ لَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ"،

"और ज़ाहिर की जाएगी दोज़ख़, गुमराहों के लिए;
और उनसे कहा जाएगा: 'कहाँ हैं वो, जिनको तुम पूजते थे, अल्लाह के सिवा. क्या वो तुम्हारी मदद करेंगे, या बदला लेंगे?'
तो औंधा दिए जाएंगे जहन्नम में, वो और सब गुमराह;
और इब्लीस के लश्कर सारे;

कहेंगे, और वो इसमें बाहम झगड़ते होंगे: 'ख़ुदा की क़सम! बेशक हम खुली गुमराही में थे. जबकि तुम्हें रब्बुल् आलमीन के बराबर ठहराते थे. और हमें न बहकाया, मगर मुजरिमों ने. तो अब हमारा कोई सिफ़ारिशी नहीं. और न ग़मख़्वार दोस्त. तो किसी तरह हमें फिर जाना होता, कि हम मुसलमान होते'." [कंज़ुल् ईमान]

मुहम्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
25/12/22 ई.

मुआहदा हुआ तार-तार

दौरे नबवी, और बाद के इस्लामी दौर में, कुफ़्फ़ार 'अमन मुआहदे (Peace Treaty)' के बाद, ख़ुफ़िया तौर पर भी अगर दुश्मनों की मदद करते थे, तब पता लगने पर फौरन 'नक़्ज़े अह्द (Breach of Treaty)' का हुक्म नाफ़िज़ करके, उनके ख़िलाफ़ लश्कर-कशी की जाती थी;
मगर आज के हुनूद एलानिया, न सिर्फ़ मदद कर रहे हैं, बल्कि मार भी रहे हैं, फिर ये कैसे मुआहद हो सकते हैं?

23/10/23 ई.

तीन बाग़ी यहूदी क़बीले

मदीना शरीफ़ में रहने वाले तीन यहूदी क़बीले, जिन्होंने आक़ा (ﷺ) के नाफ़िज़ किए हुए 'मीसाक़े मदीना (the constitution of Madīnah)' के मातह्त रहकर तमाम हुक़ूक़ हासिल किए, और 'अमन मुआहदे (Peace

Treaty)' को क़ुबूल किया:
1. बनू क़ैनुक़ाअ़
2. बनू क़ुरैज़ा
3. बनू नज़ीर

फिर बाद में चुपके-चुपके 'नक़्ज़े अ़ह्द (Breach of Treaty)' वाली हरकतें कीं, और आक़ा (ﷺ) को शहीद करने की कोशिश की. साथ ही मुसलमानों के ख़िलाफ़, कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की हर तरह की मदद की;
ग़द्दारी खुलने के बाद, सब को मदीना शरीफ़ से निकाल दिया गया, और बहुतसे ज़ब्ह़ किए गए.

अल्-अज़्हरी
23/10/23 ई.

बनू क़ुरैज़ा का अंजाम

बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों के साथ, 5 हि./627 ई. में, जो कुछ हुआ, सब उन्हीं की मज़्हबी किताब 'तौरात' के मुत़ाबिक़ हुआ था;
उनका फ़ैसला, आक़ा (ﷺ) ने उन्हीं की मज़्हबी किताब के मुत़ाबिक़, उन्हीं की रज़ामंदी पर, सय्यिदुना सअ़द इब्ने मआ़ज़ (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) से कराया था;

तौरात में 'Deutronomy, Chapter no. 20, Verse no. 10-14' पर, और 'Numbers, Chapter no. 31, Verse no. 7-10' पर यही अह़्काम तफ़्स़ील से बयान किए गए हैं, कि सुल्ह़ न करके, जंग करने वालों के तमाम मर्दों को ज़ब्ह़ कर दिया जाए, और उनकी औरतों व बच्चों को क़ैद कर

लिया जाए, और उनके तमाम माल व जायदाद पर क़ब्ज़ा कर लिया जाए; फिर बनू क़ुरैज़ा के साथ जो कुछ भी हुआ, सब कुछ उन्हीं की रज़ामंदी पर, उन्हीं की मज़्हबी किताब के मुत़ाबिक़ हुआ.

अल्-अज़्हरी
24/10/23 ई.

तीन जानी दुश्मन

तीन यहूदी, जो आक़ा (ﷺ) के सबसे बड़े दुश्मन थे:

1. कअ़्ब इब्ने अशरफ़;
2. अबू अ़फ़क;
3. अबू राफ़िअ़ (सल्लाम इब्ने अबिल् हुक़ैक़);

तीनों को, आक़ा (ﷺ) के हुक्म पर वासिले जहन्नम किया गया.

अल्-अज़्हरी
23/10/23 ई.

फ़ारूक़े आ़ज़म का फ़ैसला

आक़ा (ﷺ) ने एक मुनाफ़िक़ व यहूदी के बीच फ़ैसला कर दिया, जो कि यहूदी के ह़क़ में था. मगर मुनाफ़िक़ फिर भी सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) के पास फ़ैसला कराने पहुंचा. जब आपको उस यहूदी

ने बताया कि मुह़म्मद (ﷺ) ने हमारे बीच फ़ैसला कर दिया है. तो ऊ़मरे फ़ारूक़ ने उस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ाकर कहा:

"जो अल्लाह (ﷻ), और उसके रसूल (ﷺ) के फ़ैसले से राज़ी न हो, उसका मेरे पास यही फ़ैसला है."
[ख़ज़ाइनुल् इ़र्फ़ान]

14/11/23 ई.

मुस्लिम ख़वातीन की अ़ज़्मत

सिर्फ़ एक मुस्लिम ख़ातून के साथ बदतमीज़ी करने के सबब, 2 हि./624 ई. में, आक़ा (ﷺ) ने बनू क़ैनुक़ाअ़ के यहूदियों पर लश्कर-कशी की, और उन्हें मदीना शरीफ़ से जिलावत़न कर दिया;

आक़ा (ﷺ) ने 'कअ़्ब इब्ने अशरफ़ यहूदी' के क़त्ल का हुक्म जिन वजहों से दिया, उनमें से एक वजह ये भी थी कि वो मुसलमान ख़वातीन के हुस्न पर ग़ज़लें लिखकर, उसे बेपर्दा करता था.

23/10/23 ई.

फ़िक्री व सियासी जंग

आज के दौर में इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ सबसे बड़ी जंग जो है, वो है: 'फ़िक्री जंग (Ideological War/वैचारिक युद्ध)', जो एक लम्ह़े के लिए भी नहीं रुक रही है. हर मज़्हबी और इल्ह़ादी गिरोह, अपने तमामतर

दाख़िली झगड़ों के बावजूद, अपनी पूरी लॉबी के साथ, इस्लाम के ख़िलाफ़ फ़िक्री यल्ग़ार करने में बिजी है;
इसके साथ दूसरी जंग है: 'सियासी जंग (Political War/राजनैतिक युद्ध)', जिसमें मुसलमान को सिवा ग़ुलामी के कुछ नहीं दिया जा रहा है;

अब इस यल्ग़ार के सामने, मुसलमानों को तीन हिस्सों में बांट सकते हैं:

1. उ़लमा
2. पढ़ी लिखी अ़वाम
3. कम-पढ़ी लिखी अ़वाम

अब सबको अलग-अलग तौर पर देखते हैं:

1. उ़लमा को दो हिस्सों में बांट सकते हैं:

(1) उ़लमा-ए-ह़क़: जो हर वक़्त अपने दीन और क़ौम के लिए, अपनी ज़ुबान, क़लम और माल से जिहाद करने में लगे हुए हैं, और अपनी-अपनी तरबियतगाहों में ऐसे अफ़राद तैयार करने में लगे हुए हैं जो हर वक़्त अपने दीन और क़ौम के लिए, हर मह़ाज़ पर, लड़ने की ताक़त व हिम्मत रखें;

(2) उ़लमा-ए-सूअ: जिनकी ख़लवत व जलवत में शदीद इख़्तिलाफ़ पाया जाता हो. जिन्हें 5k तनख़्वाह लेकर, हुकूमत की बोली बोलनी होती है. सोशल मीडिया पर जाकर इस्लाम की जाने/अंजाने में ग़लत वज़ाह़त करते हैं. जिनमें, अल्लाह (ﷻ) के वुजूद को अ़क़्लन् साबित करने तक की स़लाहि़य्यत नहीं;
या जिन्हें सिर्फ़ पीरों की बढ़ाई बयान करने से, छोटे-छोटे पीरज़ादों को वली

बनाने से, अहले सुन्नत से दूसरे सुन्नियों को निकालने से, और बड़े-बड़े जलसों में जुब्बा-पगड़ी के साथ ग़ैर मुअ़्तबर व मौज़ूअ़ रिवायात से भरी ला-यअ़्नी तक़रीरों से, शुहरत से, और नज़रानों से मतलब होता है. पढ़ने-लिखने से कोई मतलब नहीं;

2. फिर पढ़ी-लिखी अ़वाम को दो हिस्सों में बांट सकते हैं:

(1) जो हर वक़्त अपने दीन और क़ौम के लिए कमरबस्ता रहते हैं. दुश्मनों के बेजा एतराज़, और दुनियावी पढ़ाई से उनके ईमान पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता;
(2) जो दुनियावी पढ़ाई में इतने घुस चुके हैं, कि उन्हें दीनी बातों से कोई मतलब नहीं. बल्कि इस्लाम के ख़िलाफ़ तरह-तरह की फ़िक्रों से मुतअस्सिर हैं. जैसा कि आज की यूनिवर्सिटीज़ में पढ़ने वाले, अक्सर मुसलमान बच्चों का हाल है;

3. कम पढ़ी-लिखी अ़वाम को भी दो हिस्सों में बांट लीजिए:

(1) जो अपने कमाने-धमाने, और घर वालों का पेट भरने के लिए मेहनत में लगे रहते हैं. ज़रूरत-भर इनका तअ़ल्लुक़ दीन से, मस्जिद से, उ़लमा से भी रहता है;

(2) जो अपने घर से फ़्री, न कमाने की फ़िक्र, न घर वालों की फ़िक्र, न दुनिया बनाने से मतलब, न आख़िरत से कोई मतलब, एक नंबर के उजड्ड, गंवार, ऊबाश, बद-क़िमाश, बद-किरदार क़िस्म के होते हैं. फिर पूरा दिन मोबाइल और टीवी पर गुज़ार कर, शाम को मुहल्लों और गलियों के तिराहों-चौराहों पर, अपने ही क़िस्म के चंद गधों को ज्ञान देने निकलते हैं.

उस वक़्त इनकी बातें, एक बड़े सियासत-दां या एक बड़े मुफ़्ती से हल्की-फुल्की नहीं लगती. हमारे मुआशरे में इनकी तादाद अच्छी-खासी है;
अब इस तक़्सीम के बाद, आज की इस 'फ़िक्री जंग (Ideological War/वैचारिक युद्ध)', और 'सियासी जंग (Political War/राजनैतिक युद्ध)' से मुतअस्सिर होने वाले लोग आसानी से ज़ाहिर हो सकते हैं:

1.(2) उ़लमा-ए-सूअ;
2.(2) दुनियावी पढ़ाई वाले जिनका दीन से कोई लेना-देना नहीं;
3.(2) घर से फ़्री, कम पढ़े-लिखे लोग;

अब जब अपने लोग, ऐसी फ़िक्र से मुतअस्सिर हो जाते हैं जिसका तअ़ल्लुक़ इस्लाम-दुश्मनी से हो, तब क़ौम बेराह-रवी का शिकार होने लगती है. अब ये बेराह-रवी हमारी आँखों के सामने है कि अपने किरदार से लेकर अपने अफ़्कारो नज़रियात तक पर, ग़ैर इस्लामी रंग चढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है;

आक़ा (ﷺ) ने मुसलमानों की इस बुरी हालत को बहुत पहले ही बता दिया था:

"'لَتَتْبَعُنَّ سَنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ، شبراً بشبر وَذِرَاعًا بِذِرَاعٍ، حَتَّى لَوْ دَخَلُوا جُحْرَ ضَبٍّ تَبِعْتُمُوهُمْ.' قُلْنَا: 'يَا رَسُولَ اللَّهِ! الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى؟' قَالَ: 'فَمَن!؟'"

"'तुम हर हाल में, पहले के लोगों के तरीक़ों पर, उनके क़दम से क़दम, और कांधे से कांधा मिलाकर चलोगे. यहां तक कि अगर वो गोह के बिल में भी जाएं, तब भी तुम उनके पीछे जाओगे.'

हम ने अ़र्ज़ की: 'क्या वो लोग (जिनके रास्ते पर मुसलमान चलेंगे) यहूदी और ईसाई हैं?'
आक़ा (ﷺ) ने जवाब में इर्शाद फ़रमाया: '(इनके अ़लावा) और कौन (हो सकता है!?)'"

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस नं. 6889, जिल्द नं. 6, पेज नं. 2669, पब्लिकेशन: दारुल् यमामा (दमिश्क), पांचवा एडीशन, 1414 हि./1993 ई.

ऐसी 'फ़िक्री व सियासी जंग' में, कुछ ऐसी किताबें पढ़ने की ज़रूरत है जो हमें ऐसी शैतानियों से बचा सकें, और हमारे इस्लाम में अ़क़्ल की अहमियत को उजागर करके, इस्लाम को अ़क़्ल की बुनियाद पर सही साबित करके, दुनिया के सामने पेश करने की त़ाक़त दे सकें, और साथ ही इस्लामी सियासत का सही मतलब हमें समझा सकें, और मुसलमानों के ख़िलाफ़ खेली जाने वाली गंदी सियासत का भयानक चेहरा ज़ाहिर कर सकें;

कुछ किताबों के नाम बता देता हूं जिन्हें पढ़ना अपने ऊपर ज़रूरी समझें:

1. अ़रबी जानने वाले लोग ये किताबें पढ़ें:

(1) 'किताबुल् अ़क़्ल व फ़द्लुहू', जिसे इस्लामी तारीख़ के ज़बर्दस्त बुज़ुर्ग: 'इमाम इब्ने अबिद् दुनिया (d. 281 हि.)' ने लिखा;
(2) 'मौक़िफ़ुल् अ़क़्ल (चार जिल्द में)', और इसकी तल्ख़ीस़: 'अल्-क़ौलुल् फ़स़्ल', जो सल्त़नते उस्मानिया के आख़िरी शैख़ुल् इस्लाम: 'मुस़्त़फ़ा स़बरी पाशा (d. 1373 हि./1954 ई.)' ने लिखी है. ये इतनी अ़ज़ीम किताब है, कि इसके बारे में, ह़लब (सीरिया) के एक अ़ज़ीम आ़लमी मुह़द्दिस: 'शैख़ अ़ब्दुल् फ़त्ताह़ अबू ग़ुद्-दा (d. 1417 हि.)' ने कहा था कि:

"هو كتاب القرن بلا منازع"،
"ये किताब, बिल्-इत्तिफ़ाक़ 'बुक ऑफ दि ईयर' है."

(3) 'मक़ामुल् अ़क़्ल फ़िल् इस्लाम', जो मिस्र के एक मशहूर अज़्हरी मुफ़क्किर: 'डॉ. मुह़म्मद ड़मारह (d. 1441 हि./2020 ई.)' ने लिखी;

इसके अ़लावा इस टॉपिक पर अ़रबी में बहुत किताबें लिखी जा चुकी हैं.

2. उर्दू जानने वालों के लिए ये चंद किताबें पेश करता हूं:

(1) 'अल् मह़ज्जतुल् मुअतमनह फ़ी आयतिल् मुम्तह़नह',
(2) 'दवामुल् ऐ़श फ़िल् अइम्मति मिन् क़ुरैश',
(3) 'तदबीरे फ़लाह़ो नजातो इस़्लाह़',
(4) 'नाबिग़ुन् नूर अ़ला सुवालाति जबलफ़ूर',
(5) 'अर् रम्ज़ुल् मुरस़्स़फ़ अ़ला सुवालाति मौलानस् सय्यिद आस़फ़',

ये पांचों किताबें: 'आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (d. 1340 हि./1921 ई.)' ने लिखी हैं;

इन तमाम किताबों को पढ़ें, फिर इस्लाम में अ़क़्ल और सियासत की अहमियत, और इनका सही मतलब समझें;
यक़ीनन हमारा इस्लाम, हरगिज़, 'अ़क़्ले सलीम', और 'शरई़ सियासत' के ख़िलाफ़ नहीं है.

04/07/23 ई.

यहूदी त़ाग़ूत

क़ुरआन 04:60 में, 'कअ़्ब इब्ने अशरफ़ यहूदी' को, 'त़ाग़ूत' कहा गया है.

14/11/23 ई.

रज़ा की मार

ईसाईयों पर जो क़हर, अ़ाला ह़ज़रत (d. 1921 ई.) ने अपनी किताब: 'अस्-स़म्स़ाम अ़ला मुशक्किकिन् फ़ी आयति उ़लूमिल् अर्ह़ाम (1315 हि./1897 ई.)' में बरसाया है,
उसकी नज़ीर नहीं मिलती.

01/09/23 ई.

दुनिया खेलकूद है

अपनी ज़िंदगी को चार हिस्सों में बांट कर देखा, कहीं भी सुकून नज़र नहीं आया:

1. बचपन पढ़ाई में ख़त्म;
2. लड़कपन कमाई में ख़त्म;
3. जवानी ख़ानदान में ख़त्म;
4. बुढ़ापा बीमारी में ख़त्म;

यक़ीन जानें, क़ुरआन ने इसीलिये कहा है कि ये दुनिया सिर्फ़ खेलकूद ही है, और असली ज़िंदगी आख़िरत की ज़िंदगी है.

05/10/23 ई.

कुफ़्फ़ार की जहालत

सनातनियों/आर्य समाजियों का एक आर्ग्यूमेंट आजकल बहुत पढ़ने को मिल रहा है:

"इस्लाम के अनुसार, ज़मीन चपटी ही है. अगर चपटी न होती, तो दुनिया के हर इलाक़े से कअ़्बा की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ना सम्भव ही नहीं हो सकता. क्यूँ एक चीज़ की तरफ़ मुँह तब ही हो सकता है, जब कि ज़मीन चपटी मानी जाए."

इसका साफ़ मतलब है कि इन गोबर-सेवन करने वालों को आजतक, 'गोलीय ज्यामिति (Spherical geometry)' में 'गोलीय त्रिकोणमिति (Spherical trigonometry)' की हवा ही नहीं लगी है, जिसे 'इ़ल्मे मुसल्लसे कुरवी' कहते हैं;

इसी सब्जेक्ट पर, आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) ने, दुनिया के किसी भी इलाक़े से, कअ़्बा की दिशा (direction) पता लगाने के लिए पूरी किताब लिख डाली. जिसका नाम है: "कश्फ़ुल् इ़ल्लह अ़न् सिमतिल् क़िब्लह", यक़ीनन जहालत से बढ़कर कोई बीमारी नहीं.

अल्-अह़्सनी अल्-अज़्हरी
14/09/23 ई.

अहम उस़ूल

जिन दलीलों (Proofs/Evidences) से, यक़ीनी इ़ल्म (certain knowledge) हासिल होता है, वो 6 हैं:

1. अव्वलिय्यात (Fundamentals),
2. मुशाहदात [Observable {इसमें मह़सूसात व विज्दानिय्यात (Perceptible) भी शामिल हैं}],
3. मुजर्रबात (Empirical),
4. ह़दसिय्यात (Intuitive),
5. मुतवातिरात (Mass transmission),
6. फ़ित़रिय्यात (Rational Proposition),

ये 6 प्रूफ़्स, 'इपिस्टमोलाजी [معرفة العلم (ज्ञानमीमांसा)]' का बहुत अहम हिस्सा हैं. मुल्ह़िदीन (atheists) से गुफ़्तगू करते वक़्त, इन्हें हमेशा मद्देनज़र रखना चाहिए;
किसी दिन इनकी तफ़्सील भी बयान करूंगा.

11/07/23 ई.

मुल्ह़िदीन का वसवसा

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"يَأْتِي الشَّيْطَانُ أَحَدَكُمْ، فَيَقُولَ: 'مَنْ خَلَقَ كَذَا وَكَذَا؟' حَتَّى يَقُولَ لَهُ: 'مَنْ خَلَقَ

رَبَّكَ؟' فَإِذَا بَلَغَ ذَلِكَ، فَلْيَسْتَعِذْ بِاللّٰهِ وَلْيَنْتَهِ".

"तुम में से किसी के पास शैतान आएगा, तो पूछेगा: 'फ़ुलां-फ़ुलां चीज़ को किसने पैदा किया?'
यहां तक कि ये (सवाल) भी पूछेगा: 'तुम्हारे रब को किसने पैदा किया?'
तो जिसके साथ ऐसा हो, तो वो अऊज़ु-बिल्लाह पढ़े, और (ऐसे वसवसों की तरफ़) तवज्जुह न दे."

स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल् ईमान, बाब: बयानुल् वस्वसह फ़िल् ईमान, ह़दीस न. 214, जिल्द न. 1, पेज न. 120, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
20/12/20 ई.

नास्तिकों का मुग़ालत़ह

अल्ह़म्दुलिल्लाह;
आज 'फ़तावा रज़विय्यह' से वुजूदे बारी के इंकार पर नास्तिकों के दावे 'मुग़ालत़तुल् इह़्तिकाम इलल् जह्-ल (appeal to ignorance)' का इस्तिंबात़ किया; साथ में इसका वो रद भी मेरे इमाम के अल्फाज़ में मिल गया, जो ब्रिटिश काॅस्मोलाॅजिस्ट 'मार्टिन रीज़ (60th president of Royal Society)' ने किया था, जिसे अमेरिकन एस्ट्रॉनमर 'कार्ल सैगन (d. 1996)' ने अपनी किताब 'the demon-haunted world' में नक़्ल किया;
यानी:
"अ़दमे दलील, दलीले अ़दम नहीं होता."

(Absence of evidence isn't evidence of absence.)
इसी को कहा जाता है: "Martin Rees' maxim",

आसान ज़ुबान में समझें:

"किसी चीज़ के वुजूद पर कोई दलील न होना;
उस चीज़ के, वुजूद के, न होने की, दलील नहीं होती."

जैसे नास्तिक कहते हैं कि ख़ुदा मौजूद नहीं, क्यूंकि उसके मौजूद होने पर कोई दलील नहीं;

यही है: 'मुग़ालत़तुल् इह़्तिकाम इलल् जह्-ल (appeal to ignorance)',

इमामे अहले सुन्नत (अ़लैहिर्-रह़मह) ने अपने रिसाले: 'इत्यानुल् अरवाह़ लि-दियारिहिम् बअ़दर् रवाह़ (1321 हि.)' में कुछ लोगों का रद करते हुए लिखा:

"बिल्-फ़र्ज़, अगर इन रिवायात से क़त़्ए नज़र भी, तो ग़ायत ये, कि #अ़दमे_सुबूत_है, #न_सुबूते_अ़दम; और बे-दलीले अ़दम, इद्-दिआ़-ए-अ़दम, मह़ज़ तह़क्कुमो सितम."

फ़तावा रज़विय्यह, 9:658, पब्लिकेशन: रज़ा फाउंडेशन (लाहौर)

हम समझते हैं कि ये सब बुज़ुर्गों की पुरानी-धुरानी बातें हैं, जिनका दौरे हाज़िर में कोई काम नहीं;
मगर अगर आप दोनों तरफ की किताबें पढ़ते तो देख लेते कि यही सारे

उसूल आज की साइंस भी इस्तेमाल करती है;
एक हवाला देख लीजिए:

'कार्ल ऐडवर्ड सैगन (d. 1996)', जो कि इंटरनेशनल लेवल का अमेरिकन ऐस्ट्रोनमर, कास्मोलाजिस्ट और ऐस्ट्रोफिजिसिस्ट रहा; इसने भी नास्तिकों के इस 'appeal to ignorance' को 'impatience with ambiguity (वहमे बेसब्री)' बताकर इसका रद किया, और अपनी किताब में लिखा:

"Absence of evidence isn't evidence of absence."

The demon-haunted world: science as a candle in the dark, Chapter no. 12, Pg. No. 213, first edition, Published in Ballantine (New York)

आख़िर में 'appeal to ignorance' का फैमिली ट्री देखें, ताकि आप ये समझ सकें कि ये किधर से आया है:

'मुग़ालत़ह (fallacy)' की दो क़िस्में हैं:

1. मुग़ालत़-ए-स़ूरिय्यह (formal fallacy)
2. मुग़ालत़-ए-ग़ैरे स़ूरिय्यह (informal fallacy)

तो इस दूसरी क़िस्म 'मुग़ालत़-ए-ग़ैरे स़ूरिय्यह (informal fallacy)' के मातहत ही, ये 'appeal to ignorance' आता है. इसके कई नाम हैं, जैसे:
1. Argumentum ad ignorantiam (Latin),
2. Argument from ignorance,
3. इसी को अ़रबी में 'मुग़ालत़तुल् इह़्तिकाम इलल् जह्-ल' कहते हैं.

सफ़ेद दाढ़ी वाली ख़ुफ़िया फ़ौज

सल्तनते उ़स्मानिया के स़ूफ़िया व उ़लमा के बारे में, तुर्की के अ़ज़ीम मुअर्रिख़: 'इमाम अबुल्-ख़ैर इ़स़ामुद्-दीन त़ाशकुबरी ज़ादा (d. 968 हि./1561 ई.)' ने पूरी किताब लिखी है, जिसका नाम है: 'अश्-शक़ाइक़ुन् नुअ़्मानिय्यह फ़ी उ़लमाइद् दौलतिल् उ़स्मानिय्यह'. ये किताब अहले इ़ल्म के दरमियान बड़ी क़द्र की निगाह से देखी जाती है;

फिर इस अ़ज़ीम किताब पर, दौलते उ़स्मानिया के एक बड़े आ़लिम: 'इमाम इब्ने लाली बाली (d. 992 हि./1584 ई.)' ने: 'अल्-इ़क़्दुल् मन्ज़ूम फ़ी ज़िक्रि अफ़ाद़िलिर् रूम' के नाम से ह़ाशिया लगाया, और किताब में चार चांद लगा दिए. हर अ़रबी जानने वाले को ये किताब पढ़नी चाहिए, ताकि दौलते उ़स्मानिया की रूह़ानी फ़ौज का तआ़रुफ़ हम जान सकें.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
12/07/23 ई.

अहम बात

"मुसलमान को मुसलमान, काफ़िर को काफ़िर जानना,
ज़रूरिय्याते दीन (Necessities of Dīn) से है.......कि क़त़ई काफ़िर के कुफ़्र में शक भी, आदमी को काफ़िर बना देता है."

बहारे शरीअ़त, हिस्सा न. 1, जिल्द न. 1, पेज न. 185, अ़क़ीदा न. 7, दावते इस्लामी एडीशन

इमामे अहले सुन्नत (अ़लैहिर्रह़मह) लिखते हैं:
"अल्लाह तआ़ाला ने काफ़िर को काफ़िर कहने का हुक्म दिया:

'قُلْ يٰاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ' ۙ

'ऐ नबी! फ़रमा दीजिए: ‹ऐ काफ़िरो!›',

हाँ, काफ़िरे ज़िम्मी, कि सल्त़नते इस्लाम में मुत़ीउ़ल् इस्लाम होकर रहता है, इसे 'काफ़िर' कहकर पुकारना मना है, अगर इसे नागवार हो."

फिर 'दुर्रे मुख़्तार' का हवाला देने के बाद, आगे लिखते हैं:
"यूँही, ग़ैरे सल्त़नते इस्लाम में, जबकि काफ़िर को 'ओ काफ़िर' कहकर पुकारने में मुक़दमा चलता हो (तब भी मना है)."
फिर एक नस़्से फ़िक़्ही पेश करने के बाद लिखते हैं:

"मगर इसके ये मअ़ना नहीं, कि काफ़िर को काफ़िर न जाने, ये ख़ुद कुफ़्र है."

फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द नं. 21, पेज नं. 285, पब्लिकेशन: रज़ा फाउंडेशन (लाहौर)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
31/08/21 ई.

जामिआ़ अज़्हर

'जामिअ़ मस्जिद: अज़्हर शरीफ़, काहिरा (The Grand Mosque of al-Az'har, Cairo)', जहां से अज़्हर यूनिवर्सिटी की शुरुआत हुई थी;

इस अ़ज़ीम यूनिवर्सिटी की शुरुआत, सन् 970-972 ई. में, इसी एक मस्जिद के तौर पर हुई. जिसे शीओं की 'फ़ातिमी ख़िलाफ़त' के चौथे ख़लीफ़ा, और इस्माईली शीआ के 14वें इमाम: 'अल्-मुइज़्ज़ लि-दीनिल्लाह (d. 975 ई.)' के हुक्म पर, फ़ातिमी कमांडर: 'जौहर स़िक़िल्ली (d. 992 ई.)' ने तअ़मीर करवाया;

फिर जब 1171 ई. में, फ़ातिमी ख़िलाफ़त का ख़ातिमा हुआ, और सुल्तान स़लाहुद्-दीन अय्यूबी (d. 1193 ई.) ने मिस्र में इक़्तिदार हासिल किया, तब इस मस्जिद को शीओं से आज़ाद करवाकर, सुन्नी मस्जिद में बदला, और आज तक यहां सुन्नियत ही क़ायम है;

अल्ह़म्दुलिल्लाह (ﷻ)!

सुल्तान स़लाहुद्-दीन अय्यूबी (d. 1193 ई.) ने सबसे पहले मस्जिद के ही कंपाउंड में, मस्जिद से अलग, कॉलेज सिस्टम शुरू किया;
फिर 1340 ई. से 1400 ई. के बीच इस्लामी मम्लूक सल्तनत ने मस्जिद से अलग इमारतें बनवाईं, और पुरानी इमारतों की नई तअ़मीर करायी;
फिर उ़स्मानी सल्तनत ने इसमें चार चांद लगाए, और 'शैख़ुल् अज़्हर' का उ़ह्दा शुरू किया, और 'अल्-अज़्हर' पूरी इस्लामी दुनिया का मर्कज़ बन गयी;
फिर मिस्र के दूसरे राष्ट्रपति: 'जमाल अ़ब्दुन् नास़िर (d. 1970 ई.)' के दौर में, 1961 ई. में इसे यूनिवर्सिटी का दर्जा मिला, तभी इसमें दुनियावी पढ़ाई के लिए भी अलग-अलग फैकल्टी क़ायम कर दी गयीं.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
14/01/23 ई.

बड़ी बारगाहें

आज बहुत बड़ी-बड़ी बारगाहों में हाज़िरी हुई, जिनमें कई अफ़राद अहले बैत से हैं:

1. मौला ह़ैदरे कर्रार के अ़ज़ीम जंगजू शहज़ादे, जो जंगों में मौला अ़ली का सीधा बाज़ू होते थे, 'सय्यिदुना मुह़म्मद इब्ने ह़नफ़िय्यह (d. 80 हि.)' की जलालत वाली बारगाह में हाज़िर होने का शरफ़ हासिल हुआ. एक दिन किसी ने आपसे कहा:

"'لِمَ يغرر بك أبوك في الحرب، ولا يغرر بالحسن والحسين؟' فقال: 'إنّهما عيناه، وأنا يمينه، فهو يدفع عن عينيه بيمينه'"،

"आपके वालिद (मौला अ़ली) आपको ही जंग में हलाक करने के लिए क्यूँ ले जाते हैं, जबकि ह़सन और हुसैन को नहीं ले जाते?"

तो आपने जवाब दिया: 'ह़सन और हुसैन मेरे वालिद की आंखें हैं, और मैं उनका सीधा बाज़ू हूं. मेरे वालिद, अपनी आंखों की हिफ़ाज़त, अपने सीधे बाज़ू के ज़रिए करते हैं'."

मुक़द्-दमा इब्ने ख़ल्दून, जिल्द नं. 1, पेज नं. 250, पब्लिकेशन: दारुल् फ़िक्र (बेरूत)

2. इमाम हुसैन शहीदे कर्बला की शहज़ादी, 'सय्यिदा उम्मे कुल्सूम (रद़ियल्लाहु अ़न्हुमा)' के दरबार में;

3. इमाम जअ़्फ़रे स़ादिक़ (d. 148 हि.) की परपोती, 'सय्यिदा फ़ात़िमह

अल्-ऐनाअ (रद़ियल्लाहु अ़न्हुमा)' की मुबारक चौखट पर भी;
4. अ़ज़ीम बुज़ुर्ग, 'ह़ज़रत ज़ुन् नून मिस्री (d. 245 हि.)', जिसने हुकूमत को छोड़कर, फ़क़ीरी में बादशाहत की. जिनके बारे में मशहूर मुअर्रिख़ 'इब्ने इ़माद ह़ंबली (d. 1089 हि.)' ने अपनी मशहूर किताब: 'शज़रातुज़् ज़ह्ब' में लिखा है कि:

"أن الطير الخضر أخذت ترفرف فوق جنازته حتى وصل إلى قبره"،

"एक हरे परिंदे ने उनके जनाज़े के ऊपर फड़फड़ाना शुरू कर दिया, और जब तक जनाज़ह क़ब्र पर न पहुंच गया तब तक वो जनाज़े के ऊपर ही फड़फड़ाता रहा."

5. 'सय्यिदा राबिअ़ा बस़रिय्यह अ़दविय्यह (d. 180 हि.)', जिनका तक़्वा और करामात, ख़वास़ व अ़वाम के दरमियान बहुत मशहूर हैं. जिनका हाल ये था कि इमाम अबुल् फ़रज इब्ने जौज़ी (d. 597 हि.) ने अपनी किताब: 'स़िफ़तुस़् स़फ़वह' में लिखा है कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने ई़सा कहते हैं:

"دخلت على رابعة العدوية بيتها فرأيت على وجهها النور، وكانت كثيرة البكاء.

فقرأ رجل عندها آية من القرآن فيها ذكر النار، فصاحت، ثم سقطت"،

"मैं राबिअ़ा अ़दविय्यह के घर गया, तो उनके चेहरे पर मैंने नूर देखा, और आप (अल्लाह के ख़ौफ़ से) बहुत रोया करती थीं. तो एक शख़्स ने आपके पास एक आयत पढ़ी जिसमें जहन्नम का ज़िक्र था. तो आप चीख़ मारकर, गिर पड़ीं."

6. इमाम जअ़्फ़रे स़ादिक़ (d. 148 हि.) के पोते, 'सय्यिदुना यह़्या अश-शबीह', और 'सय्यिदा फ़ात़िमह अल्-ऐनाअ' के वालिद, 'सय्यिदुना अल्-

क़ासिम अत्-तय्यिब (रद़ियल्लाहु अ़न्हुम्)' की बारगाह में ह़ाज़िरी हुई;
7. बड़े ऊंचे रुतबे वाले ह़नफ़ी फ़क़ीह, और फ़िक़्हे ह़नफ़ी की अ़ज़ीम किताब: 'कंज़ुद्-दक़ाइक़', की बहुत मश्हूर शरह़: 'तब्यीनुल् ह़क़ाइक़' के मुस़न्निफ़, 'इमाम फ़ख़रुद्-दीन उ़स्मान ज़ैलई़ (d. 743 हि.)' के दरबार में भी जाना हुआ;
नोट: फ़िक़्हे ह़नफ़ी में एक दूसरे भी इमाम ज़ैलई़ हैं, जिन्होंने 'हिदायह' की अह़ादीस की तख़रीज में: 'नस़्बुर् रायह लि अह़ादीसिल् हिदायह' लिखी है. वो भी क़ाहिरा में ही दफ़्न किए गए, और वो, मज़्कूराबाला इमाम उ़स्मान ज़ैलई़ के ज़माने में ही थे. मगर उनका नाम: 'जमालुद्-दीन अ़ब्दुल्लाह ज़ैलई़' है, जिनकी वफ़ात 762 हि. में हुई. दोनों में कंफ्यूज़न न हो;

8. बहुत बड़े स़ूफ़ी, 'इमाम अबू अ़ली रूज़बारी (d. 322 हि.)', जिनके बारे में इमाम ज़हबी (d. 748 हि.) ने अपनी किताब: 'सियरु अअ़्लामिन् नुबला' में एक अ़ज़ीम स़ूफ़ी 'इमाम अबू अ़ली इब्ने कातिब (d. 343 हि.)' का क़ौल ज़िक्र किया है कि:

"ما رأيت أحدا أجمع لعلم الشريعة والحقيقة من أبي علي"،

"मैंने, अबू अ़ली रूज़बारी से ज़्यादा, शरीअ़त व ह़क़ीक़त का इ़ल्म रखने वाला नहीं देखा."

24/09/22 ई.

इमाम राज़ी और इब्ने तैमिय्यह

इमाम फ़ख़रुद्-दीन राज़ी (d. 606 हि.) की अ़ज़ीम किताब: 'तअ्सीसुत् तक़्दीस', के रद में इब्ने तैमिय्यह ह़र्रानी (d. 728 हि.) ने: 'बयानु तल्बीसिल्

जहमिय्यह फ़ी तअ्सीसि ब़िदइहिमिल् कलामिय्यह', नाम की किताब लिखी, जिसमें उनसे अशाइरह को 'जहमिय्यह' कहकर पुकारा, जैसा कि आज के वह्हाबिय्यह भी यही कर रहे हैं;

इसके रद में कई दिन से किताब तलाश रहा था, जो आज आकर मिली, जिसे इमाम अह़मद इब्ने जह्बल (d. 733 हि.) ने लिखा है;

'दारु नूरिस़् स़बाह़ (क़ाहिरा)' ने इसे 'तअ्सीसुत् तक़्दीस' के साथ ही छाप दिया है.

26/10/22 ई.

Prophet to whole creation

My Sayyidunā Muḥammad (ﷺ) was sent to whole creation. See the proofs:

1. Qurʾān 34:28 —

"وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا"،

"And O dear Prophet! We have not sent you except with a Prophethood that covers the entire mankind....!"
[Tr. Kanz-ul-Īmān]
2. Qurʾān 21:107 —

"وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ"،

"And We did not send you (O dear Prophet Mohammed - peace and blessings be upon him) except as a mercy for the entire world."

[Tr. Kanz-ul-Īmān]

3. Qurʾān 7:158 —

"قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللّٰهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا"،

"Say (O dear Prophet Mohammed - peace and blessings be upon him): 'O people! Indeed, I am, towards you all, the Noble Messenger of Allah..!'"

[Tr. Kanz-ul-Īmān]

As per in Ḥadīth, the Prophet (ﷺ) said:

"وَأُرْسِلْتُ إِلَى الْخَلْقِ كَافَّةً "

"I have been sent as a messenger unto the entire creation."

[Saḥīḥ Muslim, Ḥadīth no. 853]

But what about your Biblical Prophet:

Matthew, 15:24 says, "But he answered and said: 'I am not sent but unto the lost sheep of the house of Israel.'"

It proves that your Biblical message by its prophet was sent to israelites only. Now, stop forcing us to follow him.

It was my (old) rejoinder to a cross-worshipper regarding universal prophethood.

Qāsim Saifī
21/01/19 CE

सलाम करें

"आदमी जब अपने घर में दाख़िल हो,
तो बीवी को सलाम करे;
हिन्दुस्तान में ये बड़ी ग़लत रस्म है कि 'ज़न व शौ (wife & husband)' के इतने गहरे तअ़ल्लुक़ात होते हुए भी, एक दूसरे को सलाम से मह़रूम करते हैं...."

ख़ज़ाइनुल् इ़र्फ़ान, तह़्ते आयत: 04:86

28/11/23 ई.

नबियों के वफ़ादार

स़दरुल् अफ़ाज़िल सय्यिद नई़मुद्दीन मुरादाबादी (d. 1367 हि.) ने क़ुरआन 04:69 के तह़्त लिखा है कि:
"तो अम्बिया के मुख़्लिस़ फ़रमाबरदार,जन्नत में,
उनकी स़ुह़्बत और दीदार से, मह़रूम न होंगे..."
तफ़्सीरे 'ख़ज़ाइनुल् इ़र्फ़ान', ह़ाशिया नं. 181

28/11/23 ई.

उ़लमा का फ़रीज़ा

स़दरुल् अफ़ाज़िल सय्यिद नई़मुद्दीन मुरादाबादी (अ़लैहिर्रह़मह) ने क़ुरआन 03:187 के तह़्त लिखा है:
"उ़लमा पर वाजिब है कि अपने इ़ल्म से फ़ायदा पहुंचाएं, और ह़क़ ज़ाहिर

करें;
और किसी ग़र्ज़े फ़ासिद के लिए, इस में से कुछ न छुपाएं."

ख़ज़ाइनुल् इ़र्फ़ान, पेज नं. 120, ह़ाशिया नं. 372, पब्लिकेशन: मज्लिसे बरकात, मुबारकपुर (आजमगढ़)

22/08/23 ई.

कान बंद रखें

स़दरुल् अफ़ाज़िल सय्यिद नई़मुद्दीन मुरादाबादी (d. 1948 ई.) ने क़ुरआन 33:37 के तह़्त लिखा है:

"अम्रे मुबाह़[1] में,
बेजा त़अ़्न[2] करने वालों का,
कुछ अंदेशा न करना चाहिए."
[1]जाइज़ काम
[2]फालतू कमेंट

ख़ज़ाइनुल् इ़र्फ़ान, पेज नं. 675, पब्लिकेशन: मज्लिसे बरकात, मुबारकपुर (आ़ज़मगढ़)

07/08/23 ई.

भाई बहन का विरासत में बराबर हिस्सा

अख़्याफ़ी (मां-शरीक) भाई बहन का विरासत में बराबर हिस्सा है:
"सौतेले भाई-बहन,
जो फ़क़त मां में शरीक हों,

उनमें से एक हो, तो छठा;
और ज़्यादा हों, तो तिहाई;
और इनमें मर्द व औरत, बराबर हिस्सा पाएंगे."

ख़ज़ाइनुल् इ़र्फ़ान, तह़्ते आयत 04:12

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
30/08/23 ई.

इस्लाम में औरत की आज़ादी

इस्लाम ने औरतों को उस वक़्त ही आज़ादी दे दी थी, जिस वक़्त पूरी दुनिया औरतों पर ज़ुल्म कर रही थी;
इस्लाम तब भी औरतों के ह़क़ में बात कर रहा था, जब 'फैमिनिज़्म' के मां-बाप: 'मैडम मैरी वाल्सटनक्राफ्ट (d. 1797 ई.)', और 'चार्ल्स फोरियर (d. 1837 ई.)' अपने पूर्वजों के स़ुल्ब में लापता थे;

अल्लाह (ﷻ) ने क़ुरआन 04:19 में इर्शाद फ़रमाया:

"يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا"ؕ

"ऐ ईमान वालो! तुम्हें ह़लाल नहीं कि औरतों के वारिस बन जाओ, ज़बर्दस्ती."
स़दरुल् अफ़ाज़िल सय्यिद नईमुद्दीन मुरादाबादी (अ़लैहिर्रह़मह) इस आयत का शाने नुज़ूल बयान करते हुए लिखते हैं:
"ज़माना-ए-जाहिलिय्यत के लोग माल की तरह, अपने अक़ारिब की बीवियों के भी वारिस बन जाते थे;
फिर अगर चाहते, तो बे-महर, उन्हें अपनी ज़ौजिय्यत में रखते;

या किसी और के साथ शादी कर देते, और ख़ुद महर ले लेते;
या उन्हें क़ैद कर रखते, कि जो वरसा उन्होंने पाया है वो देकर रिहाई हासिल करें;
या मर जाएं, तो ये उनके वारिस हो जाएं;
ग़र्ज़, वो औरतें बिल्कुल उनके हाथ में मजबूर होती थीं, और अपने इख़्तियार से कुछ भी न कर सकती थीं;
इस रस्म को मिटाने के लिए, ये आयत नाज़िल फ़रमाई गई."

ख़ज़ाइनुल् इ़र्फ़ान, पेज नं. 129, ह़ाशिया नं. 50, पब्लिकेशन: मज्लिसे बरकात, मुबारकपुर (आजमगढ़)

05/09/23 ई.

मर्द व औरत बराबर

"और जज़ा-ए-अ़ामाल[1] में,
औरत व मर्द के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं."
[ख़ज़ाइनुल् इ़र्फ़ान, तह़्ते आयत: 03:195]
[1]अ़ामाल का बदला

22/08/23 ई.

मुँहतोड़ जवाब

सय्यिदा ह़व्वा को सय्यिदुना आदम की बेटी कहने वालों को मुँहतोड़ जवाब

स़दरुल् अफ़ाज़िल सय्यिद नई़मुद्दीन मुरादाबादी (अ़लैहिर्रह़मह) अपनी

तफ़्सीर: 'ख़ज़ाइनुल् इ़र्फ़ान' में, क़ुरआन 04:01 के तह़्त लिखते हैं कि:

"ह़ज़रते ह़व्वा, बत़रीक़े तवालुदे मअ़्मूली पैदा नहीं हुईं, इसलिए वो (ह़ज़रत आदम) की औलाद नहीं हो सकतीं;
जिस तरह कि इस (तवालुद के) त़रीक़े के ख़िलाफ़, जिस्मे इंसानी से बहुत से कीड़े पैदा हुआ करते हैं, वो इस (इंसान) की औलाद नहीं हो सकते हैं."

ख़ज़ाइनुल् इ़र्फ़ान, पेज नं. 123, ह़ाशिया नं. 3, पब्लिकेशन: मज्लिसे बरकात, मुबारकपुर (आजमगढ़)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
24/08/23 ई.

जिज़्यह की एक ह़िक्मत

स़दरुल् अफ़ाज़िल सय्यिद नई़मुद्दीन मुरादाबादी (अ़लैहिर्रह़मह) लिखते हैं:

"हिकमत, जिज़्यह मुक़र्रर करने की ये है कि कुफ़्फ़ार को मुहलत दी जाए, ताकि वो इस्लाम के मह़ासिन, और दलाइल की क़ुव्वत देखें;
और कुतुबे क़दीमा में, सय्यिदे आ़लम (ﷺ) की ख़बर, और हुज़ूर की नअ़्त व स़िफ़त देखकर, मुशर्रफ़ ब-इस्लाम होने का मौक़ा पाएं."
ख़ज़ाइनुल् इ़र्फ़ान, पेज नं. 308, सूरह तौबा (09:29), ह़ाशिया नं. 64, पब्लिकेशन: मज्लिसे बरकात, मुबारकपुर (आजमगढ़)

अल्-अह़्सनी
17/08/23 ई.

पांच अहम चीज़ें

ओ़ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह) लिखते हैं:
अल्लाह तआ़ला ने, शरीअ़तों को, पांच चीज़ों की हिफ़ाज़त के लिए क़ायम फ़रमाया:

1. दीन 2. अ़क़्ल 3. नसब
4. नफ़्स (जान) 5. माल

फ़तावा रज़विय्यह, 21:205

18/12/20 ई.

कॉलेज की पढ़ाई

आ़ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह) ने, 'फ़तावा रज़विय्यह' में इर्शाद फ़रमाया:
"कॉलेज और इसकी तअ़्लीम में,
जिस क़द्र बात, ख़िलाफ़े शरीअ़त है,
उससे बचना हमेशा फ़र्ज़ था, और है;
जहां तक मुख़ालफ़ते शरअ़ न हो,
उससे बचना कभी भी फ़र्ज़ नहीं."

फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द नं. 15, पेज नं. 76, किताबुस् सियर (हिस्सा नं. 2), मस्अला नं. 8, पब्लिकेशन: रज़ा फ़ाउंडेशन (लाहौर)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
09/02/23 ई.

हमारी दो सल्तनतें

इमामे अहले सुन्नत ने लिखा है कि:
"सल्तनते अ़लिय्यह आ़लियह उ़स्मानिय्यह
व
दौलते ख़ुदादाद अफ़ग़ानिस्तान
(ह़फ़िज़हुमल्लाहु तआ़ला अ़न् शुरूरिज़् ज़मान[1])."

फ़तावा रज़विय्यह, 8:379, पब्लिकेशन: रज़ा फाउंडेशन (लाहौर)

[1]अल्लाह तआ़ला, ज़माने वालों की शरारतों से, इन दोनों सल्तनतों की हिफ़ाज़त फ़रमाए!

आ़ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत (अ़लैहिर्रह़मह) की ज़ुबां से सुन लो कि ये दोनों सल्तनतें हमारी हैं, इसीलिए आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) ने इनके बारे में लिखा है कि ये दोनों सल्तनतें: 'ख़ुद-मुख़्तार इस्लामी सल्तनतें' हैं; अल्ह़म्दुलिल्लाह!

01/02/22 ई.

फ़्रीमेसनरी

वो मुसलमान, जो फ़्रीमेसनरी जॉइन कर ले, उसके बारे में इमामे अहले सुन्नत (अ़लैहिर्रह़मह) ने लिखा है कि:
"फ़्रीमेसन, इस्लाम से मुर्तद्-द हो जाता है."

फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द नं. 14, पेज नं. 414

17/08/23 ई.

ज़रूरत भर अ़रबी ज़रूर सीखिए

आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह) लिखते हैं:

"फिर जिसकी समझ में अ़रबी न आए,
न उसके लिए नमाज़ व क़ुरआन, उर्दू या बंगला या अँग्रेज़ी कर दिए जाएंगे, न ख़ुत़बा व अज़ान;
ये उसका अपना क़ुसूर है;
उस का दीन अ़रबी, नबी अ़रबी, किताब अ़रबी, फिर अ़रबी इतनी भी न सीखी कि अपना दीन समझ सकता;
अंग्रेज़ी की हालत देखिए उस पर कैसे अंधे बावले हो कर गिरते हैं, कि दो पैसे कमाने को उम्मीद है;
और अ़रबी, जिस में दीन है, ईमान है,
उस से कुछ ग़र्ज़ नहीं."
फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द नं. 8, पेज नं. 401, पब्लिकेशन: रज़ा फाउंडेशन (लाहौर)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
01/07/23 ई.

मीलाद के बारे में रज़वी फ़रमान

आला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) ने लिखा है कि:
"मीलाद में ऐसा पढ़ना-सुनना, जो मुन्कराते शरइय्यह पर मुश्तमिल हो, नाजायज़ है;

जैसे: रिवायाते बात़िला, व ह़िकायाते मौज़ूअ़ा, अश्अ़ारे ख़िलाफ़े शरअ़, ख़ुस़ूस़न् जिनमें तौहीने अम्बिया व मलाइका (अ़लैहिमुस़्स़लातु वस्सलाम) हो;
कि आजकल के जाहिल नअ़्त-गोयों के कलाम में, ये बलाए अ़ज़ीम, ब-कसरत है;
हालांकि वो स़रीह़ कलिमा-ए-कुफ्र है."

फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द नं. 23, पेज नं. 723, पब्लिकेशन: रज़ा फाउंडेशन (लाहौर)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
20/09/23 ई.

औलाद का खाना

आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) ने लिखा है कि:
"बच्चे को पाक कमाई से रोज़ी दे;
कि नापाक माल,
नापाक ही आ़दतें डालता है."

मिश्अ़लतुल् इर्शाद फ़ी हुक़ूक़िल् औलाद, ह़क़ नं. 27, मश्मूला: फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द नं. 24, पेज नं. 452, रज़ा फाउंडेशन (लाहौर)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
02/09/23 ई.

अ़ज़ीम मुफ़्ती का अ़ज़ीम फ़तवा

आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह) के पास 2/रबीउ़ल् आख़िर, 1331 हि. को एक सवाल आया कि:

"मेरी अहलिया, अ़र्सा से, हर साल ह़ज़रत ग़ौसे आ़ज़म की ग्यारहवीं में सवा मन बिरियानी पकवाकर, नियाज़ दिलाती है, और मसाकीन को तक़्सीम की जाती है. क्या ऐसा हो सकता है कि ये रक़म इम्साल, शुहदा व यतामाए अ़साकिरे उ़स्मानिया की इम्दाद के लिए भेजी जाए, और ग्यारहवीं शरीफ़ मअ़्मूलन् क़द्रे शीरीनी या त़आ़म पर दिला दी जाए?"

अ़ज़ीम मुफ़्ती ने अपने अ़ज़ीम जवाब में इर्शाद फ़रमाया कि:

"अगर दोनों बातें न हों, तो यही बेहतर है कि क़द्रे नियाज़ देकर वो तमाम क़ीमत, इम्दादे मुजाहिदीन में भेज दी जाए, और इसका सवाब भी नज़्रे रूह़े अक़्दस ह़ज़रत सय्यिदुना ग़ौसे आ़ज़म (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) को किया जाए; वल्लाहु तआ़ला अअ़्लम."

फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द नं. 10, पेज नं. 331, मस्अला नं. 157, पब्लिकेशन: रज़ा फाउंडेशन (लाहौर)

इस जवाब का एक-एक लफ़्ज़, आबे ज़र से लिखने के क़ाबिल है, कि किस तरह से आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) ने, शरई़ व सियासी, दोनों पहलुओं पर अ़मल करने का ज़बर्दस्त तरीक़ा बताया;

साथ ही ये बात भी ज़ाहिर होती है कि वक़्त के नाज़ुक हालात में, इमाम का मौक़िफ़ किस तरह का रहता था.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
17/10/23 ई.

कहीं ये ग़लती आप तो नहीं कर रहे हैं

आज कल जिसे देखो वही, क़ुरआन से साइंस की हर बात साबित करने में लगा हुआ है. चाहें ख़ुद अभी उस बात पर सारे साइंटिस्ट्स का एका न हुआ हो, मगर इसे तो क़ुरआन से हर बात साबित करने की धुन सवार है;

अभी कुछ दिन पहले एक यूरोपियन मुबल्लिग़ा की वीडियो सामने आई, जिसमें मुह़्तरमा क़ुरआन से 'ब्लैक होल' को साबित कर रही थीं. इसे साबित करने के लिए उन्होंने इस अंदाज़ से आयात को पेश किया, जो इ़ल्मे तफ़्सीर के उसूल के बिल्कुल ख़िलाफ़ था;
सिर्फ़ यही नहीं, बल्कि बहुत से मश्हूर मुबल्लिग़ीन (जो समझे जाते हैं), उन्हें भी ऐसा करते देखा है, जिन्हें:
कुतुबे तफ़ासीर से कोई सरोकार नहीं;
न इन्हें तफ़्सीरुल् क़ुरआन बिल्-क़ुरआन से मतलब;
न ही तफ़्सीरुल् क़ुरआन बिल्-ह़दीस से कोई लेनादेना;
न इन्हें तफ़्सीरुल् क़ुरआन बि-आसारिस़् स़ह़ाबा की कोई पहचान;
न ही उस़ूले तफ़्सीर की ए, बी, सी, डी का ज्ञान;

ऐसे लोगों को अल्लाह (ﷻ) से डरना चाहिए, कि कहीं अंजाने में, वो बहुत बड़ा गुनाह तो नहीं करते जा रहे हैं;

इस बाब में, 'आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान (d. 1921 ई.)' की ये बात, आबे ज़र से लिखने के क़ाबिल है. वो लिखते हैं:

"क़ुरआने अ़ज़ीम के वही मअ़्ना लेने हैं, जो स़ह़ाबा व ताबिई़न व

मुफ़स्सिरीने मुअ़्तमदीन ने लिए;
इन सब के ख़िलाफ़, वो मअ़्ना लेना, जिनका पता नस़रानी साइंस में मिले, मुसलमानों को कैसे ह़लाल हो सकता है!?
क़ुरआने करीम की तफ़्सीर बिर्-राय, अशद्द कबीरा है. जिसपर हुक्म है: 'वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले'.

ये तो इससे भी बढ़कर होगा, कि क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर अपनी राय से भी नहीं, बल्कि राये नस़ारा के मुवाफ़िक़;
अल्-इ़याज़ु बिल्लाहि!"
नुज़ूले आयाते फ़ुरक़ान ब-सुकूने ज़मीनो आसमान, पेज नं. 8, मश्मूला: फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द नं. 27, रिसाला नं. 3

13/07/23 ई.

स़ह़ाबा से अफ़्ज़ल नहीं

आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) ने लिखा है कि:

"हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ़ज़म (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) को,
स़ह़ाबा-ए-किराम (रद़ियल्लाहु अ़न्हुम्) से अफ़्ज़ल कहना, गुमराही है...."

फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द नं. 21, पेज नं. 150, पब्लिकेशन: रज़ा फाउंडेशन (लाहौर)

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
19/10/23 ई.

सरदारे औलिया

आला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) लिखते हैं:

"ह़ज़रत शाह बदीउ़द्-दीन मदार (क़द्-दसल्लाहु सिर्रहुल् अ़ज़ीज़) ज़रूर अकाबिरे औलिया से हैं;
मगर इसमें शक नहीं, कि हुज़ूर पुरनूर सय्यिदुना ग़ौसे आ़ज़म (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) का मर्तबा, बहुत आ़ला व अफ़ज़ल है."

फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द नं. 26, पेज नं. 259, पब्लिकेशन: रज़ा फाउंडेशन (लाहौर)

इसी बात को अपने शिअ़्र में भी बयान किया, कि:

"मशाइख़ में किसी की तुझ पे तफ़ज़ील;
ब-हुक्मे औलिया, बात़िल है या ग़ौस!"

दुश्मन के मुग़ालत़े

इस्लाम पर एतराज़ करने वालों की तरफ़ से, इस्तेमाल किए जाने वाले 15 मुग़ालत़े (fallacies), जिन्हें शैख़ असरार रशीद (ह़फ़िज़हुल्लाहु व रआ़हु) ने अपनी किताब: 'Islam Answers atheism', में ज़िक्र किया है:

1. ख़ास़ को आ़म कर देना;
2. आ़म को ख़ास़ कर देना;
3. अस्ली टैक्स्ट में अपनी तरफ़ से इज़ाफ़ा कर देना;
4. शुरूत़ व क़ुयूद को छुपा लेना, जिनसे कान्टैक्स्ट बदल जाए;

5. इ़बारत को, बिना आगे-पीछे देखे, पेश करना;
6. अपनी बात साबित करने के लिए, टैक्स्ट के मअ़्ना से खिलवाड़ करना;
7. ख़्याली पुलाव बनाकर, उसी के मुत़ाबिक़ हमला करना;
8. किसी के तफ़र्रुद/इज्तिहाद को ज़िक्र करके, उसे पूरे इस्लाम का मौक़िफ़ क़रार देना;
9. किसी ख़ास़ फ़िर्क़े का मौक़िफ़ उठाकर, उसे इस्लाम का मौक़िफ़ बनाकर पेश करना;
10. किसी रिवायत को बिना तह़क़ीक़ के पेश करना;
11. मुअ़्तबर रिवायात को छुपाना, या उससे नावाक़िफ़ होना;
12. इल्ह़ादी साइंस का इस्तेमाल;
13. ख़ल्त़े मब्ह़स करना;
14. शुहरत या मन्स़ब को दलील बनाना;
15. अल्फ़ाज़ का ग़लत इस्तेमाल करना;

ये ऐसे मुग़ालत़े (fallacies) हैं, जिन्हें आज, हर दुश्मन इस्लाम के ख़िलाफ़ इस्तेमाल कर रहा है, और ये समझ रहा है कि वो सही समझ रहा है, जबकि ह़क़ीक़त में वो कुछ नहीं समझ रहा है;
इसी हरकत का रद करते हुए, 'इमामे अहले सुन्नत, अ़ाला ह़ज़रत शैख़ अह़मद रज़ा ख़ान (d. 1921 ई.)' लिखते हैं:

".....तो उसका बढ़ाना, कलामे इलाही में, अपनी तरफ़ से पैबंद लगाना होगा. अज़ पेशे ख़्वैश (अपनी तरफ़ से) क़ुरआने अ़ज़ीम के मुत़्लक़ को मुक़य्यद, अ़ाम को मुख़स़्स़स़ बनाना होगा, और ये हरगिज़ रवां नहीं;
अहले सुन्नत का अ़क़ीदा है जो इनकी कुतुबे अ़क़ाइद में मुस़र्रह़ (clarified) है कि:

"النصوص تحمل على ظواهرها"،

"नुसूस (texts) अपने ज़ाहिर पर मह्मूल होती हैं",

बल्कि तमाम ज़लालतों (गुमराहियों) का बड़ा फाटक यही है कि बतौरे ख़ुद, नुसूस को ज़ाहिर से फेरें;
मुत्लक़ को मुक़य्यद, आम को मुख़स्सस करें....!"

नुज़ूले आयाते फ़ुरक़ान ब-सुकूने ज़मीनो आसमान, पेज नं. 19, मश्मूला: फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द नं. 27, रिसाला नं. 3

14/07/23 ई.

कल्टिज़्म से बचें

आज के कल्टिस्ट-मिज़ाज लोग — चाहें किसी भी सिलसिले से हों — सबके लिए, इमामे अहले सुन्नत (अ़लैहिर्रहमह) का हिदायत से भरा हुआ फ़रमान:
".....जब दलीले मक़्बूल से एक की अफ़्ज़लिय्यत साबित हो, तो उसमें अपने नफ़्स की ख़्वाहिश, अपनी ज़ाती अ़लाक़ा-ए-नसब, या निस्बते शागिर्दी, या मुरीदी वग़ैरह को अस्लन् दख़ल न दे. कि फ़ज़्ल हमारे हाथ नहीं, कि अपने आबा, व असातिज़ा, व मशाइख़ को औरों से अफ़्ज़ल ही करें;
जिसे ख़ुदा ने अफ़्ज़ल किया, वही अफ़्ज़ल है, अगरचे हमारा ज़ाती अ़लाक़ा उससे कुछ न हो;
और जिसे मफ़्ज़ूल् किया, वही मफ़्ज़ूल् है, अगरचे हमारे सब अ़लाक़े उससे हों;
ये इस्लामी शान है, मुसलमानों को इसी पर अ़मल चाहिए...."

'त़र्दुल् अफ़ाई़ मिन् ह़िमा हादिन् रफ़अ़र् रिफ़ाई़', मश्मूला रसाइले रज़विय्यह, जिल्द नं. 33, पेज नं. 367, रिसाला नं. 194, पब्लिकेशन: इमाम अह़मद रज़ा अकैडमी (बरेली), 1444 हि./2022 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
14/10/23 ई.

जवाबुल् जवाब

आज से दो साल पहले, 05/06/20 ई. को, मैंने एक तह़रीर लिखी थी जिसका उन्वान था: 'ज़मीन मुतह़र्रिक या साकिन (तह़क़ीक़े अ़ाला ह़ज़रत के तअ़ारुफ़ में एक मुख़्तस़र गुफ़्तगू)', जो काफ़ी मक़्बूल हुई;

इसे लिखने की वजह वही रही, जो उस वक़्त हर शख़्स अपने कानों से सुन रहा था, और आँखों से देख रहा था कि किस तरह मीडिया पर, कुफ़्फ़ार के ज़रिए, कुछ सुन्नी उ़लमा की वीडियो क्लिप्स दिखाकर, उनके ख़िलाफ़ कैसी-कैसी अ़य्याराना बातें की जा रही थीं;

जिसका पूरा फ़ायदा कुफ़्र-नवाज़ वह्हाबिय्यह, उर्दू नाम वाले लिबरलों और सैक्यूलरों ने जी भरकर उठाया, और अ़ाला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) के ख़िलाफ़ बकवासों के बाज़ार गर्म किए, जिसका फ़क़ीर ने तह़रीरी जवाब लिखा, और उन 'सुफ़हा-उल्-अह़्लाम' तक पहुंचाया भी गया, मगर बि-ह़म्दिल्लाह (ﷻ) अब तक उधर से कोई जवाब नहीं आया, मह़ज़ मुर्दनी-सी छाई हुई है;

इसमें हल्का का इज़ाफ़ा करते हुए फ़क़ीर कहता है:

इस जहालत के बाज़ार में सबसे ज़्यादा बदगोई करने वाले 'ग़ैर मुक़ल्लिद/सलफ़ी/अह़ले ह़दीस' थे, जो भूल गए कि:

'शैख़ ह़मूद इब्ने अ़ब्दुल्लाह तुवैजिरी (d. 1413 हि.)', जो कि सऊ़दी के बहुत बड़े वह्हाबी आ़लिम गुज़रे हैं, जिनके इ़ल्म का डंका वह्हाबिय्यह के दरमियान बजता है, जिनकी शान में 'अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ इब्ने बाज़ (d. 1420 हि.)' ने भी क़लम चलाया, उन्होंने 'ज़मीन के साकिन (रुके हुए)' होने पर दो किताबें लिखीं:

1. 'अस़् स़वाइ़क़ुश् शदीदह अ़ला अत्बाइ़ल् हैअतिल् जदीदह',

ये किताब 190 पेज पर मुश्तमिल, पहली बार 1388 हि. में सऊ़दी से छपी; मज़े की बात ये है कि इस किताब पर तस़्दीक़ है: 'मुफ़्तिए आ़ज़म व क़ाज़िल् क़ुज़ात (सऊ़दी) मुह़म्मद इब्ने इब्राहीम आले शैख़ (d. 1389 हि.)' की;
2. 'ज़ैलुस़् स़वाइ़क़ लि-मह़्विल् अबात़ीलि वल् मख़ारिक़',

ये किताब 359 पेज पर मुश्तमिल, 1390 हि. में सऊ़दी से छपी;

इस पर तस़्दीक़ है: 'अ़ब्दुल्लाह इब्ने हुमैद (d. 1402 हि.)' की, जिसे 'मलिक फ़ैस़ल इब्ने अ़ब्दुल् अ़ज़ीज़ (d. 1395 हि.)' ने मस्जिदे ह़राम का मुदर्रिस व मुफ़्ती, और 'इशराफ़े दीनी' का हैड बनाया. फिर 1395 हि. में 'मलिक ख़ालिद इब्ने अ़ब्दुल् अ़ज़ीज़ (d. 1402 हि.)' ने इसे 'मज्लिसे क़ज़ा' और 'मज्लिसे फ़िक़्ही' का हैड, और 'हैअते किबारे उ़लमा' का मेंबर बनाया;
ये दोनों किताबें अ़रबी में, नेट पर, ऑनलाइन और पीडीएफ फाइल की शक्ल में भी, मौजूद हैं;

क़ारिईन, ज़रा देखें!
ये वह्हाबिय्यह के वो सरग़ने हैं, जिनपर पूरी मौजूदा वह्हाबिय्यत टिकी हुई है. इन्होंने भी, ज़मीन के बारे में, बिल्कुल वही लिखा है, जो इमामे अहले सुन्नत आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) ने लिखा है. मगर इनके चमचे, जिस तरह से अपनी बदतमीज़ी वाली ज़ुबान, आ़ला ह़ज़रत (अ़लैहिर्रह़मह) के ख़िलाफ़ खोलते हैं, और अपना गुस्ताख़ क़लम इमाम के ख़िलाफ़ चलाते हैं, इसी तरह अपने इन गुरुघंटालों के ख़िलाफ़ कभी, न अपनी ज़ुबान खोल सकते हैं, और न ही अपना क़लम चला सकते हैं;

अल्ह़म्दुलिल्लाह (ﷻ);
इमामे अहले सुन्नत (अ़लैहिर्रह़मह) की तह़क़ीक़ की तस़्दीक़, ख़ुद इनके ही बड़े-बड़े उ़लमा कर रहे हैं.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
20/07/22 ई.

हर काम का एक वक़्त है

हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आ़ज़म इमाम मुस़्तफ़ा रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह) इरशाद फ़रमाते हैं:
"हर काम का एक वक़्त होता है;
जो काम कल का है, आज न होगा;
या जो कल हो सकता था, वो आज नहीं हो सकता;
कि पहले का वक़्त आया नहीं,
और दूसरे का वक़्त गुज़र गया.

यूंही, हर बात कहने का एक मौक़ा और मह़ल होता है;
बे-मौक़ा, बे-मह़ल बात कहना, लोगों को हंसने का मौक़ा देना है...!"

तुरुकुल् हुदा वल् इर्शाद इला अह़्कामिल् इमारति वल् जिहाद, मश्मूलह: मज्मूआ ए रसाइले मुफ़्ती-ए-आ़ज़म, हिस़्सा नं. 3, जिल्द नं. 5, पेज नं. 177, पब्लिकेशन: रज़ा अकैडमी (बरेली), फ़र्स्ट एडीशन, 1436 हि./2015 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
28/03/21 ई.

जैसी ताक़त वैसी ज़िम्मेदारी

हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आ़ज़म इमाम मुस़्तफ़ा रज़ा ख़ान मातुरीदी ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह) लिखते हैं:
"जो हुक्म इंसानी क़ुव्वत व त़ाक़ते बशरी, व सिअ़तो इस्तित़ाअ़त से बाहर हो, वो हरगिज़ हुक्मे शरीअ़ते मुत़ह्हरा नहीं;
जिस हुक्म में कोई फ़ायदा न हो, अ़बस व लग़्व हो, वो हरगिज़ हमारी पाक शरअ़ का हुक्म नहीं;
जिस हुक्म में बे-फ़ायदा इत्लाफ़े जान, व इह्-लाके नफ़्स हो, वो इस शरए मुबीन का हुक्म नहीं;

यूंही, जिस हुक्म से सोते फ़ितने जागें, फ़साद बरपा हो, वो कभी मुक़द्-दस इस्लाम का हुक्म नहीं हो सकता."

तुरुकुल् हुदा वल् इर्शाद इला अह़्कामिल् इमारति वल् जिहाद, मश्मूलह: मज्मूआ ए रसाइले मुफ़्ती-ए-आ़ज़म, हिस़्सा न. 3, जिल्द न. 5, पेज न. 177, पब्लिकेशन: रज़ा अकैडमी (बरेली), फ़र्स्ट एडीशन, 1436 हि./2015 ई.

29/03/21 ई.

इब्ने अ़त़ाउल्लाह सिकंदरी के दरबार में

आज क़ाहिरा (मिस्र) में, दूसरी बार 'इमाम इब्ने अ़त़ाउल्लाह सिकंदरी (d. 709 हि.)' के दरबार में ह़ाज़िरी हुई, और साथियों के साथ मिलकर 'क़स़ीदा बुरदह', और आ़ला ह़ज़रत के लिखे हुए मशहूर सलाम: 'मुस़्त़फ़ा जाने रह़मत', के कुछ अश्आ़र पढ़ने की सआ़दत मिली;

'इमाम शाज़िली (d. 656 हि.)' के इंतिक़ाल के बाद, 'इमाम अबुल् अ़ब्बास मुरसी (d. 686 हि.)' के कंधों पर शाज़िली सिलसिले का सारा बोझ आया, जिनके ज़माने में शाज़िली सिलसिले ने आसमान की बुलंदी को छुआ;
फिर इनके बाद, इनके यही शागिर्द 'इमाम इब्ने अ़त़ाउल्लाह सिकंदरी (d. 709 हि.)' ने ये बोझ उठाया;
ये वही 'इमाम इब्ने अ़त़ाउल्लाह सिकंदरी (d. 709 हि.)' हैं, जो शैख़ुश् शाफ़िइय्यह 'इमाम तक़िय्युद्-दीन सुबकी [d. 756 हि. {वालिदे ताजुद्-दीन सुबकी (d. 771 हि.)}]' के उस्ताद हैं;
जिनके बारे में इमाम ज़हबी (d. 748 हि.) जैसे दुश्वार-पसंद मुअर्रिख़ ने: 'सियरु अअ़्लामिन् नुबला', में कहा है कि:

"كانت له جلالة عظيمة، ووقع في النفوس، ومشاركة في الفضائل، وكان يتكلم بالجامع الأزهر فوق كرسي بكلام يروّح النفوس"،

"वो बड़ी शान के मालिक थे, दिलों में जगह बना लेते थे, फ़ज़ीलतों वाले थे. जामिआ़ अज़्हर में कुर्सी पर बैठकर ऐसी गुफ़्तगू करते थे जिससे दिलों को ताज़गी पहुंचती थी."

ये वही इमाम इब्ने अ़त़ाउल्लाह सिकंदरी (d. 709 हि.) हैं, जिनकी क़ब्र पर आकर, मुह़क़्क़िक़ अ़लल् इत़्लाक़: 'इमाम कमाल इब्ने हुमाम (d. 861 हि.)' ने जब सूरह हूद की तिलावत की, और जब आयत नं. 105 पर पहुंचे:

"فَمِنۡهُمۡ شَقِیٌّ وَّ سَعِیۡدٌ"،

"तो उनमें कोई बदबख़्त है, और कोई ख़ुश नसीब."
तो इमाम इब्ने अ़त़ाउल्लाह सिकंदरी (d. 709 हि.) की क़ब्र से आवाज़ आई:

"يا كمال! ليس منّا شقي"،

"ऐ कमाल! हमारे बीच कोई बदबख़्त नहीं."
तब इमाम कमाल इब्ने हुमाम (d. 861 हि.) ने ये वस़िय्यत की थी, कि मुझे इन्हीं के पास दफ़नाया जाए.

15/10/22 ई.

इफ़्ता पर दिलेरी

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"أَجْرَؤُكُمْ عَلَى الْفُتْيَا، أَجْرَؤُكُمْ عَلَى النَّارِ"،

"तुम में जो शख़्स, फ़तवा देने पर ज़्यादा दिलेर हो;
वो जहन्नम पर ज़्यादा दिलेर है."

सुनने दारिमी, ह़दीस नं. 159, जिल्द नं. 1, पेज नं. 258, पब्लिकेशन: दारुल् मुग़्नी (सऊदी अरब), पहला एडीशन, 1412 हि./2000 ई.

इस ह़दीस को, हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आ़ज़म इमाम मुस़्तफ़ा रज़ा ख़ान मातुरीदी

ह़नफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (अ़लैहिर्रह़मह) ने अपनी किताब: 'ह़ुज्जतुन् वाहिरह बि-वुजूबिल् ह़ज्जतिल् ह़ाद़िरह' में भी ज़िक्र फ़रमाया है.
02/10/23 ई.

वैलेंटाइंस डे

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"إِنَّ اللّٰهَ كَتَبَ عَلَى ابْنِ آدَمَ حَظَّهُ مِنَ الزِّنَا، أَدْرَكَ ذَلِكَ لَا مَحَالَةَ، فَزِنَا الْعَيْنِ النَّظَرُ، وَزِنَا اللِّسَانِ الْمَنْطِقُ، وَالنَّفْسُ تَمَنَّى وَتَشْتَهِي، وَالْفَرْجُ يُصَدِّقُ ذَلِكَ وَيُكَذِّبُهُ"،

"अल्लाह (ﷻ) ने, इंसान पर, ज़िना का कुछ (न कुछ) हिस्सा लिखा है, जिसे वो हर हाल में पाएगा:
तो आंख का ज़िना, नज़र है;
और ज़ुबान का ज़िना, बातचीत है;
और नफ़्स, तमन्ना व ख़्वाहिश करता है,
और शर्मगाह उसे सच्चा या झूठा कर दिखाती है."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल् क़द्र, ह़दीस नं. 6612, जिल्द नं. 8, पेज नं. 125, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह (बेरूत), पहला एडीशन, 1422 ई.

13/02/23 ई.

ईमान में हर तरफ़ ख़ैर

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"عَجَبًا لِأَمْرِ الْمُؤْمِنِ، إِنَّ أَمْرَهُ كُلَّهُ خَيْرٌ، وَلَيْسَ ذَاكَ لِأَحَدٍ إِلَّا لِلْمُؤْمِنِ، إِنْ أَصَابَتْهُ سَرَّاءُ شَكَرَ فَكَانَ خَيْرًا لَهُ، وَإِنْ أَصَابَتْهُ ضَرَّاءُ صَبَرَ فَكَانَ خَيْرًا لَهُ"،

"ईमान वाले का मामला भी बड़ा अजीब है, कि उसके हर काम में भलाई है, और ये सिवा ईमान वाले के, किसी के लिए नहीं है:
अगर उसे ख़ुशी मिले, और वो शुक्र करे, तब भी उसके लिए भलाई है;
और अगर उसे तक्लीफ़ पहुंचे, और वो सब्र करे, तब भी उसके लिए भलाई है."

स़ह़ीह़ मुस्लिम, ह़दीस नं. 2999, जिल्द नं. 8, पेज नं. 227, पब्लिकेशन: दारुत़् त़बाअ़ह अल्-आ़मिरह (तुर्की), 1334

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
29/05/23 ई.

आपके दर पर गर्दन झुका दी

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"لا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى يَكُونَ هواهُ تَبعاً لِما جِئْتُ بِهِ"،

"तुम में से कोई, तब तक कामिल ईमान वाला नहीं हो सकता, जब तक कि उसकी ख़्वाहिशें, मेरी लाई हुई शरीअ़त के मुत़ाबिक़ न हो जाएं."

अल्-अर्बऊ़नन् नवविय्यह, ह़दीस नं. 41, पेज नं. 113, पब्लिकेशन: दारुल् मिन्हाज (बेरूत), पहला एडीशन, 1430 हि./2009 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
28/08/23 ई.

सुल्तानुल् मशरिक़ वल् मग़रिब

जिसे ख़ुद आक़ा (ﷺ) ने 'सुल्तानुल् मशरिक़ वल् मग़रिब' कह के पुकारा, इमाम इब्ने अमीर ह़ाज्ज फ़ासी (d. 737 हि.) के उस्ताद, 'अल् मराइल् ह़िसान', और 'बहजतुन् नुफ़ूस' जैसी किताबों के मुसन्निफ़: 'सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबी जमरह (d. 675 हि.)' के दरबार में ह़ाज़िरी;

इनके बारे में ख़ुद आक़ा (ﷺ) ने इमाम इब्ने अ़ताउल्लाह सिकंदरी (d. 709 हि.) के ख़्वाब में आकर कहा कि: "तुमने 'सुल्तानुल् मशरिक़ वल् मग़रिब' की ज़ियारत नहीं की?"
तो उन्होंने अ़र्ज़ की, कि: "कौन सुल्तानुल् मशरिक़ वल् मग़रिब?"
तो आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया: "अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबी जमरह."
इनके बारे में इमाम इब्ने कसीर (d. 774 हि.) ने 'अल्-बिदायह वन्-निहायह' में लिखा है कि:

"أن الشيخ عبد الله بن أبي جمرة كان قوالا بالحق آمرا بالمعروف ناهيا عن المنكر"،

"ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबी जमरह, डंके की चोट पर ह़क़ बोलने वाले थे. भलाई का हुक्म देने वाले, और बुराई से रोकने वाले थे."
इन्हीं के बारे में मशहूर है:

"لا يقف ببابه شقي ولا عاق لوالديه"،

"इनके दरबार में कोई भी बदबख़्त (मुनाफ़िक़), या अपने वालिदैन का नाफ़रमान ह़ाज़िर नहीं हो सकता."

यही इलाज है

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"الِاقْتِصَادُ فِي النَّفَقَةِ نِصْفُ الْمَعِيشَةِ،

وَالتَّوَدُّدُ إِلَى النَّاسِ نِصْفُ الْعَقْلِ،

وَحُسْنُ السُّؤَالِ نِصْفُ الْعِلْمِ"،

"दरमियाना ख़र्च, आधी कमाई है;
और लोगों से मुह़ब्बत के साथ पेश आना, आधी अ़क़्ल है;
और अच्छा सवाल पूछना, आधा इ़ल्म है."

अल्-मुअ़्जमुल् औसत़ [लित्-त़बरानी (d. 360 हि.)], ह़दीस नं. 6744, जिल्द नं. 7, पेज नं. 25, पब्लिकेशन: दारुल् ह़रमैन (काहिरा), 1415 हि./1995 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
24/05/23 ई.

मीलाद ऐसे भी मनाएं

"....अगली बार से मीलादुन्-नबी (ﷺ) ऐसे भी मनाएं, कि लोगों के दरमियान अपने आक़ा (ﷺ) की सीरत पर किताबें बांटी जाएं, ताकि लोग अपने आक़ा (ﷺ) की ज़िंदगी को पढ़ें, और उन्हें जानें, और ज़िन्दगी जीने का त़रीक़ा सीखें...."

02/10/23 ई.

सूरह कह्फ़

आक़ा (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया:

"إِنَّ مَنْ قَرَأَ سُورَةَ الْكَهْفِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ أَضَاءَ لَهُ مِنَ النُّورِ مَا بَيْنَ الْجُمُعَتَيْنِ"،

"बेशक, जिसने जुमुआ के दिन सूरह कह्फ़ की तिलावत की, तो इस जुमुआ से अगले जुमुआ तक उसके लिए एक नूर रौशन रहता है."

अल्-मुस्तदरक (लिल् ह़ाकिम), ह़दीस न. 3392, जिल्द न. 2, पेज न. 399, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), पहला एडीशन, 1411 हि./1990 ई.

ज़लज़ला: एक अ़ज़ाब

अल्लाह (ﷻ) ने क़ुरआन 6:65 में इर्शाद फ़रमाया:

"قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰۤى اَنْ یَّبْعَثَ عَلَیْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ یَلْبِسَكُمْ شِیَعًا وَّ یُذِیْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ اُنْظُرْ كَیْفَ نُصَرِّفُ الْاٰیٰتِ لَعَلَّهُمْ یَفْقَهُوْنَ"،

"तुम फ़रमाओ: 'वो क़ादिर है, कि तुम पर अ़ज़ाब भेजे, तुम्हारे ऊपर से, या तुम्हारे पांव के तले से;
या तुम्हें भिड़ा दे, मुख़्तलिफ़ गिरोह करके;
और एक को, दूसरे की सख़्ती चखाये',
देखो, हम क्यूंकर तरह-तरह से आयतें बयान करते हैं, कि कहीं इनको समझ सको." [कंज़ुल् ईमान]

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يُقْبَضَ الْعِلْمُ، وَتَكْثُرَ الزَّلَازِلُ، وَيَتَقَارَبَ الزَّمَانُ، وَتَظْهَرَ الْفِتَنُ، وَيَكْثُرَ الْهَرْجُ، وَهُوَ الْقَتْلُ الْقَتْلُ، حَتَّى يَكْثُرَ فِيكُمُ الْمَالُ فَيَفِيضَ"،

"क़ियामत नहीं आएगी, यहां तक कि:
इ़ल्म उठा लिया जाएगा;
और बहुत ज़लज़ले आयेंगे;
और वक़्त सिमट जाएगा;
और फ़ितने ज़ाहिर होंगे;
और 'हर्ज' ज़्यादा होगा, और वो क़त्ल है क़त्ल;
यहां तक कि तुम्हारे दरमियान, दौलत बहुत ज़्यादा बढ़ जाएगी."

स़ह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस नं. 1036, जिल्द नं. 2, पेज नं. 33, पब्लिकेशन: दारु त़ौक़िन् नजाह (बेरूत), पहला एडीशन, 1422 ई.

सय्यिदुना अनस (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) से रिवायत है कि सय्यिदा अ़ाइशा (रद़ियल्लाहु अ़न्हा) ने फ़रमाया:

"'إِنَّ الْمَرْأَةَ إِذَا خَلَعَتْ ثِيَابَهَا فِي غَيْرِ بَيْتِ زَوْجِهَا هَتَكَتْ مَا بَيْنَهَا وَبَيْنَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ مِنْ حِجَابٍ، وَإِنْ تَطَيَّبَتْ لِغَيْرِ زَوْجِهَا كَانَ عَلَيْهَا نَارًا وَشَنَارًا، فَإِذَا اسْتَحَلُّوا الزِّنَا وَشَرِبُوا الْخُمُورَ بَعْدَ هَذَا وَضَرَبُوا الْمَعَازِفَ، غَارَ اللَّهُ فِي سَمَائِهِ، فَقَالَ لِلْأَرْضِ: 'تَزَلْزَلِي بِهِمْ'، فَإِنْ تَابُوا وَنَزَعُوا وَإِلَّا هَدَمَهَا عَلَيْهِمْ'"،

"'अगर एक (शादीशुदा) औरत, अपने शौहर के घर के अलावा किसी दूसरी जगह (बदकारी के लिए) अपने कपड़े उतारे, तो उसने अपने और अल्लाह के दरमियान रहने वाले पर्दे को चाक कर दिया;
और अगर कोई औरत, अपने शौहर के अलावा किसी दूसरे के लिए खुशबू

लगाए, तो उसपर आग और शर्मिंदगी है;
और जब लोग ज़िना को ह़लाल कर लें, और इसके बाद शराबें पीने लगें, और ढोल-बाजे बजाने लगें, तो अल्लाह अपने आसमान में क़हर फ़रमाता है, और ज़मीन को हुक्म देता है: 'उनपर ज़लज़ला लेकर आ.'
अगर वो लोग तौबा कर लें, तो ठीक है. वर्ना अल्लाह, ज़मीन को उन पर ढहा देगा."

अल्-मुस्तदरक (लिल् ह़ाकिम), ह़दीस नं. 8575, जिल्द नं. 4, पेज नं. 561, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), पहला एडीशन, 1411 हि./1990 ई.

ज़लज़ला, क़ियामत की एक बड़ी निशानी है. हमारे बुज़ुर्गों ने इस टॉपिक पर भी कई किताबें लिखी हैं कि दुनिया में कब-कब, और कहाँ-कहाँ ज़लज़ले आए. इन किताबों में से कुछ अहम किताबें ये हैं:

1. इमाम अबुल् फ़रज इब्ने जौज़ी (d. 597 हि.) की किताब: 'अल्-मुद्हिश' के बाब नं. 4 की, फ़स़्ल नं. 9 में, सन् 20 हि. से लेकर 552 हि. तक के ज़लज़लों का बयान है. इस किताब का दूसरा एडीशन: 'दारुल् क़लम (दमिश्क)' से दो जिल्दों में, 1435 हि./2014 ई. में पब्लिश हुआ;

2. इमाम जलालुद्-दीन सुयूत़ी (d. 911 हि.) ने अपनी किताब: 'कश्फ़ुस़् स़ल्स़लह अ़न् वस़्फ़िज़् ज़लज़लह' भी, ज़लज़लों के बयान में लिखी. इस किताब में 20 हि. से लेकर 910 हि. तक के ज़लज़लों का ज़िक्र है. ये 'आ़लमुल् कुतुब (बेरूत)' से 1987 ई. में पब्लिश हुई. फिर इनके शागिर्द, शम्सुद्-दीन दाऊदी (d. 945 हि.) ने इसपर इज़ाफ़ा करके, 940 हि. तक के ज़लज़लों को शुमार कराया.

07/02/23 ई.

करीम व रह़ीम आक़ा

आक़ा (ﷺ) की तब्लीग़ के मन्हज में, एक ये बात भी शामिल थी कि जिस क़ौम का जो लहजा होता था, उससे, उसकी आसानी के लिए, उसी के लहजे में गुफ़्तगू फ़रमाया करते थे;

ह़ज़रत कअ़्ब इब्ने अ़ासि़म अश्अ़री (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) कहते हैं कि मैंने आक़ा (ﷺ) को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना:

"لَيْسَ مِنْ امْبِرِّ امْصِيَامُ فِي امْسَفَرِ"،

"सफ़र में रोज़े रखना, नेकी में से नहीं."

मुस्नदे अह़मद, ह़दीस नं. 23679, जिल्द नं. 39, पेज नं. 84, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), पहला एडीशन, 1421 हि./2001 ई.

इस ह़दीस में देखें कि आक़ा (ﷺ) ने 'लामे तअ़्रीफ़' को 'मीम' से बदल दिया. अस्ल में ये था:

"لَيْسَ مِنَ الْبِرِّ الصِّيَامُ فِي السَّفَرِ"،

तो ये लहजा अस़्ह़ाबे सक़ीफ़ा में से, अश्अ़री ह़ज़रात का था. यानी उनके लहजे में, 'लामे तअ़्रीफ़' को, 'मीम' से बदल दिया जाता था;
आज भी यमन में, बहुत से लोगों में ये लहजा मौजूद है.

05/09/23 ई.

नस़ीह़त हासिल करें

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"وَالسَّعِيدَ مَنْ وُعِظَ بِغَيْرِهِ"،

"ख़ुशक़िस्मत वो है, जो दूसरों से नसीहत हासिल करे."

इब्ने माजह, ह़दीस नं. 46

15/10/21 ई.

हमारा अ़क़ीदा

हम सुन्नियों का दोटोक अ़क़ीदा ये है कि आक़ा (ﷺ) के बाद, जो ख़िलाफ़त की तरतीब है, वही फ़ज़ीलत की तरतीब है. यानी: जो जिस नंबर पर ख़लीफ़ा बना, उसका मर्तबा भी उसी नंबर पर है. (ये बात भी सिर्फ़ आसानी से समझाने के लिए कही जा रही है, वर्ना तरतीबे ख़िलाफ़त पर, तरतीबे अफ़्ज़लिय्यत हरगिज़ मौक़ूफ़ नहीं.) मतलब ये कि:
सबसे पहले ख़लीफ़ा: 'ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रद़ियल्लाहु अ़न्हु)' हैं, और सारे नबियों के बाद इंसानों में सबसे बड़ा मर्तबा भी आपका ही है;
दूसरे ख़लीफ़ा: 'ह़ज़रत उ़मरे फ़ारूक़ (रद़ियल्लाहु अ़न्हु)' हैं, और आपका मर्तबा दूसरे नंबर पर है;
तीसरे ख़लीफ़ा: 'ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी (रद़ियल्लाहु अ़न्हु)' हैं, और आपका मर्तबा तीसरे नंबर पर है;
चौथे ख़लीफ़ा: 'मौला अ़ली (रद़ियल्लाहु अ़न्हु)' हैं, और आपका मर्तबा चौथे नंबर पर है;

जो शख़्स, ह़ज़रत ॳली को, ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, और ह़ज़रत ॳमरे फ़ारूक़ (रद़ियल्लाहु ॳन्हुम्) से अफ़ज़ल माने, वो सुन्नी नहीं, बल्कि राफ़िज़ियों का छोटा भाई 'तफ़ज़ीली' है, और सुन्नियत से ख़ारिज है. क्यूंकि ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, और ह़ज़रत ॳमरे फ़ारूक़ को मौला ॳली (रद़ियल्लाहु ॳन्हुमा) से अफ़ज़ल मानना, ज़रूरिय्याते अहले सुन्नत में से है. जिसका इंकार करने वाला, गुमराह, बद-मज़्हब, बद-ॳक़ीदा, व बिद्ॳती है, और सुन्नियत से बाहर है.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
16/01/23 ई.

ईमान वालों को ख़ुश रखें

आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"إِنَّ أَحَبَّ الْأَعْمَالِ إِلَى اللهِ بَعْدَ الْفَرَائِضِ إِدْخَالُ السُّرُورِ عَلَى الْمُسْلِمِ"،

"तमाम फ़र्ज़ों को अदा करने के बाद, अल्लाह (ﷻ) के नज़दीक सबसे प्यारा ॳमल, मुसलमान को ख़ुश करना है."

अल्-मुॳजमुल् कबीर [लित्-त़बरानी (d. 360 हि.)], जिल्द नं. 11, पेज नं. 71, ह़दीस नं. 11079, पब्लिकेशन: मकतबा इब्ने तैमिय्यह (क़ाहिरा), दूसरा एडीशन
25/05/23 ई.

बदगुमानी

बदगुमानी एक ऐसी बला है, जो एक लम्ह़े में, मुह़ब्बतों को नफ़रतों में बदल देती है;

इसलिए आक़ा (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"إِيَّاكُمْ والظَّنَّ، فإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ الحَدِيثِ"،

"बदगुमानी से बचे रहो;
यक़ीनन, बदगुमानी सबसे झूठी बात है."
[मुत्तफ़क़ुन् अ़लैह]

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
24/11/23 ई.

इ़ल्मे कलाम ही इल्ह़ाद का इलाज है

इल्ह़ाद के ग़ैर-मअ़्क़ूल मबाह़िस (irrational arguments of atheism) को तोड़ने के लिए, 'इ़ल्मे कलाम (Theology)' को पढ़ना बहुत ज़्यादा ज़रूरी है. बिना 'इ़ल्मे कलाम' के, जवाब देने से, जगह-जगह क़दम फिसलता है. क्यूंकि जब अपने ही अ़क़ीदे का दलील के साथ मज़बूत इ़ल्म नहीं होगा, तो दूसरे का रद करते वक़्त मुँह या क़लम से, कुछ भी निकल जाता है;

इसीलिए, दर्से निज़ामी के नए फ़ारिग़ीन, और वो जवां-उ़म्र उ़लमा, जो इस मैदान में क़दम रख रहे हैं, वो 'इ़ल्मे कलाम' मज़बूती से पढ़ें. फिर हर बात़िल बात को, आसानी से बात़िल साबित कर सकेंगे;

सबसे पहले जिन किताबों को पढ़ना है, उनकी छोटी सी लिस्ट आपके हवाले कर रहा हूं. मैंने भी इसी तरतीब से पढ़ा है, जिससे बहुत ज़्यादा फ़ायदा हासिल हुआ. इसलिए आपके साथ भी साझा कर रहा हूं;
तरतीब से देखें:

सबसे पहले 'इमाम दरदीर मालिकी (d. 1201 हि.)' की: 'अल्-ख़रीदतुल् बहिय्यह (मतन व शरह़)' पढ़िए;
इसके साथ, इसपर 'इमाम स़ावी मालिकी (d. 1241 हि.)' का ह़ाशिया भी ज़रूर पढ़िए;
इसी के साथ, इन्हीं इमाम का एक छोटा-सा, मगर 'तौह़ीद (monotheism)' पर बहुत अ़ज़ीम रिसाला: 'अल्-इक़्दुल् फ़रीद फ़ी ईद़ाह़िस् सुवालि अ़नित् तौह़ीद' को पढ़िए;

इसके बाद 'इमाम सन्-नूसी मालिकी (d. 895 हि.)' की तरतीब से ये सातों किताबें पढ़ें:

1. 'अल्-अ़क़ीदतुल् ह़फ़ीदह (मतन)', इसकी कई शरह़ लिखी गयी हैं. जिनमें सबसे ज़्यादा जो मुझे पसन्द हैं, वो ये चार बुज़ुर्गों की हैं:

[1] 'इमाम मल्लवी (d. 1181 हि.)',
[2] 'इमाम फ़ासी (d. 1055 हि.)',
[3] 'इमाम सुजाई़ (1197 हि.)',
[4] 'इमाम सुकतानी मराकशी (d. 1062 हि.)',
2. 'ह़क़ाइक़ु उम्मिल् बराहीन',
3. 'शरह़ुल् मुक़द्दमात (मतन व शरह़)',
4. 'स़ुग़रस् स़ुग़रा (मतन व शरह़)',
5. 'अल्-अ़क़ीदतुस़् स़ुग़रा (मतन व शरह़)', इसी को 'उम्मुल् बराहीन' के नाम से जाना जाता है. इसके साथ: 'ह़ाशियतुश् शरक़ावी अ़लल् हुदहुदी अ़ला उम्मिल् बराहीन' को भी ज़रूर पढ़ें;
6. 'अल्-अ़क़ीदतुल् वुस्त़ा (मतन व शरह़)',
7. 'अल्-अ़क़ीदतुल् कुबरा (मतन व शरह़)',

इन्हें पढ़ने के बाद, 'जौहरतुत् तौह़ीद [इमाम लक़्क़ानी (d. 1041 हि.)]' के मतन पर, 'इमाम बाजूरी (d. 1276 हि.)' की शरह़: 'तुह़्फ़तुल् मुरीद अ़ला जौहरतित् तौह़ीद', पढ़िए;

जब ये सब पढ़ चुकें, तब 'इमाम तफ़्ताज़ानी (d. 792 हि.)' की: 'शरह़ुल् अ़क़ाइद' को पढ़ें.
ये मैंने वो किताबें बताई हैं, जो शुरू में पढ़नी हैं. इसके बाद अभी बहुत ज़बर्दस्त किताबें बाक़ी हैं, जो बहुत टफ़ मबाह़िस पर लिखी गयी हैं;

अल्लाह (ﷻ) हमें ख़ूब पढ़ने की तौफ़ीक़ दे,
आमीन बिजाहि ह़बीबी (ﷺ)!

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
22/07/23 ई.

आसान इ़ल्मे कलाम

कुछ दिन पहले, अपनी एक पोस्ट में, मैंने 'इ़ल्मे कलाम (Theology)' की जिन किताबों की लिस्ट पेश की थी, उसमें सबसे आसान किताब: 'अ़क़ीदतुल् अ़वाम' का नाम रह गया था. ये किताब: 'सय्यिद अह़मद अल्-मरज़ूक़ी (d. 1281 हि. तक़रीबन)' की है, जो बहुत आसान है. शुरू में इसे ही पढ़ना चाहिए, फिर अगली किताबें पढ़ें;
इसकी बहुत सी शरह़ हैं, जैसे:
1. 'फ़ैज़ुल् मलिकिल् अ़ल्लाम',
2. 'तह़सीलु नैलिल् मराम',

3. 'तस्हीलुल् मराम',
4. 'नैलुल् मराम',
5. 'नूरुज़् ज़लाम',
6. 'मूजज़ुल् कलाम',
7. 'सअ़ादतुल् अनाम',

इसकी सबसे आसान शरह़: 'जलाउल् अफ़्हाम' है, सबसे पहले इसे ही पढ़ना चाहिए. फिर इसके बाद बाक़ी सारी शरह़ पढ़ें, तो सोने पे सुहागा.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
25/07/23 ई.

चार ड़ल्लतें

किसी काम को करने की चार 'ड़ल्लत (cause/कारण)' होती हैं:

1. ड़ल्लते माद्दिय्यह (Material Cause),
2. ड़ल्लते ग़ाइय्यह (Final Cause),
3. ड़ल्लते सूरिय्यह (Formal Cause),
4. ड़ल्लते फ़ाड़लिय्यह (Efficient Cause),

ہ
इन्हें 'ड़लले अरबअ़ा (four causes)'[1] कहा जाता है.

Metaphysics V (By Aristotle in 23 Volumes, vols. 17–18), translated by H. Tredennick (1933/1989), London, William Heinemann Ltd. 1989

Aristotle discusses the 'four causes' in his Physics, Book: B, Chapter: 3.
[1]यही सब कुछ हमें फ़िक़्हे ह़नफ़ी की बहुत मुअ़तबर किताब 'शरह़ुल् विक़ायह' की 'किताबुन् निकाह़' में बहुत पहले पढ़ा दिया गया था, और इससे भी पहले मन्त़िक़ की अहम किताब 'क़ुत़ुबी' में पढ़ाया गया था. ये दुनिया वाले क्या बराबरी करेंगे हमारी दीनी तअ़लीम की.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी
06/08/21 ई.

आठ फ़िक़्ही मज़्हब

इस वक़्त दुनिया में आठ मज़ाहिबे फ़िक़्ह मौजूद हैं:

1. चार अहले सुन्नत हैं:
(1) ह़नफ़ी
(2) शाफ़िई
(3) मालिकी
(4) ह़ंबली

2. चार अहले सुन्नत से ख़ारिज हैं:
(1) जअ़्फ़रिय्यह
(2) ज़ैदिय्यह
(3) ज़ाहिरिय्यह
(4) इबाद़िय्यह

इनके अ़लावा कई फ़िक़्ही मज़्हब एक ख़ास वक़्त तक चले, मगर अब पूरी तरह ख़त्म हो चुके हैं.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
03/07/23 ई.

इमामे लैस इब्ने सअ़द

मिस्रियों के इमाम, जो ख़ुद स़ाह़िबे मज़्हब रहे हैं,
सय्यिदुना लैस इब्ने सअ़द फ़हमी क़ल्क़शन्दी (d. 175 हि.) के शाही दरबार में ह़ाज़िरी हुई:
इमाम लैस इब्ने सअ़द (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) वो अ़ज़ीम बुज़ुर्ग हैं कि चारों इमामों की तरह आपका मज़्हबे फ़िक़्ह भी चला, मगर बाक़ी न रह सका. जिसकी वजह ये है जो इमाम ज़हबी ने 'सियरु अअ़लामिन् नुबला' में, और इब्ने ख़ल्लिकान ने 'वफ़यातुल् अअ़यान' में इमाम शाफ़िई के हवाले से लिखी;
इमामे शाफ़िई (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने फ़रमाया:

"اللَّيْثُ أَفْقَهُ مِنْ مَالِكٍ إِلاَّ أَنَّ أَصْحَابَه لَمْ يَقُوْمُوا بِهِ"،

"इमामे लैस, इमाम मालिक से बड़े फ़क़ीह थे;
मगर उनके शागिर्दों ने उनके मज़्हब को आगे नहीं बढ़ाया."

नोट: 'फ़क़ीह अबुल् लैस' से कंफ्यूजन न हो, वो अलग हैं;
वो ह़नफ़ी हैं, समरक़ंदी हैं. 373 हि. में वफ़ात हुई;
उनकी 'बह़रुल् उ़लूम' के नाम से तफ़्सीर भी है, जिसे 'तफ़्सीरे समरक़ंदी' भी कहते हैं.

13/07/22 ई.

इस्लाम में टैक्स का क़ानून

'इस्लामिक टैक्स' के निज़ाम पर ग़ैरों के जो एतराज़ात हैं, उनका तह़क़ीक़ी जवाब इन्हीं पांचों चीज़ों के बारे में सही से मुत़ालआ़ करके दिया जा सकता है:

1. ज़कात,[1]
2. उ़श्-र,[2]
3. स़दक़तुल् फ़ित्र
4. ख़राज,[3]
5. जिज़्यह,[4]

पहले हमारी कुतुबे फ़िक़्ह में इनका अच्छे से मुत़ालआ़ किया जाए, फिर इनके एतराज़ात के ढंग से जवाब दिए जाएं;
मज़ीद ये कि इल्ज़ामी जवाब (counter response) भी दिये जाएं;
ताकि इन लोगों को ये भी पता चले, कि ये सब टैक्स किससे, कब, और कितने लिए जाते हैं. साथ ही इन टैक्सों को अदा करने वालों को कितने ह़ुक़ूक़ हासिल होते हैं.

---

[1]It is customarily 2.5% (or 1⁄40) of a Muslim's total savings and wealth above a minimum amount known as niṣāb;
[2]a reciprocal 10% levy on agricultural land;
[3]tax on agricultural land;
[4]a per capita yearly taxation on Ḏhimmīs.

02/08/21 ई.

हाथ की मज़बूती

इमाम नसफ़ी (d. 710 हि.) अपनी तफ़्सीर: 'मदारिकुत् तन्ज़ील व ह़क़ाइक़ुत् तअ्वील (तफ़्सीरे नसफ़ी)' में, क़ुरआन 28:35 के तह़्त लिखते हैं:

"إذ اليد، تشتدّ بشدة العضد".

"क्यूंकि बाज़ू के मज़बूत होने से ही, हाथ मज़बूत होता है."

तफ़्सीरे नसफ़ी, जिल्द नं. 2, पेज नं. 642, पब्लिकेशन: दारुब्नि कसीर (बेरूत), 10वां एडीशन, 1443 हि./2022 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
01/04/23 ई.

सबसे पहला गुनाह

इमाम फ़ख़रुद्-दीन राज़ी (d. 606 हि.) ने क़ुरआन 2:109 की तफ़्सीर में लिखा है कि:

"فَإِنَّهُ أَوَّلُ ذَنْبٍ عَصَى اللَّهَ بِهِ إِبْلِيسُ"،

"घमंड, सबसे पहला गुनाह था जिसके ज़रिए इब्लीस ने अल्लाह की नाफ़रमानी की."
मफ़ातीह़ुल् ग़ैब, जिल्द न. 3, पेज न. 645, पब्लिकेशन: दारु इह़्याइत् तुरासिल् अ़रबिय्यि (बेरूत), तीसरा एडीशन, 1420 हि.

03/09/21 ई.

क़हरे इलाही की बिजलियाँ

इमाम बैहक़ी (d. 458 हि.) ने रिवायत की, कि सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़े आज़म (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने इरशाद फ़रमाया:

"اجْتَنِبُوا أَعْدَاءَ اللّٰهِ فِي عِيدِهِمْ"،

"अल्लाह के दुश्मनों से, उनके त्यौहारों के दिन, दूर रहो."

अस् सुननुल् कुबरा, ह़दीस नं. 18862, जिल्द नं. 9, पेज नं. 392, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), तीसरा एडीशन, 1424 हि. / 2003 ई.

मौला उ़मरे फ़ारूक़े आ़ज़म (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने एक बार ये भी इरशाद फ़रमाया:

"وَلَا تَدْخُلُوا عَلَى الْمُشْرِكِينَ فِي كَنَائِسِهِمْ يَوْمَ عِيدِهِمْ، فَإِنَّ السَّخْطَةَ تَنْزِلُ عَلَيْهِمْ"،

"मुशरिकीन के पास, उनके त्यौहारों के दिन, उनकी इ़बादतगाहों में, मत जाओ;
यक़ीनन उनपर (अल्लाह का) क़हर उतरता है."

अस् सुननुल् कुबरा (लिल् बैहक़िय्यि), ह़दीस नं. 18861, जिल्द नं. 9, पेज नं. 392, पब्लिकेशन: दारुल् कुतुबिल् इ़ल्मिय्यह (बेरूत), तीसरा एडीशन, 1424 हि. / 2003 ई.

इन रिवायात से ये भी मालूम हुआ कि: वो ख़ास जगहें, जहां मुशरिकीन अपने त्यौहारों पर जश्न मनाते हैं, वहाँ से भी मुसलमानों को दूर रहना चाहिए; वर्ना, जब उन पर अल्लाह का क़हर नाज़िल होगा, तो ये मुसलमान भी नहीं बच पाएंगे.

आह तुम्हारी बेबसी

चौदह-सौ साला तारीख़ इस बात की गवाही दे रही है कि:

क़ुरआन पूरी दुनिया के मुत्तहिद दुश्मनों की आँखों में आंखें डाल कर, सीने से सीना मिलाकर, उनके सरों पर कारी ज़र्ब लगाता चला आ रहा है;

जिस-जिस ज़ाविये से इसके ख़िलाफ़ बोला या लिखा गया, उसी ज़ाविये से इसने, इनकी: 'The straw man fallacies' की धज्जियाँ उड़ाई हैं;

अब, जब इनके बस में नहीं — जैसा कि कभी भी नहीं था — कि क़ुरआन की तरफ़ से, इनके कुफ्र पर क़ायम किए गए इल्ज़ामी सवालों और मुअ़ारज़ात का जवाब दे सकें, तो अब क़ुरआन को जलाकर अपने जले-भुने दिल को सरसब्ज़ो शादाब करना चाहते हैं;

आह, अब कुफ्र की ये बेबसी नहीं देखी जाती. कब तक अपनी कमज़ोरी का इज़्हार, अपनी ऐसी हरकतों से करते रहोगे?

अब भी वक़्त है, इस 'ग़ैर-मग़लूब क़ुरआन' के सामने ख़ुद को सरेंडर करने का. अपने ही बाप-दादा की हिस्ट्री उठाकर देखो, कि वो भी कैसे क़ुरआन के ख़िलाफ़ लिखते/बोलते वासिले जहन्नम हो गए. जबकि क़ुरआन उसी तरह, अपने रुअ़्बो दबदबे के साथ, तुम्हारे दिलो दिमाग़ को आज तक परास्त करने में लगा हुआ है;
इस क़ुरआन का, न कल कुछ कर पाए थे, न आज अपनी तमामतर ताक़तों के बावजूद कर पा रहे हो, और न ही क़ियामत तक कभी इसका कुछ बिगाड़

पाओगे;
आह, तुम्हारी ये बेबसी!

इसीलिए 'इमाम सअ़्दुद्-दीन तफ़्ताज़ानी (d. 792 हि.)' ने 'शरह़ुल् मक़ासि़द' में इनकी इस बेबसी को बहुत पहले ही बयान करते हुए लिख दिया था कि:

"فأشراف العرب مع كمال حذاقتهم فى أسرار الكلام، وفرط عداوتهم للإسلام، لم يجدوا فيه للطعن مجالاً، ولم يوردوا فى القدح مقالاً، ونسبوه إلى السحر على ما هو دأب المحجوج المبهوت تعجباً من فصاحته، وحسن نظمه، وبلاغته. واعترفوا بأنه ليس من جنس خطب الخطباء، أو شعر الشعراء، وأن له حلاوة، وعليه طلاوة، وأن أسفله مغدقة، وأعاليه مثمرة. فآثروا المقارعة على المعارضة، والمقاتلة على المقاولة. وأبي الله إلا أن يتمّ نوره على كره من مشركين، ورغم المعاندين؛

وحين انتهي الأمر إلى من بعدهم من أعداء الدين وفرق الملحدين، اخترعوا مطاعن ليست إلا هزءة للساخرين، وضحكة للناظرين"،

"अ़रबी सरदारों ने, ज़ुबान के राज़ों को जानने में अपनी कमाले महारत और इस्लाम के ख़िलाफ़ अपनी सख़्त दुश्मनी के बावजूद भी, जब इस (क़ुरआन) पर त़अ़्न करने की कोई जगह, और बकवास करने को कोई बात न पाई — तो क़ुरआन की फ़स़ाह़त, अल्फ़ाज़ की ख़ूबसूरती, और बलाग़त पर तअ़ज्जुब करते हुए, इसे जादू की तरफ़ मंसूब कर डाला, जैसा कि ये हारने वाले, मग़्लूब शख़्स की पहचान होती है;

और उन (मुशरिकीन) को इस बात का भी इअ़्तिराफ़ था, कि ये (क़ुरआन), न तो ख़त़ीबों के ख़ुत़बों में से है, और न ही शाइ़रों की शाइ़री में से. बल्कि इसमें मिठास, और चमक है. इसका निचला हिस्सा ख़ूब तर, और ऊपरी हिस्सा फलदार है. तो फिर उन काफ़िरों ने (क़ुरआन का) मुक़ाबला, और गुफ़्तगू करने के बजाय, लड़ाई-झगड़े को बेहतर समझा;
और अल्लाह, मुशरिकीन की नापसंदीदगी, और हठधर्मों के बावजूद भी, अपने नूर को पूरा किये बिना न मानेगा;
और जब मामला बाद में आने वाले दीन के दुश्मनों, और नास्तिकों के फ़िर्क़ों तक पहुंचा, तो इन्होंने ऐसे-ऐसे त़अ़्ने गढ़े, जो मस्ख़रेपन व हंसी के अलावा कुछ नहीं है."

शरह़ुल् मक़ासिद, जिल्द नं. 5, मक़्सिद नं. 6, पेज नं. 32, पब्लिकेशन: अ़ालमुल् कुतुब (बेरूत), दूसरा एडीशन, 1419 हि. / 1998 ई.

05/07/23 ई.

हमारे बुज़ुर्ग इतना लिख गए कि

•तारीख़े दमिश्क 80 जिल्द;
•मुस्नदे अह़मद 50 जिल्द;
•इमाम इब्ने अ़ब्दुल् बर्र मालिकी की 'अल् इस्तिज़्कार', 31 जिल्द, और इन्हीं की 'अत् तम्हीद' 17 जिल्द;
•इमाम इब्ने मुलक़्क़िन ने 36 जिल्द में बुख़ारी शरीफ़ की शरह़ लिखी है, अब तक की सबसे ज़ख़ीम शरह़;
•इमाम ज़हबी की तारीख़े इस्लाम 52 जिल्द;
न जाने और कितना ज़ख़ीरा मौजूद है;

हमारे बुज़ुर्ग इतना लिख गए कि हम में पढ़ने तक की त़ाक़त नहीं अब.

विलादत हो या वफ़ात

बहुत से मुह़क़्क़िक़ीन के नज़दीक, 12 रबीउ़ल् अव्वल को आक़ा (ﷺ) की वफ़ात नहीं हुई, जबकि बहुत से मुह़क़्क़िक़ीन इसी तारीख़ को वफ़ात मानते हैं;

अगर 12 रबीउ़ल् अव्वल ही को वफ़ात मानें, तब भी इस वफ़ात के दिन पैदाइश मानकर, इस दिन को 'ई़द' से तअ़्बीर करना, ख़ुद आक़ा (ﷺ) की सुन्नत है;

अबू दाऊद, नसाई, इब्ने माजह वग़ैरहुम् ने रिवायत की, आक़ा (ﷺ) ने जुमुआ़ के बारे में फ़रमाया:

"إنَّ مِن أفضلِ أيَّامِكُم يومَ الجمعةِ، فيهِ خَلقَ اللَّهُ آدَمَ، وفيهِ قُبِضَ"،

"तुम्हारा सबसे बेहतर दिन, जुमुआ़ है. इसी दिन आदम को अल्लाह ने पैदा किया, और इसी दिन उनकी रूह़ क़ब्ज़ फ़रमाई गयी."

इस ह़दीस से साबित हुआ कि सय्यिदुना आदम (अ़लैहिस्सलाम) की विलादत व वफ़ात, दोनों जुमुआ़ के दिन हुईं. इसके बावजूद भी दूसरी रिवायात में जुमुआ़ के दिन को, आक़ा (ﷺ) ने ई़द कहा, जो सबको तस्लीम है;
फिर लोग डबल स्टैंडर्ड कहाँ से लाते हैं!?

24/09/23 ई.

क़ुरआन वो अ़ज़ीम किताब है कि

तारीख़ गवाह है, इसके ख़िलाफ़ जितना लिखा या बोला गया, उससे कहीं ज़्यादा ही इसे क़ुबूल किया गया. ऐसी ज़बर्दस्त किताब, जिसके बारे में ख़ुद क़ुरआन 11:01 में कहा गया है:

"كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ"،

"ये एक किताब है जिसकी आयतें, ह़िकमत भरी हैं;
फिर तफ़्सील की गयीं, ह़िकमत वाले,
ख़बरदार की तरफ़ से."
[कंज़ुल् ईमान]

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
12/07/23 ई.

जाहिल दुश्मन

रामधारी सिंह दिनकर (d. 1974 CE) ने अपनी किताब: 'संस्कृति के चार अध्याय', में एक ह़क़ीक़त का इअ़्तिराफ़ इस तरह किया है कि:

"दुनिया की कोई भी शरीफ़ क़ौम, इस्लाम की तारीख़ से उतनी नावाक़िफ़ नहीं, जितने हिंदू हैं;
और दुनिया की कोई भी क़ौम, इस्लाम को उतनी नफ़रत से नहीं देखती, जितनी नफ़रत से हिंदू देखते हैं।"
संस्कृति के चार अध्याय, पेज नं. 261, अध्याय नं. 3, पब्लिकेशन: उदयाचल, आर्यकुमार रोड (पटना), तीसरा एडीशन, 1962 ई.

हाइरोग्लिफ़िक्स रस्मुल् ख़त़्त

मशहूर मुस्लिम कैमिस्ट 'इब्ने वह़्शिय्यह अन्-नबत़ी (d. 930 ई.)' ने एक तारीख़ी किताब लिखी, जिसका नाम है: 'शौक़ुल् मुस्तहाम फ़ी मअ़रिफ़ति रुमूज़िल् अक़्लाम',

यही वो किताब है कि जिसके ज़रिए सबसे पहले मिस्र के बहुत पुराने 'हाइरोग्लिफ़िक्स रस्मुल् ख़त़्त (Hieroglyphics Script)' को ह़ल किया गया. मगर वही पुरानी चाल, जिसके ज़रिए मुसलमानों का नाम और उनका काम तारीख़ से छुपाया गया, यहां भी चली गयी; और इस कारनामे को 'इब्ने वह़्शिय्यह' की तरफ़ मन्सूब न करके फ़्रांसीसी लुग़वी 'चैम्पोलियन (d. 1832 ई.)' की तरफ़ मन्सूब किया गया;

इसके बर ख़िलाफ़ हक़ीक़त ये है कि 'चैम्पोलियन' ने 1822 ई. में इस काम में कामयाबी हासिल की, जबकि इससे तक़रीबन 800 साल पहले ही मुस्लिम कैमिस्ट 'इब्ने वह़्शिय्यह' ने इसे हल कर दिया था, और इनकी इस मज़्कूरा किताब 'शौक़ुल् मुस्तहाम' के मख़्त़ूते (manuscript) का अंग्रेज़ी तर्जमा, 'चैम्पोलियन' की कामयाबी वाली साल 1822 ई. से 16 साल पहले ही, 1806 ई. में लंदन से ऑस्ट्रिया के एक मुस्तशरिक़ 'जोसेफ हैमर (d. 1856 ई.)' की तह़क़ीक़ से 'Ancient Alphabets & Hieroglyphic Characters Explained' के नाम के साथ छप चुका था. इसकी पीडीएफ फाइल आर्काइव (archive) से डाउनलोड कर सकते हैं.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
29/10/22 ई.

एक इस़्लाह़

इमाम ह़ाकिम नैशापुरी (d. 405 हि.) की: 'अल्-मुस्तदरक अ़लस़् स़ह़ीह़ैन' की जो रिवायत नं. 4053 आजकल शेयर हो रही है, उसमें कहीं ऐसे अल्फ़ाज़ नहीं जिनका तर्जमा ये हो कि:

"आदम (अ़लैहिस्सलाम) ने हिंद की ज़मीन पर जन्नत का खुशबूदार पौधा उगाया",

ये कहाँ से तर्जमा कर रहे हैं सब इसका?

बल्कि उसका सही तर्जमा ये है कि ह़ज़रत अ़ली (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने फ़रमाया:

"ज़मीन पर सबसे अच्छी हवा, हिंदुस्तान की है;
वहां पर ह़ज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) को उतारा गया, तो वहाँ के पेड़ों ने, जन्नत की हवा का कुछ असर ले लिया."

इसके अ़लावा जिस रिवायत में, हिंद की ज़मीन पर जन्नत का पौधा लगाने की बात आई है, वो इमाम अबुल् क़ासिम त़बरानी (d. 360 हि.) की: 'अल्-मुअ़्जमुल् कबीर', ह़दीस नं. 14158 है;
और इस रिवायत को इमाम नूरुद्दीन हैसमी (d. 807 हि.) ने: 'मज्मउ़ज़् ज़वाइद' में, इमाम अ़साकिर (d. 571 हि.) ने: 'तारीख़े दमिश्क' में, इमाम इब्ने जरीर त़बरी (d. 310 हि.) और इमाम इब्ने अबी ह़ातिम राज़ी (d. 277 हि.) ने अपनी-अपनी तफ़्सीर में, इमाम अज़्रक़ी (d. 250 हि. तक़रीबन)

ने: 'अख़्बारे मक्का' में, इमाम बैहक़ी (d. 458 हि.) ने: 'शुअ़बुल् ईमान' में, इमाम अबुश् शैख़ (d. 369 हि.) ने: 'अल्-अ़ज़मह' में ज़िक्र किया;

इसलिए ह़दीस के मामले में ख़बरदार रहें.

अल्-अह़्सनी
15/08/23 ई.

जंगे मलाज़गिर्त

आज ही के दिन, 26 अगस्त (1071 ई. में) दुनिया की अ़ज़ीम जंगों में से एक जंग: 'जंगे मलाज़गिर्त (Battle of Manzikert/Malazgirt)' हुई, जिसने तारीख़ का रुख़ मोड़ दिया;

जंगे मलाज़गिर्त में, सल्जूक़ी सुल्तान मुह़म्मद आल्प अर्सलान (d. 1072 ई.) ने, ईसाई कमाण्डर जनरल रोमानोस दियोजन (d. 1072 ई.), और उसके बहुत बड़े लश्कर को, अपनी छोटी सी फ़ौज के जरिए धूल चटाई थी.

26/08/23 ई.

तफ़्सीरे बैज़ावी

इमाम बैज़ावी (d. 685 हि.) ने 'बस्मलह' की तफ़्सीर में, तक़्दीमे मअ़मूल का सबब बताते हुए लिखा है कि:

...."وَأَدَلُّ عَلَى الْاِخْتِصاص"....،

इस इबारत को, गुज़री रात खाना खाने के बाद, 9:30 बजे से हल करने बैठा, और मुराजअ़ह के लिए तफ़्सीरे बैज़ावी के बड़े-बड़े पांच ह़ाशियों की तरफ़ रुख़ किया:

1. ह़ाशियतुल् क़ूनवी अ़लल् बैज़ावी (ये बीस जिल्द में है);
2. ह़ाशियतु शैख़ी ज़ादह अ़लल् बैज़ावी (ये आठ जिल्द में है);
3. इ़नायतुल् क़ाज़ी व किफ़ायतुर् राज़ी [(ह़ाशियतुश् शिहाब अ़लल् बैज़ावी), ये भी आठ जिल्द में है];
4. नवाहिदुल् अब्कार व शवारिदुल् अफ़्कार [(ह़ाशियतुस् सुयूती अ़लल् बैज़ावी), ये तीन जिल्द में है];
5. ह़ाशियतुब्नित् तम्जीद;

मगर ये इबारत 12:00 बजे आकर कमा ह़क़्क़ुहू हल हो पाई. मैं 'क़स्रे इफ़राद', और 'क़स्रे क़ल्ब' में ही घूमता रहा;

और निचोड़ ये निकला कि क़ुरआन के सबसे पहले कलिमात: 'बिस्मिल्लाह', ही में 'तौह़ीद' में मज़बूती का, और 'बुतों' के रद का दर्स दिया गया है;
तफ़्सीरे बैज़ावी, ठाठें मारता हुआ एक समंदर है, ये देखने के लिए इसके मज़्कूरा ज़ख़ीम ह़वाशी का मुतालअ़ा करें.

16/07/22 ई.

क़ुरआन-दानी के दावे

आज 'तफ़्सीरे बैज़ावी' पढ़ते हुए, इस बात की तह़क़ीक़ सामने आई, कि 'बिस्मिल्लाह' के 'ब' पर, 'ज़ेर' क्यूँ आया, 'ज़बर' या 'पेश' क्यूँ नहीं आया;

पढ़ने के बाद पता चला कि हमें अभी क़ुरआन के सबसे पहले ह़र्फ़ 'ब' पर जो हरकत, 'ज़ेर' आई है, उसका भी इ़ल्म नहीं हुआ है. मगर हाल ये है, कि किसी ज़ुबान में क़ुरआन का सिर्फ़ तर्जमा पढ़ लेने वाले, क़ुरआन-दानी के दावे में, अंधे हुए जा रहे हैं, और उ़लमा व बुज़ुर्गों को कुछ नहीं समझ रहे हैं.

26/09/21 ई.

इमाम नसफ़ी

इफ़ादे के तौर पर अ़र्ज़ करता चलूँ कि 'इमाम नसफ़ी' के नाम से मश्हूर दो अलग-अलग शख़्सिय्यात ये हैं:

1. 'अ़क़ाइदे नसफ़िय्यह' के मुस़न्निफ़: 'इमाम अबू ह़फ़्स़ नज्मुद्दीन उ़मर नसफ़ी समरक़ंदी (d. 537 हि.)' हैं. इनकी अहम किताबों में से एक: 'अल्-क़ंद फ़ी ज़िक्रि उ़लमाइ समरक़ंद' है;

2. 'मदारिकुत् तंज़ील (तफ़्सीरे नसफ़ी)' के मुस़न्निफ़: 'इमाम अबुल् बरकात ह़ाफ़िज़ुद्-दीन नसफ़ी (d. 710 हि.)' हैं. इनकी मश्हूर किताबों में से, फ़िक़्हे ह़नफ़ी में: 'कंज़ुद् दक़ाइक़', और उस़ूले फ़िक़्हे ह़नफ़ी में: 'अल्-मनार' हैं.

नोट: बाक़ी एक तीसरे इमाम नसफ़ी भी हैं: 'इमाम अबुल् मुईन नसफ़ी (d. 508 हि.)', जिनकी किताब: 'अत्-तम्हीद फ़ी उस़ूलिद् दीन' बड़ी मश्हूर है.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
02/12/23 ई.

क़ैद कर लो

इमाम रामहुर्मुज़ी (d. 360 हि.) ने रिवायत की:

"قَيِّدُوْا العِلْمَ بِالْكِتَابِ"،

"इल्म को लिखकर, क़ैद कर लो."

अल्-मुहद्दिसुल् फ़ासिल, हदीस नं. 329, पेज नं. 387, पब्लिकेशन: दारुज़् ज़ख़ाइर (क़ाहिरा), पहला एडीशन, 2016 ई.

मुहम्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
02/12/23 ई.

आज के लोगों के लिए इबरत

इमाम यूनुस सदफ़ी (रद्रियल्लाहु अन्हु) कहते हैं:

"مَا رَأَيْتُ أَعْقَلَ مِنَ الشَّافِعِيِّ، نَاظَرْتُهُ يَوْماً فِي مَسْأَلَةٍ، ثُمَّ افْتَرَقْنَا، وَلَقِيَنِي، فَأَخَذَ بِيَدِي، ثُمَّ قَالَ: يَا أَبَا مُوْسَى، أَلاَ يَسْتَقِيمُ أَنْ نَكُوْنَ إِخْوَاناً وَإِنْ لَمْ نَتَّفِقْ فِي مَسْأَلَةٍ"،

"मैंने (इमाम) शाफ़िई से बढ़कर अक़्लमंद नहीं देखा;
एक दिन मेरा उनसे एक मस्अले में मुनाज़रा हुआ, फिर हम में जुदाई हो गई. तो वो मुझे (एक दिन) मिले, और मेरा हाथ पकड़कर बोले:

'ऐ अबू मूसा! क्या ये ठीक नहीं है कि हम भाई बनकर रहें, अगरचे हम

किसी मस्अले में इख़्तिलाफ़ रखते हों'."
तारीख़े दमिश्क़, ह़र्फ़ुल् मीम, नं. 6071, जिल्द नं. 51, पेज नं. 302, पब्लिकेशन: दारुल् फ़िक्र (बेरूत), 1415 हि./ 1995 ई.

सियरु अअ़्लामिन् नुबला, जिल्द नं. 10, पेज नं. 16, पब्लिकेशन: मुअस्ससतुर् रिसालह (बेरूत), तीसरा एडीशन, 1405 हि./1985 ई.

मुह़म्मद क़ासिमुल् क़ादिरी अल्-अज़्हरी
05/12/22 ई.

PROPHET MUHAMMAD (Peace be upon him) IN THE BIBLE

In this age the insolents of our Prophet Muhammad (Peace be upon him) are accusing him with their gross accusations. They have a big group named orientalists. The orientalists make an exploration of our religious books specially Quran and biography of Prophet Muhammad (Peace be upon him). They always try to depreciate the status of our Prophet Muhammad (Peace be upon him). Western Fablers used a word 'Maumet' one of 41 variants of Prophet Muhammad's name listed in the Oxford English Dictionary in the sense of 'Idol'. It came to mean 'puppet or doll'. In this sense Shakespeare used this world in 'Romeo & Juliet'. At a point Muhammad was transformed into 'Mahound' means 'the prince of darkness'. A blasphemer of our Prophet

Muhammad (Peace be upon him), Salman Rushdie also used the word 'Mahound' in his book 'Satanic Verses'. Dante also used the sentences of evil about Prophet Muhammad (Peace be upon him) in his book 'The Divine Comedy'. He showed the body of Prophet Muhammad (Peace be upon him) in the eighth class of hell and said he was a cheat. (Nauzu billahi min zaalik)

There is no doubt in it that our religion and religious scripture both are eternal but today we have requirement to prove our religion as eternal religion and the Quran as revealed scripture before our enemies. Therefore, some references shall be given from the scripture of Jews & Christians in which our Prophet Muhammad (Peace be upon him) has been prophesied.

The Quran mentions in 7:157, ""Those who will obey this Noble Messenger (Prophet Mohammed - peace and blessings be upon him), the Herald of the Hidden, who is untutored (except by Allah), whom they will find mentioned in the Taurat and the Injeel with them....!"
[Tr. Kanzul Iman]

." Now we will write some prophecies of Old Testament (the Law or Torah) in which our Prophet Muhammad (Peace be upon him) is mentioned or prophesied by Moses (Peace be upon him) as the Quran says, “Say: What is your

opinion-if the Quran is from Allah or you have rejected faith in it, and a witness among the descendants of Israel (Moses Peace be upon him) has already testified upon this and accepted faith, while you became arrogant? Indeed Allah does not guide the unjust.” [Quran 46:10]

1-Muhammad (Peace be upon him) has been prophesied in the book of Deuteronomy. Almighty Allah says to Moses (Peace be upon him)," I will raise them up a prophet from among their brethren, like unto thee and I will put my words in his mouth ; and he shall speak unto them all that I shall command him." [Deuteronomy 18:18]

The Christians say that this prophecy refers to Jesus (Peace be upon him) because Jesus (Peace be upon him) is like Moses (Peace be upon him). Moses (Peace be upon him) was a Jew and Jesus (Peace be upon him) was a Jew also. Moses (Peace be upon him) was a Prophet and Jesus (Peace be upon him) was also a Prophet. If these two are the only criteria for this prophecy to be fulfilled, then all the Prophets of the Bible who came after Moses (Peace be upon him) such as Solomon, Isaiah, Ezekiel, Daniel, Hosea, Joel, Malachi, John the Baptist etc. (Peace be upon them all) will fulfill this prophecy because all were Jews as well as prophets. However, it is Prophet Muhammad (Peace be upon him) who is like Moses (Peace be upon him). Because

(i) According to the Christians Jesus Christ (Peace be upon him) is God but Muhammad & Moses (Peace be upon them) are not. So Jesus (Peace be upon him) is not like Moses (Peace be upon him).

(ii) Christians say that Jesus Christ (Peace be upon him) died for the sins of the world. But Moses (Peace be upon him) did not have to die for the sins of the world. So Jesus Christ (Peace be upon him) is not like Moses (Peace be upon him).

(iii) Both had a father and a mother [Exodus 6:20] while Jesus (Peace be upon him) was born miraculously without any male intervention.[Matthew 1:18 , Luke 1:35 & Quran 3:42-47]

(iv) Both were married and had children. According to the Bible Jesus (Peace be upon him) neither married nor had children. [Exodus 2:21to22, 18:5to6]

(v) Both passed away after natural death.. [Deuteronomy 34:7] Jesus (Peace be upon him) has been raised up alive. [Quran 4:157-158]

(vi) Besides being Prophets, both were also kings i.e. they could implement capital punishment (i.e. death penalty for crime). Jesus (Peace be upon him) said, "My kingdom is not of this world." [John 18:36]

(vii) Both were accepted as Prophets by their people in their life time but Jesus (Peace be upon him) was rejected by his people. Bible says, "He came unto his own, but his own received him not."[John 1:11]

(viii)Both brought new laws and new regulations for their people. According to the Bible Jesus (Peace be upon him) did not bring any new law. [Matthew 5:17-18]

(ix) Both grazed goats but Jesus Christ (Peace be upon him) never grazed goats. [Exodus 3:1]

(x) Both were brought up by other women except their mothers but Jesus Christ (Peace be upon him) was not. [Exodus 2:1to10 & Quran 28:4to9]

(xi)Both migrated from the face of their enemies but there is not a single statement in the Bible about the migration of Jesus Christ (Peace be upon him). [Exodus 2:11to15 & Quran 28:14to22]

(xii)Both were blessed but according to the Bible Jesus Christ (Peace be upon him) was cursed. [Galatians 3:13]

(xiii) Moses (Peace be upon him) and the Jews are addressed in this prophecy as a racial entity, and as such their 'brethren' would undoubtedly be the Arabs. You see, the Holy Bible speaks about Abraham (Peace be upon him) as the "Friend of God". Abraham (Peace be upon him) had

two wives, Sarah and Hagar (May Allah be pleased with them). Hagar bore a son as the Bible says, “And Abraham called his son’s name, which Hagar bare Ishmael (Peace be upon him).” [Genesis 16:15, 17:23to25] Up to the age of 13 Ishmael (Peace be upon him) was the only son and seed of Abraham (Peace be upon him), when the covenant was ratified between God and Abraham (Peace be upon him). God granted Abraham (Peace be upon him) another son through Sarah, named Isaac. [Genesis 21:3] If Ishmael and Isaac (Peace be upon them) are the sons of the same father Abraham (Peace be upon him) then they are brothers. And so the children of the one are the brethren of the children of the other. The children of Isaac (Peace be upon him) are the Israelites (named after Israel, and he is Prophet Jacob) and the Children of Ishmael (Peace be upon him) are the Arabs so they are brethren to one another. The Bible affirms, “And he (Ishmael) shall dwell in the presence of all his brethren.” [Genesis 16:12] “And he (Ishmael) died in the presence of all his brethren.” [Genesis 25:18] The children of Isaac (Peace be upon him) are the brethren of the Ishmaelites. In like manner Muhammad (Peace be upon him) is from among the brethren of the Israelites because he was a descendant of Ishmael the son of Abraham (Peace be upon them). This exactly as the prophecy has it “from among their brethren”. [Deut.18:18] The prophecy distinctly mentions that the coming prophet, who would be like

Moses (Peace be upon them), must not arise from the 'children of Israel' or from 'among themselves', but from among their brethren. So, Prophet Muhammad (Peace be upon him) was from among their brethren.

(xiv) And Allah the Almighty said to Moses (Peace be upon him),"He shall speak unto them all that I shall command him." It’s also said in the Quran,"And he does not say anything by his own desire. It is but a divine revelation, which is revealed to him." [Tr. Kanzul Iman]

First Rebuttal

This prophecy is part of a discourse in which God gave Moses certain directions about the way the people of Israel (especially the Levite tribe) should conduct themselves once they reached the promised land. The first two verses of the chapter clearly reveal who God was referring to as ‘their brethren’, “The priests, the Levites—all the tribe of Levi—shall have no part nor inheritance with Israel; they shall eat the offerings of the LORD made by fire, and His portion. Therefore they shall have no inheritance among their brethren; the LORD is their inheritance, as He said to them.” [Deuteronomy 18:1-2]

It is clear that God is talking about the Levites. ‘Their brethren’ are the other tribes of Israel. Moses states that God will raise up a prophet like himself from among the

Jews, from among their brethren. The prophet will be a Jew. Muhammad was not a Jew. He was born an Arab. The Arab people are not one of the tribes of Israel. So Muhammad was not Moses' brother.

My Response

These all claims are incorrect.

Firstly, the opponent failed to realize that the Levites were also Jews and Jews are Israelites, the brethren of Ishmaelites. So the Ishmaelites are the brethren of Israelites and the Levites were Israelites. Therefore Ishmaelites are also the brethren of Levites. So this prophecy referred to a prophet who would be from the brethren of Levites who are Ishmaelites. What is there to oppose?

Secondly, If we accept that this prophecy refers to the descendant of Judah, Jesus Christ (Peace be upon him) then what will genesis 49:10to11 mean which I will mention later on?

Thirdly, my question to the opponent here is, what should we conclude from this saying of Jesus Christ, "Therefore say I unto you, the kingdom of God shall be taken from you, and given to a nation bringing forth the fruits thereof." [Matthew 21:43]

Second Rebuttal

Who then fits the description of a prophet like Moses? In the Gospel of John 1:45, we read words spoken by the apostle Philip, “We have found Him of whom Moses in the law, and also the prophets, wrote—Jesus of Nazareth.” Jesus was born of the tribe of Judah through Mary. Thus he was a Jew, an Israelite like Moses.

My Response

I have no need to write more in the answer of opponent but I ask only a question as I mentioned earlier, If this one is the only criteria for this prophecy to be fulfilled, then all the Prophets of the Bible who came after Moses (Peace be upon him) such as Solomon, Isaiah, Ezekiel, Daniel, Hosea, Joel, Malachi, John the Baptist etc. (Peace be upon them all) will fulfill this prophecy because all were Jews, Israelites as well as prophets. What will you say about these prophets?

2-It is mentioned in the book of Deuteronomy 18:19,"And it shall come to pass, that whosoever will not harken unto my words which he shall speak in my name, I will require it of him." It is said he shall speak in the name of Allah, now we can understand rule of recitation of the Quran. Holy Prophet (Peace be upon him) always recited the Quran in the name of Allah, the Omnipotent, means with Bismillah ar-Rahman ar-Rahim. And we are ordered to do it also.

3- Muhammad (Peace be upon him) has been prophesied in the book of Isaiah 29:12,"And the book is delivered to him that is not learned, saying, Read this, I pray thee: and he said, I am not learned."

At the time of first revelation Holy Prophet (Peace be upon him) engaged in supplication to Omnipotent Allah in the cave of Hira. Angel Gabrail (Peace be upon him) appeared and commanded Muhammad (Peace be upon him) by saying Iqra -"Read", he replied, "I am not the reader."

4- Genesis says, "The scepter shall not depart from Judah, nor a lawgiver from between his feet, until Shiloh come; and unto him shall the gathering of the people be. Binding his foal unto the vine, and his ass's colt unto the choice vine; he washed his garments in wine, and his clothes in the blood of grapes." [Genesis 49:10to11]

From these above verses it's proven that the scepter would depart from Judah when Shiloh will come. So we came to know that Shiloh would not be from the generation of Judah. According to the Bible Jesus Christ (Peace be upon him) had many ancestors including Judah, son of Jacob (Peace be upon him). [Matthew 1:1to16 & Luke 3:23to38]

We can conclude from this above prophecy didn't prophesy Jesus Christ (Peace be upon him), if we accept this hypothesis that this prophecy refers Jesus Christ (Peace be

upon him) then what will it mean "the scepter will not depart from Judah until Shiloh come", because Jesus (Peace be upon him) is a descendant of Judah. So we have to accept this prophecy doesn't refer anyone except Prophet Muhammad (Peace be upon him) as Shiloh. Some Christians may say that it's mentioned in this prophecy he will bind his ass & colt unto a vine and it happened with Jesus Christ (Peace be upon him) while Muhammad (Peace be upon him) had no ass & colt tied unto vine.

Let's analyze how much truth of ass & colt does this prophecy contain? As for as this prophecy is concerned the gospel of Matthew says, "Jesus Christ (Peace be upon him) commanded his disciples, "Go to the village over against you, and straight way ye shall find an ass tied, and a colt with her: loose them and bring them unto me." His disciples went there and found an ass & colt tied there. After it they brought the ass and colt unto him." [Matthew 21:1to8] The same legend is written in the gospel of Mark & Luke, Jesus Christ (Peace be upon him) commanded, "Go your way into the village over against you: and as soon as ye be entered into it, ye shall find a colt tied, whereon never man sat; loose him and bring him." Disciples went and found a colt tied which was brought by disciples to him. [Mark 11:1to8 & Luke 19:29to36]

Now what the conclusion arises from these verses? Matthew says that Jesus Christ (Peace be upon him) commanded to loose and bring an ass and colt, both but Mark and Luke mentioned only a colt. According to Matthew his disciples brought an ass and colt to him but according to Mark and Luke they brought only a colt. Now what should we conclude from this deduction? It's a big contradiction between these gospels. So the prophecy says about Prophet Muhammad (Peace be upon him) only, who was not from the generation of Judah, son of Jacob but from the generation of Prophet Ishmael (Peace be upon him).Prophet Muhammad (Peace be upon him) has been prophesied in this prophecy as Shiloh.

5-Prophet Muhammad (Peace be upon him) is mentioned by name in the Song of Solomon 5:16, "Hikko Mamittakim we kullo Muhammadim Zehdoodeh wa Zehraee Bayna Jerusalem." "His mouth is most sweet: yea, he is altogether lovely. This is my beloved, and this is my friend, O daughters of Jerusalem."In the Hebrew language im is added for respect. Similarly im is added after the name of Prophet Muhammad (Peace be upon him) to make it Muhammadim. In English translation they have even translated the name of Prophet Muhammad (Peace be upon him) as "altogether lovely", but in the Old Testament in

Hebrew, the name of Prophet Muhammad (Peace be upon him) is yet present.

Quran says, "And remember when Eisa the son of Maryam said, “O Descendants of Israel! Indeed I am Allah’s Noble Messenger towards you, confirming the Book Torah which was before me, and heralding glad tidings of the Noble Messenger who will come after me – his name is Ahmed (the Praised One)”; so when Ahmed came to them with clear proofs, they said, “This is an obvious magic.” [Tr. Kanzul Iman]

In the Qur’an Jesus (Peace be upon him) prophesied our prophet Muhammad (Peace be upon him) as Ahmad. Now we write some verses of New Testament (the Bible or the Gospel) who are telling about Muhammad (Peace be upon him).

1- Jesus Christ (Peace be upon him) said to his people, "And I will pray the Father, and he shall give you another Comforter, that he may abide with you forever." [John 14:16]

2- Jesus (Peace be upon him) said, "But when the Comforter is come, whom I will send unto you from the Father, even the Spirit of truth, which proceedeth from the Father, he shall testify of me." [John 15:26]

3- Jesus Christ (Peace be upon him) said again, "Nevertheless I tell you the truth; it is expedient for you that I go away: for if I go not away, the Comforter will not come unto you; but if I depart, I will send him unto you." [John 16: 7]

4- Jesus Christ (Peace be upon him) prophesied again, "But the comforter, which is the Holy Ghost, whom the father will send in my name, he shall teach you all things, and bring all things to your remembrance, whatsoever I have said unto you." [John 14:26]

In the Gospel of John 14:16, 14:26, 15:26 and 16:7 the word 'Comforter' is translated from the Greek word 'Paraclete' which means an advocate, one who pleads the cause of another, one who councils or advises another from deep concern for the other's welfare. The translators of 'King James Version' translated this word as 'Holy Ghost' to convey their own understanding of the Biblical text. And the more accurate translation is 'Holy Spirit' not 'Holy Ghost'. The translators of many other versions of the Bible translate this Greek word as 'Holy Spirit' in place of 'Holy Ghost' including the translators of 'New Revised Standard Version' and 'New International Version'.

Some Christians say that the Comforter mentioned in these prophecies does not refer to Muhammad (Peace be upon

him) but the Holy Spirit (Holy Ghost). They fail to realize that the prophecy clearly says that only if Jesus (Peace be upon him) departs the Comforter will come. The Bible states that the Holy Spirit was already present on the earth before and during the time of Jesus (Peace be upon him), when he was in his mother's womb [Matthew 1:18] and again when Jesus (Peace be upon him) was being baptized [mark 1:10 & Matthew 3:16] etc.

If we accept this prophecy refers to Holy Spirit then how can you say that Holy Spirit does not refer to Muhammad (Peace be upon him)? In the New Testament a 'Spirit' is a 'Human Prophet'. Therefore, Jesus Christ (Peace be upon him) prophesied the coming of a 'Human Prophet (spirit)' after him and not the 'Holy Ghost'. As the Bible says, "Beloved, believe not every spirit, but try the spirits whether they are of God: because many false prophets are gone out into the world."[1John 4:1] Bible also confirms that 'Paraclete' refers to a prophet not the Holy Ghost, when it was applied to Jesus Christ (Peace be upon him) himself, "My little children, these things write I unto you, that ye sin not. And if any man sin, we have an advocate (Paraclete) with the father, Jesus Christ the righteous." [1John 2:1] Here Jesus Christ (Peace be upon him) is mentioned as 'Paraclete' then who was Jesus Christ (Peace be upon him)? He was a prophet, refer Matthew 21:11,

"And the multitude said, this is Jesus the prophet of Nazareth of Galilee." Furthermore in the Gospel of Luke 24:19, "And he said unto them, what things? And they said unto him, Concerning Jesus of Nazareth, which was a prophet mighty in deed and word before God and all the people." So Muhammad (Peace be upon him) was also a prophet. Hence these prophecies refer to none other than Prophet Muhammad (Peace be upon him).

Third Rebuttal

In no sense was Muhammad ever with Jesus' disciples, let alone permanently. Because John 14:16 says, "He may abide with you forever." Muhammad was born in the 7th century after Christ. He lived only 63 years and then died. He did not live with his companions forever, did he? His body was buried in Medina. But Jesus said that the promised Helper or Comforter would be with His disciples forever. The one referred to cannot possibly be Muhammad.

My Response

I want to reply it does not mean that he will be abide with you forever with his body. In order to understand this verse, let us read, "Verily, verily, I say unto you, if a man keep my saying, he shall never see death." [John 8:51] And also, "And I give unto them eternal life; and they shall never

perish, neither shall any man pluck them out of my hand." [John 10:28] Furthermore, "And my servant David shall be their prince forever." [Ezekiel 37:25] Jesus Christ (Peace be upon him) told his followers that they would never taste death. However, there is not a single one of them alive now a days. Then what would you like to say my Christian brothers, was Jesus (Peace be upon him) lying?

In a similar manner when Prophet David (Peace be upon him) has been described as being a prince forever this didn't mean that he would never die but his name, teachings, guidance shall remain forever as an immortal life. In the same way Prophet Abraham (Peace be upon him) lives among us by his faith, teachings and guidance, Jesus Christ (Peace be upon him) lives among us by his faith and teachings and all Prophets (Peace be upon them) live among us through their names, teachings and guidance. So the statement "he may abide with you forever" means the coming Paraclete will live with you through his teachings, faith and guidance. This also means he will live with you forever, so you will not need of any further prophets because he will be the last and final messenger, as the Quran says, "Muhammad (Peace be upon him) is not the father of any man among you but he is the Noble Messenger of Allah and last of the Prophets." [Quran 33:40] Furthermore, "This day have I perfected your religion for

you and completed my favor upon you, and have chosen Islam as your religion.” [Quran 5:3] So Islam is the religion ultimate to the mankind and it will abide with you forever.

5- Jesus Christ (Peace be upon him) said again, "Hereafter I will not talk much with you: for the prince of this world cometh, and hath nothing in me.” [John 14:30]

6- Gospel of John says, "And this is the record of John, when the Jews sent priests and Levites from Jerusalem to ask him, who art thou? And he confessed, and denied not; but confessed, I am not the Christ. And they asked him, what then? Art thou Elias? And he sath, I am not. Art thou that Prophet? And he answered, no. Then said they unto him, who art thou? That we may give an answer to them that sent us. What sayest thou of thyself ? He said, I am the voice of one crying in the wilderness, make straight the way of the Lord, as said the prophet Esaias. And they which were sent were of the pharises. And they asked him, and said unto him, why baptizest thou then, if thou be not that Christ, nor Elias, neither that Prophet?” [John 1:19to25]

Please note that three different and distinct questions were posed to John the Baptist (Peace be upon him) and to which he gave three emphatic "No’s" as answers. To recapitulate:-

(1) Art thou the Christ?

(2) Art thou Elias?

(3) Art thou that Prophet?

Now I ask a question to the Christians who is this 'that Prophet' in these verses of the Bible except Prophet Muhammad (Peace be upon him)?

7- Jesus (Peace be upon him) prophesied again, "I have yet many things to say unto you, but ye cannot bear them now. How be it when he, the Spirit of truth is come, he will guide you unto all truth: for he shall not speak of himself; but whatever he shall hear, that shall he speak: and he will show you things to come. He shall glorify me."[John 16:12-14]

The Spirit of Truth is spoken in this prophecy refers to none other than Prophet Muhammad (Peace be upon him).There are many prophecies in the Bible about Prophet Muhammad (Peace be upon him).I recorded only those prophecies in which there is no doubt about last & final messenger Prophet Muhammad (Peace be upon him).

Throughout history there have been a number of Christian scholars who have come to recognize the truth of the prophecies of the Bible originally referred to Prophet Muhammad (Peace be upon him).

Quran says, "And if you, O listener, have any doubt in what We have sent down towards you, then question those who

have read the Book before you; undoubtedly, towards you has come the truth from your Lord, therefore do not be of those who doubt." [Tr. Kanzul Iman]

Anselm Turmeda, a priest and Christian scholar was one such person. After recognizing the last prophet of Allah and embracing Islam he wrote a famous book titled "Tuhfat al-arib fi al-radd 'ala Ahl al-Salib (The gift to the intelligent for refuting the arguments of the Christians)". In the introduction to this work he writes his history, "Let it be known to all of you that my origin is from the city of Majorca, which is a great city on the sea, between two mountains and divided by a small valley. It is a commercial city with two wonderful harbors. Big merchant ships come and anchor in the harbor with different goods. The city is on the island which has the same name - Majorca, and most of its land is populated with fig and olive trees. My father was a well respected man in the city. I was his only son. When I was six, he sent me to a priest who taught me to read the Gospel and logic, which I finished in six years. After that I left Majorca and traveled to the city of Larda, in the region of Castillion, which was the centre of learning for Christians in that region. A thousand to a thousand and a half Christian students gathered there. All were under the administration of the priest who taught them. I studied the Gospel and its language for another four years. After that I

left for Bologne in the region of Anbardia. Bologne is a very large city, it being the centre of learning for all the people of that region. Every year, more than two thousand students gather together from different places. They cover themselves with rough cloth which they call the 'Hue of God'. All of them, whether the son of a workman or the son of a ruler wear this wrap, in order to make the students distinct from others. Only the priest teaches, controls and directs them. I lived in the church with an aged priest. He was greatly respected by the people because of his knowledge and religiousness and asceticism, which distinguished him from the other Christian priests. Questions and requests for advice came from everywhere, from kings and rulers, along with presents and gifts. They hoped that he would accept their presents and grant them his blessings. This priest taught me the principles of Christianity and its rulings. I became very close to him by serving and assisting him with his duties until I became one of his most trusted assistants, so that he trusted me with the keys of his domicile in the church and of the food and the drink stores. He kept for himself only the key of a small room where he used to sleep. I think, and Allah knows best, that he kept his treasure chest in there. I was a student and servant for a period of ten years, then he fell ill and failed to attend the meetings of his fellow priests. During his absence the priests discussed some religious matters, until

they came to what was said by the Almighty Allah through his prophet Jesus in the Gospel, "After him will come a Prophet called Paraclete." They argued a great deal about this Prophet and as to who he was among the Prophets. Everyone gave his opinion according to his knowledge and understanding; and they ended without achieving any benefit in that issue. I went to my priest, and as usual he asked about what was discussed in the meeting that day. I mentioned to him the different opinions of priests about the name Paraclete, and how they finished the meeting without clarifying its meaning. He asked me, "What was your answer?" I gave my opinion which was taken from interpretation of a well known exegesis. He said that I was nearly correct like some priests, and the other priests were wrong.

But the truth is different from all of that. This is because the interpretation of that noble name is known only to a small number of well versed scholars. And we posses only a little knowledge. I fell down and kissed his feet, saying, "Sir! You know that I traveled and came to you from a far distant country, I have served you now for more than ten years; and have attained knowledge beyond estimation, so please favor me and tell me the truth about this name." The priest then wept and said, "My son, by God, you are very much dear to me for serving me and devoting yourself to my care.

Know the truth about this name, and there is a great benefit, but there is also a great danger. And I fear that when you know this truth, and the Christians discover that, you will be killed immediately." I said, "By God, by the Gospel and He who was sent with it, I shall never speak any word about what you will tell me, I shall keep it in my heart." He said, "My son, when you came here from your country, I asked you if it is near to the Muslims, and whether they made raids against you and if you made raids against them. This was to test your hatred for Islam. Know, my son, that Paraclete is the name of their Prophet Muhammad (Peace be upon him), to whom was revealed the fourth book as mentioned by Daniel (Peace be upon him). His way is the clear way which is mentioned in the Gospel." I said, "Then sir, what do you say about the religion of these Christians?" He said, "My son, if these Christians remained on the original religion of Jesus (Peace be upon him), then they would have been on God's religion, because the religion of Jesus (Peace be upon him) and all the other Prophets (Peace be upon them) is the true religion of God. But they changed it and became unbelievers." I asked him, "Then sir, what is the salvation from this?" He said, "Oh my son, embracing Islam." I asked him, "Will the one who embraces Islam be saved?" He answered, "Yes, in this world and the next." I said, "The prudent chooses for himself ; if you know, sir the merit of Islam, then what keeps you from it?" He answered,

"My son, the Almighty Allah did not expose me to the truth of Islam and the Prophet of Islam until after I have become old and my body weakened.

Yes, there is no excuse for us in this, on the contrary, the proof of Allah has been established against us. If God had guided me to this when I was your age I would have left everything and adopted the religion of truth. Love of this world is the essence of every sin and look how I am esteemed, glorified and honored by the Christians, and how I am living in affluence and comfort! In my case, if I show a slight inclination towards Islam they would kill me immediately. Suppose that I was saved from them and succeeded in escaping to the Muslims, they would say, do not count your Islam as a favor upon us, rather you have benefited yourself only by entering the religion of truth, the religion that will save you from the punishment of Allah! So I would live among them as a poor old man of more than ninety years, without knowing their language, and would die among them starving. I am, and all praise is due to Allah, on the religion of Christ and on that which he came with, and Allah knows that from me." So I asked him, "Do you advise me to go to the country of the Muslims and adopt their religion?" He said to me, "If you are wise and hope to save yourself, then race to that which will achieve this life and the hereafter. But my son, none is present with

us concerning this matter, it is between you and me only. Exert yourself and keep it a secret. If it is disclosed and the people know about it they will kill you immediately. I will be of no benefit to you against them. Neither will it be of any use to you if you tell them what you heard from me concerning Islam, or that I encouraged you to be a Muslim, for I shall deny it. They trust my testimony against yours. So do not tell a word, whatever happens." I promised him not to do so. He was satisfied and content with my promise. I began to prepare for my journey and bid him farewell. He prayed for me and gave me fifty golden dinars. Then I took a ship to my city Majorca where I stayed with my parents for six months. Then I traveled to Sicily and remained there five months, waiting for a ship bound for the land of the Muslims. Finally a ship arrived bound for Tunis. We departed before sunset and reached the port of Tunis at noon on the second day. When I got off the ship, Christian scholars who heard of my arrival came to greet me and I stayed with them for four months in ease and comfort. After that I asked them if there was a translator. The Sultan in those days was Abu al-Abbas Ahmed. They said there was a virtuous man, the Sultan's physician, who was one of his closest advisors. His name was Yusuf al-Tabeeb. I was greatly pleased to hear this, and asked where he lived. They took me there to meet him separately.

I told him about my story and the reason of my coming there; which was to embrace Islam. He was immensely pleased because this matter would be completed by his help. We rode to the Sultan's Palace. He met the Sultan and told him about my story and asked his permission for me to meet him. The Sultan accepted, and I presented myself before him. The first question the Sultan asked was about my age. I told him that I was thirty-five years old. He then asked about my learning and the sciences which I had studied. After I told him he said, "Your arrival is the arrival of goodness. Be a Muslim with Allah's blessings." I then said to the doctor, "Tell the honorable Sultan that it always happens that when anyone changes his religion his people defame him and speak evil of him. So, I wish if he kindly sends to bring the Christian priests and merchants of this city to ask them about me and hear what they have to say. Then by Allah's will, I shall accept Islam." He said to me through the translator, "You have asked what Abdullah ibne Salam (May Allah be pleased with him) asked from the Prophet Muhammad (Peace be upon him) when he, Abdullah, came to announce his Islam." He then sent for the priests and some Christian merchants and let me sit in an adjoining room unseen by them. He asked, "What do you say about this new priest who arrived by ship?" They said, "He is a great scholar in our religion. Our bishops say he is the most learned and no one is superior to him in our

religious knowledge." After hearing what the Christians said, the Sultan sent for me, and I presented myself before them. I declared the two testimonies that there is no one worthy of worship except Allah and that Muhammad (Peace be upon him) is His messenger, and when the Christians heard this they crossed themselves and said, "Nothing incited him to do that except his desire to marry, as priests in our religion cannot marry." Then they left in distress and grief. The Sultan appointed for me a quarter of a dinar every day from the treasury and let me marry the daughter of Al-Hajj Muhammad al-Saffar. When I decided to consummate the marriage, he gave me a hundred golden dinars and an excellent suit of clothes. I then consummated the marriage and Allah blessed me with a child to whom I gave the name Muhammad as a blessing from the name of the Prophet Muhammad (Peace be upon him)."

Islam is only Non-Christian faith which makes an article of faith to believe in Jesus Christ (Peace be upon him) as prophet of Allah, the Almighty. We believe that Jesus Christ (Peace be upon him) is one of the mightiest prophets of Allah, we believe that he was born miraculously without any male intervention which many modern generations don't believe, we believe that he healed those who was born blind & paralytic, we believe that he gave life to dead with God's permission. Then why do the Christians not believe

in Prophet Muhammad (Peace be upon him) as a prophet of God, the Sustainer?

The conclusion of this article is this all Christians must testify Islam. Because the Christians have fabricated their religious scripture, the Bible and we can claim many verses of the Bible have interpolation, concoction & fabrication. But those verses in which our Prophet Muhammad (Peace be upon him) is mentioned, the Christians could not concoct those verses. So, all Christians must testify Prophet Muhammad (Peace be upon him) because the Bible is testifying him also. At last I conclude my article with these Quranic words, “Those to whom (Christians & Jews) We gave the books (Injeel & Torah) recognize the Prophet (Muhammad peace be upon him) as men (or they) recognize their own sons; and undoubtedly a group among them purposely conceals the truth.” [Quran 2:146]

अल्लाह का ज़ाती नाम

इस्लाम वाह़िद ऐसा दीन है, जिसने अपने ख़ालिक़ो मालिक का 'ज़ाती नाम (Personal Name/निज नाम)' दुनिया के सामने पेश किया: 'अल्लाह', साथ ही 'स़िफ़ाती नाम (Attributive Names/गौणिक नाम)' भी पेश किए, जैसे: 'ख़ालिक़', 'मालिक', 'राज़िक़', 'क़ादिर' वग़ैरह;
ऐसा कोई दूसरा दीन दुनिया में मौजूद नहीं, जिसने अपने ख़ालिक़ो मालिक को 'ज़ाती नाम (Personal Name/निज नाम)' दिया हो, सिवा इस्लाम के;

आज तक, गोबर को घेबर समझने वाले ख़ुद ये फ़ैसला नहीं कर पाए, कि ओम, उनके ईश्वर का 'ज़ाती नाम (Personal Name/निज नाम)' है, या 'स़िफ़ाती नाम (Attributive name/गौणिक नाम)' है;

यहां तक कि नियोग समाज के गुरुघंटाल: 'दयानंद सरस्वती (वास़िले जहन्नम: 1883 ई.)' का भी कंफ्यूज़न बाक़ी रहा कि 'ओम', ईश्वर का 'ज़ाती नाम (Personal Name/निज नाम)' है, या 'स़िफ़ाती नाम (Attributive name/गौणिक नाम)', क्यूंकि अपनी बदनामे ज़माना किताब: 'सत्यार्थ प्रकाश' में, इसने एक जगह इसे निज बताया, तो दूसरी जगह गौणिक;

इसके इस कंफ्यूज़न पर सबसे पहली पकड़: 'स़दरुल् अफ़ाज़िल सय्यिद नई़मुद्दीन मुरादाबादी (d. 1948 ई.)' ने, अपनी किताब: 'इह़्क़ाक़े ह़क़' में की. जिसे इन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' के रद में लिखा;

मगर इस्लाम के पर्दे में छुपे हुए कुफ़्र-नवाज़ बंदरों को, ख़ल्लाक़े काइनात 'अल्लाह (ﷻ)', और 'ओम' में मुमासलत दिखाई दे रही है. ऐसी बकवास करने की वजह सिर्फ़, कुफ़्फ़ार को ख़ुश व राज़ी करना है, जो कि मुम्किन नहीं.

11/02/23 ई.

उस्ताद की बातें

आज तफ़्सीरे बैज़ावी के लेक्चर में, उस्तादे गिरामी मुफ़्ती अ़म्मार शामी (ह़फ़िज़हुल्लाहु व रआ़हु) ने बड़ी ह़क़ीक़त से पुर बात फ़रमाई:
"इस दौर के काफ़िरों के ईमान न लाने की वाह़िद वजह यही है कि ये सब, इनके कुफ़्र के सबब, मख़्तूम (मुहर लगाए हुए) हैं;
इसके अ़लावा कोई वजह नहीं;
जबकि ये इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत को जानते और समझते भी हैं...!"

17/06/21 ई.

मल्फ़ूज़े उस्ताद

तफ़्सीर के क्लास के दौरान, उस्तादे मुह़्तरम मौलाना फ़ुज़ैल अह़मद मिस़्बाह़ी (ह़फ़िज़हुल्लाहु व रआ़हु) ने बड़ी प्यारी बात कही, कि:

"कुछ मुसलमानों के ग़लत इस्तेमाल के सबब, ह़लाला की इसी बिगड़ी हुई सूरत को, मीडिया ने शरई़ बनाकर, लोगों के सामने पेश किया, और दावा किया कि इस्लाम में नारी का हनन किया गया है."

20/10/17 ई.

इसी तरह एक बार लेक्चर के दौरान, इस्लाम पर भौंकने वालों के ख़िलाफ़

सख़्त इल्ज़ामी हमला किया और कहा:

"क्या मर्द को क़ैद करना ज़ुल्म नहीं? क्या सिर्फ़ औरत के हुक़ूक़ का ख़्याल है? क्या बांदी से पैदा होने वाला बच्चा, साबितुन् नसब न होगा? क्या बांदी के बच्चा जनने के बाद, वो आज़ाद न होगी? और क्या इसके बाद वो आज़ाद नहीं है, चाहे रहे या चली जाए? क्या हुक़ूक़े निस्वां के यहां, औरतें नौकरानी नहीं हैं? क्या अमीर लोगों के बच्चों को स्कूल छोड़ने वाले लोगों के बच्चे, अनपढ़ नहीं हैं?

सय्यिदुना अनस (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने, आक़ा (ﷺ) के साथ रहने को तरजीह़ दी, न कि अपने वालिदैन के साथ रहे. क्यूंकि आक़ा (ﷺ) ने उनके हुक़ूक़ इस तरह अदा किए, कि वो दीवाने हो गए;

ह़ज़रत उ़मर[1] ने, जब ह़ज़रत बिलाल से कहा कि: 'ऐ काली औरत के बेटे!' तो आक़ा (ﷺ) ने कहा: 'ऐ उ़मर![1] माफ़ी माँगो. अब न कहना ह़ब्शी के बेटे.....'

आपके बेटे की उम्र का बच्चा, आपके जूते साफ़ कर रहा है. उस वक़्त आपका ख़्याले हुक़ूक़ कहाँ चला जाता है?

उस उमय्या इब्ने ख़लफ़ ने, ह़ज़रत बिलाल के साथ जो किया, वो किस मज़्हब को मानने वाला था? क्या आक़ा (ﷺ) ने, ह़ज़रत बिलाल, या दूसरे ग़ुलामों के साथ ऐसा कुछ किया?

अगर किसी मुसलमान के ख़ुदकुश ह़मले (suicide bombing) को इस्लाम कहा जा रहा है, तो फिर म्यांमार में जो हो रहा वो भी बुद्धिज़म है."

[[1]अल्लाह (ﷻ) उस्तादे अ़ज़ीम पर हज़ारों फ़ज़्ल नाज़िल करे, और उनके कमाल में ख़ूब बरकत दे;

इस फ़क़ीर का गुमान है कि उस्तादे गिरामी से यहां सब्क़ते लिसान — जो कि आ़म बात है, कोई ऐ़ब नहीं — के सबब, सय्यिदुना अबू ज़र की जगह सय्यिदुना उ़मर का नाम निकल गया. फ़क़ीर की मह़्दूद नज़र के हिसाब से,

ये वाक़िआ़ सय्यिदुना अबू ज़र (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) के साथ हुआ. उन्होंने सय्यिदुना बिलाल (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) से ग़ुस्से में कहा कि: 'ऐ काली औरत के बेटे!' इसपर सय्यिदुना बिलाल ने आक़ा (ﷺ) से इनकी शिकायत की. तब आक़ा (ﷺ) ने फ़रमाया:

"يَا أَبَا ذَرٍّ! أَعَيَّرْتَهُ بِأُمِّهِ؟ إِنَّكَ امْرُؤٌ فِيكَ جَاهِلِيَّةٌ، إِخْوَانُكُمْ خَوَلُكُمْ، جَعَلَهُمُ اللّٰهُ تَحْتَ أَيْدِيكُمْ، فَمَنْ كَانَ أَخُوهُ تَحْتَ يَدِهِ فَلْيُطْعِمْهُ مِمَّا يَأْكُلُ، وَلْيُلْبِسْهُ مِمَّا يَلْبَسُ، وَلَا تُكَلِّفُوهُمْ مَا يَغْلِبُهُمْ، فَإِنْ كَلَّفْتُمُوهُمْ فَأَعِينُوهُمْ"،

"ऐ अबू ज़र! क्या तुमने इसे, इसकी मां का नाम लेकर आ़र दिलाई? तुम्हारे अंदर जाहिलिय्यत (का तकब्बुर) बाक़ी है. तुम्हारे ग़ुलाम, तुम्हारे भाई हैं. अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे मातह़्त किया है. तो जिसका भाई, उसके मातह़्त हो, तो जो वो ख़ुद खाता है वही अपने मातह़्त भाई को भी खिलाए. जो ख़ुद पहनता है, वही उसे भी पहनाए. और उनपर उनकी त़ाक़त से ज़्यादा बोझ न डालो. जब उनपर कोई बोझ डालो, तो उनकी मदद भी करो."
[मुत्तफ़क़ुन् अ़लैह]

बुख़ारी व मुस्लिम की इस रिवायत में, वो अल्फ़ाज़ नहीं आए हैं जिसपर हम गुफ़्तगू कर रहे हैं. मगर 'शुअ़बुल् ईमान' और 'तारीख़े दिमश्क़' वग़ैरह कुतुब की दीगर रिवायात में इसकी तफ़्स़ील मौजूद है. साथ ही बुख़ारी शरीफ़ के शारिह़ीन ने, मज़्कूरा रिवायत को, सय्यिदुना अबू ज़र व सय्यिदुना बिलाल के मुतअ़ल्लिक़ ही बताया है. यहां तक कि इमाम इब्ने बत़्त़ाल (d. 449 हि.) ने बुख़ारी शरीफ़ की शरह़ में लिखा है कि जब आक़ा (ﷺ) ने ह़ज़रत अबू ज़र को डांट लगाई:

"فألقى أبو ذر نفسه بالأرض، ثم وضع خده على التراب، وقال: واللّٰه لا أرفع

خدي من التراب حتى يطأ بلال خدي بقدمه، فوطأ خده بقدمه"،

"तो अबू ज़र ने ख़ुद को ज़मीन पर गिराया, और मिट्टी पर अपना गाल रख दिया, और कहा कि: 'अल्लाह की क़सम! मैं अपना गाल तब तक नहीं उठाने वाला, जब तक कि बिलाल इसे अपने पैरों से न रौंदे.' तो ह़ज़रत बिलाल ने अपना क़दम उसपर रखा."
वल्लाहु अअ़्लम!]
—सैफ़ी

01/03/17 ई.

इ़ल्मी अक़्वाल

करीम उस्ताद, जामिए़ मअ़्क़ूलात व मन्क़ूलात, मुफ़्ती ज़ियाउल् ह़क़ बरकाती मिस़्बाह़ी (ह़फ़िज़हुल्लाहु व रअ़ाहु) ने 'मुख़्तस़रुल् क़ुदूरी' में 'इ़द्दत' का बयान पढ़ाते हुए कहा:

"अगर मर्द, मरज़े वफ़ात में मुब्तला है, और अपनी बीवी को इस नियत से त़लाक़ दे दे कि अगर मैं इसे त़लाक़ न दूँ, तो इसे विरासत में ह़क़ मिलेगा. लिहाज़ा इसे त़लाक़ दे दूँ, ताकि इसे विरासत में ह़क़ न मिले. तो ऐसी औरत को, मुत़ल्लक़ा होने के बावजूद भी विरासत में ह़क़ मिलेगा."

15/02/17 ई.

एक जगह इर्शाद फ़रमाया:
"औरत को इ़द्दत देकर, इसपर ज़ुल्म नहीं किया. क्यूंकि इस्तिबराए रह़्म

(womb cleaning)[1] सिर्फ़ औरतों में पाया जाता है. इसलिए इसे इ़द्दत दी, ताकि उसकी इ़ज़्ज़त सलामत रहे;
और मर्द को इ़द्दत इसलिए नहीं दी गयी, चूंकि उसमें इस्तिबराए रह़्म[1] ही नहीं होता."

[[1]हैज़ आने के ज़रिए पेट की पूरी तरह सफ़ाई होना, ताकि औरत की समाजी व त़िब्बी सेहत सलामत रहे.]
— सैफ़ी

16/02/17 ई.

इसी तरह एक बार 'नफ़क़ात' के लेक्चर में फ़रमाया:

"अगर औरत को इसका शौहर नफ़्क़ा (maintenance) न दे, तो क़ाज़ी के हुक्म से औरत को इस्तिक़राज़[1] की इजाज़त न देकर, इस्तिदानह[2] की इजाज़त देगा. फिर जिन लोगों से औरत इस्तिदानह[2] करे, वो लोग शौहर से पैसा वसूल करेंगे;
क़ाज़ी के फ़ैसले के बाद, अगर शौहर मर जाए, और क़ाज़ी ने इस्तिदानह[2] का हुक्म दिया हो, तो मर्द के मुत़लक़ माले मौरूस में से वो इस्तिदानह[2] का पैसा अदा किया जाएगा."

[[1]क़र्ज़ लेना;
[2]किसी से उधार लेना, जिसकी अदायगी शौहर करे;]
— सैफ़ी

22/02/17 ई.

इसी लेक्चर में ये बात भी कही कि:

"बेटे का माल, सिर्फ़ बाप को बेचने का ह़क़ है, मां को नहीं. क्यूंकि मां को बैअ़ (trading) के मामले से वाक़िफ़िय्यत नहीं होती."

01/03/17 ई.

बांदी बनाने की वजह बयान करते हुए कहा कि:

"बांदी इसलिए है कि जब इसका शौहर जंग में मर गया, तो औरत बेसहारा हो गयी. तो इसे सहारा देने के लिए अपनी मिल्कियत में लिया, ताकि इसका नफ़क़ा और तस्कीने नफ़्स अदा हो जाए;
और अगर शौहर-बीवी साथ साथ क़ैद होकर आए हों, तो बीवी, बांदी न बनेगी. बल्कि अपने शौहर के साथ रहेगी."

01/03/17 ई.

इसी तरह 'मुकातब' के लेक्चर में फ़रमाया कि:

"रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इर्शाद फ़रमाया: 'मैं, मैदाने मह़्शर में तीन लोगों के मुक़ाबले में आऊंगा. उनमें से एक वो होगा, जिसने किसी आज़ाद को, ग़ुलाम बनाया हो.'[1]
इस्लाम में ग़ुलाम सिर्फ़ उन्हें बनाया जाता, जो कुफ़्र में मुब्तला होकर आते. और उन्हें हुस्ने सुलूक से रखा जाता. छोड़ा नहीं जाता, ताकि वो फिर हमारे सामने न आयें. कौन है जो ऐसा करे?
1780 ई. से 1786 ई. के बीच, ब्रिटेन ने 21,30,000 ह़ब्शियों को ग़ुलाम बनाकर रखा.[2] इस्लाम ने तो सिर्फ़ जंग में उन लोगों को क़ैद करने का हुक्म दिया है जो मज़्हब में मुख़ालिफ़ हों, और हमारे ख़िलाफ़ दुबारा हथियार न उठाएं. इसके अ़लावा किसी को भी ग़ुलाम बनाने का हुक्म नहीं देता. मुख़ालफ़ते मज़्हब ही के ज़रिए क़ैद किया जा सकता है, इसके अ़लावा

किसी चीज़ के ज़रिए नहीं. और ग़ुलामों के साथ वैसा ही सुलूक करने का हुक्म दिया, जैसा ख़ुद के साथ. यहां तक कि सय्यिदुना अ़ब्दुर् रहमान इब्ने औ़फ़ (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) के साथ कई-कई ग़ुलाम चलते थे. किसी में कोई भी फ़र्क़ नहीं करते थे. और फ़िदया (ransom) देकर ग़ुलाम को आज़ाद करना, सबसे पहले इस्लाम में हुआ."

[[1]शायद ह़ज़रत का इशारा बुख़ारी शरीफ़ की इस ह़दीसे क़ुदसी की तरफ़ है, अल्लाह (ﷻ) ने इर्शाद फ़रमाया:

"ثَلَاثَةٌ أَنَا خَصْمُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: رَجُلٌ أَعْطَى بِي ثُمَّ غَدَرَ، وَرَجُلٌ بَاعَ حُرًّا فَأَكَلَ ثَمَنَهُ، وَرَجُلٌ اسْتَأْجَرَ أَجِيرًا فَاسْتَوْفَى مِنْهُ وَلَمْ يُعْطِهِ أَجْرَهُ"،

"क़ियामत के दिन, मैं तीन लोगों का सामना करूंगा: वो शख़्स जिसने मेरे नाम पर अह्द किया, और फिर ग़द्दारी की; वो शख़्स जिसने किसी आज़ाद को बेच दिया, और उसकी क़ीमत खा ली; वो शख़्स जिसने किसी को मज़दूर बनाया, और उसने पूरा काम किया, फिर भी उसने उसे, उसकी मज़दूरी न दी."
[सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस नं. 2270]
[2]इसकी तफ़्सील: 'Slavery Abolition Act (1833)' की दास्तान पढ़कर समझिए. अगरचे मज़्कूरा कलाम में बताई गई तादाद, क़ानूनी काग़ज़ात में बताई गई तादाद से मुख़्तलिफ़ हो सकती है. मगर ह़क़ यही है कि क़ानूनी काग़ज़ात में सही तादाद बयान नहीं की जाती.]
— सैफ़ी

एक बार इर्शाद फ़रमाया:
"अगर क़िसास़ व दियत के क़वानीन को, हिंद में या पूरी दुनिया के ममालिक में नाफ़िज़ कर दिया जाए, तो मज्मूई तौर पर ज़ुल्म व सितम मिट जाएगा."